

श्री ॥

महाकविहोमरकृत

इलियडर्चे

कविताबद्ध मराठी भाषांतर.



भाग २ रा.



गणेश रामकृष्ण हवलदार, बी. ए. एल्. एल्. बी.
सुपरिन्टेन्डन्ट, हायकोर्ट, अपील शाखा, मुंबई,
यांनी केले.



सन १९१३-शके १८३५.

[सर्व हक्क स्वाधीन.]



आवृत्ति १ ला.



समग्र ग्रंथ भाग १ व २ मिळून
किंमत २॥ रुपये.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें
चीमनलाल सांकळचंद मारफतीवाने
मुद्रित किया.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभः ॥
तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनार्थजिननंत्वा, धर्मशीलंचलहुहं ॥
गीर्वाणीहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थं जन्मजीवा
नां, तत्त्वामृतादिमेलनं, आवश्यकदिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं
॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वानि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,
स्वाध्यायंशुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिबहुंरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥
जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृतसंक्षेप गुरु प्रशस्तिः ॥

श्रीमद्भारजिनेन्द्रतीर्थतिलकः सद्भूतसंपन्निधिः, संज्ञोऽसुगुरुः
सुषर्मगणज्ञतस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽजवत्सुविहितेपक्षे
दाचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनः सूरिराट् ॥ ५ ॥
आसीत्तत्पदंपंकजैकमधुकृतश्रीवर्द्धमानाजिधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वर
ख्यगणज्ञातोविनेयोत्तमः ॥ यः प्रापत्तन्त्रसिद्धिपंक्तिसरदि ।
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुद्धकृतोत्तरतरे त्पाख्यं
चुपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिः श्रीकुशलाजि
धः ॥ दादाविरुद्विरुयातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ हेमकीर्त्तिप
ध्यायः, जातोऽसौ स कलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, हेमवाटी
चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविक्रातः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ
कानेकज्ञव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपादकाः ॥ ९ ॥ तत्त्वरासमालोढा, नि
धानकुशलाजिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥
उपाध्यायसदाचारा, वादीनां मानजंजका ॥ शास्त्रार्थविजयंप्राप, सं
पदंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकज्ञज्ञिसारेण, कृतोयंग्रंथसंग्रहः ॥
स्वपरोपकृतेसम्यग्, प्रतिदं प्रापितं मया ॥ १२ ॥ सुशिष्यहेमचंद्रेण,
प्रेमामरसबांधवैः ॥ श्रीसंघकृतस्तहायेन, सुबह्यांशोसकाक्षरैः ॥ १३ ॥

यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पत्रकःपाठकेऽप्योवै, नि
त्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेरम्ये, वृद्धत्वरतरेगणे ॥ वृद्ध
दोषाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाज शुज
हमारे पोषपुत्र शिष्य पं । श्रीकैमचंड चि । पैमचंड चि ।
अमरचंडका हे. हमने हमारा सर्व स्वजपासरा पुस्तक धनमालका
मालक इन तीनोंको किया हे, दूसरा किस्तीका दावा जजर नहीं ॥
शुजं ॥

दसकत । ३० । श्रीरामलालगणिका खुद ॥



॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रज्ञवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंजवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोज्ञसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंज्ञतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीज्ञज्ञाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीधूलजस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहृत्तिसूरजी ज्ञये सो वीरज्ञगवानसे २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोन सूरिमंत्रका जाप किया तबसे कोटिकगड प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बने प्रज्ञावीक विद्यासिद्ध ज्ञये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तेसे १८ पट्टपर श्रीजिनचंडतूरी डुये इनोंसे चंडकुल प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसे ३८ में श्रीउद्योतनसूरिः ज्ञये सो एक तो निजशिष्य उर डुतरा साधुनुके ८३ अपने विद्यार्थी शिष्योको आचार्यपद दिया तबसे ८४ गड ज्ञया, यह ८४ गडोंके आचार्य बने प्रज्ञावीक धर्मोद्योतक जए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाठधारी आवूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः ज्ञये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः ज्ञये सो अणहलपुरपट्टणमें डुलैजराजाकी सज्जामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटशके राजाने खरतर विरुद्ध दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊ लऊलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बने कगेर इस वास्ते खरतर विरुद्ध पाया,

कोटिकगङ्ग वज्रशाखा चंडकुल खरतर विरुद्ध ऐसैं ४ जेद नवदी
 हित शिष्यकूं कहणा सरू जया, इनोके ४१ में पट्ट दिह्नीके बाद
 साह प्रतिबोधक जीवहिंसा बुनाणेवाले श्रीमालमदितियाण गोत्र
 प्रतिबोधक श्रीजिनचंडसूरिजी जये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके
 लघुभ्राता श्रीस्थंजणातीर्थे उर नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअजयदेव
 सूरिः जये, तत्पट्टे ४३ में अगरे हज्जार वागमीश्रावक प्रतिबोधक
 श्रीजिनवद्वजसूरिः युगप्रधान जये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रज्ञावीक
 युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः जये जिनोने चितोर उर उज्जयणी
 वज्रखंजसे सादीतीन कोटी विद्यान्नायकी पुस्तक निकालके साध
 कर बावनवार चोसठ योगणी एक लाख तीस हज्जार घर राजन्य
 वंशीयोको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उंसवाल बणाया, उस
 वखत तीनसे गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा
 सावणसुखा ठाजेरु इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत
 सातसे करीब होगये हे, वह गुरुका गुण लिख नहीं सकते, वह
 आज तक बने दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५
 में मणीधारी दिह्नीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दि-
 खलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंडसूरिः जये जिनो
 का दिह्नीके जरबजारमें दाग जया बना चमत्कार देख बादसाहा-
 दिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी जये, अनुक्रमे
 ५० में पट्टपर महाप्रज्ञावीक कुशलसूरिःजी जये, सो आचार्यपद
 पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संघमें बने२ उपगार
 किये, गुजरमल बोधरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप
 सें उहां जाकर दरियावमें तिराई ऐसैं परमोपकारी अंतमें फागुण
 वदि अमावशको स्वर्गवाश जये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-
 गट होय प्रथम दरशाण दिया, तिसपीठे जकलोकोंका उपगार

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपने आचार्यको इष्टदेव समजके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्ति स्थापन कर दादा जीके नामसे वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरुका जश प्रख्यात जया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी जये, इनोके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंडसूरि जये, जिनोने अकबर बादशाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका वताया इत्यादि दिखाकर अमारि उदघोषणा फिरवाई, सर्व वेवधारियोंकी हिंडुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाजद्वार कर पतितोंको ठांटा गहकी व्यवस्था करमचंद चढावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरि, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरि: इनोके समयमें आचार्य गह सागरचंडसूरि:सें जया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरि: इनोके समय रंगविजयसूरि:सें रंगविजय गह जया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंडसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनजक्तिसूरिजी जये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलालसूरिजी जये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनदर्पसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौजाग्यसूरिजी जये, इनोके समयमें महेडसूरिजीसें ममोवरागह जया, इनोके ७२ में पट्ट श्री जिनदंसूरि:जी जये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरि: जये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्तिसूरि:जी वर्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरि: महाराजके शिष्य म. होपाध्याय श्रीकैमकीर्तिगणि: जीने जं । यु । प्र । ज । श्रीजिनपद्मसूरि:जीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें बैठोत थोमे रहे ठर वने२ ज्ञानवंत क्रियावंतोंको ठर२ जगे चंतु-

मार्ग करणें जेजेगये, थोमे बहोत रहेथे सो जी गोचरी अंमिल जूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी ही बैठेथे, श्रीजीका अंमिलजूमीका हाथ धुलाणेकूं ठेवै, अपणे विद्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप विराजो समयका बना अपरवलीपणा हे सो गन्धमें साधू बहोत कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे ठेवे, दादासाहिबके वखत कैसेर ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसेर पंक्ति विद्यमान थे, अब यह गन्ध किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय, जिसमें सुपात्र तो बहोतही थोमे हैं, तब उपाध्यायजीने कहा महाराज यह बृहन्नर खरतरमें किसी बातकी कमी नहीं रहेगी अज्जी गुरुदेवकी कृपासें यतीर होजायेंगे, एसा कह दादासाहिबका ध्यान करते उपाध्यायसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे, गुरुके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह करणेंकुं जारहीथी, साधूसुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन नमस्कार कर गुरुके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीने शांतरक्ष का जरा बैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपुत्रोंने विवाहकी बांठा गेमे दीक्षा ली, दादासाहिबनें देवशक्तीसें सबोंको धर्मोपगरण वेष दीया, इन सबोंको लेकर श्रीआचार्य पास आये, सूरिस्वरनें कहा, हेमाजी, धारुकीधारु लेआये, उपाध्यायजीने कहा तथास्तु, मेरे शंतानी हेमधारु नामहीसे प्रसिद्ध रहे, उस दिनसें बृहत्साखा हेमधारु विस्तारजावकूं प्राप्त जई. यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची देशमें जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध हे, इस साखामें बनेश विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये अनेक प्रकारका न्याय टीका बगेरह विद्यमान हे, उस साखा

(ए)

में उपाध्याय श्रीनेमभूर्त्तिजीजिः तत् शिष्य उ । श्रीक्षेमभाषि
कजीजिः तत् शिष्य । पंथित प्रवर श्रीविनयनद्रजिजिः तत्
शिष्य श्रीपं । प्र । लब्धिद्वर्षजिजिः तत् शिष्य पं । प्र । श्रीधर्म
शीलजिजिः (श्रीताधूर्जी) तन्निष्य पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि
जिः तन्निष्योपाध्याय श्रीशुक्तिवारिधिः श्रीश्रुतिस्तारगणिजित्संगृहीत
रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविज्ञाश तन्निष्य पं । क्षमासौभाग्यमुनिः
चि । पेम्चंद चि । अमरचंदकी तरफसे यह ग्रंथ सब जीवोंके उ-
पगारार्थ पढायेकुं उपाधा । श्रीबीकानेरमें सं । १९५९ की ज्येष्ठ
वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ
स्थापन करी दे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीका-
नेरमें दिया ॥

४१ रु । श्रीनमसेठजी चांदमलजी ठंडा.

११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी जावक.

११ रु । श्रीतदारामजी गोलठा.

११ रु । मानमलजी केसरीचंदजी लाम.

११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलठा.

१० रु । श्रीराजरूपजी देवचंदजी नाइटा.

७ रु । श्रीआलकरणजी वरढिया.

११ रु । श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.

११ रु । श्रीतिरवारमलजी तातेम.

२५ रु । श्रीबालचंद कनीराम आनन मुमईवाला.

३ रु । श्रीवराजजी नाइटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाकूं मदत देंगे तो
ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जतीलोकोके केशयक शिष्य जैनपं-
थित तत्त्वज्ञानी बण जायेंगे, जैनउपदेशक बनें, हर जो नदी प-

दते हैं उनको हरतरे आवकलोक शिक्षा देकर पढ़ाणेकुं उद्यमवंत
 करणा यह काम आवक मातपिता तर गुरुलोकोंका हे, इस नही
 पढ़ाणेके सबब जैनके जेपधारी तर जेपधारणीयां अनेक कुर्मोंक
 वश नरकके पात्र तर धर्मकूं लजाते हे, क्यों की दशवी-
 कालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥) पढ-
 ली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछे दया पाव सकता हे ॥ ज्ञा-
 नीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ एसा
 कहते हैं हमारे जावे विगमे तो क्या तर सुधरे तो क्या, हम नतो
 इनोको गुरुकरके मानेगें न अन्नवस्त्र देंगें, देंगेंतो भानरहित कंग-
 लोकी तरे ॥ हम पढ़ाणेकी क्यों कोसील करें ॥ उत्तर ॥ यह स-
 मझसें तो जैनधर्म अमावश चंडताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें
 जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसे उद्योत करें, आद्विधी विवेकविलाशादि
 आवकाचार ग्रंथोंमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-
 र्मसें नृष्टजये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला कतरे,
 दस बीस आदमी एकठे होकर निंदा करणेसें विगारुका सुधार नही
 होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जरु विद्यावृद्धि हे, स्वज्ञाव कोई
 किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढ़ाणे हे कार्य सो अग्नी क्रिया चोथा
 पांचमा षष्ठा सातमा गुणगुणा चदशेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोंका हे सो विचारणा,
 प्रश्न । हम जतियोंको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोइ
 कृतघ्नी अपणे पितासे पिताज्ञाव नरुके तो उसका क्या कोइ कर
 सकता हे लेकिन् संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, ए-
 सेइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य
 तो जतीही हे, जतियोंसें पढ़ते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पनिष्कमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चौपी आदि वाचते हैं। यह तो चलता उपगार है, उर जतियोंके वनेरोनें तुमारे वने-
 रोंकों धितामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया है, यह उपगार सबसे
 वमा है ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते है लेकिन सुशाणे
 पढाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोकों केले
 माने ? ॥ उत्तर ॥ सच्च है, इस बातका निर्णय हमने आगे लिखा
 है सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोके चेला क्यों
 करते हैं इनोलेँ यथार्थ धर्म पलता नही ? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ
 धर्म तो यथाख्यात चारित्रकुं कहा है सो तो वज्ररुषजनाराच सं-
 हयान विन्नेद होतेइ गया, सामायक वेदोपस्थापनी यह दोय रहा,
 जिसमें जी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी
 प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग
 सूत्रोंमें वांचलें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकनीका व-
 रतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंजत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे
 पंचमकालमें वोही साधू है, जतियोंके चेला बशाणेमें इतना फायदा
 है—मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रम-
 का पाप ज्ञानपदे बाद आपसेंही ओरदेणा, केइयक इनोमें चोथा
 पांचमा ठा सातमादि गुणवाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस जव
 परजव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाज परजीवकुं
 सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थकर गोत्रकर्म बांधता है, ओमेमें
 विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोकुं पढाया नही उर गुरु मरे बाद गुरुके क-
 माये धनसें पापारंज करे तो वह पाप चेलेका गुरुकुं जरूर लगे
 या नही ? उत्तर—जिस मातापिताने मरणके वखत सर्व परिग्रह
 वोसिराय दिया उनोको पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंज
 सो करणेवालेकुं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

मर्म है, मातापिता गुरु शुज अनुष्ठान सिखलाते दे संतान बेसा करे तो जरूर शुजफल मिलै, जूआ चोरो आदि कुविसन गुरु सिखलाते नही इस बास्ते करै करावै अनुमोदे नसकूं पाप लगे ॥

षोकानेर वडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीराम-
लालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पास इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
लीलेचाणक्य स्वरोदय ज्ञाषा	१	०
करुणावत्तीस। दादासाहिबपूजा	०	४
मूर्तिमंरुषका अवच्छुत ग्रंथ सिद्धमूर्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगङ्गा तपगङ्गकी	४	०
आवकव्यवहारालंकार	१	८

विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवन्त रूपवन्त उर विद्यावन्त सुशी-
लही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्ष-
णवाला दूसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसेही होणा,
फेर हमेंसा शास्त्राच्यासी होणा, बहोत प्रनादवन्त नहीं होणा, देश
क्षेत्र काल ज्ञाव मुजब सदा गृहकी सारसंज्ञालसे जैनधर्मके दीप-
क होणा, वेजा चलणसे यतीयोंको दृढकणा, उनोके मन मुजब
नही चलणे देणा, लांठित पुरुषकी संगत नही करणी, उन्नय
काल प्रतिक्रमण करणा, अन्नरुके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य
जाप करणा, देवदर्शन उर आपनाचार्यादि पन्तिदेखण करणा, जती
जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेब उर संघ तारीफ करे ऐसे मार्गमें
प्रवर्त्तणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणादही करणा,
स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अथै सुशील पंथितो
की सोदबत करणी, क्रमावन्त जी होणा, समय जी सोचणा, उ-
पदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य उर
पंथितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख उर अयोज्ञ उर बुद्धिहीन अव-
स्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे गृहके अविष्टायक क्षेत्रपा-
ल मानजद्रादिकके साहायसे धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रा-
दिक विद्या लब्धिवलसे संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञावोक
होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोके पढने उर पढाणेवाले होणा,
वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गङ्गा के धोरी आधारजूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुद्ध अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके जंमर नही दे उहां पुस्तक लिखवाके जंमर करवाणा, अपणी निशायें हजारों रुपयेके पुस्तक लिखवाके आवकों पास लेणा यह साधूजंका धर्म नही, फकत अप-
णोंसें उठे उर नित्य पढिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकूं चहीये तो ज्ञानजंमरसें लेकर पीठा देशा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिस २ व-
स्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ आव-
कोंसें करवाके जेजादेणा, गृहस्थोंसें वैयावच्च कराणी नही, बती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंक्तियोंसें तो पहली ज्ञान पदे उर फेर कतघ्नी होकर उनही की पीठी हीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्क उर बीजजूत जतीही दे क्योंकि जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि आवक हैं, फेर इन जतियोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पमते सम-
यमेंनी होतेआए दे, तपा सत्यविजयजी जिनके शंतानमें बूटे-
रायजी उर आत्मारामजी वगेरे जये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपा-
ध्यायजी कामाकल्यणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे जये हैं उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरप्राचंदजी जायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं तो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनोंकी जग इन पुरुषोंके जतीही है इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण है, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीजी प्रमादी गढे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते है उर आजकलके साधूजी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती है इस वास्ते केइयक तो गाने दोष लगाते है केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें जाव करके पंचम गुणगणी है केइयक चतुर्थ गुणगणी, इसी तरे साधुजके सुजवही शुज जावसंयुक्त जतियोके जाव आश्री गुणगणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीजगवान कह सकते है तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुज बलवान है, लोचादि कायकेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके है, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधुजमें ज्यादा देखणेमें आता है, गणेशवालोंने आपसमें द्वेष रखते है, खरतर तथा तपोके जी देखणेमें आता है, जब कषाय विद्यमान है तो सिद्धिपद कैसे सधेगा बलीहारी उनहीकी है जिनोंने कषायकी चोकनी त्यागी है. किंवहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वशिष् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेखा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर बहोत गेटा लेणेसे धाय रखणी होती है उसकी प्राजगेट करणेकूं तब बहोतसे कमजात अपणी एबकूं ठिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते है लेकिन न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूमसं बात नही निकालते मुखोंके कहणेसे सोना पीतल नही वणता, डुष्टोंका स्वप्ना-

वही होता है सो गुणमें उद्युष्ट निकावते है, जतृहर लिखता है-
 सूरवीरकुं निर्दश कहते है गमखाणेवालेकुं मरुकम केते है ब्रह्म-
 चारीकुं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर ऐसे चेलेकुं मुखपाठ
 जैनधर्मका अवस्य कर्तव्य गुणाना निच फेर अक्षर वांचने सि-
 खाणा अक्षर जमाणे वोखखा पाटी लिखाणी फेर कौश व्या-
 करण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्वानुसार सीखाकर जी-
 वविचारादि षट् प्रकरण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोल-
 पट्टा मुंहपत्ती उधा मांसा चेहर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, म-
 स्तकके बाल केचीलें कतराणे या उस्तरेलें मुंमाणा, पादस्त्राण स्वे-
 त वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर
 देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग
 नही देश विरुधके कारण त्याल्य है, प्रवचनसारोद्धार ग्रंथमें का-
 रणविशेष साधुजंको पादस्त्राण पहरणोकी आज्ञा है, पुस्तक लि-
 खाणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूंधणा तिर्यणीके मोरे बणाणे
 माला बणाणी ठोकरे पढाणा मंत्रबिद्यामें कुशलाता रखणी सो ज्ञी
 जिनधर्मके ग्रन्थके नहीं, रातकुं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख
 यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पक्कमणा करणा, ठत्ती शक्ते
 सच्चित त्यागणा, राजदंमे लोकजंमे एसे रस्ते नही चलणा, कुलम-
 र्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखि
 लापनसा पीणेवालेकी संगत नही बेठणा, कुविसनीयोके संगतसे
 लंठन लगता है, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ-
 यात्रा चेला लेणा जनोकुं खिखाणा पिजाणा पंरुतोको रज्जगार देके
 चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय
 पापोंकी गह्री सुकृतकी अनुमोदना कर सब दोस्तराके परजव सा-
 धणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुलजबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोंमें लिखा है, उस गुणोंकूं धारणा चाहिये. गणसंगसूत्रमें साधूतकी प्रतिपाल करनेसे श्रावकोंकूं मातापिता मुख्य जगवंतने कहा है, बालक कसूर ज्ञी करे तो ज्ञी मातापिता अपने शंतानपर अंतरंगसे कभी द्वेष नहीं करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुलोकोंसे वर्त्तना चाहिये, जेबधारीसाधूतमें कोई तरेकी एव दीखपने तो एकांतमें हितशिक्षा देके बुझाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसे धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नहीं दीखेतो कर्मोंकी विचित्रता समझके एतोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावै एसी एव कोई नहीं होय नर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल जाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय नर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, नर जिनधर्मकूं लजावै एसा होयतो वहांसे रुकसत करादेणा. जिनमंदिर नर नृपासरेकी आवंद खरचकी सारसंज्ञाव जरूर करे, विनासंज्ञाव किये बहोतसे मंदिर नृपासरोकी तजबीजें बिगन रही है, जंनार लोक खागये हे, उती शक्ते इस बातका खयाल हरतरेसे करें, अपना लमका लमकीयोकूं संसारविद्या नर धर्मकी मजबूती करणेकूं पक्किमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार नर जैनन्यायशास्त्री अकर बचपणसे सिखलाणा चाहिये देव गुरु नर बनेर अकलवंतकी संगत करवाणी चाहिये, विरादरीमें सनातन कुलमरजावसे जो विपरीत आचारणा करै उसकी देखदेख आप न करणा, वणे जहांतक नणोंको ज्ञी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इहम लमकोंकूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसे दुसियार कर पीठे सिखलाणा क्योंकी इस अंग्रेजी इहमकी ज्यादा किताबोंके पढणोंसे पीठे उस,

कं सत्य सनातन दयार्थमका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा ठर अंग्रेजीमें चौथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ठढा गुलाबचंदजूकीं हम धन्य-वाद देतें हैं इस वजें वेलासक पढे ठर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती ठर तारीफ जिसने समजा है वोही ज्ञाणता है ठर लस-नकूं मुसककी खुसबो कब लग सकती है, जिनोको संसारमें अजी बंदोत जवधमण करणा बाकी रहा है मुनोको जैनधर्म किसी तरे रुचता नही, कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे है मानेजी तो कोन सच्चा ठर कोण फूग ? (उत्तर) हे जय्य हमने पेस्त-रही लिखा है न्याय जो जेतका सात जंगरूप है उसकूं समजा ठर वस्तुठ पर घटातेही धर्षार्थ मार्ग मिल सकता है, (प्रश्न) इ-तनी बुद्धि ठर परिश्रम तो करणेवाले घोमे हैं सो एसा न्याय प-ढके निश्चय करे सहजमें निश्चय केसें होय ? (उत्तर) जो इतना नही समजो तो जो रुपजदेवजीसें लेकर आज दिनतक जो स-नातन जैनधर्म चलता आया है वोही जैनधर्म सच्चा है बीच-में अद्वपङ्कोने अहंकारके वस मनोकाछिपत कंदसे एक नय पकरके अपने मत खरने किये है, षट्शास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार जगवान जङ्गलुस्वामी उमास्वाती ज्ञाण्यकार जिन-जद्रगणी हमाश्रमण इत्यदि पंचांगीकार जो समुद्र सरांषे बुद्धी-के धणी उनोंने जिस बातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समजणा, आवगधर्मवालों पर वसा उपगार रत्नप्रजसूरि ठर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया है सो केइयक पापारंज की बातें तो इस जातीके कायदेसेंही बंध होगई है, जैसे मद्यका पीणा ठर मांसादि अजक खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस धीरे-एसे उत्तम कुलमें निरबुद्धीयोने अधोगतीकी तरक बां-

धर्म पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरज्जायकी तरे क्यों हाथसें फेरते हो पीछे पड़तावा होगा थोभे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीछेमें बावन ठगुण हे ऐसे मांसमें देखो जैनतत्वादर्श ज्ञायाग्रंथ, यही चीज अग्री होती तो तुमारे वमरे लाखों राजपूत इस चीजोंको क्यों ठोमते लुर मुसलमानीको जौ धर्मकायदेसें इस बातकी सकंत मनाई हे इत्यादि, किंबहुना ॥ जैनपाठशालाओं स्थापन करणी पढ़नेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहिये, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं-
 नित तो दुस्मन जौ अग्री होता है मूल हितकारी जौ कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके। विनाका-
 रण द्वेष लुर अहंकारीपणा होता है बाकी तो कवियोंने कहा है—
 दुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पंचास ॥ जंशनी जणके क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ आवक जितनी चीज अपणे उपजोगमें लेना हे सो सब जेतम चीजका दान करता हे एक लो वर्जके उस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वयता ज्ञाग कर संसारका पार पुन्यानुबंधो पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकुं पुन्य बोलांवरूप हे, अन्न वस्त्र लुंघणी सज्या पात्रादिकसाधुल्लों देवे, देवकं निमत्त अष्टद्वय गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउत्तें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे कंजमणें दान करे, सा-
 धर्मी तथा जैनपंथितोंकुं नगदद्रव्य वस्त्र जोजनादिक बधायोण्य दान करै, तीर्थंकर जंगवान जौ सैवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म मुख्य हे जंगवतीजीने ग्रहस्थका अजंगद्वार कहा हे, जंगवतीसू-
 त्रमें तीन गुरु कहे हे सिद्धगुरु ? जो कारीगरी सिखलावे सो, क-
 लिंगगुरु २ जो लिखला पढ़लादि ७१ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु

३ सामायक पक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति-
पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य जत्ती करे ॥ अब
चउज्जंगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवंत देसैंविराधक । १ । कष्टरूप
क्रिया करणेवाला देशेंआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्वे-
विराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावंत सर्वेआराधक । ४ । ॥ इति
पत्रिगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोके करणे योग्य कर्तव्य देखणा
होय तो हमारा उपाया श्रावग व्यवहारलंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोके कर्तव्य ॥

मारवाममें प्रायें जैनमंदिर जोगगद्दी पूजते हैं उनोंमें इस
धखेंत प्रायें मिथ्यास्त्री वहोत सम्यकी वहोतही कम दे, गुजरातमें
जो जोगक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोंकों अन्य
देशमें गंधर्व कहते हैं. (प्रश्न) पूर्वोक्त जोगकोंनैं जैनधर्म कबसे
बोना हे ? (उत्तर) पहले श्रीशृषजदेवजीनैं जोगवंश स्थाप-
नकर अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे जतरजीनैं ब्राह्मणवंश
स्थापन करी, राजा सूर्ययज्ञनैं जोगवंशीयोको पूज्य जाण जिनमं-
दिरकी सारसंजाख सोपी लेकिन जिनमंदिरका चढापा मंदिरके
कूटेंपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणेंसे बलिदान जोगवंशी नही
खातिथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोंकों अनेक तरेंसे पर्व
महोत्सव परें इव्य वस्त्र जोजनानादिकसे राजा उर प्रजा सब संस्कार
करतेथे वो सब नेवमें देशमें जोगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये
बाद कच्ची कौड़ जैन कच्ची मिथ्यास्त्री ऐसे होते चलें आये, जब २४
वर्ष पहले छसीयामें जैनधर्म फैला तब राजाके पुरोहित राज-
ाके संग जोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प-
वगेरोंने जत्ती उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-
साधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

सैवत् बारेसेमें रामानुज माधवाचारी वगैरोंने विष्णु संप्रदाय नि-
 काही, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंको दादा दत्तसूरजो
 ने लाखों ठसवाल फेर वषायें, तब राजवीयोंने गुरुसे अरज की
 इस दयाधर्मके प्रज्ञावसे निर्दयीपणा हम लोकोंमें होगा नही राज्य
 तो सदा धिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा,
 गुस्ने कहा जो जिनमंदिरोकी जत्ती तर जतीगुरुकी सेवा अजह
 त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां
 तक पाटका मालक राजा तर सर्व पाटका मालक तुमलोक रहोगे
 तथास्तु वरदान एसाइ जया, राजाजने अपणे जार्ह स्वजनवर्गी
 ठसवालोकू प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथा-
 योग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौं रजवार्मोंमें ठसवालोकका राज्या-
 धिकार वषा तबसे ठसवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शि-
 वालयादिकोंका पूजारीपणा जौ जोजकोंको सोंपा वह जोगवंशी
 फेर पीठे धारेइ मिथ्यास्वी वषावेठे, विद्याहीनता होणेसें सब तरे
 की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण जोजकोंको कर्म कर
 करके मानणे लगे पूज्यज्ञाव उठगया, जो कज्नी जोजकलोक एसा
 समजते होंगे की हम तो अबलसेंही शैव बैष्णव थे (उत्तर)
 यह समजकी जूल हे हम पदली लिखदिया हे जैनधर्मकी बहु-
 लायतमें प्रजा जैन रही, बोधोक अमल बोद्ध, शांख्यादिकोंके अ-
 मलमें सांख्य, इत्यादि बातें तवारीकोसें जौ पाईजाती है लेकिन्
 जैनधर्म तर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतना जोज-
 कोंको जरूर समजणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी हो-
 ते तो राजा उपलदेव पमारादिक परमजैन तुमारा लाग़ा तर बहु-
 मान ठसवंश पर कज्नी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका जोर ठसं-
 बाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समजणा, पीठेसें

विष्णुमंदिरोंकी पूजा नर राजा वगैरोंकी देखादेखें संग दोष लगा, उसवालोंमें तिथि नहीं करी वध गया, इस तरेही बहो- तसें उसवंशी जी खुसामंदीसें इसरां धर्म धारलिया तुमकों क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखते हैं उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणांवट जी हे “ जिसकी खावे बाजरी जिसको झरणी हाजरी ” उसमें हरज करणोंसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगजकीसें जिनमंदिरमे जाऊ देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विंगरं जिनमूर्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा जी नही रहणे देणा, दीपक जलायेंमें ढकणा वगैरे देकर जीवरको करणी, जल शुद्ध गणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री ब- होतही विवेकसें रखणा, देवड्यकी चोरी नही करणी, दक्षमें हरकत मालणा नही, देव उरं गुरुकी सेवा करणोंसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो ज्ञावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवै तो जिसकी व दोखत रौटी आदि सड़कनों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें सड़कनों रुपे आवक देते हैं वो सब देवगुरुका प्रताप समज इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अखंविस्तरेण ॥

ऊपर उ उपदेश मैंने लिखे हे कोह कठोर लबज लिखों होंथे तो माफी मांगताहूं सरलज्ञावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके बापणमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे या गुरुसें शुद्ध करावेंमें मनशु- द्धिसें सर्व संघसें कृपा मांगताहूं सकल तो सदा गुणग्राहीही होतें

हैं, उनोंका मैं सदा आज़ार मानता हूँ ॥ यतः ॥ तथापि क्रियत
ग्रंथ, संतियद्यपि दुर्जना ॥ नहि दस्युज्जयाल्लोको, दैन्यवानिह वर्त्तते ॥
॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तो ज़ी करता हूँ यद्यपि डुरजन बहोत हे
चोरोके मरसे लोक कंगाल नही वृष वेठते तेसे १ मेने अपने
हाथसे लिख कर मुँवइ जेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें सं-
ग्रह मेने अनेक ग्रंथोंसे किया हे, बहोत चीजें पं । प्र । श्रीअवी-
रचंइजीभुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संघय हे,
ऋषभदेवजीका आदिअकर । र । महावीरस्वामीका । म । इन दोनोंसे
बना जो । राम । उनोके मध्यवर्ती सब जगवंतोंके गुणोंका विलास
इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे ॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सर्वईया ॥

दाशानुदाशाइवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुठंति ॥ मरु-
क्ष्णलीकट्पतरुःसज्जीया, झुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंताम-
णिः कट्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिजगत्याः किमु कामगया ॥ प्रसीदतः श्री
जिनदत्तसूरैः, सर्वेपदाइस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी,
जचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेचाल पिशाचराक्षसगणाः, नोरो-
गशोगोज्ञयं नोभारीतचविग्रहः, प्रभृतयः प्रीत्याप्रणत्पुञ्जैः ॥ य-
स्ते श्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाकरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-
र्वईया ॥ बावन वीर किये अपने वश, चौसठ योगण पाय ल-
गाई ॥ नाइण साइण व्यंतर खेचर, नूतरुमेत पिशाच पुलाई ॥
बीज तमक कमक जटक, अटक रहै जु खटक व काई ॥ कहे प्र-
मलीह लंघै कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुलाई ॥ १ ॥ इति ।
राजै शुंज गौरगौर, एसो देव नह । और ॥ दादौ दादौ नामसें, १
गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही जाव आय, पूजै लख लोक पा-
स्यासनकुं रांनमांजि, पाणी आन पायो हे ॥ बाट घाट शत्रु ६

हाट पुर पाठसमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-
ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम गुं
कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग उबरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कु-
शल देव देहरे, कुशल धन राजहुवारे ॥ पुन्य पसाथे कुशल कुशल
श्रीसंघ ज़पौजै, वाहण आवै कुशल कुशल घरं२ गाईजै ॥ जिन-
चंद्र सूरि पुद्गलपट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि
पायपूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वनो संसार
कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लखि घर कुशले
आवै ॥ कुशलै धन वरसंत कुशल धन धनरुवन्तो, कुशलै धोमां
पट्टकुशल पहरीय सुवन्तो ॥ एरसो नाम सदगुरुतपो कुशलै जग
रलियामणो, जट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणो करी घरं२
होय वधामणो ॥ १ ॥

रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ उँकारं बिँडुसंयुक्तादि मंगलाचरण ...	१
२ स्वरवर्ण	२
३ वर्णव्यंजनमाला	३
४ शिक्षावाक्य	३
५ संधिसूत्र	४
६ द्वितोपदेश	५
७ विद्मं जिन नाम सेले सती नाम ...	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नवकारमंत्र	१०
९ व्यापनाचार्यजीकी तेरेपनिलेइण ...	१०
१० खमासमण	१०
११ सुगुरुने शाता सुखपुढा	११
१२ मुहपत्ती पनिलेइणके पञ्चीस बोल ...	११
१३ अंगकी पञ्चीस पनिलेइण	११
१४ सामायकका पञ्चखाण	१२
१५ इरियावहि	१३
१६ तस्सउत्तरी	१३
१७ अन्नबूससिएणं	१३
१८ लोगस्स	१४
१९ वेसणोसंदिस्सार्णं	१४

२०	राई प्रतिक्रमण विधि...	१५
२१	सकलतीर्थनमस्कार...	१५
२२	जंकिचिंनामति० ...	१५
२३	नमोब्रुषं ...	१५
२४	जावंति चेइआई ...	१६
२५	जावंति केवि साहू ...	१६
२६	परमेष्ठिनमस्कार ...	१६
२७	उपसर्गहरस्तोत्र ...	१६
२८	जयवीयराय ...	१७
२९	परिक्रमण गायवेका अवसर ...	१७
३०	सद्वस्तवि ...	१७
३१	इच्छामिगमि ...	१८
३२	वंक्षपावत्तियाए ...	१८
३३	पुस्करवरदी ...	१९
३४	सिद्धापांशुक्षासं ...	१९
३५	वेयावच्चगरासं ...	२०
३६	संभासाप्रमार्जन ...	२०
३७	सुगुरुवांदणा ...	२०
३८	देवसियं आलोचं ...	२१
३९	रात्रि संबंधी अतिचार आलोचय ...	२१
४०	अगरे पापस्थानक आलोचय...	२२
४१	आत्रकवंदित्तासूत्र ...	२३
४२	वंदित्तासूत्र पीठिकी विधि ...	२६
४३	अधुगिठमि ...	२६
४४	आयरिय उवझाए ...	२६

४१	आवश्यकक्रीमुहपत्ती	२७
४६	सकल तीर्थ नमस्कार	२७
४७	परसमय तिमरतरणि	२८
४८	संसारदावाकी स्तुति...	२९
४९	काञ्चसगर्भे स्तुतिका पृथग् पाठ	२९
५०	अढाङ्कोसु द्वीवसमुदे	३०
५१	जय२ त्रिभुवन० सीमंधर चैत्यवंदन	३१
५२	सीमंधर स्तवन ॥ श्रीसीमंधर साहिबा...	३१
५३	सीमंधर स्तुतिकी एक गाथा महीमंरणा	३२
५४	सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन जय२ नाजिनरिंदनद	३२
५५	सिद्धाचल स्तवन ॥ सिद्धाचलगिरि जेव्या रे	३२
५६	सिद्धाचलशुद्ध शेरुंजगिरिनमीये रुषजदेवपुंररीक	३३
५७	पन्निखेइण विधि	३३
५८	सामायक पारनेकी विधि	३४
५९	जयवं दसणजदो	३४
६०	संध्याकालसामायक विधि	३५
६१	देवसी पन्निक्मण विधि	३६
६२	जयतिहुअण	३६
६३	जयमहायश	४०
६४	महावीर स्तुति॥मूरति मनमोहन कंचण को०	४०
६५	स्तुति कइयां पोठेकी विधि	४१
६६	भुतदेवताकी स्तुति...	४३
६७	क्षेत्रदेवताकी स्तुति...	४३
६८	वरकनक	४३
६९	नमोस्तु वर्द्धमानाय...	४४

४०	श्रीजिनर्विब जुहारो रे ञ्जिका ॥ स्तवन	४४
७१	तिस पीठे काञ्चसग करणोकी विधि ...	४५
७२	थंञ्जणापार्श्वनाथका चैत्यवन्दन ॥ श्रीसेदो०	४६
४३	थंञ्जणयद्विषपाससामिणो ...	४६
४४	दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना ...	४७
४५	दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधना	४७
७६	चञ्चकसाय चैत्यवन्दन ...	४७
४७	लघुशांतिस्तवन ...	४८
४८	कमलदल स्तुति ...	४९
४९	कल्याणकमला गेहं ॥ स्तुति...	४९
८०	सकलकुशलवल्ली ॥ स्तुति ...	५०
८१	सर्व जिन स्तुति ॥ दर्शनात् डुरि० ...	५०
८२	आदिजिन स्तुति ॥ सुवर्ष वर्षी गजराजगामिनं	५०
८३	सोदम जिनवर शांतिनाथ स्तुति चैत्यवन्दन	५०
८४	प्रह शम प्रणमुं ॥ नेमनाथ स्तुति चैत्यवन्दन	५०
८५	पुरसादाणी पास नाह ॥ स्तुति चैत्यवन्दन...	५१
८६	वंदू जगदाधार ॥ महावीर स्तुति चैत्यवन्दन	५१
८७	अथ पाक्षिकादि प्रतिक्रमण विधि ...	५१
८८	वृद्धदत्तिचार ...	५२
८९	अतिचारके पीठैकी विधि ...	६३
९०	जुवनदेवता स्तुति ॥ चतुर्वर्णाय संघाय...	६४
९१	दस पञ्चस्काण ...	६५
९२	पञ्चखाणोकी आगार संख्या ...	६९
९३	पञ्चखाणके आमारोका अर्थ ...	६९
९४	साधू प्रतिक्रमण सूत्र चत्वारिमंगलं ...	७२

९५	परकीसूत्र	४६
९६	अठपहरी पोसेकी विधि	९०
९७	पोसहका पञ्चस्काण	९१
९८	चोवीस थंरिला करणेका पाठ	९२
९९	थंरिलाकहाकरणा	९३
१००	पांचे शक्रस्तवे देववंदण विधि... ..	९३
१०१	पञ्चस्काण पारणेकी विधि	९५
१०२	राइ संथारा विधि	९८
१०३	पोसह पारणेकी विधि	९९
१०४	दिन जग्यां पीठै पोसह लेणेकी विधि	१००
१०५	रात्री चोपुदरी पोसेकी विधि... ..	१०२
१०६	ठाणेकमणे चंकमणे... ..	१०३

॥ देववांदणेमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके

प्रतिक्रमणमें कदनेको स्तुति ॥

१०७	दूजकी शुइ ॥ मदी मंगणं	१०३
१०८	पांचमीकी शुइ ॥ पंचानंतक०... ..	१०४
१०९	आठमकी शुइ ॥ चोवीसे जिनवर... ..	१०४
११०	मैानएकादशी स्तुति ॥ अस्य प्र०	१०५
१११	पार्श्वजिन स्तुति ॥ डेंडेकि चतुर्दशीकी... ..	१०५
११२	निरुपम सुखदायक ॥ नवपद स्तुति	१०६
११३	वलिर हूं ध्याऊं ॥ पजूषण स्तुति	१०६
११४	सुर असुर वंदिय ॥ नेमजिन स्तुति	१०७
११५	पापायांपुर चारुः॥ दीपमालिका स्तुति... ..	१०८

॥ शुई संग्रह ॥

११६	पंचविदेद विवै विहरंता॥वीसविहरमान स्तुति:१०८
-----	---

११७	समदमोत्तम वस्तुमहापणं ॥ पार्श्वस्तुतिः	१०९
११८	वरमुत्तियहार ॥ रुषज्ञस्तुति ...	१०९
११९	प्रणमुं परमपुरुष ॥ रुषज्ञस्तुति ...	१०९
१२०	विश्वनायक लायक ॥ अजितजिन शुद्ध...	११०
१२१	यदंद्गिनमनादेव० वर्द्धमानस्तुति ...	११०
१२२	वीरदेनं० वीरजिन शुद्ध ...	१११
१२३	मुरति मनमोहन० वीर शुद्ध ...	१११
१२४	चञ्चवीस जिन पंचकड्याणक स्तुति ...	१११
१२५	श्रीशैत्रुंजमंरुण आदिदेव ॥ सेत्रुंज शुद्ध...	११२
१२६	गिरनार शिखरपर० नेमजिनस्तुति ...	११२
१२७	सुख समकितदायक० शीतलजिनशुद्ध...	११३
१२८	मिदः चोविह सुरवर० समवसरणस्तुति...	११३
१२९	सेत्रुंजगिर नमिषै ॥ चैत्रीपूजमस्तुति ...	११४
१३०	समरं सुखदायक० नवपदस्तुति...	११४
१३१	शिवसुख दाता ॥ वीसस्थानकस्तुति ...	११५
१३२	अरिहंत सिद्ध पवयण० वीसस्थानक शुद्ध	११५
१३३	अनुपमगुण आगर० नवपद स्तुति ...	११६
१३४	विमंलाचल मंरुण जिनवर ॥ शेत्रुंजय स्तुति	११६
१३५	शांतिजिनेसर जगअलवेसर ॥ शांतिनाथ शुद्ध	११७
१३६	मन सुष वंदो ज्ञावे ज्ञविषण ॥ सीमंघर स्तुति	११८
१३७	पंच अनंत महंत गुणाकर० पंचमी स्तुति	११८
१३८	अरताथ जिनेश्वर दीक्षा ॥ अग्यारस स्तुति	११९
१३९	जयकारी जिनवर वासुपूज्य ॥ रोहणी स्तुति	११९
१४०	प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर ॥ मरुकी चौदश स्तुति	१२०

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

१४१	अजित शान्त स्तव प्रथम	१२०
१४२	जल्लासिकम ॥ द्वितीय स्तव लघु अजित शान्ति	१२५
१४३	नमिज्जण ॥ तृतीय स्तव	१२६
१४४	तंजयन ॥ गणधर स्तुति चतुर्थ स्तव ...	१२८
१४५	मयरदियं ॥ गुरुपारतंत्र्य ॥ पंचम स्तव	१३०
१४६	सिग्घमवहरिज ० षष्ठ स्मरणं	१३१
१४७	जवसगहरं स्तोत्र ॥ सप्तम स्मरणं ...	१३२
१४८	जक्कामर स्तोत्र	१३३
१४९	वनी शान्ति ॥ जोजोजव्या	१३७
१५०	जिनपंजर स्तोत्र	१४१
१५१	किंकपत्तरु ० वना नवकार	१४२
१५२	तिजयपद्भुत्त ॥ शप्ततिजिन स्तोत्र ...	१४५
१५३	दोसावहारदस्को ॥ नवग्रह ० पा० ...	१४६
१५४	जगद्गुरु नमस्कृत्य ॥ शान्ति स्तोत्र ...	१४६
१५५	कळ्याणमंदिर स्तोत्र	१४८
१५६	रुषिमंरुल स्तोत्र	१५३
१५७	लघुजिनसदस्त्रनाम	१५५
१५८	महिम्न स्तोत्र	१५८

॥ अथ तुटकर चैत्यवंदन ॥

१५९	सिद्धो विज्जाय चक्की ॥ सेत्रुंज चैत्यवंदन	१६२
१६०	श्रीसेटीतट मेरु धाम ॥ थंजणापार्श्व चैत्यवंदन	१६३
१६१	वंदू जिनवर वीहरमान ॥ सीमंधरजिन चै०	१६३
१६२	पूरब देखे दीपतो ॥ शिखरगिरी चैत्यवंदन	१६३
१६३	प्रथम महेश्वर पद्मनाभ ॥ पद्मनाभजिन स्तुति	१६३

१६४	अवामावामार्द्धे ॥ पार्श्वे स्तुति ॥ ...	१६३
१६५	अविरलशब्दधनोधा ॥ सरस्वती स्तुति...	१६३
१६६	दर्शनं देवदेवस्य ॥ सर्वजिन वंदन स्तुति	१६४
१६७	ज्ञाषामई दोहा ॥ वंदनस्तुतिरूप॥हस्याजेहसुल.	१६४
१६८	श्रीअरिहंत उदार कांति ॥ नवपद चैत्यवंदन	१६५

॥ अथ वरुण स्तवन संग्रह ॥

१६९	सुगण सनेही साजण श्रीसीमंघर स्वामि	१६५
१७०	सफल संसार ॥ दूजका वरुण स्तवन ...	१६६
१७१	प्रणमुं श्रीगुरु पाय ॥ पंचमीका वरुण स्तवन	१६८
१७२	पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥ पंचमी लघु स्त.	१७०
१७३	अमल कमल० अष्टमी लघु स्तवनं ...	१७१
१७४	विमलजिन म्दारे तुमसुं प्रीत ॥ विमलजिन स्त.	१७२
१७५	समवसरण बैठा जगवंत ॥ मूनइग्यारस स्त०	१७२
१७६	सारवमात नमूं शिरनामी ॥ शांतिनाथ स्तवन	१७३
१७७	चौरासी आसातनाका स्तवन...	१७५
१७८	चोवीसजिन देहमान स्तवन ...	१७६
१७९	चोवीसजिन आयुप्रमाण स्तवन ...	१७७
१८०	त्रेसठ शलाकापुरुष स्तवन ...	१७८
१८१	श्रीविमलाचल शिरतिलो ॥ संत्रुज स्तवन	१८०
१८२	सिध्याचल मंरुयस्वांमी रे ॥ सिध्याचल स्त०	१८१
१८३	कृष्णजिनेसर दिनकर साहिब ॥ स्तवन	१८२
१८४	वीर सुषोमोरी वीनती ॥ अमावसका म. स्त.	१८३
१८५	चोवीस दंरुक स्तवन ...	१८५
१८६	इरियावही मिठामिडुकम संख्या स्तवन	१८८
१८७	पंच समबाय स्तवन...	१९०

१८८	चौदे गुणवाशा स्तवन	१८५
१८९	नव-तत्व ज्ञाषागर्भित स्तवन... ..	१८९
१९०	दंभक ज्ञाषागर्भित स्तवन	२०३
१९१	जीवविचार ज्ञाषागर्भित स्तवन	२०६
१९२	समवशरणा विचारगर्भित स्तवनं	२१०
१९३	सुखा२ सेतुंजगिरिस्वामी ॥ रुषजदेव स्त०	२१३
१९४	पासजिनेसर जगतिलो ॥ दशमीका पार्श्वस्त०	२१३
१९५	मंगल कमला कंद ए ॥ अजित शान्ति स्त०	२१५
१९६	मुंदपत्ती पन्निदेहण स्तवनं	२१८
१९७	आलोयण दंभ स्तवनं	२१९
१९८	नंदीश्वर वावन जिनालय स्तवनं	२२२
१९९	अढाईदीप वीस विहरमान स्तवनं	२२३
२००	जात्रीमाजाइ आवूजीनी जात्रा करज्यो	२२७
२०१	सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवन...	२२८
२०२	जविजन पूजो रे शीतल जिनपती ॥ स्तवन	२३०
२०३	म्हारे धरमजिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो ॥ धर्म जिन स्तवन	२३१
२०४	राणपुरो रलियामणो ॥ राणपुरा स्तवन...	२३२
२०५	समकित द्वार गुंजारे पेसतां ॥ दर्शन, आ. स्त. २३३	२३३
२०६	आदिजिनेसर अरज सुखीजै ॥ स्तवनं	२३३
२०७	देवचंदजी कृत अजितजिन स्त० ज्ञानादिक गुण२३४	२३४
२०८	बे कर जोमी-वीनवूंजी ॥ आलोयण स्तवन	२३५
	॥ आनंदघनजी कृत स्तवनं ॥	
२०९	रुषज जिनेसर प्रीतम माहरो... ..	२३७
२१०	पंथिमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे...	२३८

२११	शंभुदेव ते धुर सेवो सवे रे...	...	२३९
२१२	अजितनंदन जिन दरशन तरसिये	...	२३९
२१३	सुमति चरण कज आतम अरपणा	...	२४०
२१४	शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी	...	२४०
२१५	मनमो किमही न बाजे हो कुंभु जिन...	...	२४१

॥ पार्थनाधर्मीके ठोटे स्तवन प्रतिक्रमणके ॥

२१६	श्रीशंखेसर पास जिनेस जेठिये	...	२४२
२१७	मनमोहन माहाराज	...	२४२
२१८	जयकारी जिनराज	२४३
२१९	वालेसर मुण् बीनती गोमीचा	...	२४३
२२०	अरज सुणीजै अंतरजामी	...	२४४
२२१	प्यारी पासकी देखी मूरति०	...	२४४
२२२	श्रीचिंतामण पासजी	...	२४४
२२३	जीवन म्दारा तेवीसमा जिनरायरे	...	२४५
२२४	सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो...	...	२४६
२२५	मोरा पास जिनराज	...	२४६
२२६	जिनजी महिर करीने राज	...	२४७
२२७	तूं मेरे मनमें प्रभू तूं मेरे दिखमें	...	२४७
२२८	मार्ग देशक मोहनो ॥ दीवाली निर्वाण स्त०	...	२४८
२२९	सैत्रुंज रुषज समोसरचा ॥ तीर्थमाळा स्त०	...	२४८
२३०	आज आपे चालो सहिया ॥ सिद्धाचल स्त०	...	२४९
२३१	महावीरस्वामीका पारणा	...	२५०
२३२	पद्मावती जीवरास खमाणा ॥ द्विवराणीपद्मा०	...	२५२
२३३	वाणी ब्रह्मा वादनी ॥ गोमीजीका वृध्वस्तवन	...	२५४
२३४	धम्मो मंगल मुक्किठं ॥ मंगलीक	...	२५९

२३५	आत्मरक्षा स्तोत्र	२५९
२३६	सुखकारण ज्वियण ॥ नवकार ढंद ...	२६०
२३७	सेवो पास संखेसरो मन सुधै... ..	२६१
२३८	बोर जिनेसर केरो सीस	२६१
२३९	झोल सती ढंद ॥ आदिनाथ आदिदेई...	२६२
२४०	गौतम स्तवन ॥ जय२ मंगल निधान ...	२६३
२४१	मुनिजेष वर्णन स्तवन	२६४
२४२	जबसे अद्धा शुद्ध जई ॥ अरिहंत स्तवनं	२६४
२४३	आवककी करणी ॥ आवक तुं ठवे० ...	२६४
२४४	गौतमस्वामीका रास... ..	२६६
२४५	सेत्रुंज रास ॥ श्रीरिसदेसर पाय नमी ...	२७२
२४६	शिखरजीका रास	२८०
२४७	मुनिमालका	२९१
२४८	बिन्नूजिन स्तवन	२९५

॥ अथ सिंहायसंग्रह माला ॥

२४९	उपदेशमाला पोसह सिंहाय ॥ जगचुक्रामणीजूठ२९७	
२५०	राइ संघारा पोसह सिंहाय ॥ निस्सिदी०	३००
२५१	निंदावारक सिंहाय	३०१
२५२	शीतासती सिंहाय ॥ जलजलती मीलती०	३०३
२५३	अनाथोरुषि सिंहाय ॥ श्रेणिक रयवादी०	३०३
२५४	प्रतिक्रमण सिंहाय ॥ कर पक्रिमणो जावसुं	३०३
२५५	मांगलिक सरणा चार	३०४
२५६	ढंदयरुषि सिंहाय	३०५
२५७	श्रीजिन वाणी रे धन्ना ॥ धन्ना रुषीसिंहाय	३०६
२५८	देव दाणव तीर्थकर ॥ कर्मसिंहाय ...	३०७

२५९	सात-व्यसन सिंहाय	३०८
२६०	चेलणा सती सिंहाय	३०९
२६१	वैराग्य सिंहाय ॥ जूखो मन जमरा कांइ जमे	३१०
२६२	बाहूवल सिंहाय ॥ राजतणा अति लोप्तीया	३११
२६३	अरणक मुनि सिंहाय	३११
२६४	इलापूत्र सिंहाय	३१२
२६५	मेघकुमार सिंहाय	३१३
२६६	असिंहाई निर्णय सिंहाय	३१४
२६७	बावीसअन्नक सिंहाय	३१५
२६८	गजसुकमाल सिंहाय	३१६
२६९	प्रष्ठाचंड सिंहाय	३१७
२७०	उतपति सिंहाय	३१८
२७१	आत्मनिंद्या	३२२
२७२	मंदिर जाणोकी उर दर्शन करणोकी विधि	३२४
२७३	चवदे नियम श्रावकके चितारणोकी विधि	३३१
२७४	श्रावकके बारे व्रत उच्चारण विधि	३३४
२७५	वीसस्थानक लघु स्तवन देववंदनमें कहणोका	३३८
२७६	चलोदेखोरी मधुवनको राव ॥ पार्श्वजिन स्त०	३३९
२७७	मेरो मन बस कर लीनो ॥ पार्श्वजिन स्तवन	३४९
२७८	सुणो सुजाण नेमजी ॥ स्तवन	३४०
२७९	नेमजिनंदजोसें आंखमली ॥ स्तवन	३४०
२८०	आज प्रभु तोरे चरण लागि	३४०
२८१	रात-गई अब प्रात होन जयो	३४०
२८२	तुम विन दीनानाथ दयानिध	३४१
२८३	जाव धर धन्य दिन० सिद्धचल स्तवन	३४१

२८४	श्रीनीर्मलर साहिवा ॥ स्तवन	...	३४१
२८५	मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो	...	३४२
२८६	सुण अरदासा सुगुण० पार्श्वजिन स्तवन		३४२
२८७	अंतरजामी सुण अलवेसर ॥ पार्श्वजिन स्त०		३४२
२८८	प्राण पियारा जीहो पासजी	...	३४३
२८९	महाराज वधाई वाजे वै ॥ सुमतिजिन स्त०		३४३
२९०	आज महोत्सव रंग रलीरी -	३४४

॥ पूजा प्रारंभ ॥

२९१	देवचंडजी कृत स्नात्रपूजा	...	३४४
२९२	अष्टप्रकारी पूजाके आठ श्लोक	...	३५०
२९३	सतरहजेदी पूजाकी विधि	...	३५२
२९४	सतरहजेदी पूजा	२
२९५	आरतिविधि तथा आरती ॥ जै जै आरति शां०		३६२
२९६	नवपदजीकी पूजामें चहिये सो चीजोंकीविधि		३६३
२९७	नवपदजीकी वर्नी पूजा	३६३
२९८	नवपदपूजामें कलसढालण त. वासुदेवपूजा वि.		३७३
२९९	दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा आठ श्लोक		३७४
३००	दादाजीकी आरती	३७५
३०१	सूतकविचार	३७५
३०२	असिज्ञाह विचार	३७७
३०३	जकाजक विचार	३७९
३०४	नव ग्रह दश दिग्पालकी आहुतान विशर्जनविधि		३८०
३०५	नवपद मंमल पूजा विधि	३८६
३०६	नवपद मंमल प्रतिष्ठा विधि जजमणे तक		३८९

॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

३०७	सत्तरसयको गुणनो...	३१७
३०८	सत्तरसय तप स्तवन...	४०३
३०९	कम्मपयरी तप गुणनो	४०५
३१०	कम्मपयरी स्तवन	४०७
३११	नवकार तप स्तवन	४०९
३१२	नवकार तप विधि	४११
३१३	पंच कल्याणक तप स्तवन	४१२
३१४	रुषिमंरुल सुणणेकी पूजणेकी विधि	४१५
३१५	जगवंतके नव अंगपूजन डुहा...	४१५
३१६	शिखाका डुहा ५	४१६
३१७	नवपदोका नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा थुई.	४१७
३१८	शंस्कृतवद् चतुर्विंशति जिन स्तुति	४२५
३१९	नवपद वृद्ध स्तवन ॥ सुरमणी शम सहुमंत्र०	४२८
३२०	नवपद स्तवन ॥ तीरथनायक जिनवरू रे	४२९
३२१	नवपद ध्यान धरो रे जविका ॥ स्तवन	४३०
३२२	जीया चतुरसुजाण नव० स्तवन	४३०
३२३	जिन नित नमो नित नमो नमो ॥ स्तवन	४३०
३२४	नितप्रति प्रणमुं ॥ नवपद थुई	४३०
३२५	अथ जैती संयुक्त नवपद उंली करण विधि	४३१
३२६	अथ तपस्या ग्रहणकरणेकुं गुरु पाश जाणेकी वि.	४४८
३२७	उंलीकी संक्षेप उजमणा विधि	४४९

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

३२८	प्रथम चैत्रमास पर्वाधिकार प्रथम १ उंलीतप	४५०
३२९	अष्टापद उंली करण विधि: मंरुलविधि स. दि. २.	४५३

३३०	महावीरस्वामी जन्मकल्याणक पर्व तीसरा	४५४
३३१	चैत्रीपूजन पर्वधिकार पर्व ४ देववन्दन वि०स०	४५४
३३२	चैत्रीपूजन स्तवन	४५६
३३३	नंदीश्वर तपस्या करण विवि	४५७
३३४	वैशाखमास पर्वधिकार आखातीज	४५८
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीशान्ति पर्वधिकार	४५९
३३६	आषाढमास १४ पर्वधिकार	४५९
३३७	आषाढमासमें बुटकर तपस्याधिकार	४६०
३३८	ज्येष्ठमासमें पर्युषण पर्वधिकार	४६५
३३९	आश्विनमासमें तुली पर्वधिकार	४६७
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वधिकार... ..	४६७
३४१	दीपमाला गुणनो करण विधि... ..	४६८
३४२	ग्यानपंचमी पर्वधिकार	४६९
३४३	ग्यानपंचमी देववन्दन विधि	४६९
३४४	ग्यानका वरु चैत्यवन्दन पुई	४६९
३४५	श्रीआचारांगसूत्र सिंहाय	४७१
३४६	श्रीसुयगडांगसूत्र सिंहाय	४७२
३४७	श्रीठाणांगसूत्र सिंहाय	४७२
३४८	श्रीसमवायांगसूत्र सिंहाय	४७३
३४९	श्रीजगवतीसूत्र सिंहाय	४७४
३५०	श्रीज्ञातासूत्र सि०	४७५
३५१	श्रीउपाशकदशासूत्र सि०	४७६
३५२	श्रीअंतगरुदशासूत्र सि०	४७६
३५३	श्रीअणुचरोववाइ सूत्र सि०	४७७
३५४	श्रीप्रभञ्ज्याकर्णसूत्र सि०	४७७

३५५	श्रीविपाकसूत्र सि० ...	४४८
३५६	इग्यारे अंग वर्षात सि० ...	४४९
३५७	मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी ॥ ज्ञानका स्त०	४७९
३५८	श्रुत अतहि जलो ॥ जिनागमस्तवनं ...	४८०
३५९	कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार...	४८०
३६०	कार्तिक १५ पर्वाधिकार ...	४८०
३६१	सिद्धगिरि स्त० ते दिन क्यारे आवस्यै...	४८२
३६२	नमो रे नमो सेजुंजगिरी ॥ स्तवनं ॥ ...	४८२
३६३	अंग ऊमादो मोने अतिघणो ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८३
३६४	जात्रा निनाएऊं करियै ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८४
३६५	जाव धर धन्य दिन० सिद्धगिरि स्त० ...	४८५
३६६	मार्गशिरमास पर्वाधिकार मौनएकादशी	४८५
३६७	मौन ११ देहसे कड्याणक गुणनो ...	४८६
३६८	पौषमासे वदि १० पर्वाधिकार ...	४९०
३६९	माघमासे मेरुत्रयोदशी पर्वाधिकार ...	४९१
३७०	फाड्युनमासे पर्वाधिकार ...	४९२
३७१	द्रव्यहोली जावहोली अधिकार ...	४९२
॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥		
३७२	होरी खेलिये नर बहुरन० ...	४९५
३७३	जय बोलो पाश जिनेशरकी ...	४९६
३७४	मधुबनमें जाय मची होरी ...	४९६
३७५	यादव मन मेरो हर लियो रे ...	४९६
३७६	इक सुणखे नाथ अरज मोरी ...	४९६
३७७	सांवरो सुखदाई जाकी छिब ...	४९७
३७८	नेना दरखाई आज तेरी सू० ...	४९७

(४१)

३४९	एसें फागुण मस्त महीनें चलोरी ...	४९७
३५०	नेम स्थामसें कहियो मोरी ...	४९८
३८१	होरी खेलो रे जविक मन थिर करै ...	४९८
३५२	होरीके खेलइया तूं तो प्रजु०... ..	४९८
३५३	वाके ममतानें धूम मचाई	४९८
३५४	समकित विन जीव जगत जटक्यो ...	४९९
३५५	विसरे मत नाम प्रजुजीको	४९९
३५६	नेम निरंजन ध्यावो रे	४९९
३५७	गढ गिरनारकी तलहटी	४९९
३५८	धन राजुज तेरो जगरी	५००
३८९	एसी होरी तो हो रही चंपानगरमें ...	५००
३९०	बलिहारी हुं विमलाचख गिरकी ...	५००
३९१	एसे प्रजु नेमनाथ मेरे दिख वसिया ...	५०१
३९२	संजव जिन सुखकारी हो लाला ...	५०१
३९३	सारो सोरठ देश दिखावो रसिया ...	५०२
३९४	जिनराज जुहारो, क्या वेठे जव हारो रे	५०२
३९५	मनमोहन गजगतकी कामनी... ..	५०३
३९६	रंग लगयो गुरु ज्ञान... ..	५०३
३९७	चिदानंद खेलें फाग... ..	५०३
३९८	होरी खेजो नेमसें धाय२	५०४
३९९	मेरी घटकी गागरिया रंगसें जरी ...	५०४
४००	वावो रुषज वेठे अलवेसर	५०४
४०१	गिरराजकुं हमारी वंदना रे	५०४
४०२	बरशन कियो आज सिखर गिरको ...	५०५
४०३	सिद्धगिरीजीको दरसन करले ...	५०५

४०४	मोहे अपणो रंगमें रंगदे ...	५०५
४०५	मेरे पारस प्रज्जुजीके रंगमंमपमें ...	५०५
४०६	रंग मन्थो जिनद्वार चाखो खेखिये होरी ...	५०६
४०७	नेमजीसे कहियो मोरी ...	५०६
४०८	माहाराजा तोरे मंदिरमें वरसे रंग ...	५०६
४०९	तोरी अंगिया वणी हे सुरंग ...	५०६
४१०	विंतामणि चित्त ध्यावो रे ...	५०६
४११	मत मारो पिचकारी रे ...	५०६
४१२	नेम मिले तो वातां कीजिये ...	५०७
४१३	आतमतत्व विचारो ज्ञानसे ...	५०८
४१४	लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी ...	५०८
४१५	दर्शन विन जीव संसार जन्म्यो ...	५०८
४१६	मत जोमो माने यूँही रे कोइ चूक बतावो ...	५०९
४१७	अटक्यो चित्त हमारो री जिनच० ...	५०९
४१८	मंगल राजै गिरनार... ...	५०९
४१९	मंगलकलश ...	५१०

॥ तपस्याविधि स्तवन संग्रह ॥

४२०	पांच कड्याणक टीप ...	५१०
४२१	पांच कड्याणक विधि ...	५१३
४२२	पखवासेको स्तवन... ...	५१४
४२३	पखवासा तप विधि... ...	५१६
४२४	दश पञ्चस्काण स्तवन ...	५१६
४२५	दश पञ्चस्काण तप विधि ...	५१९
४२६	वीश स्थानक तप स्तवन ...	५१९
४२७	वीश स्थानक तप करण विधि ...	५२१

४२८	वीश स्थानक गुणना चर कावसग प्रमाण	५२२
४२९	वीश स्थानक मन्त्र पूजन विधि	५२४
४३०	रोहणी तप स्तवन...	५२९
४३१	रोहणी तप विधि	५३२
४३२	उम्मासी तप स्तवन...	५३३
४३३	उम्मासी तप विधि...	५३४
४३४	वारे मासी तप स्तवन	५३४
४३५	वारे मासी तप विधि	५३५
४३६	अर्घाईत लब्धि स्तवन	५३६
४३७	अर्घाईत लब्धि तप विधि	५३८
४३८	चौदे पूर्व स्तवन	५३८
४३९	चौदे पूर्व तप विधि...	५४०
४४०	तिलक तप स्तवन	५४१
४४१	तिलक तप विधि	५४२
४४२	शोलिये तपका स्तवन	५४३
४४३	शोलिये तपकी विधि	५४३
४४४	पैतालीश आगम तप विधि तथा गुणना	५४४
४४५	पैतालीश आगम स्तवन	५४५
४४६	इग्यारै गणधर तप विधि	५४८
४४७	११ गणधर नाम गुणना	५४८
४४८	सर्व तपस्या गुरु पास अहण करण विधि	५४९
४४९	सर्व तपस्या पारण विधि	५५१
४५०	उपधान तप स्तवन...	५५१
४५१	संघ मालारोपण विधि:	५५३
४५२	संघमालाकी देववन्दन विधि	५५४

(४४)

४५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता ...	५५७
४५४	उपधान तप विधि ...	५५९
४५५	उपधान तप प्रवेश विधि ...	५६१
४५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि ...	५६३
४५७	वाचना विधि: ...	५६३
४५८	तप संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ...	५६३
४५९	पद्मिपुत्रा विगय तप पारण विधि: ...	५६३
४६०	कम्पाश्रमणादि प्रज्ञात संध्या पद्मिलेहण विधि: ५६४	
४६१	उपधान तप विवरण गाथा ...	५६६
४६२	शुभिमंरुल मंरुलपूजा विधि ...	५६६
४६३	शांतिकं पूजा विधि: ...	५६७
४६४	पंचतीर्थी आरती ...	५७०
४६५	चक्रेश्वरी आरती ...	५७१
४६६	चोपरु खेलण सिझाय ...	५७१
४६७	सेत्रुंज खेलण सिझाय ...	५७२
॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥		
४६७	टुक निजर महरदी क० ...	५७३
४६८	लोक चवदके पार किनारे ...	५७३
४७०	सखी सब बनठन ...	५७३
४७१	हो जिन तेरे दरशपर० ...	५७३
४७२	म्हारा रुषन जिनंदने ग० ...	५७३
४७३	मन लीनो हमारो जिन चरणारे ...	५७४
४७४	अजित२ जिन ध्यान ...	५७४
४७५	यह अरजी मोरी सहीयां ...	५७४
४७६	मुजरो मानी लीजे हो गो० ...	५७४

४७३	तुं मैना प्रभु इषा दिख वसणावे ...	५७४
४७४	हम जाणत हे तुम तारोंगे ...	५७५
४७५	पंथीना पंथ चलेगो ...	५७५
४७६	तेवीशमा जिनराज जोमे थारे कोण जुमेगो	५७६
४७७	केसें काज सेरे माहाराजविन केसें० ...	५७६
४७८	राजरी वधाई वाजैवै ...	५७६
४७९	मोतनकीमाला जितगल सोहे... ..	५७६
४८०	रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय ...	५७६
४८१	हे माय बांकनी करमगति जाय न कही	५७६
४८२	म्हाने प्यारो लागेठे जी थारो उपदेश ...	५७६
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे	५७७
४८४	वरषित वचन ऊरी०	५७७
४८५	या घरमें रंग०	५७७
४८६	चिहुं नर वदरिया वरसे	५७७
४८७	मोरवा पपइया बोले	५७८
४८८	समऊ नर जीवण थोरो	५७८
४८९	मत कर मान गुमान	५७८
४९०	निश दिन जोडं थारी वाटनी० ...	५७८
४९१	आज तो हमारे जाग्य वीरप्रभु आए हे	५७९
४९२	बावरो रे आज मनवो मेरो	५७९
४९३	रुषज विहारी थारीतो ठवि न्यारी हो ...	५७९
४९४	सुश मन होनहार न टरे रे	५७९
४९५	सहियोरी मिल चालो प्रभु पूजन काज...	५८०
४९६	मनवा जिनंद गुण गाय रे	५८०
४९७	चलो देखोरी मधुवनको राव... ..	५८०

५०२	राखूं रे हमारा घटमें	५००
५०३	तेरे दरशको चाह लग्यो	५००
५०४	थारे मुखमारी हो वारी राज...	५०१
५०५	एसी विध तेने पाई रे	५०१
५०६	मोहि अपणो कर जाणो प्र०	५०१
५०७	वीर प्रजु तेरी दोस्तीमें	५०१
५०८	जोर जयो अब जाग बावरे	५०१
५०९	जाग रे सब रैख विहाणी०	५०१
५१०	सांवरो सखनो सखी...	५०१
५११	आज रुषज घर आवै	५०३
५१२	अंगण कलप फढ्योरी	५०३
५१३	ऊठेने मोरा आतमराम	५०३
५१४	जज मन नाजिनंदन देव	५०३
५१५	आवो नेम रह जावो सदन	५०४
५१६	कीरतीबाग मन प्रेम लाग	५०४
५१७	अधम जग काम जये अगीवान	५०४
५१८	प्रजु तेरी सूरतिचा लागे जखी...	५०५
५१९	आयो सही अब जातं कहां	५०५
५२०	घमो२ पल२ ङिन१ निशदिन...	५०५
५२१	सुमतानें क्या कर मारा रे	५०६
५२२	तुम तो जखे विराजो जी ॥ शिखर गिरि स्त०	५०६
५२३	शिखर गिरिंजु जुहारो ॥	५०६
५२४	सांवरिया में दीगो दरश तिहारो ”	५०७
५२५	त्रिजुवन नायक वीरजी ॥ पावापुरी स्तवन	५०७
५२६	निरख हीया हरख जरे ॥ चंपापुरी स्तवन	५०८

५२७	में मुन्व देख्यो गोमीपासको...	...	५८९
५२८	किरपा करो रे गोमीपाश जिनैसर	...	५८९
५२९	मुजरा साहिब मुजरा साहिब...	...	५८९
५३०	घंट वाजै धननननन...	...	५९०
५३१	निरंजन सांझ्यां रे	५९०
५३२	एसे सहर विच कोनसा दिवान है	...	५९०
५३३	आय रहो दिलबागमें	...	५९०
५३४	रहो रे यादव दो धर्मिया	...	५९०
५३५	विराजो बंगलामें	५९१
५३६	क्रिष देखी हमारा स्वामी	...	५९१
५३७	अबधू सो जोगी गुरु मेरा	...	५९१
५३८	अबधू एसो ज्ञान विचारी	...	५९१
५३९	हंता तूं मानसरोवर वासी	...	५९२
५४०	बेरु नही आवै अवसर०	...	५९२
५४१	ये जिनजीके पाये लागे रे	...	५९३
५४२	चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो	...	५९३
५४३	अबधू निरपक्व विरला कोई	...	५९३
५४४	चलया जरूर जाकुं ताकुं केसा सोचया	...	५९३
५४५	समऊ परी मोहे समऊ परी...	...	५९४
५४६	जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार	...	५९४
५४७	रसना सफल जई मेंतो गुण०	...	५९४
५४८	राजु पुकारे नेम पिया	...	५९४
५४९	कोन किसीको मित्त	...	५९५
५५०	आदीसर जिनराज	...	५९५
५५१	गोमी गार्हये मन रंग	...	५९५

५५२	हारे हूं तो मोह्यो रे लाल ...	५९५
५५३	प्रभुजी सैं लागो मारो नेह ...	५९६
५५४	खतरा दूर करणा ...	५९६
५५५	रे जीव जिनधर्म कीजीये ...	५९६
५५६	सोई२ सारी रैन गमाई ...	५९७
५५७	चंदा प्रभुजीसैं ध्यान रे ...	५९७
५५८	ते शिवपुर गये रहे रे ...	५९७
५५९	म्हारे जले रे ऊगो बै दामो आजनो रे ...	५९७
५६०	घन२ ते दिवाली मारे आजनी रे ...	५९८
५६१	घन२ आजूनो दिन रलियामणो रे ...	५९८
५६२	म्हारे आज आनंद वधामणा रे ...	५९८
५६३	सवालाख टकानी जाय एक घन्टी ...	५९८
५६४	आवो२ने प्यारा नेम अम घर ...	५९९
५६५	मनमोहन पारस प्यारारे ...	५९९
५६६	मेरे मन जावनकी ठबि नीकीजी ...	६००
५६७	साहिब सुगुण सुपारससैं ...	६००
५६८	सांवरिया पासजी सुख दीजे ..	६००
५६९	तुम जजो रूपन प्रभु प्यारा जग० ...	६०१
॥ अथ लावण्या संग्रह ३४ घन १० ॥		
५७०	अगरुदू२ वजै चोधना ...	६०१
५७१	आखातीजकी लावणी ...	६०४
५७२	दीवालीकी लावणी ...	६०५
५७३	सीमंधरजिन लावणी ...	६०६
५७४	अजीमगंजमें सांवलियाजीकी लावणी ...	६०७
५७५	नेमनाथ मेरी अरज सुणीजै ...	६०८

(३९)

५७६	तुम जपो मंत्र नवकार ॥ जिनदाशादि कृतघन	६०९
५७७	चल चेतन अब उठकर०	६१०
५७८	तुम जजो जिनेसर देव	६११
५७९	तुं कुमति कलेसण नार खगी क्युं केहे...	६१२
५८०	तुम तजो जगतका ख्याल	६१३
५८१	दे गया दगा दिखदार ॥ नेमजीकी लावणी	६१४
५८२	मुखक बीच मगसी पारसका... ..	६१५
५८३	सुकुतकी बात तेरे हाथ रती ना रही रे...	६१६
५८४	तुम तज कर राजुल नार	६१७
५८५	आप समझका घर नहीं पाया	६१८
५८६	नमुं२ में गुरु निग्रंथकुं	६१९
५८७	करूं३ में ऐसे सदगुरु	६२०
५८८	तजूं४ में उन कुगुरुकुं	६२१
५८९	यो जिनदाश जूगे रे जूगे	६२२
५९०	जब तन दोस्ती हे इह मस्ती	६२३
५९१	अरज हमारी सुणो दीनपति... ..	६२४
५९२	मुक्ति जाणेकी मिगरी	६२५
५९३	अनुजव पद मिगरी... ..	६२६
५९४	नेमकी जान बणी ज़ारी	६२७
५९५	नेमनाथजीका चोमासा ॥ बई घटा ग०	६२८
५९६	सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ...	६२९
५९७	सज शोखे सिणगार हुई दुसियार ...	६३०
५९८	चंदावदनी मुखसे कहती गिरनारीकुं० ...	६३१
५९९	कोइ देख्या रे हो सांवलिया सादिव ...	६३२
६००	सुणजो वातां राव- सदाशिव... ..	६३३

६०१	केशरीयानाथजीकी माहात्मकी लावणी	६२९ ^१
६०२	पार्श्वप्रभु आरती लावणी	६३४
६०३	आदि जिनेस कीयो पारणो	६३५
६०४	अजितनाथजीकी लावणी	६३५
६०५	पिया मैरा गिरनार सिधाए ॥ ने० छा० ...	६३६
६०६	दीवाली स्तवन ॥ धन२ मंगल एह सकलदिन	६३७
६०७	मारे दीवाली अई आज प्रभु मुख जोवाने	६३७
६०८	पोढोश जी कृष्ण विहारी	६३८
६०९	कीजे मंगल ब्यार आज घर०	६३८
६१०	सिद्धाचल गिर जेटो रे जविजन	६३८
६११	जगतमें नवपद जयकारी ॥ लावणी ...	६३९
६१२	ध्यान धरो नवपदका चेतन	६४०
६१३	चलो सखी जिन मंदिरमें जग नवपद...	६४०
६१४	सांवरो लागे प्यारो प्रभु मनमोहनगारो ॥ दोरी	६४१
६१५	आज सुरंग धन वरसत दोरी... ..	६४२

॥ अथ बारे मासा ॥

६१६	मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें	६४२
६१७	नेमनाथजीका बारेमासा	६४४

॥ स्तोत्र बटकर संस्कृतबंध ८ ॥

६१८	सकल मंगल केलि० शीतल० स्तोत्र ...	६४६
६१९	विशद गुण विचित्रं० पार्श्व० स्तोत्र ...	६४६
६२०	यस्य ज्ञान दया० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र...	६४७
६२१	लक्ष्मी निदानं० पार्श्व० स्तोत्र ...	६४७
६२२	गोपीग्रामे० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र ...	६४८
६२३	विशदसद्गुण० पार्श्व स्तोत्र	६४८

६१४	श्रीमत्पार्श्वजिनेश्व० पार्श्व स्तोत्र	...	६४९
६२५	आद्य श्रीकृष्ण० चतुर्विंश० स्तोत्र	...	६४९
६२६	मंगलाष्टक स्तोत्र	...	६५०
६२७	परमात्मा स्तोत्र	...	६५१
६२८	नमस्कार स्तोत्र	...	६५१

॥ अथ तपगन्ध सामाचारी ॥

६२९	पुण्य प्रकाश आलोचन स्तवन	...	६५२
६३०	जरहेसरन। सिंहाय...	...	६५९
६३१	मन्दजिह्वायां सिंहाय	...	६६०
६३२	सकल तीर्थ वंदना	...	६६०
६३३	सकलार्हस्तोत्र	...	६६१
६३४	शान्तिकर स्तोत्र	...	६६३
६३५	सीमंधर चैत्यवंदन ॥ सीमंधर परमात्मा		६६४
६३६	श्रीसीमंधर जग धर्मा	...	६६५
६३७	सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ विमल केवल०	...	६६६
६३८	श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	...	६६६
६३९	परमात्मा चैत्यवंदन० परमेश्वर परमात्मा		६६६
६४०	सुखो चंदाजी सीमं० सीमंधर स्तवन	...	६६६
६४१	आंखनीये में आज० सेत्रुंजा स्तवन	...	६६७
६४२	विमलाचल नित वंदिये ॥ स्तवन	...	६६७
६४३	पंचतीर्थ संस्कृतबद्ध स्तवन	...	६६८
६४४	नेम राजुल सिंहाय ॥ पित्रुजी२ नाम	...	६६८
६४५	आम्रलो तूटाने सांयो० सिंहाय	...	६६९
६४६	आदि देव अरिहंत नमूं ॥ पंचती० चैत्यवं०		६७०
६४७	डविध धर्म जिन उ० दूज चैत्यवंदन	...	६७०

६४८	त्रिगुणै वैरा वीर जिन ॥ ग्यानपंचमी चैत्यवर्ष ०	६७०
६४९	महा सुदि आठमने ० अष्टमी चैत्यवंदन	६७१
६५०	शाशन नायक वीरजी ० इग्यारश चैत्यवंदन	६७५
६५१	सीमंधर जिनवर स्तुति ०	६७२
६५२	श्रीसीमंधर देव सुहंकर ॥ थोय ...	६७२
६५३	दिन सकल मनोहर ॥ बीजनी थोय ...	६७३
६५४	श्रावण सुदि दिन पंचमी ए ॥ पांचमनी थोय	६७३
६५५	मंगल आठ करी ० आठमनी थोय ...	६७४
६५६	एकादशी अति रूवनी ॥ इग्यारश थोय	६७५
६५७	स्नातस्या प्रति ० चवदशनी थोय ...	६७५
६५८	कढयाणकंदनी थोय... ..	६७६
६५९	श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ ० थोय ...	६७६
६६०	महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी ॥ थोय	६७७
६६१	पंचेदिय संवरणो	६७७
६६२	सामायक पारवागाथा ॥ सामायक पारवागाथा	६७८
६६३	सागरचढो ॥ पोसह पारवा गाथा ...	६७८
६६४	जगर्चितामणि चैत्यवंदन	६७८
६६५	अतीचारनी ८ गाथा... ..	६७९
६६६	विशाललोचन स्तुति	६७९
६६७	सुयदेवया जगवई ॥ स्तुति	६८०
६६८	जीसे खिचे साहू ॥ क्षेत्रदे ० स्तुति ...	६८०
६६९	सामायक लेवा विधि	६८०
६७०	सामायक पारवा विधि	६८१
६७१	दैवशिक प्रतिक्रमण विधि	६८१
६७२	राई प्रतिक्रमण विधि	६८३

६७३	परकी प्रतिक्रमण विधि	६८५
६७४	चन्द्रमाशी प्रतिक्रमण विधि	६८७
६७५	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि	६८७
६७६	पक्षिदेहण करवानी विधि	६८७
६७७	पञ्चस्काण पारवानी विधि	६८८
६७८	पुस्कलवद् विजयें जयो ॥ श्रीमंधर स्तवन	६८८
६७९	बीज तिथीनो स्तवन वक्रो ॥ प्रणमी शार०	६८९
६८०	पंचमी वृद्ध स्तवन ॥ सुत सिद्धारथ० ...	६९०
६८१	आठमनुं वृद्ध स्तवन ॥ मारे ठाम ध० ...	६९६
६८२	एकादशी वृद्ध स्तवन ॥ जगपतिनाथक०	६९८
६८३	महावीरस्वामीनुं हालरिथुं	७०१
६८४	निंदा म करज्यो कोईनी० सिद्धाय ...	७०३
६८५	देववांदवानो विधि	७०४
६८६	ज्ञानविमलजी कृत चन्द्रमाशी देववंदन...	७०४
	आदिनाथ चै० शोय स्तवन	७०४
	अजितनाथ चैत्यवंदन, शोय	७०५
	संज्ञवनाथ, अजिनंदन चैत्यवंदन शोय...	७०६
	सुनतिनाथ, पद्मप्रज्ञ, सुपार्श्वनाथ चै० शोय	७०७
	चंद्रप्रभु, सुविधिनाथ, सितलनाथ चै० शो०	७०८
	श्रीश्रेयांस, वासुपूज्य, विमलनाथ चै० शो०	७०९
	धर्मनाथ, शांतिनाथ चै० शोय स्तवन...	७१०
	कुंथुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ चै० शोय	७१३
	मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ चै० शोय	७१३
	पार्श्वनाथ चैत्यवंदन शोय स्तवन ...	७१४
	महावीरस्वामी चैत्यवंदन शोय स्तवन	७१६

	शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवन्दन श्रोय	७१७
	नीलमी रायण तरु तले ॥ सिध्वाचल स्तवन	७१०
	नेम निरंजन देव के ॥ गिरनार स्तवन...	७१०
	आवो आवोने राज अर्बुदगिरी स्तवन...	७२२
	अष्टापदगिरी जात्रा करणकुं ॥ अष्टा० स्तवन	७२२
	समेतशिखरगिरी जेटीये रे ॥ शि० गि० स्त०	७२३
६८४	सत्तरजेदी जिन पू० पर्यूषण श्रोय ...	७२४
६८८	नेमनाथजी बारेमाशो ॥ शीयाले खाटू०	७२४
६८९	अपठरा करती आरती जिन आगे ...	७२६
६९०	पहली तो समरुं हो० नेम राजेमती सिझाय	७२६
६९१	गोतमस्वामी पूजा करी ॥ मुक्ति वर्णन सिझाय	७२८
६९२	नेमनाथजीरो सिलोको	७२९

॥ अथ चोढालीया संग्रह ॥

६९३	विजयसेठ विजयासेवाणी चोढा० ...	७३१
६९४	इखुकार राजा नृगु प्रोदितरो चो० ...	७३३
६९५	दान शील तप जाव चोढालीयो ...	७३६

॥ अथ ढंद संग्रह ॥

६९६	सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो० ...	७४३
६९७	नवकार ढंद ॥ वंजित पूरे विविधपर० ...	७४५
६९८	घघरनीसाणी ॥ सुख संपत्ति० ...	७४७

॥ दादा गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥

७०१	विलाशै रुद्धि समृद्धि०	७५१
७००	वर लाढ विलाश० श्रीजिनदत्त० ...	७५२
७०१	रिसह जिनेसर० कुशलसूरि० ...	७५३
७०२	आयो सहु श्रीसंघ	७५४

७०३	सदगुरुजी थे सांजवो	७५५
७०४	दादा चिरंजीवो	७५६
७०५	गाजै जिनकुशल गनावै	७५६
७०६	सदाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरु	७५७
७०७	आयोइ जी समरंता दादो०	७५७
७०८	जाया जिकिसुं पूर रहो रे	७५८
७०९	पूजो जवि हितसुं कुशल सूरिवि	७५८
७१०	आज करो रे ठगाइ श्रीजिनकुशल	७५८
७११	मैं निरख्या गुरु महाराज	७५९
७१२	चरणकी चरणकी वारीजा०	७५९
७१३	अब मोहि दरशण दीजै कु०...	७६०
७१४	कुशल गुरु कुशल करो जरपूर	७६०
७१५	सदगुरु पूजण जावस्यां	७६०
७१६	श्रीसदगुरुजीतैं वीनती रे	७६१
७१७	सदगुरु वीनदयाल...	७६१
७१८	सुगुरु मेरी बेनिया पार०	७६२
७१९	देख्या मैं बरदा तिहारा	७६३
७२०	सदा सदाई कुशल सूरिंद०	७६३
७२१	जिनकुशल सूरिवि गुरु सदा नमो	७६४
७२२	अत्रपती थारे पाय नमैं जी	७६४
७२३	सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी...	७६४
७२४	सदगुरुके चरण चित लाचर...	७६५
७२५	होरी खेलो जविक सदगुरुके संग	७६५
७२६	गुरु पूज रचो रे सुझानी	७६५
७२७	सदगुरुजीके द्वार मची होरी...	७६६

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, तो लिखते हैं ॥ १ श्रीरुषज्जाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ वेर ऊलटा, ४ वेर सुलटा गिणै ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणैसँ एक उली होय, ४ उली करणैसँ यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंरुल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोच्चवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीवञ्चल करै, मंरुलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तैरे २ पहारकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनकी पूजामें ५२ आपना, ५२ नारेख, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसँ एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट इ व्यसँ अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महानेमें मिती वैसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिथा नामसँ पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीरुषज्जदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीठे बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसँ इक्षुरससेती जया. उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसँ सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोमि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अद्भुतदान २ एसी उदघोषणा ४, देवडुंडुनी वाजित्र ५, ऐसे पांच इत्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालूम नई. इस दानके प्रज्ञावर्से श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आशेसे वस्त्र आभूषण पहरके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पोछे गुरुके मुखसे एकासणादिके पञ्चस्त्राण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, उर जो मंगली कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जो जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उसोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै. शांतिजल लेजाके अपने घरमें गंटे. इस शांतिपूजाके कराशेसे मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कन्नी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी आवकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. (इससे) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्चन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्चतुर्मासकर्मनानि ॥ १॥ (अर्थ) जो जन्माएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥
 सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
 विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
 सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
 हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरे सरस्वती नमस्कार ॥
 सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।
 रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥
 चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
 हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकुं गाईहे ॥
 हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीढा टाले ।
 लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
 सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
 एसी माता शाता दानी धर्मसीहे ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ इ उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ न औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द
 ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क । ख ॥ क
 का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ ए ट ठ ढ णृ रु सृ गु
 सु ह्रं ॥ क्य ख्य ग्य घ्य ज्य ङ्य छ्य ज्य छ्य ज्य छ्य एय त्य थ ध्य
 न्य प्य ज्य म्य ज्य ङ्य श्य ष्य स्य ह्य द्य ॥ कृ य ब्र ज ल द्र प्र भ्र
 भ्र ब्र श्र स्त्र ह्र ॥ क ग्व एव त्व द्दन्व म्ब स्त्व श्व ष्व स्स्व ॥ कृ म्र भ्र
 ल्ल प्र भ्र श्र ण्य ल्ल द्य ॥ कम गम धम ञ्म एम ञ्म नम दम ष्म स्म
 झ द्म । के खे गे घे ॥ करक गग ग्य ङ्ङ । च छ ज झ ञ

[illegible]

स्वस्तिश्रो कृष्णवृहस्था । पिन्द्राङ्गास्युश्च स्वस्करा ॥
पृथ्वीभृदल्युश्रेष्ठाय । त्रम्यास्तेह्यज्ञमिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥
विद्वत्त्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
पंक्तिच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥
तस्मात्मूर्खं सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
नक्षत्रज्रूषणं चंद्रो । नारीणां ज्रूषणं पतिः ॥
पृथिव्या ज्रूषणं राजा । विद्या सर्वस्य ज्रूषणं ॥ ४ ॥
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥
न शोभते सज्जामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि तामयेत् ॥
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥
वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥ ७ ॥
अविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्वबांधवा ॥
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥
न च विद्या समोबंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च देवात्परंबलं ॥ ९ ॥
किं तथा क्रियते धेन्वा । यानस्तेन दुग्धदा ॥

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान्न ज्ञेयमान् ॥ १० ॥

उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न ज्ञातये ॥

पयःपानज्जङ्गानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

आत्मवत्सर्वज्जुतानि । विहंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना
तेषांद्वाद्वान्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोद्भूतः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्जो-
नामी एकारादीनिसंध्यकराणि कादीनिर्व्यञ्जनानि तेवर्गापञ्चपञ्च
वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवन्तोऽन्ये अनुनासिकाः ङ-
त्रणनमाः अनतस्थाः यरलवाः उष्माणः शषसद्वाः अःइतिविसर्ज-
नीयः कःइतिजिह्वासूलीयः पःइत्युपमानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-
परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरं व्यञ्जनं परं वर्णं नयेत् अनतिक्रमयन्-
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्प्रवृत्तिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्रवण-
समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अहतोभगवंतं द्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । स्तत्रयाराधकाः ॥

पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्वतु)

यद्वाजो पंचपरमेष्ठिपदहे सो ह्यनेसां तुमज्जव्यजीवोक्कं मंगलकरो, के-
सेकहे पंचपरमेष्ठि (अहंतो जगवंतं द्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री
अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोको हणे सो अरिहंत कहीजे.
फेर श्री अरिहंत केसेहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहे फेर अरि-
हंतमाहाराज केसेकहे जगवंतहे जगशब्दके अनेकार्थ कोपमें चौदे

अर्थदे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत जगवंतमेंदे एकतौ सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालकै फेर श्री अरिहंत जगवंत कैसेकहें (इंद्रमहिता) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें विराजमानहै सो बारे गुण ऐसेहैं प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहै रोग उर पसीना उर मैलरहित बना खसबोदार सरीर होताहै १ सासोश्वासमें कमलके फूल जैसी खसबो होतीहै २ लोही उर मांस गउके दुध जैसा स्वेत होताहै ३ आहार नीहारकी विधि अदृश्य होतीहै अर्थात् चर्म चक़ुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह चार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहै उर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये बाद होताहै अशोकवृक्ष १ जगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहै जिसकी गाय बेलनेसें रोगसोकादिक दूर होताहै १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोमे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । वीठ नीचा रहे पांखमी ऊपर रहे २ । (दिव्यध्वनि) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी १ ज्ञापामें यथावस्थित समजै एसा उनोंकों माखम देवेके जगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहैं सोही बात सिद्धांतोंमें कहाजीहै ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे । संदेहदेहिणंसमंजित्ता ॥ तिहुअणमणु-सासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ आमर ४ जगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्बर डोलता रहै ४ ॥ आसनञ्च ५ जगवंतके बैठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहै ५ ॥ जामंरुलं ६ जगवानके पिठामी भामंरुल रहे जिस्सें जव्यजीव जगवानके तरफ देखसके जगवंतके चारमुख चारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे उर तीन दिसामें जगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन भगवानके अतिशयसे च्यारोंहीदिसामें बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि-
खाइदेवे ६ ॥ डुंडुजी उ आकाशमें देव ते देवडुंडुजीवाजित्र बजावे
उ ॥ रातपत्रं उ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन उत्र
रहै उ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव
चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोजित एकहजार
आठ लक्षणालंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-
क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-
वलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका ज्ञाव देखतेजये पृथ्वीमंरु-
पर जलजिवोंके मनोरथ पूरणके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसें
विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो ? ॥
(सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार
हुन केसेकहे श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्ठकों शुद्धध्यानरूप
अग्निसें जस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-
नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक
जयादिकसें रहित चवदे राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-
मयमें जाणते उर देखतेअके लेकिन आत्मगुणोंमें मग्न रहेजये ऐसे
श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ (आचार्या-
जिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-
स्कार हुन केसेकहे श्रीआचार्यमहाराज उन्नीसगुणोंसें विराजमान
मुक्तिमार्गके साधक कर्मशास्त्रकेविराधक पंचाचारपालक अबुधजीव-
प्रतिबोधक कृमागुणजंभार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-
शासनके उन्नतिके करणेवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-
राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ (पूज्याउपाध्यायका श्रीसि-
द्धान्तसुपाठका) चौथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नम-
स्कार हुन केसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

एकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपदाणोवाले २५ गु-
णोंसें विराजमान ऐसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंधमें सदा मं-
गल करो ४ ॥ (भुनिवशाःस्तनत्रयाराधकाः) पंचम परमेष्ठिपदमें
सुख साधूमुनिराजजी केसेकहैं श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २
चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुप्ते-
गुप्ता ढक्कायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक
एसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें सोजित श्रीसंधमें सदा
मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थ ॥

॥ अथविष्णुंजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

१ श्रीकेवलज्ञानीजी	२ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥
३ श्रीसागरजी	४ श्रीमहायसजी
५ श्रीविमलदेवजी	६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी	८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी	१० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी	१२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी	१४ श्रीशिवगतिजी
१५ श्रीअस्तागजी	१६ श्रीनमिश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी	१८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी	२० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतजी	२२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी	२४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

१ श्रीऋषभदेवजी	२ श्रीअजितनाथजी
३ श्रीसंज्ञवनाथजी	४ श्रीअजिनंदनजी
५ श्रीसुमतिनाथजी	६ श्रीपद्मप्रभूजी

(८)

४ श्रीमुपार्थनाथजी	७ श्रीचंद्राप्रभूजी
ए श्रीसुविघनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी	१२ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशान्तिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी	१७ श्रीअरुनाथजी
१८ श्रीमल्लिनाथजी	२० श्रीमुनिमुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्थनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीमुपार्थजी	४ श्रीश्वयंप्रभूजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवभुतजी
७ श्रीनंदयप्रभुजी	७ श्रीपेढालजी
८ श्रीपोट्टिलप्रभूजी	१० श्रीशतकीर्तिदेवजी
११ श्रीसूत्रतनाथजी	१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी	१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीविभ्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी	१७ श्रीसंबरनाथजी
१८ श्रीयसोधरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२२ श्रीमल्लिप्रभूजी	२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी	२४ श्रीभद्रंकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी	२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीबाहूजी	४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी	६ श्रीस्वयंप्रभूजी

(ए)

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
ए श्रीसूरप्रज्ञजी	१० श्रीविभवजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहजी	१४ श्रीजुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रज्ञजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहाजद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसांश्वतातीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव ज्वन्ति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबाळाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
ए श्रीसुजद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीद्वंदतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी२ सतिर्योर्को त्रिकाव२ वंदना ॥

(१०)

॥ ईपरमोष्ठिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराह ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवद्यायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वसा
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणात्तणो ॥
७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं इवइ मंगलं ॥ ९ ॥
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण के थापनाजीकी थापना
करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पहिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्वहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥
२ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ प
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥
२ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछे गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने
खमा हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इहामि खमासमणो वंदिअं जावणिकाए निसीहिआए म
हणए वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ इच्छाकर जगवन् सुहराड, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा
बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोगोजी? स्वामी शाता ठेजी? इति ॥
॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारे गुरु कहे दे-
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अझुठि
ठमि कहे पीठें खमासमण देकें इच्छाकोरेण संदिस्तह जगवन्
सामायिक लेवा मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेह. पीठें इच्छं
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पढिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥
मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल
मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परि-
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पमिले-
हण नावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरुं ॥ १ ॥ वचनदंरुं ॥ २ ॥ काय-
दंरुं ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पमिलेहण जिमणे हाथसें करणी
॥ यह पच्चीस बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीस पढिलेहण लिखते हैं ॥

॥ रुष्णालेश्या ॥ १ ॥ नीलालेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या
॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलामे मस्तकें परिहरुं ॥

॥ रुद्धिगौरव ॥ १ ॥ रसगौरव ॥ २ ॥ शांता गौरव ॥ ३ ॥
ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ निद्याणाशब्द ॥ २ ॥ मित्रादंसर्ग-
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोष जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोष नाबे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन नाबे
हाथे परिहरुं ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुर्गन्ध ॥ ३ ॥ ए तीन
जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए
तीन नाबे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥
ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुद्रपत्ति पन्निवेदना संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खमा होय कें इच्छामि स्वमासमणका पाठ कहे कें
इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक संदिस्तावुं ? गुरु कहे
संदिस्तावेद ॥ पीठें इच्छं कहे कें फेर स्वमासमण दे कें इच्छा ॥
॥ सामायिक ठावुं ? गुरु कहे ठाण्ड ॥

॥ पीठें इच्छं कही स्वमासमण देइ थोमो जुकी तीन नव-
कार गणी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् पलाउ करी सामायिक
दंरुक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें
सामाईयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पञ्चखाण ॥

॥ करेमि जंतें सामाईयं, सावळें जोगं पञ्चखाण ॥ जाव
तिथमं पञ्चखाणामि ॥ दुविदंतिविदेणं मणेषं वायाए काण्णं,

(१३)

न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पन्निक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठे खमासमण दे के इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्
इरियावदियं पन्निक्कमामि ॥ गुरु कहे पन्निक्कमह. पीठे इच्छं कही ॥
इच्छामि पन्निक्कमिन् इरियावदियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावदियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावदियं पन्निक्कमा
मि ॥ इच्छं इच्छामि पन्निक्कमिन् ॥ १ ॥ इरियावदियाए विराहणाए
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणाक्रमणे बीयक्रमणे इरियक्रमणे
॥ उता उत्तिंग पणग दग मट्ठी मक्करु संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अजिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टि
या परियाविया ॥ किवामिया उद्विया गणान्ठा ठाणं संकामिया
जीवियान्ठा ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि उक्कनं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायञ्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं
॥ विसल्लोकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायण्ठाए ॥ वामि
काउस्सगं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं
उल्लुएणं वायनिसग्गेणं जमविए पित्तमुच्चाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचा
लेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एव
माइएहिं आगारेहिं ॥ अज्जग्गो अविराहित्ठ ॥ दुक्क मे काउस्सग्गो
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥
तावकायं गणेषं मोषेषं जाणेषं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इ
ति ॥ ६ ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सगं

करे. पीठें एमो अरिहंताणं कहे के काउस्तग पारकेँ मुखसेँ प्रगट लोगस्त कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्त ॥

॥ लोगस्त उज्जोअगरे ॥ धम्म तिठयेरे जिणे ॥ अरिहंते किच्छस्तं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उत्तज मज्झिअं च वंदे ॥ संजव मज्झिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्झंत वासु पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंशुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ नेभिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्झिअ ॥ वि हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिठय रामे पत्तीयंतु ॥ ५ ॥ किन्निय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्त उ त्तमा सिद्धा ॥ आरुग वोहिघाजं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयर ॥ आइवेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंजीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठें खमासमण देइ इच्छा ॥ जगवन् बैसणो संदि स्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कहे केँ वली खमा-समण दे कर ॥ इच्छा ॥ जगवन् बैसणो ठाजं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे केँ खमासमण दे कर इच्छा ॥ जग ॥ सिद्धाय संदिस्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कहे केँ वली खमासमण दे कर इच्छा ॥ जग ॥ सिद्धाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे केँ इच्छा खरे हो कर आठ नवकार कह कर सिद्धाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे केँ इच्छा ॥ जग ॥ पांगरणो संदिस्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा ॥ जग ॥ पांगरणो पणिग्घाजं ? गुरु कहे पणिग्घाएह ॥ पीठें इच्छं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवन्त अथवा पोसासहित श्रावक
वांटे तो “वंदामो” ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांटे तो, सि
खाय करेह, ऐसै कहे ॥ इति प्राजातिक सामायिक ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा ॥ ज ० ॥ चैत्यवंदन
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही जयउ सामि जियेउं सामि
इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसइ सेतुंजि उज्जति ॥
॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंरुण ॥ १ ॥ जरुअबेइ
मुणिसुबय, महुरिपास उह डुरिय खंरुण ॥ अवरविदेहिज तिष्ठ-
यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडुं जिण
सबेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उज्जोसउ सत्त-
रिसउ, जिणवराण विहरंत लप्पई ॥ नवकोमीहिं केवल्लिण, कोमि
सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं
वरनाण ॥ समणह कोमी सहस्स डई, थुणिज्जइ निच्च विहाण
॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, खण्णवा उप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउ-
सय ङायसीया, तिच्छुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं,
पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठवीस सहस्सा, चउसय अठ-
सिया पन्निमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिष्ठं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥
जाइं जिणविंवाई ॥ ताइं सवाई वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवन्ताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

जगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणां, पुरिसंसीहाणां, पुरि-
सवरपुंरुरीआणां, पुरिसवरगंधहट्ठीणां ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणां, लोग-
नाहाणां, लोगहिआणां, लोगपईवाणां, लोगपळोअगराणां ॥ ४ ॥ अन्न-
यदयाणां, चरुबुदयाणां ॥ मग्गदयाणां, सरणदयाणां, वोहिदयाणां
॥ ५ ॥ धम्मदयाणां, धम्मदेसियाणां ॥ धम्मनायगाणां, धम्मसा-
रहीणां, धम्मवरचान्नरंतचक्कवट्ठीणां ॥ ६ ॥ अप्पनिहय वरणाणां
दंसणा धराणां, विअट्ठ ठठमाणां ॥ ७ ॥ जिणाणां जावयाणां, तिन्नाणां
तारयाणां, बुद्धाणां बोहयाणां, मुत्ताणां मोअगाणां ॥ ८ ॥ सबन्नूणां
सव्वदरिसिणां, सिव मयल मरुअ मणंत मरुवय मवाबाह मपुणरा-
वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणां संपत्ताणां, नमो जिणाणां,
जिअ नयाणां ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ नविस्संति
पागए काले ॥ संपइअवट्ठमाणा ॥ सबे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं
ताइं वंदे ॥ इहसंतो तठ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥
सव्वेसिं तेसिं पणुत्त ॥ तिविहेण तिदंरु विरयाणां ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हस्तिस्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्जयः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवर्न ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-
रविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुल्लिगमंतं
॥ कंठे धारेइ जो सया मणुत्त ॥ तस्स गहरोगमारो ॥ डुड जरा
जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिउट्ट दूरे मंतो ॥ तुच्च पणामो वि बहु-
फलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुरुव दोहगं ॥

॥३॥ तुह सम्मत्ते लक्ष्मे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्रहिए ॥ पावति
विग्घेणं ॥ जीवा अयरामरे ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संयुत्तं महायस
॥ जच्चिप्ररनिप्ररेण हिअएण ॥ ता देव दिक्क बोहिं ॥ जवे जवे
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पञ्जावत्तं जयवं ॥
जवनिव्वेत्तं मग्गा, एुत्तारिआ इह फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चा
उ ॥ गुरुजणपूआ परत्तकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोत्तवय, ए सेवणा
आज्जव मखंसा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें
खमासमण दे के इच्छा ॥ ज ० ॥ कुसुमिण्डुसुमिण राई पाय
चित्त विसोहणात्तं काउस्तग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीठें इत्तं कह
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायचित्त विसोहणात्तं करेमि काउ
स्तग्गं ॥ अन्नत्त उत्तसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे के तोले नव
कार अथवा चार लोगस्तका चंदेसु निम्मलयर पर्यंत चिंतन
कर के काउस्तग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ
स्तग्ग पारोके मुखसे एक लोगस्तका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्तग्गमांहे ॥ सागर
वरगंजीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पम्किमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि के वांदिथें ॥ १ ॥ खमासमण
देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिथे ॥ २ ॥ खमासमण देइ
जंगम युगप्रधान वर्त्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले के वां
दीथें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ के सर्व साधुजीकुं वांदिथें ॥ ४ ॥ इत
तरे चार खमासमणसे पम्किमणां ठावी गोमालीयें बैठ के मस्त
क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहने दे कर ॥ रुक्मस्तविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसंदिस्तह इच्छं इत माफक.
न कहे ॥

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ उच्चित्तिअ उप्पासिय दुच्चिअ इच्छा
कारेण संदिस्तह जगवन् इच्छं ॥ तस्स मिच्चामि दुक्कमं ॥ इति
॥ १८ ॥ सबेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठें नमुत्तुणं कह केँ खमा होय केँ ॥ करेमि जंते सा
माइयं सावय्यं जोगं पच्चस्सामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठें इ
च्छामि काउस्सगं जो मे राइउ ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिगामि ॥

॥ इच्छामि गामि काउस्सगं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो क
उ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अक्कपो ॥ अक
रणिज्जो ॥ उच्चाउ ॥ दुव्विच्चित्तिउ अणाआरो ॥ अणिअिअवो ॥ अ
सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥
तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गु
णवयाणं ॥ चउन्हं सिक्कावयाणं ॥ बारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥
जं खंमिअं जं धिराहिअं ॥ तस्स मिच्चा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इ
हां देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठें तस्सउत्तरी ॥ अन्नउ उससिएणं कह कर आरित्रगु
द्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग करी
पारि केँ दर्शन गुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत
चेइआणं ॥ करेमि काउस्सगं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना
सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स
म्माण वत्तिआए ॥ बोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

(१ ए)

॥ १ ॥ सद्भाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुपेहाए ॥ वट्टमाणी
गमि काउस्तगं ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

पीठें अन्नउण कही चार नवकार अथवा एक लोगस्तका
उस्तग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुष्करदी ॥
यस्त जगवठ करेमि काउस्तगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुष्करदी ॥

॥ पुष्करदीवट्टे, धायइसंभे अ जंबुदीवेअ ॥ जरदे रवय
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपलविद्धं, सणस्त
सुरगणनरिंदमहिअस्त ॥ सीमाधरस्त वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल
स्त ॥ २ ॥ जई जरामरण सोगपणासणस्त, कद्धाण पुग्गलवि
सालसुहावहस्त ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्त, धम्मस्त सार
मुवल्लभ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेजो पयठ णमो जिणमए, नंदी
सया संजमे ॥ देयं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्तपूअ जावच्चिए ॥
लोगो जठ पइठिठ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वट्ठ स
सठ विजयठ, धम्मुत्तरं वट्ठ ॥ ४ ॥ इति ॥ ११ ॥ सुअस्त ज
गवठ करेमि काउस्तगं वंदणवसिआएण ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर
अन्नबूसिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्तका काउ
स्तग करे, काउस्तगके माहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे, सो आ
गे लिखेंगे, पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग मु-
वगयाणं, नमो सया सबसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं
देवा पेजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्त वट्टमाणस्त ॥ सं
सारसागराठ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ जज्जिनं सेल सिहरे,

दिक्का नाणं निसीहिआ जस्त ॥ तं धम्मचक्कवट्ठिं, अरिठनेमिं न
भंसांमि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं
॥ परमठ निब्बिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्महिठि समाहिगराणं ॥
इति ॥ करेमि काउस्सगं ॥ अन्नउण ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र
घादणां निमित्तें मुहपत्ती पन्निखेहुं ? गुरु कहे पन्निखेह ॥ मुहपत्ती
पन्निखेहे, पीठें बांदणां हे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा हुआ आधा नीचा नम कर
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजा-
णह मे भिउग्गहं. इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता
हुआ निसीहि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संभासा
प्रमार्जन कर कें उक्करु बैठ के नावे हाथमें मुहपत्ती ले कें नाबे
कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निह्लारु पूंजी, मुहपत्ती आगे
रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो
कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो जे किलामों
॥ इत्यादि पाठ कहे, पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्त्तन कर
कें खमा होकें पीठें पगसें जूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर
निकलकें स्वस्थान पर आवे. जहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुयुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामिं खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए
॥ अणुजाणह मे भिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं,
खमणिज्जो जे किलामो ॥ अप्पकिअंताणं बहु सुज्जेण जे, दिवसो

वश्कंतो जत्ता जे जवणिकं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-
सिअं वश्कम्मं आवसिआए, पन्निक्कमामि खमासमणाय ॥ देव-
सिआए, आसायणाए ॥ तिचीसन्नयराए जं किंचि मिआए, मण-
, वयडुक्कमाए कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-
जाए, सब्बकालिआए, सब्ब मिच्चोवयाराए, सब्बधम्ममाश्कमणाए ॥
आसायणाए जो मे अइआरो कउं, तस्स खमासमणो पन्निक्कमामि ॥
निंदामि गरिहामि अप्पपायं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वंइणें
आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउं वश्कंतो, तथा
चउमासीयें चउमासीउं वश्कंतो, पस्कीयें पस्को वश्कंतो, संवच्च-
रीयेसंवच्चरीउं वश्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेना ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकरेण संदिस्सद् जगवन् देवसियं आलोउं इअं ॥ आ-
लोएमि, जो मेण ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेना ॥

॥ पीडें रात्रि संबंधि अतिचार गुठ समक्क आलोवे, सो क-
हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय
॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख
तेजकाय ॥ सात लाख वातकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-
काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइं-
द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख
देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्थच पंचेंद्रिय ॥ चउदे
लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,
मादारे जीवें जे कोइ जीव हणयो होय, हणाव्यो होय, हणतां
प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मन वचन कायार्थे करी मिआ
मि डक्कन ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥
मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया
॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥
अज्ञातव्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥
परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द
॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,
सेवता प्रत्ये जलां जाण्यां होय, ते सबे हुं मनै, वचनै, कायार्यै
करी तस्स मिच्छा मि डुक्कनं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव
करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा
नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, ज्ञात
कथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, करावुं
होय, करतां अनुमोद्युं होय तो सर्व मन वचन, कायार्यै करके, दि
वस अतिचार आलोयणे कर के पक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स
मिच्छा मि डुक्कनं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पक्कमणोमें
दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ पीठें सबस्सवि राश्यं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां
इच्छाका ॥ जण ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-
थवित मागे ॥ गुरु कहे पक्कमह ॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि
डुक्कनं कह के संभासा प्रमार्जन कर के आसन पर बैठे के जि-
मणा गोमा जंचा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसें कहे कि
जगवन्! सूत्र जणुं? तव गुरु कहे जणोह ॥ पीठें इच्छं कहि के तीन
नवकार अरु तीन बार करेमि जंतै ॥ जण के इच्छामि पक्क
मिच्छं जो मे राश्यं इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

५. वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीठें खमा हो कें अष्टुदि
मि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सब सिद्धे, धम्माचरिए अ सबसादू अ ॥ इच्छामि
निक्कमिन्नं, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,
ते तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे
च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे
आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पन्निक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥
बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण
तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं
अणाज्जेणे ॥ अज्जित्ते अ निज्जे, पन्निक्कमेण ॥ ५ ॥ संका
विगिंठा, पत्तंस तह संखवोकुल्लिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,
निक्कमेण ॥ ६ ॥ बक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा
अत्तछाय परछा, उज्जयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव-
याणं, गुणवयाणं च तिसह मइयारे ॥ सिक्काणं च चउसहं, पन्नि-
क्कमेण ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईत्त ॥
आयरिअ मप्पसत्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह वंध ठविठेए,
उत्तरे जत्त पाण वुठेए ॥ पढमं वयस्त इआरे, पन्निक्कमेण ॥
१० ॥ बीए अणुवयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईत्त ॥ आया-
रिअमप्पसत्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त दारे,
मोत्तुवएसे अ कून्लेहे अ ॥ बीयं वयस्त इआरे, पन्निक्कमेण ॥
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईत्त ॥ आयरिअ
मप्पसत्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरुप्पज्जे, तप्पमिरूवे
विरूद गमणे अ ॥ कून्तुल कून्माणे, पन्निक्कमेण ॥ १४ ॥ चउठे
अणुवयंमि, निज्जं परदारगमण विरईत्त ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इत्त
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अशंग वीवाह तिठ्व

अशुरागे ॥ चउठ वयस्स इआरे, पन्निक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्थो अणुव्वए
 पे, चमंमि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्त पमायप्पसं
 गेणं ॥ १७ ॥ धणं धन्न खित्त वत्तू, रूप्प सुवन्ने अ कुविअ परि-
 माणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पन्निक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-
 माणे, दिसासु उट्ठं अहेअ तिरिअं च ॥ वुत्तिसइअंतरद्दा, पढमंमि
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ
 गंधमल्ले अ ॥ उवज्जोग परिज्जोगे, बोयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते
 पन्निवदे ॥ अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुब्बोसहि जत्तकणया,
 पन्निक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी, भानो फोनी सुवज्जए
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त जल्ल रस केस विसविसर्यं ॥ २२ ॥
 एवं खु जंतपिप्पुणं, कम्मं निज्जंणं च दवदाणं ॥ सरदद तलाव
 सोसं, असई पोसंच वज्जिजा ॥ २३ ॥ सच्चिणि मसंल जंतग, तण
 कठे मंत मूल जेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पन्निक्कमे० ॥ २४ ॥
 न्हाणू वट्ठण वन्नग, विलेवणे सद्धव रसगंधे ॥ वज्जासण आजरणे,
 पन्निक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण जोग अइ-
 रिन्ते ॥ दंमंमि अण्णए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे
 दुप्पणिहाणे, अणवडाणे तहा सइ विट्ठणे, ॥ सामाइअ वितहकए,
 पढमे सिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ
 पुगलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥
 संथा रुज्जारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणाज्ञोए ॥ पोसह विहि
 विवरीए, तइए सिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे, पि-
 हिणे ववएस मज्जेरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउठे सिस्कावए
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ डहिए सुअ, जामे असंजएस अणुकंपा
 ॥ राणेशव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ सादूसु
 संविज्जागो, न कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३३ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ
 आसंस पन्ने ॥ पंचविहो अइआरो, मा मच्च दुक्क मरणंते ॥ ३३ ॥
 काएण काइअस्स, पम्किमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-
 अस्स, सब्बस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिस्काणां,
 रवेसु सत्ता कताय दंभेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो
 अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्महिंति जीवो, जइ विहुपावं समायरे
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंबो, जेण न निदंभसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं पिहुसपम्किमणं, सप्परिआवं सज्जत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ,
 चाहिब सुसिस्किठ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुळगयं, मंत मळ
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं इवइ निविसं ॥ ३८ ॥
 एवं अणविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,
 खिप्पं हणइ सुसावठ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्तो, आलोइअ
 निंदिय गुरुत्तासे ॥ होइ अइरेग लहुठ, उहरिअ जरुव जारवहो
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावठ जइवि बहुरठ होइ ॥
 डस्काण मंत किरिअं, काही अघिरेण काळेण ॥ ४१ ॥ आलो-
 अणा बहुविहा, नयसंजरिआ पम्किमणकाळे ॥ मूल गुण उत्तर-
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि
 पन्नचस्स ॥ अप्पुठिंमि आरा, हणाए विरज्जमि विराइणाए ॥
 तिविहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति
 चेइआइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहुं ॥ ४५ ॥ चिर संचिय
 पाव पणासणीइ, जवसयसइस्स महणाए ॥ चउवीस जिण वि-
 णिग्गय कहंइ, वोळंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,
 सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्महिंति देवा, दिंतु समाहिं च
 बोहिं च ॥ ४७ ॥ पम्सिद्धाणं करणे, किच्चाणं मकरणे पम्कि-
 मणे ॥ असइहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खा-
 मेमि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मिच्छीमे सब नूएसु, वेरं

मङ्गं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-
छिअं सम्मं ॥ तिविहेण पन्निक्तो, वंदामि जिणे चउघीसं ॥ ५०
॥ इति ॥ १ए ॥ इहां प्रजातके पन्निक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं
कदना ॥

॥ पीठें दो वादणां देकर अवग्रहमांदिषकोज कहे ॥ इच्छा-
का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्पुठ्ठिमि अग्निंतर ॥ राइयं खामेमि ?
गुरु कहे खामेह ॥ संतासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, बे
बांइ पडिखेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ
गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तिर्यं ॥ इत्यादि
संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्पुठ्ठि ॥

॥ इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् अप्पुठ्ठिमि अग्निंतर देव-
सिद्धं खामेत्तं ॥ इत्तं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तिर्यं ज्ञे-
पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर
जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झविणय परिहीणं सुदु-
मंवा बायरं वा ॥ तुप्पे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि
डुक्कं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि डुक्कं कहे. पीठें बे वांदणां देई
जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय के आय-
रिय उवज्जाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्जाए ॥

॥ आयरिअ उवज्जाए, सीसे साहमीए कुलगणे अ ॥ जे
मे कथा कसाया, सेवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समण
संघस्स, जगवन् अंजलिं करिअ सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि
सबस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, जावन् धम्मो निदिअ
निअ चित्तो ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

प्रीतिं करेमि जंतो इहामि ठामि काउस्सगं तस्सुजरी० ॥
 श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउ-
 स्सगं अन्नदू० ॥ कहि कें काउस्सग करे, काउस्सगमें श्रीवीर-
 कृत ठम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ
 खोगस्सका काउस्सग करे, काउस्सग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ ठठे आवश्यक्की मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह
 ॥ मुहपत्ती पमिलेही बे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लक्ष नम-
 स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्वधरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्कत्तया देवलोके रविशशिज्जवने, अंतराणां निकाये,
 नक्षत्राणां निवासे प्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-
 गाद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमतीर्थिकराणां प्रतिदि-
 वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे
 कुंरुले इस्तिदंते, चक्रारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥
 शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥
 श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मते तारके
 वा कुलगिरिशिखरेऽद्यापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमल-
 गिरिवरे गुर्जरे रोहषाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे कि-
 तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिषनतटे हेमकूटे
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च ज्योटे ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिण्डले वा,
 नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहेले केरले वा ॥ माहाले
 कोशले वा विगलितसखिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥
 अंगे वंगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंगे
 वरतरद्रविमे उद्रियापो च पौंगे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविमुकवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुरव्या गजपुरमधु-
 रापत्तने चोक्तायिन्यां, कौशंब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जद्विजे ताम्रलिप्त्यां ॥
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे,
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने जूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये
 वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाळमलौ जंबुवृक्षे, चोक्ताय्ये चैत्यनंदे
 रतिकररुचके कौमुदे मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
 व्यंतरे स्वर्गलाके, ज्योतिर्लोके जवंति त्रिजुवनवलये यानि चैत्या-
 लयानि” ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,
 प्रोद्यत्कल्याणदेतुं कलिमलहरणं जक्तिजाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-
 तीर्थयात्राफलमतुलमखं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिश्चैः
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥
 इति ॥ ३२ ॥

पीठे गुरुमुखे पञ्चस्काण करि कै ॥ इच्छामोनि सद्धियं कहि
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेशमो खमासमणार्ण णमोऽईत्तिस्स ॥ कह कर.
 परसमय तिमिरतरणि ए तीन गाथा कहीजै सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणि ॥

॥ परसमय तिमिरतरणि, जवसागर वारि तरण वरतरणि
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार
 विहारकरि, दुर्न्तजावारिण्या निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसचमा
 वो, जवावई मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेइकारिकुनयागमरूढगूढ,
 संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-
 रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरखोजाखीढलोखा-
 लिंमालां, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलजविकारागार

(१९)

उत्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥
३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥
रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-
म सुरदानवमानवेन, चूलाविखोलकमलावलिमाहितानि ॥
रूिताजिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि
न ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवाहिंसा-
वरखलहरीसंगमागाददेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,
वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल
रिमला लीढलोलालिमाला, ऊंकारा रावसारा मलदलकर्मलागार-
ीनिवासे ॥ ऋयासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरामे, वा-
॥ ॥ देवेदे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा जणी, शक्रस्तव कहे. पीठें-स्वप्ना हो
अरिदंत चेइयांथें करेमि काठस्तगं ॥ वंदणवत्तिआएण अन्नबूण
। इत्यादि पाठ कहि कैं ॥

॥ काठस्तगमाहि एक नवकार चितवी ॥ एक आवक
काठस्तग पारी नमोऽर्हस्तिआण कहि ॥ एक गाथा स्तुति
॥, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,
ील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पञ्मावड धरणिंद ॥
२ ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक
कहे ॥ दूसरे सब काठस्तगमाहे रह्या हुआ सुये ॥ पीठें
अरिदंतांथें कहि कैं काठस्तग पारे ॥ इस तरे आगे पण
॥ ॥ पीठें लोगस्त कहे ॥ सबलोए अरिदंत चेइयांथें वंदण-

वन्ति० ॥ अन्नदू० ॥ इत्यादि कहि कैं ॥ एक नवकारका काउस्तग
करी पारि कैं दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयद्वड, कणयाचल अन्निराम ॥ मानुषोत्तर
नंदी, रुचक कुंरुल सुखगाम ॥ जुवणेशुर व्यंतर, जोइस विमाणी
नाम ॥ वर्ते ते जिणवर, पुरो मुज मन काम ॥ २ ॥

॥ पीठैं पुस्करवदीवड्हे कहि कैं सुयस्त जगवन्त० वंदण०
अन्नदू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग पारि कैं ॥ त्रीजी
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार उपंग ठ ठेद ॥ दस पयना
द्वारया, मूल सूत्र चउजेद ॥ जिन आगम पद्मव्य, सप्त पदारथ
जुत्त ॥ सांजलि सईदतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठैं सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ कह कैं वेयावच्चगराणं ॥
अन्नदू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग करी पारि कैं एमो-
उईस्सिद्धाणं कह कैं चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पञ्चमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट,
दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनज्जति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख
सुजस समापो, पुत्त कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीठैं नीचा बैठ कैं एमोदूणं ॥ कहि कैं ॥ तीन खमा-
समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांटे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें
मुहपत्ती देई अड्डाइजेसु कहे हैं, सो लिखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अड्डाइजेसु ॥

॥ अड्डाइजेसु ॥ दीव समुदेसु ॥ पन्नरससु कम्मजूमि ॥
जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुञ्जपनिग्गदधारा पंचमद्वयधारा ॥
अढारसहस्स सोलंगधारा ॥ अक्कयायारचरिचा ॥ ते सबे सिरस
मणसा मन्नएण वंदांमि ॥ इति ॥

(३१)

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो स्वमांसमण
तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सइ जगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं
जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिजुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय
जय करुणा शांत दांत, जवि जनहितकामी ॥ जय जय ईव नरिंद
सुंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-
जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करुं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोब्रूणं जावंति चेद्ब्रूयां जावंत केचि साहू ॥
॥ ठर यमोर्द्धस्तिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ तक कहि कै
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥
परम पुरुष परमेस्वर, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥
केवल ज्ञान दिवाकर, जागे सादि अनंत लाल रे ॥ आसक लो-
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र
चक्रीस्वर, सुर नर रदे कर जोर लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,
अणहंता इक कोर लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर
चसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-
शरो, जब जब देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उच्चारण
गे तुम्हें, दूर दूरो जब दुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्प मया करी,
देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीठें जयदीयराय० वंदसवचियाए ॥ अन्नबू० कहि

कैं ॥ एक नवकारका काजस्सग करे ॥ पारि कैं नमोऽर्हस्तिद्धा०
कही ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरुणं पुष्पसोवन्न वेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥
महाणंदलघ्नी बहुबुद्धिरायं, सुसैवाम सीमंधरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥ इम
होज श्रिता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय
प्रथम जिणंद चंद, जव दुःख विहरण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिपज जिणोसर ॥
अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पंकज
प्रीति धर, निशिदिन नमत कळयाण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं०
॥ एमोत्रुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ एमो-
ऽर्हस्तिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः तक कहि कैं श्री सिद्धाचल-
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेव्हां रे ॥ धन्य ज्ञाग्य हमारा ॥ विम-
लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोटी, कहेतां न आवे
पारा ॥ रायण रूख समोसर्था स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ घ०
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट
द्रव्यसैं पूजो जार्वे, समकित मूल आधारारे ॥ घ० ॥ २ ॥ दूर
देशाथी हुं इहां आयो, अवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उक्षरणा
बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ घ० ॥ ३ ॥ जाव
जकिसें प्रज्जु गुण गावे, अपना जन्म सवारा ॥ जात्रा करि
जविजन शुज्ज जार्वे, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ घ० ॥ ४ ॥
संवत अठारे ज्यासी मास आषाढे, वदि आठम जेसवारा ॥

प्रज्जुके चरण परतापसिंहमें, कमारतन प्रज्जु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५॥

॥ पीठें जयवीरराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नवू० ॥ कहिकें
एक नवकारकाकाउस्तग करी ॥ पारिकें नमोऽर्हस्ति॥ ० ॥ कहिकें ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रुषजदेव पुंनरीक ॥ शुज तपनो
महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिगुं
चैत्यवंदनांक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पन्निखेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ पन्नि-
खेहण संदिस्ताउं ? गुरु कहे, संदिस्ताएह ॥ बीजे खमासमणें ॥
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्निखेहण करूं ? गुरु कहे, करेह ॥
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निखेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे
अंग पन्निखेहण संदिस्ताउं ॥ अंगपन्निखेहण करूं, कहीके धोतिगुं
कपादोरो पन्निखेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसाउ
करी पन्निखेहण पन्निखेहावो जी. एम कही ॥ आपनाचार्य
पन्निखेह ररेके, अने जो गुर्वादिक आपनाचार्य पन्निखेहे, तो
पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्निखेहुं ? गुरु कहे पन्निखेहेह
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निखेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इ-
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उंहि पन्निखेहण संदिस्ताउं ॥ उंहि पन्नि-
खेहण करूं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पन्निखेहे ॥ पीठें पोषध-
शाला प्रमार्जी काजो, विधिगुं परठवी खमासमण देई इरियावही
पन्निक्खे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोज्जी
दृष्टिपन्निखेहण तो अवश्य करणी ॥ अवज्जी प्राये एही करते दि-
खते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पंढिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीठें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आचारो न मोत्तवो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊजो अको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमाळीयें बेसी मस्तक नमावो ॥ जयवं दससज्जहो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दससज्जहो ॥

॥ जयवं दससज्जहो, सुदंसणो थूलिज्जइ वयरये ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया जावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अज्जिगहो नाण माईणं ॥ २ ॥ उज्जमज्जो मूढमणो, कितिय मितंपि संज्जरइ जीवो ॥ जं च न संज्जरामि अहं, मिज्जामि डुक्कं तस्त ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चितिय, मसुहं वायाइ जासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिज्जामि डुक्कं तस्त ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, द्वियस्त जीवस्त जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधे लीधुं विधे कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायार्थे करी मिज्जामि डुक्कं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीठें पंढिलेहण करे. इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं मुहराइ पूढे ॥

दूसरा खमासमण देवे, ओजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें एतें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिठले पहरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पन्डितेहे, जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपन्डितेहण करे ॥ पीठें गुरु आगे अथवा आपनाचार्यजी आगे आवी जूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पन्डितेहुं ? गुरु कहे पन्डितेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पन्डितेहे ॥ पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक संदिस्ताणं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठाणं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे, इच्छकार जगवन् ! पसाठ करी सामायिक दंरुक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते सामाश्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञावण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहियं पन्डितमामि ? गुरु कहे पन्डितमेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ इच्छामि पन्डितमिच्छं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पन्डितमी ॥ एक लोगस्तका काउस्तग करी, एमो अरिहंताणं कही, काउस्तग पारी मुखें प्रगट लोगस्त कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पन्डितेहि वांदणां देई कहे, इच्छाकार जगवन् ! पसाठ करी पञ्चस्काण करावोजी, पीठें गुरु, दिवस चरिम पञ्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें आपनाचार्य समकें अथवा स्वमुखें, अथवा वेमेरा साथमी मुखें पञ्चस्के ॥ अने जो तिविहार उपवास कीघो हुवे, तो मुहपत्ती पन्डितेहि पञ्चस्काण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउबिहार उपवास हुवे, तो पञ्चस्काण करवुं ठे नही ॥ ते माटे मुहपत्ती नहिं पन्डितेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीठें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज० ॥ सिद्धाय संदिस्तां ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. पीठें इच्छं कही
वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय करुं ?
गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ जजो थको
मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणुं संदिस्तां ? गुरु० संदिस्तावेह
॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणुं ठां ?
गुरु कहे, ठाएह ॥ पीठें इच्छं कही जो शीत काळादि हुवे तो
खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पांगरणुं संदिस्तां ?
गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥
ज० ॥ पांगरणुं पन्निघां ? गुरु कहे पन्निघाएह ॥ पीठें इच्छं
कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥
चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे
॥ जिसमें पक्की तथा चनमासी तथा संवत्तरीके रोज तीस गाथा
कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पढ़ेलेकी, और दोय गाथा
पिठामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.
अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धनं तरि, जय
तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअकरि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-
घियाण चुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जियेस पास थंनणय
पुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत वदंति ऊत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, थण सुवन्न
दिरण पुण जणत्तुंजदिरज्जहिं ॥ पिरकहिं सुक्क असंखसुक्क तुह
पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहिं कुण महजिण ॥
२ ॥ जरजज्जर परिजुण वसणहुं सुकुटिण, चक्कुस्कीणखणखुण

निरसस्त्रिअसूखिण ॥ तद् जिण सरणरसायणेण वहु हुंति पुणसव,
 जय धसंतरि पास मइवि तुहुं रोगदरो जव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस
 मंतंतसिस्त्रि अपवत्तिण, जुवणप्पुअ अविह सिद्धि सिद्धि तुह
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवत्तिउवि जण होइ पवत्तिउ, तं ति-
 हुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुह पवत्तइ मंत
 तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुगखग्गरिउवग्गविगंजइ ॥
 उन्निअसत्त अणत्त घत्त निज्जारइ दय करि, डुरिअई हरउ सुपासदेव
 डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंजेइ जीमदप्पुहर सुरवर,
 रक्कस जक्क फण्हिं विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउइखुह
 पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ
 ॥ ६ ॥ पन्निअ अत्त अणत्तदिउत्तज्जिप्पर निप्पर, रोमंवं चिअचारु-
 काय किररनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पक्कालिअ
 कलिमलु, सो जुवणत्तयसामि पास मइमइउ रिउवलु ॥ ७ ॥ जय
 जोइअमणकमलजसलजय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद
 जुवणत्तयदिणवर ॥ जय मइमेइणि वारिवाइ जयजंतुपिआमइ,
 थंजणयठिअ पासनाइ नाइत्तणकुणमइ ॥ ८ ॥ बहु विहवसणुअवसणु
 सुसणु वसिण उप्पसहि, मुक्कधम्मुकामत्तकाम नर नियनियसत्तहि ॥
 जं ज्जायइ वहु दरिणत्त वहु नाम पसिस्त्र, सो जोइ अमण
 कमलजसलसुह पास पवत्त ॥ ९ ॥ जयविज्जल रणउत्थिरदसण
 अरहरिअ तरीरय, तरलिअ नयसविसणुसुसणुगगिरगिरकरुणय ॥
 तइसइसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मइविज्जविसज्जसइ पास
 जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवत्तिय,
 वाइपवाइपवूढरूढ उइदाइसुपुलइय ॥ मसणूहिंमसणसज्जण पुसअ-
 प्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचंद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥
 तुह कल्लाणमहेसुधंटेकारवपिस्त्रिअ, वल्लरमल्लमइल्लजत्तिसुरवरगं-
 जुस्त्रिअ ॥ इल्लुप्फलिअ पवत्तयंति जवणेहिमइसव, इय तिहुअण

आषाढचंद जय पाससुहुअव ॥ १२ ॥ निम्मल केवलं किरणनियं-
 रविहुरिअ तमपदयर, दंसिअ सबलषयवविठरिअ पहाजर ॥ क-
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरई निरुहर
 पासनाह जुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त
 माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्तबोह कंदलदलइरेणि ॥ जायइ-
 फलजरजरिय हरिय डुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह
 दिसिपास मइ मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवद्विउल्लूरि-
 यडुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डुग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुह-
 जणएणतुल्लजंणियदियावहु, रम्म धम्म सो जयज पास जय
 जंतु पिआमइ ॥ १५ ॥ जूवणारणनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,
 जोइणिपूअणखित्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उतठ सुनठ सुठ
 अवेत्तंठलचिहंदिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नइयल, फलिणी
 कंदलदलतमाल निद्धुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संत-
 ग्गअग्गंजिअ, जय पच्चस्कजिणेस पास थंजणय पुरडिअ ॥ १७ ॥
 मइमणतरलपमाणनेय वायाविविसंठलु, नियतणुरवि अविणयसदाव
 आलसविहिलंधलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तज, इयम-
 इमाअवहीरपासपालहिंविलवंतज ॥ १८ ॥ किंकिंकिप्पिण्णोयकलु-
 णुकिंकिंवनजं पिठ, किं वनचिठिठिठिठेवदीणयमविलंभिज ॥ का-
 सुनकियनिप्पल्ललज्जुअहोहिंडुहत्तई, तहविन पत्तजताण किंपि पई
 पहु परिचत्तई ॥ १९ ॥ तुहुं सामिइ तुहुं माय वप्प तुहुं
 मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु
 ॥ इजं डुहज्जरज्जारेअवराज राजलनिग्गगज, लीणज तुह कमक-
 मल सरणजिणपालहिं चंगज ॥ २० ॥ पइंकिविक्कयनीरोय-
 लोयकिविपावियसुहसय, किविमइमंतमहंतकेवि किविसादियसि-
 वपय ॥ किवि गंजिअरिजवग्गकेविजसषवल्लिअ जूअल, मइ अवही-

रहिकेणपास सरसागयवञ्चल ॥ ११ ॥ पञ्चवयारनिरीहनाहनिप्पस
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गत्तविमई पासनिर्-
 जण ॥ १२ ॥ इत्तं बहुविदुदत्तत्तत्तुहुं उदनात्तणपरु, इत्तं
 सुयणहकरुणिकगण तुहुं निरुकरुणकरु ॥ इत्तंजिण पासअसामि-
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मई ऊखंतइय पासन
 सोदिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग्ग विज्जागनाहमहुजोअणतुहसम, जव-
 णुवयारसु हावजाव करुणारत्तत्तत्तम ॥ समविसमह किंण नएइ
 नुविदाहुसमंतत्त, इय उदबंधव पासनाह मई पाळ शुणंतत्त ॥
 १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अस्सविकिविजुग्गय, जं जोइयत्तव-
 यारुकरइत्तवयारत्तमुक्काय ॥ दीणह दीणनिदीणजेणतुहनाहिण-
 चत्तत्त, तो जुग्गत्तअहमेव पासपाळहिमई चंगत्त ॥ १५ ॥ अहअ-
 स्सविजुग्गयवित्तेसकिविमस्सहि दीणह, जं पासविजवयारुकरइ
 तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण दुम्ह पसीयह,
 किं अणुण तंचेव वेव मामईअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पण्ण नहु
 होइ विदल जिणजाणत्त किं पुण, इत्तं उक्कित्त निरुत्तत्तवत्तउक्कहु
 उत्तसुयमण ॥ तं मस्सत्त निमित्तेण एण एत्तविक्कत्त लप्पइ, सच्चं जं
 नुत्तिकियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह
 मई अप्पपयात्तित्त, किक्कत्त जं नियरूवसरिसुत्तमुणुंवहुं जंपित्त ॥
 अणुण ण जिणजगत्तुहसमोविदस्सिणदयात्तत्त, जइअवगिणत्ति
 तुंहिजअहहकिंहोइसदयात्तत्त ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ
 पाइणवेळंवित्त, तत्तजाणुंजिणपास तुम्ह इत्तंअंगीकरिअत्त ॥ इयम-
 हउत्तिअ जं न होइ सात्तुदत्तहावण, रक्कंतह नियक्कित्तिणो य जु-
 क्कइअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिदजत्तदेवइयन्हवणामहुत्तत्त, जं
 अणत्ति य गुणगदण तुम्ह मुणिजणअणत्तिस्सत्त ॥ इय मई पत्ति-
 यसुपासनाहत्तंजणायपुरदिअ, इय मुणिवरत्तिरि अत्तयदेव विस्सवइ

आणिदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-
वनम् ॥

पीठे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाज्ञाग जय चितिय
सुह फलय ॥ जय समठ परमठजाणाय, जय जय गुरु गिरिम
गुरु ॥ जय डुहच सत्ताण ताणाय, थंजणयधिय पासजिण ॥ ज-
वियह ज्जीम जवठु, जव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जति संज
नमोठु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठे शक्रस्तव कह केँ खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं०
॥ करेमि काठस्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि पाठ
कह केँ काठस्सगमाहे एक नवकार चितवी एक आवक काठ-
स्सग पारी नमोऽईत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ
नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु
मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक आवक कहे, अरु दूसरे आवक सब काठ-
स्सगमें रहे थके सुने. पीठे णामो अरिहंताणं कह केँ काठस्सग
पारे, इसीतरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीठे लोगस्स कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंद-
णवत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ कहि केँ एक नवकारका काठस्सग करे.
पारि केँ उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित जर
पूरण, अजिनव सुरतरु कंद ॥ जवियणने तारे, प्रवदण सम नि-

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमं विशवा वीस ॥ यह दूसरी
गाथा कहि कैं काउस्तग पारे. पीठैं पुरकरवरदी० वंदणावतिआए०
अन्नबू० कहि कैं, एक नवकारका काउस्तग कर कैं, पारि कैं उक्त
स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, ज्ञाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने
गूँछ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न
शके एकंत ॥ समरं सुखसायर, मन गुह सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥
यह गाथा कहि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नबू० ॥
कही काउस्तग पारी उक्त स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे,
पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोनी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंये
गुण गण इम, श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन
स्तुतिः ॥ यह चौथी स्तुति कहि कैं बैठ कैं नमोबूखं कहे, पीठैं एरु
खमासमण देई कैं श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. प ठैं
श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमण दे कर श्रीवर्तमान आ-
चार्यजीका नाम ले कैं मिश्र चौथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र
इली तरें कह कर गोमाखीयें बैठ कैं मस्तक नमावी सबस्तवि
देवसियण इत्यादि कह कर तस्त मिठामि डुक्कनं कहे, परंतु 'इ-
ठ्ठाकारेण संदिस्सह इठ्ठं' ए पद न कहे ॥

॥ पीठैं खने हो कर करेमि जंते सामाइयण ॥ इठ्ठामि ठामि.
काउस्तगं जो मे देवसिद्धण ॥ तस्सुत्तरिण ॥ अन्नबूण ॥ इत्यादि
कहि कैं, आठ नवकारका काउस्तग करे. काउस्तगमांहे आजूना
चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, एमो अरिहंताणं कही
काउस्तग पारि कैं प्रगट लोगस्त कहे ॥

॥ पीठें संतासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांछणां मुहपत्ती पन्विलेहुं ? गुरु कहे पन्विलेहेह. पीठें मुहपत्ती पन्विलेहि कें वांछणां देवे. पीठें अवग्रहमांदिज ज्ञो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कहे कें अतिचार आलोवे. पीठें सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांराने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्थत कहे, तब गुरु पन्विकमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि उक्कमं कहि कें संतासा प्रमार्ज्जित जूमियें आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं एसा कहे. तब गुरु कहे जणोह. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंते जणाने इच्छामि पन्विकमिउं जो मे देवसिउं इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खमा हो कर अणुछिन्तिमि आरादणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांछणां देवे, अरु अवग्रहमांदिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अणुछिन्तिमि अग्निंतर देवसियं खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीठें विधिसेंती दो वांछणां दे कर आथरिय उवक्षाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि जंते सामाइयं इच्छामि ठामि काउस्सगं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउस्सगं अन्नबू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग करी पारि कें पीठें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदणवत्ति० अन्नबू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुस्करवरदीवळे कहि कें सुयस्स जगवन् ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नबू०

॥ कहि कैं एक लोःस्तका काउस्तग करे, पीवैं पारि कैं सिद्धाणं
बुद्धाणं कहि कैं देवावज्जगराणं न कहे, पीवैं सुयदेवयाए
करेमि काउस्तगं अन्नदू० ॥ कही एक नवकारनो काउस्तग करे,
पीवैं गुरुका योग न होवे तो एक आवक काउस्तग पारिकैं एमो
अर्हस्तिद्धा० कहि कैं श्रुत देवताकी स्तुति कहे, गुरु हुवे तो गुरु
कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कैं काउस्तग पारे, अब श्रुतदे
वताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाइ, द्वादशांगी जिनोन्नवा ॥ श्रुतदेवी
सदा मद्भ्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीवैं खित्तदेवयाए, करेमि
काउस्तगं ॥ अन्नदू० ॥ कहि कैं, एक नवकार चित्तवी पूर्ववी
परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगतः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाङ्गा
साधयंतस्ता, रक्तु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीवैं खना हुवा एक नवकार कही, संतासा प्रमार्जि
उकमूवैठ कैं बडे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेदेह.

॥ पीवैं मुहपत्ती पमिलेही विधिगुं दो वांदणां देइ हैं वर-
कनक कहे, सो लिखते है.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ हैं वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय
मोहं ॥ सिचरि सयं जिणाणं, सहामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥
हैं जवणवय वाण मंतर, जोइसवातविमाण वासीय ॥ जे केवि
उठदेवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पञ्चक्राण नहिं लिया
होय तो करे ॥ सामायिक जोइसजो पमिक्कमणां, वांदणां, काउ-

स्सग्ग, पञ्चस्काण, उ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, उंगे अ
धिको अक्कर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायायें
करी मिळामि डुक्कं ॥ इत्थामो अणुसट्ठिं ॥ कही बैठे. प ठें गुरु
एक स्तुति कहा पीठें आवक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें एमो
खमासमणाय ॥ एमोऽर्हत्सिद्धा ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥
इत्यादि तीन स्तुति कहे. आविका एमो खमासमणाय, कही सं-
सारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा.
समोक्काय, परोक्काय कुंतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या,
ज्यायः कमकमलावलिं दधत्या ॥ सहस्रैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं
संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, क-
रोतिथो जैनमुखांबुदोक्ततः ॥ स शुक्रमासोन्नववृष्टि सन्नजो, ददातु
तुंष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरजिगंधा लीढजृङ्गोक्कुरङ्गं,
मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभ्रति ॥ विकच कमलमञ्चैः साऽ
स्त्वर्चित्यप्रज्ञावा, सकलसुखविधात्री प्राणज्जाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीठें एमोबूझं कहि कें. एक
आवक खमासमण देई कहे:-इत्थाका ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन
जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इत्था ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्त-
वनजणुं स्तवन सांजलुं ? गुरु कहे, जणोह सांजलेह. पीठें आसन
पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा ॥ कहि कें बनो स्तवन कहे, सो लि-
खते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविकां श्रीजिनबिंब जुंदारो, आतम परम आधारो रे
॥ ज० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काई ॥ आगम वाणनि अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणो, ते कहिये किम जाणो
 ॥ जूला तेह अज्ञानें जरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिठाणो रे ॥ ज०
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबरु आवक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पास्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उप-
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि
 मजार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पास्या विरतिप्रकार रे ॥
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें
 अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मजार
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोनी, करिये केम अकाज रे
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठेह ज्ञाता अंगें रे
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी
 चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य ज्ञाव बिहुं जेदें कीनी, जीवाजिगम ते
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,
 कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम
 घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रज्जु
 पास पसार्ये, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनदाज सुगुरु उपदेशें,
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंता-
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीवैं तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व सांधु वांदी,
 अढाइजेसु कइनां, फेर खमासमणो ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥

देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं कान्तस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीठे इच्चं कदि के देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि कान्तस्सग्गं अन्नदूण ॥ कदि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, पारी के लोगस्स कहे.

॥ पीठे खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-
होवइव उमावणत्तं करेमि कान्तस्सग्गं ॥ अन्नदू० ॥ इत्यादि कहा.
शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, पारी के
प्रगट लोगस्स कहे. पीठे खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्सत्तं फेर
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजे. पीठे खमा-
समण देई के ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्थवंदन करुं जी ॥
ऐसा कह कर थंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्थवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्थवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-
न्त्रयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिजिर्जलैः शिव
फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो-
बाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लो शिरोमणिः ॥
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठे नमोदुषांसें लेके जयवीरराय सुधी कहे ॥ पीठे
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंजणयद्विय पास सामिणो०'
इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयद्वियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंजणयद्वियपाससामिणो सेत तिब्बसामीणं ॥ तिब्ब
समुन्नथ कारणं, सुरासुराणं च सबेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्तं,
कान्तस्सग्गं करेमि सत्तोए ॥ जतीए गुण सुद्वयस्स, संघस्स समुन्नथ
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीधनंजया पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काठ-
स्तगं ॥ पाँठे खेने दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कहो चार लोग-
स्तका काठस्तग करि के पाँठे पारी प्रगट लोगस्त कदो के ॥
श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूनामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि
काठस्तगं ॥ अन्नदू० कहि के, एक लोगस्तका काठस्तग करे,
पाँठे प्रगट लोगस्त कह के

॥ श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहार जंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूनामणिजी आराधवा निमित्तं
करेमि काठस्तगं ॥ अन्नदू० कहि के एक लोगस्तका काठस्तग
करे, पाँठे प्रगट लोगस्त कहि बैठ के नावो गोमो उंचो करि के
खमातमण देई के, इडा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं जी,
ऐसे कहि के चैत्यवंदन करे,

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पन्निखूखूण, डङ्गाय मयण बाण मुसुमूरण
॥ सरस पियंगु वञ्चु गय गामिड, जयड पास जुवणत्तय सामिड
॥ १ ॥ जसु तणु कंति करुणसिखिड, सोहइ फणमणि किरणा
खिड्ड ॥ ननव जलहर तन्निखय लंठिय, सो जिणु पातु पयञ्चय
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैतै परमेश्विनः प्रतिदिनं
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पाँठे नमुबूखसैं ले के जयवीरराय पर्वत कहि के पत्की,
चउम्मासी अरु संवठरीके रोज तो बनी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें वोटी शांति मुणै, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितव-
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्ति-
समन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय
॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवन-
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकि-
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि
च संघस्य, जद्र कळ्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च तदा शिव, सुतु-
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ ज्ञानां कृतसिद्धे, निर्धुति निर्वाणजननि !
सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥
९ ॥ ज्ञानां जन्तूनां, गुणावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-
ष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कोर्त्ति यशो, वर्द्धिनि !
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सखिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज
रोगरणाजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२
॥ अथ रक्षरक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

(४९)

उं मेति नमो नमो ह्रीं, ह्रीं ह्रूं ह्रः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥
 एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शान्तिं नमतां,
 नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-
 विदर्शितः स्तवः शान्तेः ॥ सलिलादिजय विनाशी, शान्त्यादिकरश्च
 जक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा
 यथायोग्यम् ॥ स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
 उपसर्गाः कथं याति, विद्यंते विघ्नवद्भयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,
 पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण
 कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठे चीराकका अथवा बीजलीका चादणा पन्ना होय तो
 इरियावह्नि० तस्तुत्तरी० अन्नबू० कहि कै, एक लोगस्तका काठ-
 स्तग करे, पीठे प्रगट लोगस्त कही पूर्वलो परे सामाधिक पारे.
 पीठे एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवता पञ्चमण
 विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥
 कमले स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-
 दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु ज्ञानदेवी,
 शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः
 साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनं ॥
 ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंराजिधं
 पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवन्दनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवद्भो, पुष्करावर्त्तमेघो, इरिततिमिरज्जानुः,
कल्पवृक्षोपमानः ॥ जवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स जवतु
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनः ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाहुरितध्वंसी, वन्दनादिञ्जितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्षी गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्
॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञप्त्या कृषन्नं जिनोत्तमम् ॥
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सौलभ जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन
वरण शरीर कांपि, अतिशय अन्निरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-
सेन, नरपति कलचंद ॥ मृगलंबन धरं पद कमल, सेवे सुरनरचंद
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंनित आण ॥ एक मनं
आराधतां, लहिये कोनि कळ्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी
जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे
सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अन्निराम ॥
तास कमा कळ्याण मुनि, निशिदिन नमत कळ्याण ॥ ५ ॥ इति
श्रीनेमिनाथः

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमिये मन रंग ॥ नील वरण
अश्वत्तेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-
सुत सार ॥ श्रीगोरी पुर स्वामि नाम, जपिये निरधार ॥ त्रिजु-
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जमु वाण ॥ ध्यान धरंता
एहनूं, प्रगटे परम कढ्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदधीरू सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा
मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिजुवन विख्यात
॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कढ्याण
मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पढिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवसिक पम्किमी ॥ १ ॥
खमासमण देई देवसी आलोश्यं पम्किंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥
ज० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पम्किलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-
पत्ती, संवत्तरीये संवत्तरी मुहपत्ती पम्किलेहुं ? एम कहे. पीठें गुरु
कहे, पम्किलेहेह ॥ पीठें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती
पम्किलेही, वांदशां देई, तिहां पस्कीमें पस्को वइकंतो ॥ चउमासी
पम्कि ॥ चउमासीउ वइकंतो संवत्तरीमें संवत्तरो वइकंतो. एम
यथायोगें कहे ॥ पीठें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-
क्षिक ॥ चउमासिक सांवत्तरिक जणजो. ठीक जयणा करजो.
मधुर स्वरे पम्किमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांमलमें
सावचेत रदेजो, पीठें सघलाही तद्वत्ति कहे ॥ पीठें कठी ॥
इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अणुपिण्डमि अग्नि-

तर पस्कियं ॥ ३ ॥ स्वामेजं ? गुरु कहे, स्वामेह ॥ पीठें मस्तके
 अंजलि करतो थको, इजं स्वामेमि पस्कियं ॥ ३ ॥ कद्दो, गोमालीयें
 बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करो, मुहपत्ती
 मुखें देई ॥ पस्कियें पनरसहुं दिवसाणं पनरसहुं राईणं जं किंचि-
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउहुं मासाणं अ-
 षड् पस्काणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
 कहे. संवत्तरीयें डुवाखसहुं मासाणं चउवीसहुं पस्काणं तिन्नितय-
 सत्तिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु
 पण मिळामि डुक्कं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-
 खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवत्तरीयें सात साधुने खमावे ॥
 ॥ पीठें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥
 पस्कियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठें इजं आलोएमि, जो
 मे पस्किउं ॥ ३ ॥ अइयारोकळ, इत्यादि मूत्र जणी ॥ संक्षेपे
 अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवत्तरी, अतिचार आलोवे, सो
 लिखते हैं ॥

॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर,
 जाणतां अणजाणतां दुओ होई, ते सह मन, वचन, कायाइं करी
 मिच्छामि डुक्कं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अथ तदुभए, अष्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-
मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान
हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायंकर्ने नही पढिउं, अथवा अनेरा-
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव
वांदणे पढिक्कमणे सिद्धाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने
मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या,
भणीनें बोसायों, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडो अण-
पढिलेही, वसती अणसोधी, असिद्धाई अणोझा कालवेलामाहि
दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो
ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना दुई,
यग लागो थूंक लागो ओसासे मूक्यो कर्ने छातां आहार नोहार
कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो
विणसतो उवेख्यो, छती शर्के सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें
मन्नर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां
प्रदेष्ट मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्वहणा
कोधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितक्यो आपणा जाणपणा
तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषड्ड जिको अतिचार
पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते
सहु मन वचन कायाई करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निवितिगिन्हा अमूढदिट्ठो अ ॥
उववूह थिरीकरणे, वज्जल पभावणे अह ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे
विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नही,

सघलाइ मत भला छे, एह्यो श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवो तणां मल-मलीन गात्र देखो दुगंठा उपजावो, मिथ्यात्वीतणो पूजा प्रभावना देखो, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवो. संघमांहि थिरीक-रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधो, देवद्रव्य विनाशितं, विणसंतुं उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधो, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधो, गुरुप्रते तेन्नीश आशातना कीधो, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधो, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठवको लागो, मुखतणो बाफ लागी, ठवणारिय हाथयकी पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालोनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तोहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविशो होइ नायबो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिस्केवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजलसंधाणपारिठावणोयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूढी परें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीवे अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंस विगिञ्जा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाङ्ग हनुमंत इत्येवमादिक
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आ-
 तेंकें इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी
 भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र
 चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्वा विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र
 शौख्यां, सांभल्यां, शराघ संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अँजा-
 पडिवो प्रेतवोज गोरत्रीज विणायगचोय नागपांचम झूलणाछठ
 शोलसातम प्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-
 त्सवारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,
 जाग भोग उत्तरणा कीधा, पिंपल पाणो घाल्यां घलाव्यां घर
 चाहिर कूई तलाव नदी ससुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान
 दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां
 थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिडाः-धर्म-
 संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर
 विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें
 न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,
 कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुआ मिथ्यात्वी तणी
 प्रभावना देखो प्रशंसा कीधो, प्रीति माडी, दाक्षिणलगे तेहनो धर्म
 मान्यो ॥ श्रोसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि
 सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुआ होय, ते सहू मन, वचन,
 कायाई करी मिळामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह
 बंध छविछेए, अइभारे भत्तपाण बुझेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें
 रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणें भारे
 पोड्या, निर्लछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावरयुं, रुढे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झीलयां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दू-
खव्यां, रुढे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकें-
द्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रुढे न कोधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रुढी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विस्मणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसा-
त्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकातें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चितवो छो. इत्यादिक कळुं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या दोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करता मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेना-
हृदयभंगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी,
दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लोधी, चोर धाडीत प्रतें संवल
दीधुं, संकेत कहुं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस
विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधो, खोटे तोल
माने माप व्होरयां, दाणचोरी कीधो, साटे लांच लोधी, माता
पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहोनें लेखे
पलेखे भुलव्युं, पढी वस्तु ओलवी लोधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत
विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरि-
गृहीया इत्तर, अणंग वीवाह तिब्रअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन,
इत्तरपरिगृहीतागमन. विधवा वेर्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-
तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन चोल्यां, आठम
चउदस अनेराई पर्व तिथि तगा नियम भांग्या, घरघरणां कीधो,
कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गकीडा कीधो,
पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो,
कुस्वप्न लाघां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथें मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ घण धन्न खित्त
वन्नू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप सुवर्ण कृप द्विपद चतुष्पद नव
परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्खा लगे संक्षेप न कीधो,
माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण
लेई पळ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे
परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परि-
माणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी मोकली ॥ छठे दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहुंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥ सञ्चिते पडिबद्धे, अपोल दुष्पोलयं च आहारे० सञ्चित तणे नियम लीधे अधिक सञ्चित लीधुं, तथा सञ्चित मली वस्तु अपक्वाहार दुपक्वाहार तुष्टौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पटुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥ सञ्चित दब्ब विगई, पाणह तंबोलवन्न कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि प्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहे आदुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेगण पीलू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टेंबरुं अथाणुं आम्रणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती वेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लक्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निछंछणकम्मे, दवगिगदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, घ्राणी चणा पक्वान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कोधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या,
कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेकं जे कांई बहु सावद्य कठोर
कर्मादिक समाचर्यु ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कं-
दप्पे कुकुइए० ॥ कदर्प लगें विटनी पें हास्य कुतूहल मुखादि अंग
कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगें कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या,
खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊसल मूसल अगन घरटी आदिक
सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अ-
नेरो कांई पापोपदेश दीधो, अंधोल नाहण, दांतण, पगधोअण
पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा
भक्तकथा स्त्रीकथा पराई वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां,
कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांड
कूकडा, मिढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें
अदेखाई चिंतवी माटो मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या,
तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल
गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते
मांही कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जीव विणठा, सूडा
प्रमुख जीव क्रीडा हेंतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष
लगें एकने रुद्धि परिवार वांछी एकने मृत्युहाणि विमासी आठमा
अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणि-
हाणे सामायिक लीधे मन आइट दोइट चिंतव्युं, वचन सावद्य
बोळ्युं, काय अण पडिलेहुं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न
लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊंघ आवी कीधी, बीज
दीवा तणी उजाहो लागी. कण कपासोया माटो मीठुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरुं पारिउं पारुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रते पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्धानुवाइ रुवाणुवाइ बहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामांदिबाहिर थकी कांइ अणावुं, आप कन्हाथी बाहिर मोक्कल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणावुं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रते पांच अतिचार ॥ संथारुवार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीये संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोव्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अण-पडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणां न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार व्रण वोसिरामि वोसिरामि न कहुं. पोसहशालामांदि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वोसारी, पृथ्वोकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांदि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथरुं, काल वेलायें पडिकमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारोयो, पर्ब तिथि आवी पोसह लीघो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रते पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निष्कवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा व्रते असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी पराधुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेब्बा, मन्नरलगे दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साध-
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥
इहलोका संसप्पन्गे परलोगासंसप्पन्गे जीविआसंसप्पन्गे मरणा संसप्पन्गे कामभोगासंसप्पन्गे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछ्यां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू णोयरिया, अणसण कहीये उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साङ्गपोरसि पुरिमठ्ट एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पञ्चक्राण पारवां वीसार्या. बेसतां नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायञ्चितं विणओ० गुरुक्कने मन सुद्धे आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायञ्चित तप लेखा शुद्ध पुह-
चाडुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मो प्रते विनय साचव्यो नही; वा-
चना पृष्ठना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुद्धध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त
लोगस्स दस वीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइयो ० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणग्रहिय बलविरिओ,
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायबो वीरि-
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक
दान शील तप भावना प्रमुख धर्म कृत्यतणे विषे मन वचन
कायतणुं छटुं बल वीर्य गोपव्युं, रूढां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां,
बेठां पडिक्कमणुं कोधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहेण पण पनर कम्मेसु ॥
बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं
करणे ० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य वत्तीस अनंत काय बहुबीज
भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कोधां, नित्यकृत्य देवपूजा
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कोधां, जीवाजीवादि वि-
चार सहहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशक्त्य १८. ए अटारह
पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें
श्रावक धर्मे श्री सम्यक्तत्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार
मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां
अजाणतां हुवो होय ते सह मन वचन कायार्थे करो भिन्नामि दु-
क्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीठे सबस्सवि परिक्रिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सद्
 पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउत्तेण पम्किमद्, चउमात्ते ठठेण
 पम्किमद्. संवत्तरियें अठ्ठेण पम्किमद्. इत्थं तस्स मिच्छामि डुक्कमं
 कही. छादशावर्त्त वांदणां देवे. पीठे इच्छाकारेण संदिस्सद् जगवन्,
 देवसियं आलोड्यं पम्किंता ॥ १ ॥ पत्तेवखामणेणं, अण्डुट्ठिमि
 अप्पिंतरपरिक्रियं ॥ २ ॥ खामेत्तं? गुरु कहे खा० ॥ पीठे इत्थं खामेमि
 परिक्रियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्व कहे, तिम कही मिच्छामि
 डुक्कमं देई खमावे, पीठे वे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोड्यं
 पम्किंता परिक्रियं ॥ १ ॥ पम्किमावद्? गुरु कहे सम्मं पम्किमद्. पीठे
 इत्थं कही करेमि जंतेसामाड्यं ॥ इच्छामि गामि काउस्तगं जो मे परिक्रिउ
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नवू० ॥ कही ॥ काउस्तग करे, गुरु,
 पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुथकी जूडा पम्किमता हुवे, तो
 एक आवक खमात्तमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे,
 जणेह, एसो वचन मनमें धारी ॥ इत्थं कही, जजो थको, हाथ जोनी
 मुद्दपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें
 चिंतवतो वंदितु सूत्र गुणे. बीजा आवक करेमि जं ते० इच्छामि
 गामि काउस्तग तस्सुत्तरी० अन्नवू० कही काउस्तगमें रह्या
 सुणे. सूत्रप्रति एमो अरेइंताणं कही. काउस्तग पारी, जजा
 थका तीन नवकार गुणी वेत्ते. पीठे ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि
 जं ते कही, इच्छामि पम्किमिजं जो मे परिक्रिउ ॥ ३ ॥ इत्यादि
 कही, वंदितु सूत्र गुणे, पम्किमे देवसियं तव्वं ॥ एइने ठिकाणें
 पम्किमे परिक्रियं, चउम्मासियं संवत्तरियं तव्वं कहे. पीठे ऊठ्ठी, अण्डु-
 ट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी. खमात्तमण देई इच्छा०
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,
 काउस्तग करुं? गुरु कहे करेह. पीठे इत्थं कही, करेमि जंते

सामा० इहामि गामि कान्तस्सगं तस्सु० अन्नन्तू० इत्यादि कही,
 पाखीयें वार लोगस्स चन्मासियें बीस लोगस्स संवत्तरीयें चालोस
 लोगस्सनो कान्तस्सग करे, एक नवकार ऊपर, कान्तस्सग करी,
 पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पन्निहेही, बे वांदणां देई इह्मा०
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अम्भुद्धिओमि अग्निंतर प-
 रिकयं ॥ ३ ॥ खामेज्जं ? गुरु कहे खामेह. पीठें इहं खामेमि पं-
 रिकयं ॥ इत्यादि पाठ पूर्व कइयो. तिम कहे, पीठें इह्माका० ॥
 सं०॥ज०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार बेर
 खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त
 खामणां खामेह. पीठें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं
 नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीठें गुरु कहे
 निज्जारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इहं इहामि अणुत्तहिं कही,
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आ-
 धिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेंठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें
 दैवसिक जणजो. एम चन्मासे ए सर्व डुगुणो कइणो, संवत्तरीयें
 त्रिगुणो कइणो. पीठें जिणें तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न
 कीधो हुवे ते तद्धि कहे ॥ पीठें बे वांदणां देई, अम्भुद्धिओमि अ-
 ग्निंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीठें बे वांदणा देई. आय
 रिय उवप्पाए० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि दैवसिक
 पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्तस्सग
 करी स्तुति कहे. पीठें जवण देवयाए करेमि कान्तस्सगं. इत्यादि
 विधे जवनदेवताको कान्तस्सग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ शुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी शुवनवासिनी ॥ निहत्य डरि-
 तान्पेषा, करोतु सुखमकथम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो कान्तस्सग्ग करे, तथा तीने पवै वडा स्तवन
अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गद्वर स्तोत्र कहणी, तथा
पन्निकमणो पूरो हुवा पीठे एक श्रावक गुर्वाङ्गायें, नमोऽर्हस्सि-
द्धाण कह्नी, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बोजा सर्व सुणे, जिणने
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति
पाक्षिकादि तीन पद्धिकमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चखणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरे पञ्चखण
करे ॥ उगए सूरें नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पञ्चखण चउविहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असुत्तणान्नोगेणं सदसागारेणं
महत्तरागारेणं सव्वसमादिवत्तियागारेणं विगइत्त पञ्चस्काइ. असुत्तणा-
न्नोगेणं सदसागारेणं लेवालेवणं गिद्धिस्संसिद्धेणं उल्लिखत्तविवेगेणं
पमुच्चमस्सिएणं पारिडावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमादिवत्ति-
यागारेणं देसावगासियं जोगपरिज्जोगं पञ्चस्काइ. असुत्तणान्नोगेणं
सदसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमादिवत्तियागारेणं बोसिरइ ॥
इति नवफारसी पञ्चस्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उर
देसावगासिकका आगार न पञ्चस्के. निकेवल नवफारसी आदिक
पञ्चस्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उगए सूरें नमुक्कार सहियं पञ्चस्काइ ॥ चउविहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नण ॥ सदण बोसिरामि ॥ इति नव-
फारसी पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पञ्चस्कामि, उगए सूरें चउविहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं असुत्तण ॥ सदसा ॥ पञ्चस्काणें दिसा
मोदणं ॥ साहुवयणें सव्व ॥ विगइत्त पञ्चस्कामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पञ्चकाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साठ पोरसीका पञ्चकाण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चकाइके ठिकाने इहां साठपोरसिं पञ्चकाइ कहणां ॥ इति साठ पोरसिपञ्चकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें उगए पुरिमठं अयठं वा पञ्चकाइ, चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० ॥ पढ० ॥ दिसा० मो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउ पञ्चकाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमठपञ्चकाण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चकाइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पढ० दिसा० साहु० सब० एकासणं बिआसणं वा पञ्चकाइ, डुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं आउठणपसारेणं गुरुअप्पुछाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण बिआसण पञ्चकाण ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चकाइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पढ० दिसा० साहु० सब० एकासणं एगछाणं पञ्चकाइ, डुविहं तिविहं चउबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पुछाणेणं पारिछाव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकछाणा पञ्चकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चकाइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अण० सह० पढ० दिसामो० साहु० सब० आयंबिलं पञ्चकाइ, अण० सह० लेवालेवेणं गिहउसंसिछेणं उक्किविवेगेणं पारिछा० मह० सब० एकासणं पञ्चकाइ, तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह०

सागारिआगारेणं आनद्धणपसारेणं गुरुअप्पुणणेणं पारिष्ठा० मह०
सह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पञ्चकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पञ्चख्वाइ. उग्गए सूरें चउव्विहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढ० दिसा०
साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पञ्चख्वामि. अस्स० सह० खेवाखेवेणं
गिह्वत्तंसिठेणं उखिक्खत्तविवेगेणं पमुच्चमखिक्खणं पारि० मह० सव्व०
एकासणं पञ्चख्वाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स०
सह० सागा० आनद्ध० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं
जोगपरिजोगं पञ्चख्वामि. अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरामि
॥ इति नीवी पञ्चख्वाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरें उग्गए अन्नत्तं पञ्चख्वामि. चउव्विहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० मह० सव्व० देसावगासियं
जोगपरिजोगं पञ्चख्वामि. अस्स० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥
इति चउव्विहार उपवास पञ्चख्वाण ॥ ९ ॥

॥ सूरें उग्गए अन्नत्तं पञ्चख्वामि. तिविहंपि आहारं असणं
खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमद्ध
अवद्धं वा पञ्चख्वाइ अस्स० सह० पढ० दिसा० साहु० सह
देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चख्वामि. अ० स० म० सव्व० वो-
सरामि ॥ इति तिविहार उपवास पञ्चख्वाण ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमद्धं अवद्धं वा पञ्चख्वामि. उग्गए
सूरें चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह०
पढ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगछाणं दत्तियं पञ्चख्वामि.
तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह०
सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइत्तं पञ्चख्वामि. इत्यादि पूर्ववत्.
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ, चउव्विदं पि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं अस्स० सह० मइ० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिव-
सचरिम पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहं पि आहारं असणं खाइमं
अस्स० सह० मइ० सव्व० वोसिरामि, देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति
दिवसचरिम डुविहार पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चख्वामि अन्न० सह० मइ०
सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ जवचरिमं पञ्चख्वाइ तिविहं पि चउव्विदं पि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मइ० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति जवचरिम पञ्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अ-
ज्जिग्रह पञ्चख्वाणकेजी ए चार आगार, अन्न० सह० मइ० सव्व०
वोसिरइ ॥ पांचमो चोखपट्टागारेणं सो साधुको होय ॥ इति अ-
ज्जिग्रह पञ्चख्वाण ॥

॥ अहणं जंते तुद्धाणं समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि
दव्वउं खित्तउं कालउं जावउं दव्वउं देसावगासियं खित्तउं उउ
वा असाववा कालउं मुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियमं पञ्चख्वामि
जावउं जावगहेणं न गहिज्जामि बलेणं न बलिज्जामि असेण-
केवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पन्निवज्जइ ता अज्जिग्रह
असत्तणान्जोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवनिया-
गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चखाण करे, तब देसावगासी नही पञ्चके.
अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीबीमें एकासण प्रमुखमें
पाणस्तका उ आगार पञ्चके सो दिखावे हैं. पाणस्त लेबोनेण वा

अलेखेण वा अलेखेण वा बहुलेण वा ससिन्धेण वा असिन्धेण वा
वोस्तिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोधेव नमुक्कारो आगार षड्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवच्च
पुरमिहे, एगासणंमि अडेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्तत्त, अडेवय आ-
यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयज्जाडे, षप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥
पंच चत्तरो अज्जिगेहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावणो पं-
चत्त, इवन्ति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उगएसूरे नमुक्कार सद्धियं पञ्चखाइ चत्तविहंपि आहारं ॥
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाइ. शिष्य कहे पञ्चखाइमि. पञ्चखाइका
अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसें सूरज उदय हुआ
पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहां
तक चत्तवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो
च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है. असन कहते अन्न, चावल,
गहूं, मूंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जबकूं आदि
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लहू वगेरे सब
तरेका पकवानं सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब
घाट सब पतली ढेर नरम वस्तु हिंगवेसण सुंफ लूण सेंधवादि
इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आञ्चण
जबोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-
काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखनी नालेर खजूर द्राख सेक्या
अनाज आंबा केला काकनी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब
जातका मेवा सब जातका फल खाइमं जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूँठि मिरच पीपर हरमे बहेना आंबला तुलसी कसेला
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविरंग अजमा
 अजमोद कुल्लिंजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया
 कुंजटिआ पांनसुपारी पोद्दकरमूल जवालाकीजर वावची वांवल-
 गाल धवढालि खेजमेकीढालि खबरसार यह सब स्वादिम वस्तु
 जाणाना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीढालि जर
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीढालि चंदन-
 कीराख रोहिणीकीढालि पीपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया
 चिरमी कयर बोरकीजर इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब गो-
 रूपा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे, पञ्चरूखाणका अर्थ जाणे
 विगर जो पञ्चरूखाण करे सो अंधा पञ्चरूखाणहे इस वास्ते संक्षेप
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहैं, जिस पञ्चरूखाणमें जितना आगार
 होय सो रखकर हमारे पञ्चरूखाणहे, अन्नगुणाजोगेणं कहिये अना-
 जोग टालके किया जो पञ्चरूखाण, अत्यंत जूल जाणें कोइनी
 चीज जूलके मुंमे मालवी होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उसी
 वखत पीडा नाख देवे तो पञ्चरूखाणमें जंग नही, छर जाणे बाद
 जकण करे तो पञ्चरूखाण निश्चे जंग होय ॥ १ ॥ पञ्चन्नकालेणं कहते
 कालकी प्रचन्नता, आकाशमें गर्व ऊरुती होय आकाशमें बढ़ल
 ढाये होय तेसेइ पहारकीछंट आजावे सूरज नही दीखे तब ज-
 रमसुं पञ्चरूखाणका वखत पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत
 जंग नही ॥ २ ॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा जूलकर पूरबकूं पश्चिम
 जाणकर पञ्चरूखाणका काल पूरा हुये विगर जोजन कर लेवे तो
 व्रत जंग नही ॥ ३ ॥ सदस्तागारेणं कहतां सदस्ताकार बढ़ोत उताव
 लके योगें अथवा अकस्मात् विधोवते तोलते धी वगेरेका गीटा

मूँमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साहूवयषेणं कहतां साधूके
 वचनसें उग्यामा पोरसीआदिक जरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका
 काल पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सब
 समादिवत्तियागारेणं कहतां पञ्चस्काणका काल पूरा होषेसें पइली
 अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी धिरता रहे
 नही आर्त्तारौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाये वास्ते ओषधादिक
 पण्य देवे वा आप लेवे तो पञ्चस्काण जंग नही ६ महत्तरागारेणं
 कहतां पञ्चस्काणसें जितनी निर्जरा होये उस निर्जरासें ज्यादा
 निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे एसा जो चैत्य
 संधादिकका प्रयोजन होषेसें पञ्चस्काणका काल पूरा जये विगर
 ही जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां
 गृहस्थ देखतां साधू जोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा
 हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर जोजन
 करयो वेगहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब
 साधू उस ठिकाणेसें उठकर उर ठिकाणे जाकर जोजन करे तो
 व्रत जंग नही उर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुषकी
 निजर लगती होये तो उस पुरुषके आपोसें एकासणेवाला उठकर उर
 ठिकाणे जाकर जोजन करेतो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आज्ञापसारेलं
 कहतां पग प्रमुख एकठाकरणसें अथवा पसारयेसें थोमासा आसन
 चढ जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अमुगणेणं कहतां आपका गुरु
 आपोसें तथा आपसें कोइ वना पुरुष आपोसें विनयके वास्ते जोजन
 करतां एकाशनादिकमें आसन ठोर खमा हो जावे तोभी व्रत जंग
 नही ॥१०॥ पारिडावशियागारेणं कहतां सब पञ्चस्काणमें यह आगार
 साधुकाहे जिस आहारके परठणेसें बहुत जीवकी विराधना होती
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परठे मत सरस आहार हे तब

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासँ दूसरी वखतजी आ-
हार करे तो व्रत जंग नही ॥ १ ॥ लेवालेवेषं कहतां जोजन कर-
शेका भाल प्रमुख ज्ञाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका
अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ वगेरेमें पूब माला उस परजी किंचित्त्वे
मालम सालगारहे उसमें आर्यबिलादि व्रतवाला जोजन कर लेवे
तो व्रत जंग नही ॥ १ ॥ उरिक्तविवेगेणं कहतां आर्यबिलादि पञ्च-
खाणमें नही खाणो योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें
योग्य द्रव्यसँ हो गया होय वो चीज खाणोमें आवे तो व्रत जंग
नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य तो हाथसँ उगाय
सके नही ऐसे द्रव्यसँ फरस हुआ होय तो उसके खाणोंसँ व्रत जंग
नही ॥ १ ॥ गिहत्थसंसिद्धेणं कहतां जोजन पुरबे जिससेती एसी कुं
रुबी आदि देकर ज्ञाजन विगय प्रमुख द्रव्यसँ वेमालम खरनी होय
अत्यक्त निजरसँ कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसँ
जोजन पुरसे तोजी व्रत जंग नही १ ४ पडुच्चमुखिषणं कहतां सर्व
आ लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसँ वेमा-
लम चोपरणमें आयाहे लेकिन घृतादिकका स्वाद नही मालम देता
हे तो नोवी पञ्चखाणमें उस द्रव्यकूं खाणोमें आवे तो व्रत जंग
नही उर जो धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १ ५ ॥ इति पनरे
पञ्चखाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्वारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साधूमंगलं केव-
लिपसत्तो धम्मोमंगलं १ चत्वारिलो गुत्तमा अरिहंतालो गुत्तमा सिद्धलो
गुत्तमा साधूलो गुत्तमा केवलपसत्तो धम्मोलो गुत्तमो २ चत्वारिसरणं
पवज्जामि अरिहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साधूसरणं पव-
ज्जामि केवलपसत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ३ इत्थमि पणिकमि

पगामसिद्धाए निगामसिद्धाए संधारानवट्टणाए परियट्टणाए आनंट-
 णाए पसारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कुइए कक्कराईए ठीए जंजाइए
 आमोसेससर रक्कामोसे आनलमानलाए सोअणवत्तियाए इत्थोविप्प-
 रियासिद्धाए दिघीविप्परियासिद्धाए मणविप्परिआसियाए पाण-
 ज्ञोयणाविप्परिआसिद्धाए जोमेदेवसिद्धं अइयारोकं तस्समिद्धामि-
 ड्ढकं पन्निक्कमामि गोयरचरिआए जिखायरिआए उग्घारुकवारु उ-
 ग्घारुणाए साणावत्तादारा संघट्टणाए मंनोपाहुमिआए वल्लिपाहु-
 मिआए ठवणापाहुमिआए संकिएसइस्सागरे आणेतणाए पाणेत-
 णाए आणज्ञोयणाए पाणज्ञोयणाए बीअज्ञोयणाए हरियज्ञोयणाए
 पञ्चक्कम्मियाए पुराक्कम्मिआए अदिहहन्नाए दगसंतहहन्नाए रयसंतह-
 हन्नाए पारिस्तान्निआए पारिठावणिआए उंहासणजिक्काए जंज-
 ग्गमेणं उप्पायणेतणाए अपरिश्रुदं पन्निगहिअं परिज्जुत्तंवा जंनप-
 रिठवणिअं तस्समिद्धामिड्ढकं पन्निक्कमामि चाउक्कालं सिद्धायस्स
 अकरणयाए उज्जंकाळं जंनोवगरणस्स अप्पमिलेहणाए अप्पमज्ज-
 णाए उप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मेदेव-
 सिद्धं अइआरो कं तस्स मिद्धामि ड्ढकं पन्निक्कमामि एगविहे
 असंजमे पन्निक्कमामि दोहिं बंधणोहिं रागबंधणेशं दोसबंधणेशं
 पन्निक्कमामि तिहिं दंनेहिं मणदंनेणं वयदंनेणं कायदंनेणं
 पन्निक्कमामि तिहिं गुत्तेहिं मणगुत्तोए वयगुत्तोए कायगुत्तोए
 पन्निक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिद्धादं
 सणसल्लेणं पन्निक्कमामि तिहिं गारवेहिं इत्थोगारवेषं रसगारवेषं
 सायागारवेषं पन्निक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए
 दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पन्निक्कमामि चउहिं क-
 साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं
 पन्निक्कमामि चउहिं ससाहिं आहारससाए जसससाए मेहुणससा

ए परिगृहसंज्ञाए पन्निक्कमामि चउहिं विगहाहिं इन्धिकहाए जत्त-
 कहाए देसकहाए रायकहाए पन्निक्कमामि चउहिं जाणेहिं अट्ठेणं
 जाणेणं रुद्धेणंजाणेणं धम्मेषंजाणेणं सुक्खेणंजाणेणं पन्निक्कमामि
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अदिगरणियाए पाठ सियाए पारताव-
 णीआए पाणायवायकिरियाए पन्निक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं
 सदेणं रुवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पन्निक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं
 पाणाइवायानविरमणं मुसावायानविरमणं अदिन्नादाणानविरमणं
 मेहुणानविरमणं परिगृहानविरमणं पन्निक्कमामि पंचहिं समिईहिं
 इरिआसमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिईए आयाणज्जंमत्तनि
 खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेवज्जसंघाशपारिघवशियासमि-
 ईए पन्निक्कमामि ण्हिं जीवनिकाएहिं पुढाविकाएणं आनकाएणं
 तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पन्निक्कमामि
 ण्हिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-
 न्मलेसाए सुक्खेसाए पन्निक्कमामि सत्ताहिं जयवाणेहिं अण्हिं म-
 यवाणेहिं नवहिं वंज्जचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं
 उवासणपन्निमाहिं बारसहिं जिक्खुपन्निमाहिं तेरसहिं किरियावा-
 णेहिं चउहासहिं जूयगामेहिं पसरसहिं परमाइम्मिण्हिं सोलसएहिं
 गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबंजे इगुणवीसाए न-
 यच्चयणेहिं वीसाए असमाहिवाणेहिं इक्कवीसाए सबलेहिं षावीसाए
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगरुज्जयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी-
 साए ज्ञावणाहिं ठव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकाळेणं सत्ता
 वीसाए अणगरगुणेहिं अठावीसाए आयापकप्पेहिं एगुणतीसाए
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअवाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं
 बत्तीसाए जोगसंगेहिं तितीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय-
 णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवच्चायाणंआ-

सायशाए साहूणंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे-
 वाणंआसाय० देवीणंआ० इहलोगस्तआ० परलोगस्तआ० केवलपन्न-
 त्तस्तधम्मस्तआ० सदेवमणुआसुरस्तलोगस्तआ० सव्वपाणजूअजी-
 वसत्ताणंआ० कालस्तआ० सुअस्तआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा
 रिअस्तआ० जंवाइइं वच्चामेखिअं हीनस्करिअं अच्चस्करिअं पयहीणं
 विणचहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुठुदिन्नं, डुठुपन्निच्चियं अकालेक-
 उंसज्जाउं कालेनकउंसज्जाउं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-
 इयं तस्त मिच्चामि डुककं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उतत्ताइ-
 माहावीरपक्कवसाणाणं इणमेव निगगं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-
 वलियं पन्निपुसं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवितहमविसंधि सव्वडुरक्कपहीणमगं
 इत्थद्वियाजीवा सिद्धंति बुद्धंति मुच्चंति परिनिवायंति सव्वडुरक्खाया-
 मंतंकरंति तंधम्मं सहहामि पत्तियामि रोएमि फालेमि पालेमि अ-
 णुपालेमि तंधम्मं सहहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-
 पालितो तस्त धम्मस्त केवलपन्नत्तस्त अप्पुट्ठिमि आराहणाए
 विरत्तमि विराइणाए अतंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि
 अबंजं परिआणामि बंजंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं
 उवसंपज्जामि अन्नारं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्चत्तं परिआणामि सम्मत्तं
 उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमगं प-
 रिआणामि मगं उवसंपज्जामि जं संज्जरामि जं च न संज्जरामि जं
 पन्निक्कमामि जं च न पन्निक्कमामि तस्त सव्वस्त देवसिअस्त
 अइयारस्त पन्निक्कमामि समणोइं संजय विरय पन्निहय पच्चरुखाय
 पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउं अट्ठाइज्जोसु
 दीवसमुदेसु पन्नरसकम्मज्जमीसु ॥ जावंतिकेविसाइ, रयहरणगुड

पद्मिगहंधारा ॥ पंचमहव्यधारा, अष्टार सहस्र सीलंगधारा ॥
 अस्वययायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥
 स्वामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व जूएसु,
 वेरं मच्चं नेकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं
 सम्मं ॥ तिविहेण पम्किंतो, वंदामि जिणेचउवोसं ॥ २ ॥ इतिश्री
 साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पस्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिब्बंकरे अतिब्बे, अतिब्बसिद्धेय तिब्बसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-
 णेयरिसी, महारिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर,
 मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-
 भिसुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥
 संती युत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं
 करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवडिउतं, महव्वय उ-
 च्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वानं पाणाइ-
 वायाओ वेरमणं सव्वानं मूसावायाउवेरमणं सव्वानं अदिन्नादाणाउ
 वेरमणं सव्वानं मेहुणाउवेरमणं सव्वानं परिग्गहाउवेरमणं सव्वानं-
 राइभोयणाउवेरमणं तत्थ खल्ल पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउ-
 वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चस्कामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा
 पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 भंणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नंनसमणु
 जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि
 से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउं खित्तउं कालउं
 भावउं दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयललोए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावउणं
 पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स घम्मस्स केवल्लि
 पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सत्ताहिद्वियस्स विणयमूलस्स खंती-
 पहाणस्स अहिरस्सोवस्सियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स
 अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुल्लवीसंयलस्स निरग्गिसरणस्स
 संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहिस्स निव्वियारस्स निव्वि-
 त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स
 संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाण
 याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-
 गदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारब्-
 गरूयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
 सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-
 वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुब्राउ तं निंदामि ग-
 रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-
 ड्डपन्नं संबरेमि सव्वं पाणाइवायं जावजीवाए अणिस्सिउहिं नेव
 सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं
 साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्ख्वा भिक्कू-
 णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा
 परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे
 हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिं पाणाणं
 सव्वेसिं भूयाणं सब्बेसिं जोवाणं सब्बेसिं सत्ताणं अदुक्कणयाए अ-
 सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
 णियाए अणुइदणयाए महत्ते महागुणे महाणभावे महापुरिसाणु-
 चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्ते तं दुक्कयाए कम्मक्कयाए मोहक्क

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिक्कट्टु उवसंपज्जिन्नाणं विहरामि
 पढमे भंते महव्वए उवद्धिन्मि सव्वान् पाणाइवायाउवेरमणं ॥ १ ॥
 अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाउवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं
 पच्चस्कामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइद्धा
 नेवन्नेहिं मुसंवायाविद्धा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि
 जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-
 रेमि न कारवेमि करंतंमि अन्नंसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउ-
 व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वन् खित्तन् कालन् भावन् दव्वन्तं मुसा-
 वाए सव्वदव्वेसु खित्तन्तं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालन्तं
 मुसावाए दियावा राउवा भावओणं मुसावाए रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालक्क
 णस्स सच्चाहिडियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्का-
 वित्तियस्स कुरकीसंबलस्स निरगिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदो-
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्कणस्स पंचमहव्व-
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंबाइयस्स संसारपारगामियस्स
 निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ-
 बोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए
 बालयाए मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवग
 णं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखल्लमणुपालयंतेणं इहं
 वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा
 भासिज्जंतो वा पेरेहिं समणुत्ताओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संबरेमि अणागयं
 पच्चस्कामि सव्वं मुसावायं जावजीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवइ

आ नेवन्नेहिं मुसंवायाविच्चा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
 अरिहंतसखिखयं सिद्धत्तखिखयं साहूसखियं देवसखियं अप्पसखियं
 एवं हवइ भिखुवा भिखुणोवा संजयविरयपडिइय पच्चख्खाय पा-
 चक्कस्मे दियावा राठ्ठावा एगठ्ठावा परिसागठ्ठावा सुत्तेवा जागरमाणेवा
 एस खल्लु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए
 पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-
 व्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-
 याए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए महत्ते महागुणे
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्ते तं दुख्खखयाए
 कम्मखयाए मोहखयाए बोहिलामाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-
 संपज्जत्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिठ्ठमि सव्वाठ्ठ मुसा-
 वायाओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाठ्ठवेरमणं
 सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चख्खामि से गामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा
 बट्ठुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं
 गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-
 समणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावजीवाए
 तस्स भंते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से
 अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-
 वओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु खित्तओणं
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा
 राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-
 म्मस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालुखणस्स सच्चाहिडियस्स वि-
 णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स
 नव वंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स

निरग्गिसरजस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
 व्वियारस्स निव्वित्तोलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंवि-
 यस्स अविसंवाइयस्स संसारपाग्गामियस्स निव्व्राणगमणपज्जवसाण
 फलस्स पुर्व्वअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
 अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसानवगएणं पंचेदियवसेट्ठेणं
 पडिपुन्नभारियाए साचासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअत्तेसुवा भवगं
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परोहिंसमणुन्ना
 ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अं
 इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि सबं अदिन्नादा
 णं जावज्जोवाए अणिसिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं
 अदिन्नं गिन्नाविच्चा अदिन्नं गिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
 अरिहंतसख्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं
 एवं हवइ भिखूवा भिखुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चस्काय पाव
 कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सबेसिं
 जोवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुखणयाए असोयणयाय अजूरणयाय
 अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुहवणयाय महत्ते
 महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्ते तं
 दुक्कस्कयाय कम्मस्कयाय मोहस्कयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय
 त्तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अणुडिओमि स-
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सबं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिहंवा मा-
 णुसंवा तिरिख्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविच्चा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेदुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंति अ-
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदाभि गरिहामि ।
 अप्पाणं वोसिरामि से मेदुणे चउडिहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ
 कालओ भावओ दव्वओणं मेदुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्त-
 ओणं मेदुणे उड्डलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-
 दुणे दियावा राओवा भावओणं मेदुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-
 यमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-
 हिद्वियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्नसोवन्नियस्स उव-
 समप्पभवस्स नववर्गमचरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखाविच्चियस्स
 कुख्खीसंबलस्स निरगिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण-
 गाहियस्स निव्वचीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिय-
 स्स अविस्वाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपञ्चावसाण-
 फलस्स पुड्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अ-
 भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंद-
 याए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेदियवसट्टेणं
 पडिपुन्नमारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा
 भवग्गहणेसु मेदुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहि समणु-
 न्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का-
 एणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नसंवरोमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वभेदुणं
 जावजीवाए अणित्तिओहं नेवसयंमेदुणंसेविद्या नेवन्नेहिमेदुणंसे-
 वाविज्जा मेदुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखि-
 यं सिद्धसखिअयं साहुसखिअयं देवसखिअयं अप्पसखिअयं एवं इव-
 इभिल्लूवा भिल्लुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्कायपावक्कमे दि-
 यावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलुभेदुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आशुगामिए पार-
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजोवाणं सव्वेसिं-
 सत्ताणं अदुख्खयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए
 अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुहवणयाए महत्ते महागुणे
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्ते तंदुख्खखायाए
 कम्मख्खयाए मोहखायाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए चिकट्टु उव-
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवड्ढिओमि सव्वाओ-
 भेदुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं
 सव्वं भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पंवा वडुंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं, परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं
 परिगिण्हविस्वा परिग्गहं परिगिन्नंतंवि अन्नेनसमणुजाणामि जा-
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकार-
 वेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्काममि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते
 तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सच्चि-
 ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे
 अपग्घेवा महग्घेवा रांगेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स
 केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिड्डियस्स विणयमूलस्स
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभवेरशु-
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गि-
 सरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स
 निव्विचीलख्खणस्स पंचमहव्वयल्लुत्तस्स अविंसंबाडियस्स संसारपा-
 र्गामियस्स निव्वाण गमण पच्चवसाणफलस्स पुड्विअन्नाणयाए अस-
 वणथाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किमयाए तिगारख-
 गरुयाए चउकसानवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
 सोखमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
 हिउवा गाहाविउवा धिप्पंतोवा परेहिंसमणुज्जाठं तंनिदामि गरि-
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिदामि पड्डप्प-
 ञंसंबरोमि अणागयंपच्चत्कामि सबंधपरिग्गहं जावज्जीवाए आणिसि-
 ञ्हिं नेवसयंपरिगिण्हिजा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हविद्धा परिग्गहं-
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-
 सक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एण्हवइभिख्खूवा भि-
 र्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चस्काय पावक्कमे दियावा राउवा
 एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखल्लुपरिग्गहस्स-
 वेरमणे द्विएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिं
 पाणाणं सब्बेसिंभूयाणं सब्बेसिंजीवाणं सब्बेसिंसत्ताणं अदुरुत्तणयाए
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीइणयाए अपरियाव-
 णियाए अणुइवणयाए महत्थे महायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
 परमरिसिदेसियपसब्बे तंदुरक्कयाए कम्मक्कयाए बोहिलाभाए सं-
 सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
 उवडिउमि सब्बानपरिग्गहानवेरमणं ५ अहावरेछहे भंते महव्वए रा-
 इभोयणानवेरमणं सबंधं भंते राईभोयणं पच्चत्कामि सेअसणंवा पाणंवा
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइभुंजिजा नेवन्नेहिंराइभुंजाविद्धा राइभुं-
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
 वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि
 तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-
 भोयणे चउबिहेपस्सत्ते तंजहा दबउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं
 राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे-

समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावां रत्तिंवा भावओणं राईभो-
 यणे तित्तेवा कड्डएवा कसाएवा अंबिलेवा मड्डेवा लवणेवा रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स घम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्क-
 णस्स सच्चाहिद्वियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्कावि-
 त्तियस्स कूक्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदोसस्स
 गुणगाडियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलक्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स
 असंनिहिसंचिअस्स अविसेवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-
 गमणपच्चसाणफलस्स पुबिअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अ-
 णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बाल्याए
 मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगास्वगरुयाए चउक्कसाओवगएणं
 पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा
 भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुजंतंवा
 पेरेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-
 याए काएणं अइयंनिंदामि पड्डपन्नसंबरेमि अणागयं पच्चस्काभि
 सव्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणित्तिओहं नेवसयं राईभु-
 जिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुजंतेवि अन्नंसमणुजाणाभि
 तंजहा अरिइंतसस्सिकयं सिद्धसस्सिक्खयं साहुसस्सिकयं देवसस्सिकयं
 अप्पसस्सिकयं एवंहवइभिस्सुवा भिस्सुणीवा संजयविरय पडिहय
 पच्चस्कायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा
 सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे इएसुहेखमे-
 निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिपाणाणं सव्वेसि-
 भूवाणं सव्वेसिजीवाणं सव्वेसिसत्ताणं अदुक्कणयाए असोयणयाए
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीढणयाए अपरियावणियाए अणु-
 द्ववणयाए महव्वेमहायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि-

देसिएपसत्ये तंदुख्खत्तयाए कम्मख्खयाए मोहत्तयाए बोहिलाभाए
 संसारुत्तराणाए तिकट्ठु उवसंपजित्ताणं विहरामि छहे भंते महवए
 उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इव्वेइयाइं पंच-
 महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपजित्ताणंविह-
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे
 एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातइवेय
 सुसावायस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-
 दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सहा-
 रूचारासागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइ-
 क्कमे ॥ ४ ॥ इन्नापुन्नायगेहीय कंखालोमेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे
 एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-
 घम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-
 घम्मे तइयंवयमणुरख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विर-
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-
 णघम्मे पंचमंवयमणुरख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे छट्ठंवयमणुरख्खे विरियामो-
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमण-
 घम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-
 हारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणघम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-
 अलियवयणानं ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणघम्मे
 तइयंवयमणुरख्खे विरियामो अदिन्नादाणानं ॥ १४ ॥ आलियविहार-
 सनिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणघम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरियामोमेहु-

णाञ्च ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तोयुत्तोठिठसमणधम्मं पंच-
 मं वयमणुरत्थे विरयामो परिगहाञ्च ॥ १६ ॥ आलियविहारस-
 मिञ् जुत्तोयुत्तोठिठसमणधम्मं छठ्वयमणुरत्थे विरयामोराईभोयणा
 ञ्च ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तोयुत्तोठिठसमणधम्मं तिविहे-
 णपडिक्कंतो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिच्चत्तं
 एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोयुत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रस्सामिमहव्वए-
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्ठरूहाइं परिवच्चंतो-
 युत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तं धम्मं दोन्नियझाणाइं-
 धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-
 नीलाकाज्ज तिन्नियलेसाज्जअप्पसत्ताञ्च परिवच्चंतोयुत्तो रस्सामि-
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्ताञ्च उव-
 संपन्नोजुत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविज्ज
 वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविञ्च रस्सामिमहव्वएपंच
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसत्तातहाकसायाय परिवच्चंतो
 युत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-
 संबरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवच्चंतोयुत्तो रस्सामिम-
 हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंबरणं तहेवपंचविहमेवसच्चायं उवसंप-
 न्नोजुत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायबहिं छप्पिय-
 भासाञ्चअप्पसत्थाञ्च परिवज्जंतोयुत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥
 छविहमभ्रितरियं वज्जंपियछविहंतवोक्कम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रस्सामि-
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तमयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविश्रंगा परिव-
 चंतोयुत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिण्डेसणपाणेसण उग्गहं-
 सत्तिकयामहच्चयणा उवसंपन्नोजुत्तो रस्सामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अष्टमयद्वाणां अष्टयकम्माइतेसिबंघिच परिवर्धंतोगुत्तो रक्खामि
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया दिट्ठाअव्विहनिट्ठिअणेहिं उवसं
 पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसार-
 णायनवविहाजीवा परिवर्धंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न
 वबंभचेरगुत्तो दुनवबिहंभंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि
 वर्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिष्णा दस
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविज्जंतो परिवर्जंतोगुत्तो रक्खामि
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरत्तं तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति
 विहेण पडिकंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चैयमहव्वयउच्चारणं
 थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंवसात्तं साहणघोपावनिवारणं निकायणा
 भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोणो प
 सन्नञ्चाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमघे उत्तमघे एससल्लुत्तित्थं
 कोहिं रइरागदोस महणेहिं देसिन्नं पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय
 संजमं उवइसिन्नं तिच्चुक्क सकयंठाणं अणुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्ध
 मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंस मप्पमेय न
 मोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहत्तं नमोत्थुते भग
 वत्तं चिक्कट्टु इच्चेसा सल्लुमहव्वयउच्चारणाकया इट्ठामोसुत्तकित्तणं
 काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग
 वंतं तंजहा सामाइयं चउवोसन्नं वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पच्च
 रक्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्ते
 सगंगे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ
 गवंतेहिं पन्नचावा परुवियावा तेभावे सहहामो पच्चियामो रोएमो
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सहहंतेहिं पच्चियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपखस्स अंतोचउमासीए अंतो
 संवत्तरस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपालियं
 तंदुखस्सखयाए कम्मस्सखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता
 रणाए तिकट्ठुउवसंपज्जित्ताणं विहराभि अंतोपखस्स जंनवाइयं नप
 ढियं नपरियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेबो
 रिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पढिक्कमामो निंदामो गरि
 हामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अणुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं
 पायञ्चित्तं पढिवट्ठामो तस्स मिञ्चामि दुक्कडं नमो ते सिंखमासमणाणं जे
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उकालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं
 कप्पियाकप्पियं चुलकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद
 थुत्तं तंदुलवेयालियं चंदाविच्चयं पमायप्पमायं वीयरगसुयं विहार
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्खाणं महापच्चस्खाणं सव्वेहिं पिए
 यंमि अंगवाहिरिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअट्ठे सगगंथे सन्नि
 जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं प
 न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सहहामो प्रत्तियामो रोएमो फासेमो
 पालेमो अणुपालेमो तेभावे सहहंतोहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं
 अणुपालंतेणं अंतोपखस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणु
 पे हयं अणुपालियं तंदुखस्सखयाए कम्मस्सखयाए मोहखयाए बोहि
 लाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्ठु उवसंपज्जित्ताणं विहराभि अंतोप
 खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपा
 लियं संतेबले संतेबोरिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प
 ढिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अणुट्ठे
 मो आहारिहं तवोकम्मं पायञ्चित्तं पढिवट्ठामो तस्स मिञ्चामि दुक्कडं न
 मो ते सिंखमासमणाणं जे हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उकालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरायणाई दसाळंकप्पोववहारो इसिभासियाई महानिसीहं
जंबुद्वीपपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दोवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा
णपविभत्तो महाल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि
चाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए
वेलंबरोववाए देविंदोववाए उद्याणसुए समुद्याणसुए नागपरियाव
ल्लियाळ निरयावल्लियाळ कप्पियाळ कप्पवडिसयाळ पुप्फियाळ पुप्फु
ल्लियाळ वह्लोदसाळ आसीविसभावणाळ दिठीविसभावणाळ चारणसु
मिणभावणाळ महासुमिणभावणाळ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयं
मि अंगबाहिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सग्गंथे सन्निजुत्तीए
ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवि
यावा तेभावेसइहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो
ते भावे सइहंतेहिं पत्तियेतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं
अंतोपरुखस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपा
लियं तंदुरुखल्लयाए कम्मल्लयाए मोहल्लयाए बोहिलाभाए सं
सारुत्तारणाए त्तिक्क उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरुखस्स जंन
वाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते
बले संतेबीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो
निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहंमो अकरणयाए अणुट्टेमो अहारिहं
तवोकम्मं पायच्चित्तंपडिवज्जामो तस्स मिच्छामिडुक्कडं नमोतेसिंखमास
मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो
सूयगडो ठणो समवानं विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहानं उवासगद
साळ अंतगडदसाळ अणुत्तरोववाइअदसाळ पण्हावागरणं विवाग
सुयं दिठ्ठिवानं सुदिठ्ठिसुहानं सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगो गणिपिडगे
भगवंते ससुत्ते सअत्ये सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणा
वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

द्वहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सह
 हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो
 पखस्स जंवाइयं पदियं परियद्वियं पुंब्बियं अणुपेहियं अणुपालियं तं
 दुखस्सकयाएकम्मखस्सकयाए मोहस्सकयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए
 त्तिकट्ठ उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नपदियं नप
 रियद्वियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस
 क्कारपरिक्रमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विजेट्टेमो
 विसोहेमो अकरणयाए अणुठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायब्बित्तं पडिक्क
 जामो तस्समिब्बामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंमंवाइयं दुवाल
 संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्ठं
 ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिब्बामिदुक्कडं ॥ सुय
 देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं
 सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अणुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठली घनियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि हन-
 रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पणि-
 लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगण, ते लेई, पोसहशाखायें थाप-
 नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी,
 जूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीठें ख-
 मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पणि-
 लेहुं ? गुरु कहे, पणिलेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती
 पणिलेहे. पीठें उज्जो थई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पोसह संदिस्ताळं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही, ख-
 मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह वाठं ? गुरु कहे

(ए१)

गाएह, पीठें इन्नं कही खमासमण देई ऊजो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-
न्नकार जगवन् पसाज करी, पोसह दंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-
च्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते पोसहं ॥ इहांतें ले के अप्पाणं वो-
सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पञ्चरूखाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चरूकाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसजं सबजं वा,
सरीरसक्कार पोसहं, सबजं बंजचेर पोसहं, सबजं अवावार पोसहं,
सबजं चउविदे पोसहे, सावज्जां जोगं पञ्चरूखामि, जावदिवसं अहो-
रत्तिं वा पञ्जुवासामि, डुविहं तिबिदेणं मणेशं वायाए काएणं, न
करेमि न कारवेमि, तस्स जं ते पम्किमामि निंदामि, गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञावण करतो उच्चरे ॥
पीठें एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक
मुहपत्ती पम्खेहुं ? गुरु कहे, पम्खेहेह. बीजी खमासमण देई
मुहपत्ती पम्खेहे. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साजं ?
सामायिक गाजं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊजो थको
तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंते उच्चरी दोय खमासमणें बे-
सणो संदिस्साजं ? बेसणो गाजं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सि-
खाय संदिस्साजं ? सिखाय करुं ? कही खमासमण देई ऊजो थको,
आठ नवकारनो सिखाय करे. शीतादि परिसहे दोय खमासमणें,
पांगरणुं संदिस्साजं ? पांगरणुं पम्खिधानं ? कहे. ए सर्व सामायिक-
विधि पूर्वें कह्यो ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पहिलां
इरियावही पम्किमी ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक उच्चरथं
पीठें इरियावही नही पम्किमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीयराय

सूची करी कुसुमिण डुस्तमिण कानस्तग्य करे, पीठें पन्निक्कमण-
 वेलासीम सिद्धाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पन्निक्कमण करे,
 पण इतरो विशेष के चारे शुईयें देव वांदा पीठें खमासमण देई
 कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेळें संदिस्ताजं ? गुरु कहे,
 संदिस्तावेह. पीठें इहं कही खमासमण देइ कहे. इच्छाका० ॥
 सं० ॥ ज० ॥ बहुवेळें करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इहं कही,
 तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र ? , श्रीजपाध्यायजी मिश्र
 १, श्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-
 स्कार जणें, जो पन्निखेदणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं
 चैत्यवंदनादि करी, सिद्धाय करे. हवे पन्निखेदण वेला पन्निखेदण
 करे, ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो ते तो पण संक्षे-
 पे फेर लखीयें तैयें. दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पन्निखेदण करुं ? कही मुद्दपत्ती पन्निखेदे. पीठें दोय खमा-
 समणें अंग पन्निखेदण संदिस्ताजं ? अंग पन्निखेदण करुं ?
 कहे. पीठें गुरुवचनें इहं कही. थोतियो कणदोरो पन्निखेदी
 वस्त्र पदेरी, खमासमण देई, इहकार जगवन् ! पलाज करी, प-
 न्निखेदण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पन्निखेदी स्थापे,
 अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पन्निखेदे, तो पण खमासमण देई
 मुक्त रीतें आग्या मागे. पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं०
 ॥ ज० ॥ उपधि मुद्दपत्ती पन्निखेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेदेह.
 पीठें इहं कही, मुद्दपत्ती पन्निखेदी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका०
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ उद्दी पन्निखेदण संदिस्ताजं ? गुरु कहे, संदिस्ता
 वेह. उद्दी पन्निखेदण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणदियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें
 पासवणें अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे
 ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-
 सवणें अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अहि-
 यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ८ ॥ आ-
 गाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-
 वणें अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अहियासे ॥ ११ ॥
 आगाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-
 च्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-
 वणें अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अणहि-
 यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे ॥ १६ ॥
 अणागाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-
 वणें अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अ-
 हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २०
 ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे
 आसन्ने पासवणें अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणें अ-
 हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ २४ ॥ ए
 अंमिलपमिलेहण पाठ कद्या ॥

॥ यह चोवीस पंढिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ अंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम
 पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवजेके ज़ीतर पासे दहिणें ३,
 वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवजेके बाहर दोनुं पासे पमिलेहे
 ॥ ६ अंमिलां जिहां उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ
 पमिलेहे ॥ इति २४ अंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें इठं कही, कंवल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शांखा प्र

भार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्ताजं ? वसती पन्तिकेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रभार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्ताजं ? गुरु कहे, संदिस्तावेद. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय करुं ? गुरु कहे करेद. पीठें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणो, गुणो. वखाण सुणो. इम करतां पूर्ण पदुर दिन चढ्यां. उग्धाढा पोरिसी अथवा, बहुपन्तिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पन्तिकमी दोय खमास मणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्तिकेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पन्तिकेही पान जोजन पात्र पन्तिकेही राखे. पीठें सिधाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देहरे जई पांचे शक स्तवें देववांण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रभार्जी, पुरुष हुवे तो प्रजुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीठें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोभुषणं कहे. खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे. एक लोगस्तनो काजस्तगकरे. मुखें लोगस्त कहे. संक्रासा प्रभार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. “जं किंचि नाम तिष्ठं” इत्यादि कही पीठें नमो भुषणं कहे. उजो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काजस्तगं वंदणवत्ती०

अन्नबू० कही, एक नवकारनो काष्ठस्तग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्त० सबलोए अरि० वंदणव० अन्नबू० कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुरकरवरदी० सुअस्त जग० वंदण० अन्नबू० कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नबू० इ त्यादि कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कह कर, बैठकें नमोन्नूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुईयें देव वांदी बेसे ॥ नमोन्नूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीरराय कही. नमोन्नूणं सबवे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन वृद्धजाण्यमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्र स्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसैं देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही “ जावंति चेइयाइ ” गाथा जणी खमासमण पूर्वक जा वंति के० बीजो गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोन्नूणं कही जयवीरराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्तही पूर्वक पोसदशाला मांहे आवी, इरियावही पम्किमे. पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पञ्चखाण बेला पूर्ण हुवां जल पीणेकू पञ्चकाण पारे ॥

॥ हवे पञ्चखाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्किमे. फिर एक खमास मण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पञ्चखाण पारवा मुहपत्ती पम्कि लेहुं ? गुरु कहे, पम्किदेहे ॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्किदेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

॥ पाणहार अमुक पञ्चख्वाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीठें यथाशक्ति कदी, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥
 ॥ पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आचारो न मोत्तव्वो. पीठें तद्वत्ति कदी, अमुक पञ्चख्वाण चउविहार कयों, एम एक नवकार गुणी पञ्चख्वाण फासियं, पालियं, सोदियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्चामि उक्कमं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. कणमात्र सिज्जाय करी यथासंजवे अतिथिसंविज्ञाग करी पाणीपीवे॥

॥ तथा उपधानवाही दुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चख्वाण पारी आहार करे. पीठे आसण बैगो अकोहीज दिवस चरिम पञ्चख्वाणे, पीठें इरियावही पम्किमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चख्वाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्जूमि जावणो दुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी अको, निर्जीव अंगिले जई; अणुजाणह जस्सुगहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मज्जमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध अई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मज्जमूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही पम्किमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ गमणा गमणां आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संना सा पूंजी, अंगिलो पम्किही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेंदिं जं खंमियं, जं विराहियं, तस्स मिच्चामि उक्कमं, एम कही बेसे. पीठें पम्किहण वेला सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठले प्रदुरे इरियावही पम्किमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ पम्किहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इहं कही दूजे खमासमणो इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला
 प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठे इहं कही, मुहपत्ती पन्निखेही
 दोय खमासमणो अंग पन्निखेहण संदिस्तानं ? अंग पन्निखेहण करुं ?
 कहे, पीठे गुरु वचने इहं कही मुहपत्ती पन्निखेही दंभासणो पूंजणी,
 प्रमुखते प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे, पीठे काजो गुरु करी, उदरी
 एकांते विखरतो परवधो इरियावही पन्निक्कमी, खमासमण पूर्वक
 कहे ॥ इच्छार जगवन् पत्ताज करी पन्निखेहणो पन्निखेहावोज ॥
 पीठे स्थापनाचार्य पन्निखेही स्थापे. गुरुसमीपे अथवा आपनाचार्य
 समीपे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती
 पन्निखेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेहेह. पीठे इहं कही खमासमण देई,
 मुहपत्ती पन्निखेहे. पीठे दोय खमासमणो ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
 ज० ॥ सिखाय संदिस्तानं ? सिखाय करुं ? उक्त रीते कणमात्र सि
 खाय करी तिबिहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार
 पञ्चके ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणो
 दोय देई, पञ्चकाण करे, पीठे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥
 सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्निखेहण संदिस्तानं ? बोजे ख
 मासमणो ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्निखेहुं ?
 गुरु वचने इहं कही, दोय खमासमणो ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ बेसणो संदिस्तानं बेसणो ठानं ? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि प
 न्निखेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पन्निखेहे. उपवासी तो
 ठे तेमाटे सर्व पाठो कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पन्निखेहे, उपधा
 नवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कम्पिट्टादि पन्निखेह्यां. पीठे
 वस्त्र कंबलादि पन्निखेहे. ए विशेष ठे ॥ पीठे कालवेखा सीम
 सिखाय ध्यान करे. पीठे उच्चार प्रश्रवण. ३४ थंमिला पन्निखेहे,
 जो चउदश हुवे, तो पाखी चउमासी पन्निक्कणो करे, संवडरीधे

संवहरी पन्तिकमणो करे. तिहां देवसी पन्तिकमणो पूर्वं लिख्यो
ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो
एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठे " ठाणो कमणो चंकमणे " इ
त्यादि पाठ कहे. खुदोवदव काठस्सग किया पीठे दोय खमासम
णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिधाय संदिस्सार्त्तं ? सिधाय करुं ?
कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिधाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्किादि तीन पन्तिकमणविधि आगे एही पुस्तकमें
लिख गये हैं. वहासें जान लेनां.

॥ हवे पन्तिकमणो हुवा पीठे साधुको घेयावच्च करी पोरसी
सीम सिधाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज
कहेतो थको, जूमि प्रमार्जे चंदि स्थानकें जई, देहशंका निवारै
प्रश्रवण वोत्तिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पन्तिपुत्ता पो
रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, पीठे राई
संधारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संधारा
मुहपत्ती पन्तिहेहुं ? गुरु कहे, पढिछेहेह. पीठे इत्तं कही, खमास
मण देई मुहपत्ती पन्तिहेदे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
ज० ॥ राई संधारो संदिस्सार्त्तं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०
॥ ज० राई संधारो ठावुं ? पीठे गुरु वचनें इत्तं कही, चउक्कसायं
पन्तिमच्चुत्तूरण इत्यादि नमस्कार कणन पूर्वक जयवीरराय सूधी
चैत्यवंदन करे. जूमि प्रमार्जी, संधारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीठे
शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही संधारे बेसी, तीन
नवकार तीन करेमि जंतें छवरी ॥ एमो खमासमणाणं, गोयमा
ईयां महामुणीणं, 'अणुजाणह जिठिज्जा अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संघारा गाथा जणी, वाम हाथ सिरायें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवानो फेर तो शरीर संघारो प्रमार्जी फेर, जो देह शंकायें छेवे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पन्निक्कमे ॥ पीठें जघन्यें पण तीन गाथानी सिखाय करी सोवे ॥ इति राइ संघारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाळिले पदोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पन्निक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्तुमिण काठस्तग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पन्निक्कमे. पीठें दोयखमासमणें सिखाय संविस्तावी आठ नवकार गुणी, पन्निक्कमण वेला सीम सिखाय करे. पन्निक्कमण वेला हुवां पन्निक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष ठे, के राइ आलोयां पीठें संघारा उवड्याकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पन्निक्कमणो करी पन्निक्कमण वेलायें पूर्वोक्त विधें पन्निक्कमण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊहरी इरियावही पन्निक्कमे. दोय खमासमणें सिखाय संविस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिखाय करे. पीठें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पन्निक्कमे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोचवो. पीठें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्थावनत गात्रें उज्जो. थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पन्निक्कमे. पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-

चारो न मोत्तवो. पीठें तहत्ति कदी खमासमण देई अर्धावनत. गात्रें उजो थको हाथ जोळ्या- मुद्दपत्ती मुखें दिथां थकां तीन न वकार गुणी संमासा पन्निखेदे. गोमालावें बेसी मस्तक नमावी, “ जयवं दसन्नजदो ” इत्यादि जावनारूप गाथा कहे. पीठें पोत-हना उपगरण संवरी, बेदरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविज्ञागव्रत सा-चवण निमित्तें साधु ज्ञानी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीठें साधुनें जे आहार दीथो, तेहनोदीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन जग्या पीठें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चित थई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पन्निखेदी, कचरो विधिगुं परववी इरियावही पन्निक्कमे. खमास-मण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुद्दपत्ती पन्निखेदे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पो-सहदीज करणो हुवे, तो पोसह दंभक उच्चरतां जावदिवसं पञ्जु-वातामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अष्टपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पञ्जुवातामि एहवो पाठ कहे. पीठें सामाधिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिण्डुस्तमिण काजस्सग करी पन्निक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे १, अने जो पूर्वें पन्निक्कमणो गुरु सार्थे करयो हुवे, तो पन्निक्कमणार्थें अंतें पन्निखेदी शार्व्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामाधिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे १, तथा जो गुरुसैं जूदो पन्निक्क-मणो करयो हुवे, तो गुरुपासैं आवी पोसह सामाधिक सर्व विधि करी, आलोचना खामणादि निमित्तें मुद्दपत्ती पन्निखेदी वे वादणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे, आ-
 लोएह, पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०
 ॥ सं० ज० ॥ अमुठिउमि अर्घितर, राइयं खामेमि ? गुरु कहे
 खामेह, पीठें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पन्निमणामें न-
 वकारसी पञ्चख्यो ओ तेमाटे पीठें गुरु सार्वे पञ्चकाण उपवासनो
 करे, पीठें दोय खमासमणें बहुवेळं संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रका-
 रका विकटप जाणनां, हवे पन्निहेदण तो पूर्वे करी ठे, तो पण
 आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पन्निहेदण संदिस्ताउं ? बीजे खमासमणें पन्निहेदण करुं ?
 कही मुदपत्ती पन्निहेहे, पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पन्नि
 हेदण संदिस्तावी मुदपत्ती पन्निहेहे, पीठें वली खमासमण देई
 इच्छाकर जगवन् ! पसाठ करी पन्निहेदण पन्निहेदावो जी, एम
 कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ
 पधि मुदपत्ति पन्निहेदुं ? कही कोई वस्त्र अणपन्निहेदो राख्यो
 हुवे, तो पन्निहेहे, नहीं तो वली आसण पन्निहेहे, दोय खमास
 मणें सिधाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे, आगें
 सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाणवी,
 पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाठली रातें वली सामाधिक न
 लेवे, जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीथो हुवे, ते पाठले
 पुहर पञ्चकाण किया, पीठें दोय खमासमणें उही पन्निहेदण सं-
 दिस्ताउं ? उही पन्निहेदण करुं ? कहे, पण अंमिला पद न कहे,
 अने अंमिला नहीं पन्निहेहे. यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह अ-
 दण करणेंमें विशेष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह
 अदणविधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो छत्रयो हे, पींठें संघ्यानी पन्निखेदण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो पञ्चस्काण कियां पींठें दोय खमासमणें पोसद मुहपत्ती पन्निखेदी तीन नवकार गुणी तीन वार पोसद दंरुक छत्रे. तिहां जाव रत्ति पञ्जुवासामि एम पाठ छत्रे, पींठें सामायिक विधि पूर्वे लिख्यो तिम करे पण सामायिक छत्रयां पींठें दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्तावी, पांगरणो संदिस्तावी, पींठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही थंमिलां पन्निखेदण संदिस्ताउं उही थंमिलां पन्निखेदण कउं? गुरु कहे, करेद. इच्छं कही उपधि पन्निखेदे. आगें सर्व क्रिया पूर्वे लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसद न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव थये, पाठले पट्टुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरथो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगण पन्निखेदी इरियावही पन्निक्मे. पींठें चउविहार पञ्चस्काण करी दोय खमासमणें पोसद मुहपत्ती पन्निखेदी दोय खमासमण देई पोसद संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसद दंरुक छत्रे. तिहां दिवसेसरत्ति पञ्जुवासामि कहे. संघ्या हुवे, तो रत्ति पञ्जुवासामि कहे. पींठें बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पन्निखेदे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि जंते छत्रे. दोय खमासमण देई सिधाय संदिस्तावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्तावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्तावे. पींठें बे खमासमण देई, अंग

पन्धिलेदण संदिस्तावी, मुदपत्ती पन्धिलेहे. फेर बे खमासमण वेई, उही धंमिलां पन्धिलेदण संदिस्तावी जो अणपडिलेही उपगरण हुवे तो पन्धिलेहे. जो सर्व उपगरण पन्धिलेहां हुवे, ते पण था नक जून्यता टाळवा ज्ञानी बली आसण पडिलेही, पंडिकमण वे ला सीम सिद्धाय ध्यान करे. पीठें उच्चार प्रश्रवणना २४ धंमिला पडिलेही पंडिकमणो करे. तथा पाबलो रातें बली सामाधिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठणोक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठणोक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे धावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे सबस्सवि देवसिअ, उच्चित्तिअ, उप्पासिअ, उच्चिअ ॥ इडाकारेण संदिस्सह, इडं तस्स मिडा मि उक्कनं ॥ १ ॥ संभाराउवड्डणकी, आउड्डणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, उप्पइयासंघट्टणकी, अच्चकुविसयकायकी, सबस्स विराअ, उच्चित्तिअ, उप्पासिअ, उच्चिअ, इडाकारेण संदिस्सह, इडं तस्स मिडा मि उक्कनं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंशं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवल्लणाणेहं ॥ महानंद लब्धो बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तिउरायं ॥ १ ॥ पुरा तारणा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सब अवाण ताया ॥ तदा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दितु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ उरुत्तार संसार कुबार पोयं, कलंका बली पंकपस्काज

(१०४)

तोषं ॥ मणोवन्धियञ्जे सुमन्दारकण्ठं, जिणंदागमं वेदिमो सुमह्यं
॥ ३ ॥ विकोत्ते जिणंदाणणंजो जलीणा, कलारूव लावण सोदग्ग
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि ज्जाणं, सिरी ज्जारई देहि मे
सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंघरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिव्य
पदवीचश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि
तत्कारिणां, श्रीपंचाननलाब्धनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्
॥ १ ॥ ये पंचाश्वरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासाधराः ॥ कृत्वा पंचरूपीकनिर्जयमथो प्राप्ता
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं
पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाज्जं गुरुपंचमारतिमिरष्वेकादशी रोहिणी,
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, ज्ञकानां जविनां गृहेषु ब-
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धाधिका त्रायिका
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चञ्चवीसे जिनवर, प्रणमं हुं नितभेव ॥ आठम दिन करियें,
चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोदे, जाणो पूनिम चंद ॥ दीर्घां
दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभु
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपडर, कर ओढी गुण गाय ॥ नंदीश्वर
दीर्घे मिलि सुरवरनी कोढ ॥ अछाई महोच्चव, करता दोडादोड
॥ २ ॥ शेनुंजा शिखरें, जाणी लाज अपार ॥ चञ्चमासें रहिया,

गलाधर मुनि परिवार ॥ जघियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध
साकरणी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पढिक्कमणुं, क
रिये व्रत पञ्चस्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥
आठ मंगल आये, दिन दिन कोडि कळयाण ॥ जिनसूखसूरि कहे,
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ बलकैकादश्यां सदसि लसद्ब्रह्ममहसि,
क्षितौ कळयाणानां हपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वैद्रभ्रेण्या
गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥
जिनानामप्यापुः क्षणमतिमुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिनां
एवं यानि प्रशिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुषामिति च विदि
तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुजवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥ ३ ॥
सुराः सैद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्कास्त्रि
लजवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तुषां विदधति सुखं विद्वि
तहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ईईकि धपमप, धुधुमि धोंधों, असकिधर, धपधोरवं ॥
दोंदोंकि दों दों, दाग्दिदि दग्दिदिदि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणर्व ॥
ऊजिऊँकि ऊँऊँ, ऊणणारणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर
शैल शिखरे, जवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि
ओंगिनि, किटति गिगूनदां धुधुकि धुठनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण,
रणकि रोंरों, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ ऊजि ऊँकि ऊँऊँ, ऊणण र
णरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयति कमला, कलितक
लमल, मुकलमीश, महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठहेंठ ठ

ह्रिक, ठह्रिपट्टा, ताड्यते ॥ तल्लोकि लोलो, त्रैषि त्रैपिनि, मैपिरेषि
नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, पुंगि पुंगिनि, धोगिधोगिनि, कल
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३ ॥
पुंदांकि पुंदां, पुषुद्दि पुंदां पुषुद्दि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट,
रणाकि ऐंऐं मणा मरे, मंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,
सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाद्वरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी
जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ्र समता रस धामी जी ॥
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव
श्रीपालतणी परे पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहिबें, अविचल
पद अविनाशी जी, ते सघळा जिननायक नमियें, जिणें ए नीति
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम बलि, चैत्रक मास
जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें
जी ॥ तेर सदस बलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥
इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद से
वक जविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गड ना
यक सदगुरु, श्रीजिनजक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि
पज्जणे, श्रीजिनलाज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ बलि बलि हुं ध्यावुं गाऊं जिनवर वीर, जिनपर्व पजु

सण, दारुणां धरमनी शीर ॥ आपाढ चौमासें हूँती दिन पंचाल,
 षम्भिकमण संवहरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चणवीशे जिनवर
 पूजा सत्तर प्रकार, करिये जलें जावें जरिये पुण्य जंमार ॥ बलि
 चैत्त्व प्रवामें फिरतां लाज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकळप
 सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर
 उरकेव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ बलि सा
 हम्भीवहल करिये वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-
 लधार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध
 कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्रोजितं, घन
 सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंठन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर
 वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदिजिनवर
 वीर जिन पावापुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय
 गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू,
 चणवीस जिणवर तेह बंदूं सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार
 अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणिये, ठ छेद अंश प्रसन्न अन्ना
 चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन
 मत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी जाण्य पेंतालीश आगम ध्याइये
 ॥ ३ ॥ डुहुं दिसें बालक दोय जेइने सदा जवियण सुखकरू,
 डख हरे अंवा लुंब सुंदर डरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंरुण
 नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो
 अंवा देविये ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंरुण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, ह्रमापालप्र
मुदस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे
तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र
भुम् ॥ १ ॥ यद्गर्जागमनोन्नव व्रतवरज्ञानाकरासिद्धये, संज्यूयाशु
सुपर्वसंततिरदो चक्रे महस्तत् कणात् ॥ श्रीमन्नाजिप्रवादिबोच
रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने
नासि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिव जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाजिब,
स्तत्पञ्चाक्षरायका विरचबांचक्रुस्तरां सृजतः ॥ श्रीमतीर्थसमर्थनै
कसमये सस्यगृह्णां नूस्पृष्टां, ज्यूयाज्जवुककारकप्रवचनं चेतश्चम
त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्जावनपरा सिद्धयिका देव
ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन
चंडगीस्तुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टदस्तिनिधने
शार्दूलविक्रीकृतम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण-
कमल तसु नामूं सीस । अर्हनि स समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं
च मेरुपासे ऊलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर जे
जिनहर बीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणाहर कहिय
हुवालस अंग । आनक बीस जणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे
आयो रंग । ते नर पाभे मुक्क अजंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च
जुवीस । पूरे मुज मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे ।
तिहुअण ज न मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदेमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ न
गरजेसलमेरविभूषणं । नजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे
श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख
कारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जि
नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।
फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।
जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु
सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियद्धारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तयणं ॥ पंकव
ढप्पयदेवगणं । सिरिअवुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियल्लोयनमंसि
यपायजुआ यणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया ।
मम हुंति जिनागमसुक्कसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहात्तमरोरहरं । क
द्धाणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमगगकुमग्गपयात्तकरं । पणमामि जि
नागममन्धिकरं ॥ ३ ॥ सिरिंदसमुज्जलगायलया । सुहजाणविणम्मि
यएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुपोसुत्त
या ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमात्तमपद धारीजी । प्रथम
जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन
राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिने
सर, आत्तमसंपद नूपोजी ॥ १ ॥ पांच नरत्त वलि पांचे एरवत्त,
पंच विदेह मज्जरोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव
पद सारोजी ॥ वलिय अनगत काल अनंता, थास्ये इणही प्रकां

रोजी । संप्रति काले वीत विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ १ ॥
 अरथे श्रीजिनराज वखाएवा, गूण्यां श्रोगणधारोजी । अंग डुवाखस
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण षरजय नय अंग
 प्रमाणे, जिहां षट्पद्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्या,
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरिदे
 बोजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंछित नित सेवीजी
 ॥ कळ्याण कारण जेदनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि
 नचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनदर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनाथक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र
 णमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सख मन धरी अमंद ।
 श्रीमूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति
 शय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेदना गुणपेंतीस ॥ अगणि
 त श्रद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक बंडु जिन चोबी
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन जाषित सिद्धांत । स्वादादन
 यादिक हेतुयुक्ति नवि आंत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह
 ज्ञाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सातणनी
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोझारी ॥

॥ यदंद्दिनमतादेव । देहिनः संति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविधातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाजे
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यच्चनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखे
 न्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुणायतो जिनाः । सदर्थतो यच्चयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतेनमुक्तये ॥
३ ॥ शक्रः सुरासुरवैरैस्सददेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता
भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञयान् जनान्नयतु नित्य
ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे ? जैनाः पादा युष्मान् पांतु १ जैनं
वाक्यं ज्ञूयाद्भूतै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी
स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन
त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक खंडन सात हाथ तनु मान, दि
नश् सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं
दित पद अरविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि
यथाने तारे प्रवहणसम निसदीप्त, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा
वीप्त ॥ २ ॥ अरथे करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते
गूण्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कद न तके
एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धाधि
का देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥
अहनिस्ति कर जोम्नी सेवे सुरनर इंद, जंप्पे गुणगण इम श्रीजिन
लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाज्जेयं संजवं तं, अजियसुविदयं, नंदणं सुवयद्वा ॥ सु
प्पासं पञ्चमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं ध
र्मशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंशुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,
नमिमविन्मिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गम्मे हाणेषु जम्मे,

वय गदणखणे, केवले लोयकाले, पन्नाशिवाणठाणे, पगवण समए,
 संयुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, जवणवणसए, वितरे किंन
 रेहिं, । तं मझं दिंतु मोस्कं, सबलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥१॥ देजं
 तित्थंकराणां, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सबन्नूणं च धासा,
 अहमविनियमा, जायए सबकालं ॥ अन्नपत्तिएहिं, नियगममइणं,
 धीयअंकूरूवं । अवावाहं जिणाणां, जयज पवयणां, पंच कल्लाण एसु
 ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहडा । सबडामाणमं
 धा, वरकमलकरा, रोहिणीवत्तअंबा ॥ पन्नत्ती वत्तपन्नमा, धणइसर
 णई, खित्तेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गदणसईया, पंच क
 ल्लाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकळ्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंरुण आदिदेव । हूं अहनिस् समरुं तात् सेव
 ॥ रायणतल पगलां प्रचूतणा । पूजि सफल फल सोदामणा ॥१॥
 तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण जरया ॥ गिरि
 करुणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिताथ ॥२॥ सोइम
 सांमी उपदिस्था । जंबुगणधरने मन वस्था ॥ पुंरुगिरि मदिमा
 जे मांइ । ते आगम समरुं मनउहाइ ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुख क
 वरुयक । मन वंडित पूरण कळपवृक्ष ॥ सिद्धकैत्रसिद्धरे सददेव
 ता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपदाण । वीका, वर केवल
 ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कळ्याणक मुखकर सुरतरुकंद । तसु
 जवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अठावय चंपा पावापुर
 शुज ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणज्जाण ॥ अजिता
 दिक वीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमं अधिक

બુદ્ધાસ ॥ ૨ ॥ જિણવર મુલ્હૂંતી સુણિ ત્રિપદી તત્કાલિ । ન
 ણધારક ગૂંછ્યા દ્વાદશ અંગ વિજાલ ॥ નયન્નંગ પદારથ સત્ત્વ
 નવ તત્ત । જ્ઞવિયણને તારે સાયર જિમ બોદિત્થ ॥ ૩ ॥ ચક્કેસ
 રિ અંબા પન્નમાદેવિ પ્રત્પક્ક । અસંઘ મનોરથ પૂરે બાસુરવૂક્ક ॥ ધ્યા
 વે સુલ્લ પાવે શ્રીજિનલાજ્જ સરીસ । જિનવર સુપ્પસાદે આસ ફલે
 સુજગીસ ॥ ૪ ॥ इति नेमजिनस्तुतिः ॥

॥ અથ શ્રીશીતલજિન સ્તુતિઃ ॥

॥ સુલ્લ સમકિતદાયક કામિત સુરતરુકંદ । હઠરથ નૃપ રા
 ણી નંદાકેરો નંદ ॥ જ્ઞહિલપુર સ્વામી ફેને જ્ઞવના પંદ । ચિત્ત ચો
 ર્ણે નમિયે શ્રીશીતલજિનચંદ ॥ ૧ ॥ અતીત અનાગત દુઝ્ઞા દોસ્યે અ
 નંત । સંપ્રતિ કાલે જે ક્ષેત્ર વિદેહ વિચરંત ॥ ત્રિદું જ્ઞવણે ઠબણા
 સાસવ અસાસથ હુંત । તે સગલા ત્રિકરણ પ્રણમું શ્રોઅરેહંત ॥ ૨
 ॥ કાલિક ઉરકાલિક અંગ અનંગ પવિઠ । નયન્નંગ નિરક્ષેપા સ્યા
 દ્વાદ મિતસિઠ ॥ જ્ઞવિજન ઉપગારી જ્ઞારી જિન ઉપદેશ । શ્રુત
 અવણે સુણતાં નાસે કોમ્મિ કલેશ ॥ ૩ ॥ બ્રહ્મજક્ક અસોકા સા
 સન સુરિ સુવિચાર । સંઘ સાનિધકારી નિરમલ સમકિત ધાર ॥
 ચિંતા હલ્લ ચૂરે પૂરે મનહ જગીસ । ધ્યાન તેહનો ધરિયે કદે જિન
 લાજ્જસૂરિસ ॥ ૪ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ અથ સમવસરણવિચારગર્ભિત સ્તુતિઃ ॥

॥ મિલ્લ ચોવિહ સુરવર વિરચે ત્રિગ્ગ્ગો સાર । અઢી ગાઢ
 ઝંચો પિદ્ધુલો જોયણ પાર ॥ વિચ્છ કનકસિંહાસન પદમાસન સુલ્લ
 કાર । શ્રીતીરથનાયક વૈસૈ ચોમુલ્લધાર ॥ ૧ ॥ તીન ઘટ્ટ સિરો
 વર ચામરં ઢોલે હંદ । દેવંડુજ્ઞિ વાજે જ્ઞાજે કુમતિ પંદ ॥ જ્ઞા
 મંરુલ પૂંઢે જલ્લકે જાણ દિનંદ । તિદ્ધુઅણ જન જ્ઞવિ મન મોદે
 સયલ્લ જિનંદ ॥ ૨ ॥ इत्य ज्ञाव सुववणा नाम निक्षेपा च्यार ।

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मज्जार ॥ जिनवरनी पद्मिमा
जिन सरखी सुखकार । शुभ ज्ञावे बंदो पूजो जग जयकार ॥ १ ॥
डुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । ज्वल्लेद कृपाणी मीठी
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिवृज्जो ज्वि प्राणी । सुय
देवि पसार्ये पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेतुंजगिरि नमिये ऋषज्जदेव पुंरुरीक । शुभ तपनी म
हिमा सुषा गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य
बंदनीक । करिये जिन आगल टाखी वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र
स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अकृत गिणतीसे चढता तिम
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञाषइ इम जगदीस । तेहिज नित प्र
णमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्कनी पूनम चेत्र मास
शुभ वार । विधितेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोढे
वैरसलग धरिये ज्ञान उदार । कर्ता नर नारी पामे ज्वनो पार
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्रेसरीदेवी ते
विय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंप्पे
गणनायक श्रीजिनछाजसूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद
महिमा ज्ञाषी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्ज्वल सातमयी नव
दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि
हंत बलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसन तिम बलि नाण
चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय दज्जार । सह
जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ बारस अरुञ्जतीस पण वी
स संग वीस सार । सरुसठ इकावन सितर पञ्चास प्रकार ॥ ३ ॥

संख्या काष्ठसग परदक्षा परिणाम । आगम ज्ञापित विधि इम
कीजे अज्जिराम ॥ ३ ॥ चक्रेसरिदेवी तिम विमलेसर जस्क । श्री
पावतणीपर पूरे बंठित सुस्क ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र जवि
प्राणी । जिनदुर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अज्जिनव कामी
जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ ध्यानक
बीसे आगम ज्ञप्तिया बीतराग गुण जुकाजी । जे नर अंतर आ
तम ध्यावे सिवरमणी वर युकाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन
सूरी धिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र
ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत
तिष्ठ जूपोजी । ए पद-निज जवि ज्ञावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो
जी ॥ २ ॥ दोय सदस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी ।
इवज्जावसें विधि परकासे तीर्थकर पद स्वासोजी ॥ तीजे जव
वर बीस ध्यानकनी सेव करे जव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे
निज आत्म आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल
दे मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गढ जिन आज्ञाधारी पा
टोधर वरदाईजी ॥ जिन सौजाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण
गावेजी । संघ सकलकं सानिधकारी मन बंठित फल पावेजी ॥
४ ॥ इति श्रीबीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज धिवराण । उवजाय साहु
नाण दंसण विनय पढाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम
जिनजाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो बीसे णाण ॥ १ ॥ उ
त्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । बलि काल जघन्ये जिनवर

वीम गंजरीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे
 थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवदन
 त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग
 गुण स्तवना पूजा प्रज्ञावना सार । इम शासन वञ्चल करतां न
 वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस्क
 जस्कणी सुरपती बेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे
 मन रंग । देवचंङ् आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुस्क सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥
 नवपदमाहे मुख्य बखाण्या रुषजादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञाव धरी
 ने जे ज्ञवि वंदे ठेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो
 पावो सुस्क अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिदंत सिद्ध सूरि उवद्याया सकल
 मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं
 ज्ञारीजी ॥ नवमें ज्ञव ज्ञवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी ।
 धीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे ज्ञाखीजी ॥ २ ॥ द्वादस आठ उचीसे
 गुण बलि पणवीस सगवीस सारोजी । समसठ इकावन बलि जैती
 सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम
 धी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव
 दिहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलचक्र चक्रेसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता
 जी । ज्ञजी नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर
 गह्व जिन आझाकारी पाटोधरपद चुक्ताजी । जिन सौजाग्यसूरिंद
 पसाये दंससूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंरुन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही
 केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

રિસિલ્લે સમવસરથા સુલકંદ ॥ ૧ ॥ ઇણ વઝવીસીમાં રૂપજ્ઞાદિક
 જિનરાય । વલ્લિ કાલ અતીતે અનંત ચોવીસી થાય ॥ તે સવિ ઇણ
 ગિરવર આવી ફરસી જાય । હમ જ્ઞાવી કાલે આવસ્યે સવિ મુનિ-
 રાય ॥ ૨ ॥ શ્રીરૂપજ્ઞના ગણધર પૂંમરીક ગુણવંત । દ્વાદસ અંગ
 રચના કીધી જેણ મહંત ॥ સવ આગમમાંહે સેત્રુંજ મહિમ મહંત
 । જ્ઞાત્રી જિન ગણધર સેવો કરિ ધિર ચિત્ત ॥ ૩ ॥ ચક્રેસરિ ગોમુદ
 કવરુ પમુદ સુર સાર । જસુ સેવા કારણ થાપે ઇંદ્ર ઉદાર ॥ દેવચંદ્ર-
 ગણિ જ્ઞાત્રે જીવિજનને આધાર । સવ તીરથમાંહે સિદ્ધાચલ સિરદાર
 ॥ ૪ ॥ ઇતિસેત્રુંજયસ્તુતિ ॥

॥ અથ શ્રીશાંતિનાથ સ્તુતિ ॥

॥ શાંતિ જિનેસર જગ અલલેસર અચેરા ઉદર અવતરિયાજી
 । વિશ્વસેન નૃપ નંદન જગગુરુ હથળાપુર સુલ કરિયાજી ॥ ઇત
 ઉપદ્વ મારિ વિકારી શાંત કરી સંચરિયાજી । જે જીવિ મંગલ
 કારણ ધ્યાવે તે હુય ગુણગણ દરિયાજી ॥ ૧ ॥ વર્તમાન જિન સવ
 સુલકારણ અતીત અનાગત વંદોજી । બારે ચક્રી નવ નારાયણ નવ
 પ્રતિચક્રી આનંદોજી ॥ રામાદિક જે પુરુષ સલાકા વંદત પાપ નિકં-
 દોજી । ઇય નિક્ષેપે જિનસમ જાણો કાટે જીવજન્ય વંદોજી ॥ ૨
 ॥ અંગ ઉપાંગે જિનવર પ્રતિમા શ્રીજિન સરસ્વી જ્ઞાત્રીજી । ઇય
 જ્ઞાવ વિહું જેવે પૂજા મહાનિસીથે સાત્રીજી ॥ વિષય નિવૃત્તી સત્
 આરંજે વિનય તપી તે જાણોજી । શુભયોગે નહિ આરંજકારી જગ
 વડ અંગ પ્રમાણોજી ॥ ૩ ॥ આપના સત્યે દેવી નિર્વાણી શ્રીસંઘને
 સુલકારીજી । કારણથી સવ કારજ સીજે જિનવર આજ્ઞા ધારીજી
 ॥ શ્રીજિનકીર્તિ સૂરીશ્વર ગઢપતિ પાઠક શ્રીકૃષ્ણસારીજી । સમ-
 કિતધારી દેવ સદાઈ સુલસંપત્ત દાતારીજી ॥ ૪ ॥ ઇતિશ્રીશાંતિ-
 નાથજેનસ્તુતિઃ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध बंदो जावे जवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसैं धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषजलंगन सुखदायाजी । विजय जली पुखलावड विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये बलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते बीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगन्नाताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरये श्रीअरिदंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिथ्यात तिमिरजर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ जवोदधि तरणी मोह निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो जविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी । विघन विमारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति सवाईजी । सानिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनदर्ष सदाईजी ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक जाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांगन लांबित वंछित दान सुद्ध । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु बंदो ध्यावो जविजन पक्क ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक जय्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेइय दम सिव पढुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर जवियण उपर सुधिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित जाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरजरमांहे दीपकसम सेजंत । पंचम तपफलं
 मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-
 वाकारक जे नरनार । निरमल पंचम तपना धारक तेह जणी
 सुविचार ॥ श्रीसिद्धादिकादेवी अहनिशि आपो मुक्त अमंद । श्री
 जिनलाज मुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-
 पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमल्लि जनमं
 व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ।
 ए पंच कढ्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक
 अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डगुणा
 दोय अधिक जिनराय । मन सूखे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥
 २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास्त । बलि गुणनो गुणिये
 विधिसेती सुविलास्त ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।
 इक चित्त आराधो साथो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर जुवण
 वण सम्यग् दरसणवंत । जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ
 सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कढ्याण
 ॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादशीस्तुति ॥

॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल
 ज्ञाख्यो श्रीजगवंत ॥ नरनारी जावे आराधो तप एह । सुख संपत ली-
 ला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ रुषजादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार ।
 जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो
 उपवास्त । मन वंछित लीला सुंदर जोगविलास्त ॥ २ ॥ आगममें एहनों
 बोड्यो लाज अनंत । विधसुं परमारथ साथे सुधो संत । डखदो

दृग तेहनो नाति जाय सब दूर । बलि दिन १ अंगे बाधे अधिको
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौजाग्य
सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर १ महोच्चव नित नवला
सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ परखी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गङ्ग
चोरासी जेहने आप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चौदस
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम १ संशय
जाय ॥ १ ॥ चउबीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क
छपसूत्रनी पाखी चौदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर गम १
तुम देखो चउदस १ परकी होय, जूला कांइ जमो तुम प्राणी ताचो
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख,
जविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी जाख ॥ आवश्यक
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरबधर इणपर
बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो
मन बंछित फल होय, जे जे आझा सूधी पावे ज्ञानो विधन इ
रेय ॥ सेवक इणपर करे बीनती सूधो समकित पाय, खरतरगड
भंरुण कुमति विहंरुण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पस्को
चौदस शुद्ध संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवज्जयं, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जव
गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणारे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे, तेहं विनयतवनिम्मल सदावे ॥ निरुवम महप्प-
 ज्ञावे, थोसामि सुदिह सप्पावे ॥ ९ ॥ गाहा ॥ सब डुक्कप्पसंतीणं,
 सब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिय संतीणं ॥ १॥
 सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं
 ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संघिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ-
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजियस्स य संति
 महा मुणिशोवि अ संतिकरं, सययं मम निबुइ कारणयं च नमं
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विम-
 गह सुक्ककारणं ॥ अजियं संतिं च ज्ञावत्तं, अजयकरे सरणं पव-
 ज्जाहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज-
 रमरणं, सुर असुर गरुल जुयगवई, पयव पणिवइअं ॥ अजिय म-
 ह्मविअ, सुनय नय निजणमजयकरं, सरणमुवसरिअ ज्ञुवि दिवि
 ज, महिअं सयय मुवणमै ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम
 नित्तम सत्तथरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निदिं ॥ संति
 अरं पणमामि इमुत्तम तिज्जयरं, संति मुणी मम संति समादिवरं
 दिसत्त ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावन्निपुव्वपत्तिवं च वरहन्ति मन्नय प-
 सत्त विज्जिन्न संघिअं थिर सरिज्ज वत्तं मयगल लीलायमाण वर गंध-
 हन्ति पत्ताण पत्तिर्यं संघवारिहं हन्तिइत्त वार्हु धंतकणग रुअग नि-
 रुवहय पिंजरं पवर लक्खणौ वचिअ सौम्म चारु रुवं सुइ सुहम
 णाजिराम परम रमणिज्ज वरदेव उंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं
 ॥ ९ ॥ वेद्वत्तं ॥ अजियं जिआरिणं, जिअ सबजयं ज्ञवो हरिअं ॥
 पणमामि अहं पयत्तं, पावं पसमेत्त मे जयवं ॥ १० ॥ रासालुद्ध-
 त्तं ॥ कुरु जणवय हन्तिणात्तर नरीसरो पढमंतत्तं महच्चक्कव
 द्विजोए महप्पज्ञावो जो बाहत्तरि परवर सहस्सवर नगर शिगम

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्ताणु आयमगो चउदस वररयण
नव महानिहि चउसठि सहस्त पवर कुवईण सुंदर वइ
चुलसी हय गय रह सय सहस्त सामी णसवइगाम कोनि
सामी आसिज्जो ज्ञारहंमि ज्ञयवं ॥ ११ ॥ वेढुं ॥ तं
संतिं संतियरं, संतिन्नं सब ज्ञया ॥ संतिं शुणामि जिणं, संतिं वि
हेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर, नरव
सदा मुणिवसदा ॥ नव सारयसति सकलाणण, विगय तमा विहु
अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविज्ज
कुला ॥ पणमामि ते जवज्जय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥
१३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणाविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम,
लठ रुव धंत रुप पट्ट सेअ मुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति स
त्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ ज्ञावि
अ प्पज्जावसे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल स
सिकलाइरेअसोम्मं, वित्तिमिरसूर कलाइरेअ तेअ ॥ तियसवइगणा
इरेअ रुवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते
अ सया अजिअं, साररिरे अबले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं,
एस अहं शुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ ज्ञूअगपरिंरिंणिअं
॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ
न तं नवसरय रवी ॥ रुवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव
इ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥
तिउवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणशुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं
॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयण, संतिमहं महा मुणि सरण मु
वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणणणय सिरिरइ अंजलि, रित्ति
गण संशुअं श्रिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ, शुअ महिअच्चिअं
बहुसो ॥ अइ रुगय सरय दिवायर, समहिअ सप्पजं तवसा ॥

गयणंगण वियरण समुद्रं, चारण वंदित्रं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय
 माला ॥ असुर गरुड परिवंदित्रं, किन्नरोरग णमंसित्रं ॥ देव कोमि
 सयसंशुभं, समणसंघ परिवंदित्रं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अन्नयं अणहं अरयं
 अरुयं ॥ अजित्रं अजित्रं पयन्त पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसित्रं ॥ आग
 यावर विमाण, दिवकणग रद तुरय पदकर सएहिं दुल्लित्रं ॥ स
 संजमो अरण खुत्तिअ लुल्लित्र चल कुंमलंगय तिरीरु सोहंत मऊ
 लिमाला ॥ २२ ॥ वेद्वत्त ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विज्जता
 जत्ति सुज्जता, आयर जूसित्र संजमपिंमित्र, सुट्टु सुविद्धित्र सव्व
 लोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ ज्ञासुर जूसण ज्ञासुरिअंगा,
 गाय समोणय जत्तिवसागय पंजलिपेसियसोस पणामा ॥ २३ ॥
 रयणमाला ॥ वंदिऊण ओळ्ळणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया
 हियं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुद्रा सज्जवणाइतो गया
 ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि, राग दोस जय
 मोह वज्जित्रं ॥ देवदाणव नरिंद वंदित्रं, संति मुत्तम महातवं नमे
 ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस बहुगामि
 णिआहिं ॥ पीण सोणिअण सालणिआहिं, सकल कमल दल्लो
 अणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर अणज्जरविणमिय गायल
 याहिं, मणिकंचण पसिढिलभेहल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिं
 खिणि नेउर सतिलय वलय विज्जूसणियाहिं, रइकर चउर मणो
 हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तकरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय
 वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहिं
 मंरुणोमुग्गप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं
 चिल्लएहिं संगयं गयाहिं जत्ति सन्निविट्ट वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि
 आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अजित्रं
 जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयन्त पणामामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

धुअवादअस्सा॥रासगण ववगणोहिं, तो देव वहाइं पयउ पणामिअ
 स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, जत्तिवसागयपिनिअआहिं ॥
 देव वरउरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंनिअआहिं ॥ ३० ॥
 ज्ञासुरयं ॥ वंसं तद् तंति ताव मेळिए तिउरकराजिराम सह मी
 सएकए अ, सुइसमाणणैअ सुइ सज्ज गीअ पाय जालघंठिअहिं ॥
 धलय मेइला कलावनेउराजिराम सह मीसएकए अ देवनट्टिआहिं
 ॥ हाव ज्ञाव विअमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय
 जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ तव सत्तं संतिकारयं पसंत
 संव पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायणं ॥
 धत्त चामर पन्नागजूअ जव मंझिआ, ऊयवर मगर तुरय तिरिवच्च
 सुलंढणा ॥ दीव समुइ मंदरदिसागयसोहिआ, सच्चिअ वसह ती
 हंसिरिवच्चसुलंढणा ॥ ३२ ॥ जलिअयं ॥ सहावलण समप्पइण,
 अवोस उवागुणोहिं जिण ॥ पसायसिण तवेण पुण, तिरीहीं इण
 रितीहीं जुण ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,
 सबलोअहिअ मूल पावया ॥ संघुआ अजिअ संति पायया, हुंतु
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि
 जलं, धुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु
 एक सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउं मे विसायं, कुणउअ परि
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं
 दिसैणमज्जिनंदिं ॥ परिताडवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे
 नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पस्किअ चाउम्मासिय, संवउरिए अवस्त
 ज्ञिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जउं कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हु
 हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इउद परम

पयं, अहवा कितिं सुविन्नमं जुवणे ॥ ता तेलुकुदरणे, जिणव
यणे आथरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहदजितशांतिस्त
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनस्क निगयपदा दंरुल्लेखंगिणं, वदारुण
।दसंत इव पयं निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंउल्लय दंतकंति मिसन्न
नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इल्ल सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिशिल्लं जलोहिं, खय समय समीरं जो
जणिल्लो गईए ॥ सदल नदय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म
हव संतिं सो समन्नो उणेवं ॥ २ ॥ तद्विहु बहुमाणु ह्यासज्जत्ति
अरेण, गुणकणमिवकिंती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अर्चिता
णंततामन्नत्तिं, फलदइ लहु सवं वंठिअं णिंठिअं मे ॥ ३ ॥ सय
लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु डुवा निदोषदृश्यं
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविंदे, समय मज्झिअ संती ते जि
णिंदे जिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकिंती वट्टए देहदिंती, विलसइ
जुवि मिंती जायए सुप्पविंती ॥ फुरइ परमत्तिंती होइ संसारविंती,
जिणजुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुत्तत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं जू
रिदिवंगहारं, फुग्गणारसज्जावो दारसिंणारसारं ॥ अणमित्तरमणीज
हंसणत्ते अज्जीया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टोवचारं ॥ ६ ॥
शुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणथरयपसंगा उल्लए जा
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरंजा रंजनिवाणलङ्गी, घणथणधुत्ति णिक्कु
प्पेकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जंगं वट्ठणिच्चं अणिच्चं, सदसद
णज्जिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेत्तिं,
वयण मवय णिल्लं ते जिणे संज्जरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए
ताव मोहंयारं, जमइजय मसणं तावमिच्चत्तवणं ॥ फुरइ फुरुप

(१२६)

लंता संतणाणं सुपूरो, पयम् मज्झिमसंती जाण सूरु न जाव ॥९॥
 अरि करि हरि तिण्हु एहं बु चोरा दिवाही, समर रुमर मारी रुद्ध
 खुद्धो वसग्गा ॥ पल्लय मज्झिमसंती किच्छे उत्तिजंती, निविमतरत
 मोद्धा जस्करालुं खिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरिअदारु दिच्छाणग्गि
 जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं जाण रुवं ॥ कणय निहसरेद्धा
 कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लब्धिं गाढसंघंजिअव ॥ ११ ॥
 अरुविनिवन्निआणं पब्बिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण
 गुत्ति धियाणं ॥ जल्लिअ जलण जाला लिंणिआणं च जाणं, जणय
 लहु संतिं संतिनाद्धा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस्सं पक्क
 पाइक्कपुस्सं, सयलपुहवि रज्जं गम्भिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पणि
 लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवस्सा हुंतु ते मे पसस्सा ॥ १३ ॥
 षणससिक्कण्णहिं फुल्लनितुप्पलाहिं, अणज्जरनमिरीहिं मुढिगिज्जोद
 रीहिं ॥ लल्लिअ जुअलयाहिं पीण सोणिज्जणीहिं, सयसुर रमणीहिं
 वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किमि जकुट गंठि कात्ताइसार,
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणञ्चो कुब्बिक
 स्साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु
 छुहतासे पस्सिए चाज्जमासे, जिणवर दुग्गधुत्तं वज्जेरे वा पवित्तं ॥
 पढइ सुणइ सिद्धा एह जाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेषा धा
 एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे
 सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तिठ्ठंकर सोल
 सम संति जिणवल्लह संशुअ, कुरु मंगल मम हर सुडुरिअमखिवं
 पि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरणरंजिअं मुणि
 शो ॥ चलणजुअलं महाजय, पणासणं संघवं बुद्धं ॥ १ ॥ समिय

कर चरण नंद मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुह महारो
 गानल, फुलिंग निहृद सवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, स
 लिखंजलिसेय बुद्धिय ञ्हाया ॥ वण दवदद्धा गिरिपा यव व पत्ता
 पुणो लब्धि ॥ ३ ॥ उवाय खुप्रिय जलनिहि, उप्पन्न कल्लोल ज्ञी
 सणारावे ॥ संजंत जय विसंतुल, निध्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥
 अविदलिअ जाणवत्ता, खल्लेण पावंति इब्धिअं कूलं ॥ पास जिण
 चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुअ
 वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ रुद्धंत मुद्धमिय
 बहु, ज्ञीसरणारव ज्ञीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,
 निद्धाविअ सयल तिहुअणान्नोअं ॥ जे संजंरंति मणुआ, न कुणइ
 जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत जोग ज्ञीसण, फुरिआरुण न
 यण तरल जीहालं ॥ उगगजुअं नवजल य, सज्जहं ज्ञीसणाथारं
 ॥ ८ ॥ मन्नंत कीरु सरिसं, दूर परिबुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुह
 नामकर फुरुसि द्द, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु जि
 छ तकर, पुलिंद सद्दल सद्दजीमासु ॥ जयविहुर वुन्नकायर, उल्लु
 रिअ पद्धिअ सज्जासु ॥ १० ॥ अविदुत्तविह वसारा, तुह नाह प
 णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इब्धिं गणं
 ॥ ११ ॥ पल्लिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह
 कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंजजलाज्जोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंज
 म पठिव, नहमणिमाणिक पणिअ पणिमस्त ॥ तुह वयण पहरण
 घरा, सीहं कुंइपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीह
 करुल्लाल वडि उज्जाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल
 हरारावं ॥ १४ ॥ ज्ञीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति
 ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ स
 मरम्मितिक्क खग्गा, जिग्घाय पविद्ध उडुय कवंधे ॥ कुंतविणिज्जि

न्न करि कल, ह मुक्क सिकार पउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर
 रिउ, नरिंद निवहा जमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण,
 पासजिण तुह प्पज्जावेश ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,
 चोरारि मइंद गय रण जयाई ॥ पास जिणनाम संकि, तपोण
 पसमंति सवाई ॥ १८ ॥ एवं महा जयहरं, पास जिणिंदस्स संघ
 वमुआरं ॥ जविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥
 राय जय जरक रक्कस, कुसुमिण डुस्सजण रिक्क पीमासु ॥ तं
 जासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो
 अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ,
 सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन् न
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयउ जय तिउं, जमिउ तिउाहि वेण वीरेण ॥
 सम्मं पवत्तिअंन, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय
 वकिलेसा, निइय कुलेसा पसउ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिउ,
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निइक्कम्म बीआ, बीआपरंमि
 षिणो गुणसमिअ ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, इणंतु उउाणि तिउ
 स्स ॥ ३ ॥ आचार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय
 रिआ तद् तिउं, निइय कुतिउं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पमिणीय कए,
 वणितु सवस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणिअ, सादूणं जणिअ
 सव सादक्का ॥ तिउप्पज्जायगाते, हवंतु परमिणिणो जइणो ॥ ६ ॥
 जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणफलं च चरणमविद्वइ ॥ तिउस्स दंसणं
 तं, मंगलमुवणोउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निउउमो सुअयम्मो, समग
 जवंगि वग कय सम्मो ॥ गुणमुअिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

(१५९)

हं दिसन्न ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ जवसत्त सिवस
 र्म्मो ॥ नीसेस किलेसदरो, हवन्न सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥
 गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुहं मइणो कुणंतु तिब्बस्स ॥
 सिरिवद्धमाण पटुपय, निअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥
 जियपन्निवस्काजस्का, गोमुह मायंग गयमुह षमुस्का ॥ सिरि
 बंन्न संति सदिआ, कय मयरस्का सिवं दित्तु ॥ ११ ॥ अंबा
 पन्निहयमिंबा, सिद्धा सिंहाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्ठा,
 संति सुरा दिसन्न सुस्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदित्तु
 संघस्स मंगलं विज्जलं ॥ अनुत्ता सदिआन्न, विस्सुअ सुयदेवयान
 समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रस्का, जस्का चन्नवीस सासण
 सुरावि ॥ सुहज्जावा संतावं, तिब्बस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि
 णपवयणंमि निरया, विरहा कुपदान्न सब हासवे ॥ वेयावच्च गरा
 विअ, तिब्बस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुत्तसमग्ग,
 विदिअ जवण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो
 सुहं दिसन्न ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पव्वय वासि
 देव देवीन्न ॥ जिण सासण विआणं, उदाणि सव्वाणि निदणंतु
 ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासस्कि, त्तालया नवग्गहा सनस्कत्ता ॥
 जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअह पदरेहिं ॥ १८ ॥ सहका
 ल कंटएहिं, सविध्विजेहिं कालवेलाहिं ॥ सबे सबन्न सुहं, दिसंतु
 सबस्स संघस्स ॥ १९ ॥ जवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ
 य जे देवा ॥ घरणिंद सक्क सदिआ, दलंतु डुरिआइं तिब्बस्स ॥ २०
 ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गब्बइ पुरजंपणासिअ तमोहं ॥ तंतिब्बस्स ज
 गवन्न, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयन्न जिणो वीरो,
 जस्स जीविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपइसासणं कुप, इ नासणं
 सब जय मइणं ॥ २२ ॥ सिरि उसन्नसेण पमुहा, हयजय नि

वहा दिसंतु तिष्ठस्त ॥ सब जिणायां गणिदा, रिणो णहं वंविअं
 सव्वं ॥ ३३ ॥ तिरि वद्धमाण तिष्ठा, दिवेष तिष्ठं समप्पिअं जस्त
 ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसन्न सुहं सयल संघस्त ॥ ३४ ॥ पय
 इएजदिआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्त ॥ इयरसुरा विहु स
 म्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्त ॥ ३५ ॥ इय जो पढइ तिसंजं,
 डस्तव्वं तस्त नत्ति किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएविन्न, सुनिद्विअवा
 मुही होई ॥ ३६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं
 ॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरद्विअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिक्कणं ॥
 सुगुरुजण पारतंतं. उवद्विअं शुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्मद्विय
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणव संदेहा ॥ पणयंगि वग दाविअ,
 सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त तोहा, समत्त पर
 तिअ जणिय संखोहा ॥ पन्निजग मोह जोहा, दंसिअ सुमद्विअ
 सन्नोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सन्नवाहा, हय उह दाहा सिवंध तरु
 साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदखिणुव अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु
 गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पव्वज्जा ॥ सिवसुह
 साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा,
 गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंजं नामं, नामं
 न पणासइ जिणायां ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअ जिण देवो, देवायरिअ डुरंत
 जव्हारी ॥ तिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥
 तिरि वद्धमाण सूरि, पयमीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पन्निहय कसाय
 पत्तरो, सरय ससंकुव सुहजणत्त ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ए
 पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तज्जाणत्त पणय
 सुगुणजणत्त ॥ ९ ॥ पुरत्तं उल्लह महिव, ल्लहस्त अणदिल्ल वारुए
 पयसं ॥ मुक्कावि आरिक्कणं, सीहेणव दव्वल्लिगि ग्या ॥ १० ॥ ६

(१३१)

समञ्जस्य निसिन्धि, स्फुरंतु सञ्चंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेशव सूरि
जिणो, सरेण हयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त किन्ती, पय
मिअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पदय परवाइ दिन्ती, जिणचंद जई
सरो मंती ॥ १२ ॥ पयमिअ नवंग सुत्तठ, रयणुक्कोसो पणासिअ
पत्तसो ॥ नवज्जीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥
॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परुवणा करणबंधु रोधणिअं
॥ सिरि अजयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय
सावय संतासो, हरि इ सारंग जग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द
लणो, आत्ताइअ पवर कवरसो ॥ १५ ॥ जीमज्जव काणशमिअ,
दंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुत्त, सूरि जिणव
ख्हो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिअ सञ्चरणो, चउरणुत्तंग प्पदाण
सञ्चरणो ॥ अत्तममयराय मद्दणो, उठ्ठमुहो तद्दइ जस्स करो ॥
॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावत्तठ जत्त
॥ गुरुगिरि गरुत्त सरद्धि, सूरि जिणवख्हो होत्ता ॥ १८ ॥ जुग
पवरागम पीत्त, सपाणि पीणय मणाकया जत्ता ॥ जेण जिणवख्ह
हेणं, गुरुणा तं सब्बा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि
रोमणी वूढ उव्वद खमोया ॥ जो सेस्ताणं सेसु, इ तद्दइ सत्ताणां
णकरो ॥ २० ॥ सञ्चरिआण मद्दीणं, सुगुरुणं पारतंत मुव्वइइ ॥
जयइ जियइ जिणदत्त सूरि, सिरि निलत्त पणाय मुणितिलत्त ॥
२१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपष्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरत्त विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥
सिरि पात्तजिणो थंजण, पुरठिउ निठिआनिहो ॥ १ ॥ गोयम सु
हम्म पमुहा, गणवइणो विद्धिअ जव सत्तमुहा ॥ सिरि वद्धमाण
जिणति, इ सुञ्चर्यते कुणेतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिण

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अचहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघसंति
 करा ॥ ३ ॥ सिरि अंजणाय छिअ पा, ससामि पयपन्नम पणय पा
 णीणं ॥ निहलिअ डुरिअ विंदो, घराणिंदो हरउ डुरिआइं ॥ ४ ॥
 गोमुहपमुस्क जस्का, पणिहय पणिवस्क पस्क लस्का ते ॥ कयसुगु
 ण संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिवसुस्का ॥ ५ ॥ अप्पणिचक्का पमुहा,
 जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु
 संघस्त विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासच्चउर, पुरछिउ वद्धमाण
 जिण ज्ञो ॥ सिरि वंज संति जस्को, रस्कउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥
 खित्तिगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निवुइ पुर प
 हियाणं, जव्वाण कुणंतु सुस्काणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विदि
 पहरि उब्बिस्स कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्त, सब्बा इ
 रउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिब्बवइ वद्धमाणो, ज्योसरो संगउ सुसंघेस्स
 ॥ जिणचंदो जयदेवो, रस्कउ जिणवच्छदा पटुमं ॥ १० ॥ सो
 जयउ वद्धमाणो, ज्योसरो पोस रुव इयतिमिरो ॥ जिणचंदा जय
 देवा, पटुणो जिणवच्छदा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवच्छद पाए,
 जयदेव पटुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणोसरव, द्दमाण तिब्बस्त
 बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मत्तंति कुणंति जेय कारंति ॥
 मणसा वयसा वजसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त
 गणो नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय कायपए,
 नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठे स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसद
 र्विसनिस्सासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ जवेज्जेवे
 पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त
 वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत
मोविताम ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उ
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्लङ्कितयचित्तरुदरैः, स्तो
त्र्यै किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रे ॥ २ ॥ युगं ॥ बुद्ध्या विना
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविंगतत्रपोऽहम् ॥ बा
लं विहाय जलसंस्थितमिन्द्रबिम्ब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्ग शशांकांताम्, कस्ते क
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्गतनक्रचक्रं, को
वा तरेतुमलमब्जनिधिं जुजायाम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी
र्यमविचार्य मृगोऽमृगेंद्र, नाज्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्
॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नकिरेव मुखरीकुरुते
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधो मधुरं विरौति, तच्चारुचात्र
लिकानिकरैकदेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिसंनिबद्धं,
पापं कृशात्कथमुपैति शरीरज्ञाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी
खमशेषमाशु, सूर्याशुजिह्मिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदभिः
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशजांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं ज्वन
ज्वष्यज्वन नाथ, ज्वनैर्गुणैर्नुवि ज्वंतमज्जिष्ठ्वंतः ॥ तुल्यं ज्वन्ति
ज्वतो ननु तेन किं वा, जूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति
जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिं दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं
जलनिधेरशितुं क इहेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिज्जिः परमाणु
जिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामञ्जृत ॥ तावन्त एव खलु तेप्य
णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क
ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगद्वितयोपमानम् ॥ विंशं
कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्वासरे ज्वति पांडुपलाशकृष्णम्
॥ १३ ॥ संपूर्णमंरुलशशांककलाकलाप, गुह्रा गुहास्त्रिभुवनं तव
लंघयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति
संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाजि,
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कळपांतकालमरुता चलि
ताचलेन, किं मंदरादिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव
र्त्तिरपवाज्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगन्नयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गन्धो न
जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः
॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगन्धः, स्पष्टीकरोषि सदृसा
युगपज्जगन्ति ॥ नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्यातिशायिमहि
मासि मुनींश्च लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहाधकारं,
गन्धं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाज्जमन
रूपकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु
शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि
ष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जैत्रज्जारनत्रैः
॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिद
रादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु
काचशकले किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव
दृष्ट्वा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन ज्वता नृ

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्ञवांतरेपि ॥ ११ ॥ स्त्री
 णां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
 प्रसूना ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सदस्वरश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
 यति स्फुरदंशुजालम् ॥ १२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,
 मादित्यवर्षाममलं तनसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलज्य जयन्ति
 मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्दिपन्थाः ॥ १३ ॥ त्वामव्ययं वि
 ज्ञुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणामीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगेश्वरं
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥ १४ ॥
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि ज्ञुवनत्रयशंक
 रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग
 वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्चिहराय नाथ,
 तुज्यं नमः क्लिततलामलज्जुषणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
 राय, तुज्यं नमोजिनज्जबोदधिशोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयो
 ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
 द्वौबैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
 ऽसि ॥ १७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपममलं
 ज्ञवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, विवं रवेरिव
 पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ १८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
 ब्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ विवं विद्यद्विजसदंशुलताविता
 नं, तुंगोदयाद्दिशिरस्तीव सदस्वरश्मेः ॥ १९ ॥ कुंदावदातचलचाम
 रचारुशोर्जं, विब्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छांकशु
 चिनिर्जरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंजम् ॥ २० ॥ उग्र
 तयं तव विज्जातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता
 पम् ॥ मुक्तामलप्रकरजालविवृद्धशोर्जं, प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्वर
 त्वम् ॥ २१ ॥ उन्निद्धेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाजिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेद् धत्तः, पद्यानि त
 त्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विज्रूतिरज्रूजिने
 इ, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रज्ञा दिनकृतः प्रह
 तांधकारा, तादृकुतोयद्गणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्र्योत
 न्मदाविलविलोककपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ
 रावताज्जमिन्नमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा जयं जवति नो जवदाश्रिता
 नाम् ॥ ३४ ॥ जिज्ञेज्जकुंजगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर
 जूषितजूमिज्ञागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति
 क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुरिणम् ॥ विश्वं जिघत्सुभिव संमु
 खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
 समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फलिनमुत्कृष्टमापतंतम् ॥ आक्राम
 ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंतः
 ॥ ३७ ॥ वल्गुचतुरंगजगर्जितजीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि नू
 पतीनाम् ॥ उद्यद्देवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
 जिदासुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रजिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता
 रतरणातुरयोधंजीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्ज्ञपजेयपक्ता, स्वत्पाद
 पंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अंजोनिधौ क्लृप्ततजीषणन
 क्रचक्र, पाठीनपीठजयदोढ्वणवारुवाधौ ॥ रंगतरंगशिखरस्थितया
 नपात्रा, स्वासं विहाय जवतः स्मरणाद्वज्जन्ति ॥ ४० ॥ उद्धूतजी
 षणजलोदरज्जरज्जुमाः, शोच्यां दशामुपगताच्युतजीविताशाः ॥
 स्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या जवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः
 ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगरकोटिनिष्ठ
 छज्जंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विग
 तबंधजया जवंति ॥ ४२ ॥ मत्तर्हिर्पेदमृगसज्जदवान्लादि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोद्यम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं जियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्वजं तव जिनेऽ
गुणैर्निबद्धां, जक्त्या मया रुचिरवर्षाविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो
य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४
॥ इति जक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ ओ ओ जग्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वं मेतत्, ये या
त्रायां त्रिभुवनगुरोराहतां जक्तिजाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु जवताम्
ईवादिप्रजावा, दारोग्यश्रोष्टु तेमतिकरी क्लेशविध्वंसदेतुः ॥ १ ॥
ओ ओ जग्यलोका इह हि जरतैरावतविदेहसंजवानां, समस्तती
र्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः
सुधोपाधपाटाचालनानन्तरं सकलसुरासुरैः सह समागत्य सविन
यमईन्द्रधारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाङ्गिणे, विदितजन्मान्निषेकः,
शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन
गतस्त पंथाः ॥ इति जग्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं वि
धाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं
इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां स्वाहः ॥ ॐ पुण्याहं १, ग्रीयं
तां २, जगवन्तोऽहन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रै
लोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥
ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विम
ल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,
स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग
१५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जि
नेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्वन्दन २३, संप्रति २४,
एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतित्थिकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषज १, अजित २, संजव ३, अजिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज ६, सुपार्थ ७, चंद्रप्रज ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्थ २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्थ ३, स्वयंप्रज ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोष्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुवत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, जङ्कर २४.

॥ एते ज्ञावितीर्थिकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा ज वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र कंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, हृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, ज्ञानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंज १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्थ ४, सुमंगला ५, सुस्तीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु प्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रज्ञावती १९, पद्मा

(१३ए)

३०, वज्रा ३१, शिवा ३२, वामा ३३, त्रिशला ३४ ॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, जृकुटि २१, गोमेष २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, जृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंदा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणो १६, बला १७, धारिणी १८, धरणाप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४, एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्ति, कान्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्रः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंगला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, कालो ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वस्वमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोध्या १३, अद्भुता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचतुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ अहश्चंद्रसूर्यागारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनिश्ररराहुकेतुसहिताः सप्तलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

विश्वं जवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधु
 वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो जवंतु ॥ अस्मिंश्च जूमं
 मले आर्यतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस
 र्गव्याधिदुःखदौर्भनस्योपशमनाय शान्तिर्जवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिश्च
 द्वित्वद्विमाङ्गल्योत्सवाः जवंतु ॥ सदाप्राङ्जुतानि दुरितानि पापा
 नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा जवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना
 श्राय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटान्य
 र्चितान्दूये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे
 गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ न
 न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्,
 नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा
 जसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेणांतिम् ॥ ४ ॥
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्जवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्जवतु, श्रीराज
 सन्निवेशानां शान्तिर्जवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्जवतु, ॐ स्वाहा
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शान्तिः प्रतिष्ठा
 ध्यात्रास्त्रावसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू
 पवासकुसुमांजलिसमेतः, आत्रपाठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि
 धनुः पुष्पवस्त्रश्चंदनाञ्जरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां
 कंठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति
 ॥ नृत्यति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गांधंति च मंगलानि ॥ स्तो
 त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणजाजोहि जिनाजिषेके ॥ १
 ॥ अहं तिष्ठयमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह
 शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु
 सर्वजगतः, परहितनिरता जवंतु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं,
 सर्वत्र सुखी जवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः कथं यान्ति, विद्यंते वि

अबल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हब्रह्मो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेन्द्रो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येन्द्रो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेन्द्रो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुन्द्रो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्च नमस्कारः, सर्व पापहृयंकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ क मखप्रज्ञसूरींशे, ज्ञाषते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकज्जतोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोज्ञलिपितं सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवं ॥ ४ ॥ जू शय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोज्जविवर्जितः ॥ देवताये पवित्रात्मा, य एमासैर्लज्जते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चकुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्थाम्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वा र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अं गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वांशां श्रीजिनो रक्ते, दक्षिणीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणांशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवि त् ॥ ९ ॥ पश्चिमांशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थं कृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं जगवानर्हं, ज्ञाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ शुषज्जो मस्तकं रक्ते, दजितोपि बिलोचने ॥ संज्ञ वः कर्णयुगलं, नासिकां चाजिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ठौ श्रीसुमती र केत्, दंतान्पद्मप्रज्जो विजुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रज्जो विजुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरकेत्, हृदयं श्रीसुशोतलः ॥ श्रे

(१४१)

यांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते,
वनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽपुदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाज्जिमंमलं
॥ १५ ॥ श्रोकुंशुर्गुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिह्वरूपृष्ठिं
शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमि
भरणद्वयं ॥ श्रोपाश्वर्चनाश्रः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥
पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेदशेषपापेभ्यो, वी
तरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संयामे शत्रुसंक
टे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, जूतप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे
प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी
डिते ॥ २० ॥ नाकिनी शाकिनीयस्ते, महाग्रहणार्दिते ॥ नद्युत्ता
रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुन्नाय, यः
स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लज्जते सुखसंपदं ॥ २२ ॥
जिनपंजरनामेवं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रज्जराजेंद्र, श्रियं स
लज्जते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुन्नाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेत
ज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रज्जराख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित
पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगङ्गे, देवप्रज्जाचार्यपदाब्जहं
सः ॥ वार्दिङ्चूनामशिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रज्जराख्यः
॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोमैस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कल्पतरुरे अयाण चित्तज मणजितरि, किं चिंतामणि
कामधेनु आरादो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघ्य,
रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघ्य ॥ चवदे पूरब सार युग लद्ध
ए नवकार, सयल काज मदियल सरे उत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

वलि ज्ञासिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुख अणंत
 अंत परम प्यसाहै ॥ इण जाणो सुर रिद्धि पुत्त सुह विवसै बहु
 परि, इण जाणो देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो
 जपे अर्चित चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि
 नियगेह ॥ १ ॥ निय सिर ऊपर जाण मज्ञ चिंतवै कमल नर,
 कंचणमय अठदल सहित तिहां माहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अ
 रिहंतदेव पञ्चमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पदरेवि पढम पय
 चित्ते नियमणि ॥ निद्वारय चउ गइ गमय पामिय सासय सुख,
 अरिहंत जाणो तुम लहो जिम अजरामर मुख ॥ ३ ॥ पनर जे
 य तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विदुमतणे वन्ननिय सो
 हग साहे ॥ राती धोती पदर जपे सिद्धिदिं पुढे दिसि, सयल लोय
 तिह नरहि होइ ततखिलसैंबसि ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर स
 हू जगधंद, मणमूली उत्रय करे बुद्धि होणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिण
 दिसि पंखनी जपे नमो आयरिआण, सोवनवन्नह सीस सहित
 उवए सहिनाण ॥ रिद्ध सिद्ध कारणो लाज ऊपर जे ध्यावे, पदरे
 पीलावत्थ तेह मन बंठिय पावै ॥ इण जाणो नव निधि दुवेए
 रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पावखी चामर उक्त सिर
 जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवजाय सीस पाढंता पञ्चिम, आराहिजे
 अंग पुढ धारंत मणोरम ॥ पञ्चिम दिसि पंखनीय कमल ऊपर सु
 हजाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रखे
 विडुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विषा जे जपे तिहां फल
 सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विज्ञाग सामला वइछा, जि
 ण धर्म लोय पयासचंत चारित गुण जिछा ॥ मण वयण काएहिं
 जपे जे एके जाणै, पंचवन्न तिहां नाण जाण गुण एह पमाणे ॥
 अनंत चौबीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ
 गणोहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरोहिं ॥ वायव दिसि जाएह
 मंगलाणं च सबेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दि
 सि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु
 जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रज्ञाव धरशिंद हुन
 पायालह सामी, समलोकुपर उपन्न जिल्ल सुर लोयह गामी ॥
 संबल कंबल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव षो
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन बंढिय करे जोगी लियो मसा
 ण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके बैगे
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिटि हुई फूल माल नवकारह
 नामी ॥ बाठरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही
 उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिरया काज सबे सरे इरत परत
 विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर
 धारु संकट टले राजा वसि होवे, तिठंकर सो होइ लाख गुण वि
 धिसुं जोवे ॥ साइण डाइण जूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि
 व्याधि ग्रहतणी पीरते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे
 नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय जाण करंत ॥
 ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण
 उठमळ एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम संचुंजय तिठराज महिमा
 उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिठंकर
 गणहर पणिय चवदह पूरब सार, इण गुण अंत न को कहे गुण
 गिरुन नवकार ॥ १२ ॥ अरु संपय नव पय सहित इणसठ लहु
 अस्कर, गुरु अस्कर सचैव इह जाणो परमस्कर ॥ गुरु जिण वल्लह
 सूरि ज्ञे सिव सुखह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुस्क
 निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पंच

तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-
 मंमलमंमितः ॥ १५ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥
 नमामि विंबमाईत्यं, ललाटस्य निरंजनं ॥ १६ ॥ अह्यं निर्मलं
 शांतं, बहुलं जाड्यतोद्धितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतर-
 घनं ॥ १७ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं, सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-
 विरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १८ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं
 विरसं परं ॥ परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १९ ॥ एकवर्षं द्विवर्षं च,
 त्रिवर्षं तूर्यवर्षकं ॥ पंचवर्षं महावर्षं, सपरं च परापरं ॥ २० ॥
 सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्दुतं त्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं
 बोतसंश्रयं ॥ २१ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥
 ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ २२ ॥ अर्द्धदारुण्यस्तु-
 वर्षातः, सेरेफो विंडुमंमितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-
 माहितः ॥ २३ ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषज्ञाद्यां जिनो-
 त्तमाः ॥ वषैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, व्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २४ ॥
 नादश्चंद्रसमाकक्षो, बिंडुतीलसमप्रज्ञः ॥ कलाकृषसमासांतः, स्वर्णाजः
 सर्वतो मुखः ॥ २५ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥
 वर्णानुसारसंलीनं, तर्धकृन्मंमलं स्तुमः ॥ २६ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ,
 नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विंडुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसंतमौ
 ॥ २७ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपुण्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थिति-
 संलीनौ, पार्श्वमल्लोजिनेश्वरौ ॥ २८ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हर-
 स्थाने नियोजिताः ॥ मायावीजाकरं प्राप्ता, श्रुतुर्विशतिरर्हतां ॥ २९ ॥
 गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवाजिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेश्च, ते जंवंतु
 जिनोत्तमाः ॥ ३० ॥ देवदेवस्य यज्ञकं, तस्य चक्रस्य या विज्ञा ॥
 तयाद्यादितसर्वाङ्ग, मामांदिनस्तुलाकिनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य यं
 मामांदिनस्तुराकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांदिनस्तुलाकिनी ॥ ३३ ॥

देव० मामांद्दिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांद्दिनस्तु-
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांद्दिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०
 मामांद्दिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांद्दिस्तुपक्षगा ॥ ३५ ॥
 देवदे० मामांद्दिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांद्दिस्तुराक्षता
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांद्दिस्तुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांद्दि-
 तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांद्दिस्तुडूर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०
 मामांद्दिस्तुजूमिषा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुञ्जा, तस्या या
 ज्ञुविलब्धयः ॥ तान्निरञ्ज्यद्यतज्योति, रदं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥
 पातालिवासिनो देवा, देवाञ्जूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे
 रदंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ डूर्जनान्नूत-
 वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रजा-
 वतः ॥ ४५ ॥ चण्डी श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंकी सरस्वती,
 जयावाविजया नित्या, क्लृप्ताजितामदङ्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-
 बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी, रौंदी, कला
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-
 त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कार्तिं कीर्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-
 त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले बन्धौ, जले डुगें गजे हरौ
 ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यत्र-
 ष्टा निजं राज्यं, पदत्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीत्रष्टा निजां लक्ष्मीं,
 प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्यार्थी लज्जते ज्ञार्यी, पुत्रार्थी लज्जते
 सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे
 रूपे पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,
 गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ जूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुग्धि वा

जुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वज्ञीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रे
 तैर्ग्रहैर्वहैः, पिशाचैर्मुञ्जैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्देहै, मुख्यते नात्र
 संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्वपीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥
 तैःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्नादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥
 अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं
 प्रातः, यै पठन्ति दिने दिने ॥ तेषां न व्याघयो देहे, प्रज्वन्ति न चापदः ॥
 ५९ ॥ अष्टमासावर्धि यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे
 तन्महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिम्बे,
 ज्ञवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥
 ६१ ॥ विश्ववन्द्यो ज्ञेयध्याता, कळयाणानि च सोऽश्नुते ॥ गत्वा
 स्थानं परं सोऽपि, ज्ञयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लज्जते पदमु-
 त्तमं ॥ ६३ ॥ इति रुषि मन्त्र स्तोत्रं ॥ केपकश्लोकनिराकृत्य
 मूलयन्त्रकळयानुसारेण लिखितं गणि । श्रीकृमाकळयापोपाध्यायै
 तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्त्रे तस्यैव ना
 भानि । मौक्तसौदाजिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि
 कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरञ्जनः ॥
 २ ॥ निष्कलङ्कोनिरालम्बो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्जयो निरहं
 कारो । निर्विकारोऽपि निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । नि
 जयो निर्ममः शिवः । निस्तरङ्गो निराकारो । निष्कर्म्मो निष्कलप्र
 ह्लुः ॥ ४ ॥ निर्वाहो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशङ्क

प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो ।
 नैष्ठिकः शब्दवर्जितः ॥ अनिद्यो महत्पूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः ॥६॥
 निःशब्दो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोऽपि योगात् शुभं
 प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अर्चितः अ-
 कृत्यो विभुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥
 अनिद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो जवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः,
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान-
 लोचनः ॥ अठेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवर्जितः ॥ १० ॥
 अजेयसर्वतो जडः । निष्कषायो जवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥
 वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस
 गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत
 विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्मवर्जितो महात्मानः ।
 लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंभुः । विश्ववेदी
 पितामहः ॥ सर्वज्ञूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ अनं-
 दरूपचैतन्यो । जगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य-
 क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥
 गौरवादित्रयादूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अजयः प्राप्तकैव-
 ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र-
 दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स
 वैशः सतसुखावासः । जिनेशो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अनूपनपरम
 ज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोजगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य-
 कारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो
 सुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं ।
 विसुक्तो मुक्तिवल्लभः ॥ योगीशो नादिसंसिद्धः । निरीदो ज्ञानगोच-
 रः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्र

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्तिकः ॥ ११ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ।
 सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वज्ञूतहितकरः ॥ १२ ॥
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानन्द ।
 चैतन्यश्चैत्यवैजयः ॥ १३ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह
 तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ १४ ॥ महा
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म
 हामुक्तिप्रदायकः ॥ १५ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा
 शक्तः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महान्तिकपदस्थितः ॥ १६ ॥ महा
 पूज्यो महाबन्धो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुण्यो ।
 महामहिम अच्युतः ॥ १७ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोध । एकानेकवि
 निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ १८ ॥ महासूरो
 महार्थीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह
 द्यो महागुरुः ॥ १९ ॥ निर्मारो मारविहंसो । निष्कामो विषयाच्यु
 तः ॥ जगन्वंतामहाभ्रान्तो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ २० ॥ परमात्मा
 परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानन्द । परंपरमश्रा
 त्तमकः ॥ २१ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना
 कृतिं नाक्षरो वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ २२ ॥ व्यक्ताव्यक्त
 जसंबोधः । संसारबेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्
 धर्मनायकः ॥ २३ ॥ बोधसत्सु जगद्बन्धो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥
 स्वयंज्ञूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विजयः स्तुतः ॥ २४ ॥ वर्णातीतो
 महातीतः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपणो । देवदेवेश
 नायकः ॥ २५ ॥ वरेण्यो जयविध्वंसी । योगिनी ज्ञानगोचरः ॥
 जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ २६ ॥ विश्वदृक् जयसं
 बन्धः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र
 काशकः ॥ २७ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । इन्द्रबन्धः सुरर्चितः ॥ नि

अपंचो निरातङ्गो ॥ निःशेखरेशनाशरुः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक
संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाय
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः ॥
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीज
ङ्गद्वाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्णं ॥

॥ अथ महिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥ महिम्नः पारम्ये परमविभुषस्ते जिनपरं । गणांगीर्वाणानाम
पि गुणगुरौर्गन्तुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिह नयैस्सर्वकथनं
। नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं
किल निरवकाशोऽप्यहमिहो । यतप्रज्ञो यत्किंचिद्विद्वदधोऽवच
वचः । गृणीयां सह्यं तच्चनुजुव इवेष्टार्थप्रतिज्ञूपदोपास्ने पार्श्वस्तिन
यजनयिष्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकाङ्क्षामासूनोधुत्तनिधनमूनोयवसु
ना । सुनामन्नोऽनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोऽज्ञानो नु
वनजवने नो वृषज्जरं । व्यधांमोद्वादेनोरयमघनतेनोत्कटविपत् ॥ ३ ॥
सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । जगन्नयारामे मरकुरुहवामे
यजिनपाः ॥ इतोऽग्राक्षग्रामे शितरसमकामेषु विजयो । त्वमर्काली
ज्ञामे दुरमदजघामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चितरमपारे
जुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ धुतारे केतारे
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे द्विद्वारे जवदहनवारे कुरुकपां
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्तरान
हिमिषु नमाराव्ययविज्ञो ॥ ज्वलन्त्यस्योदारा न्विषधरकुमाराधिपतिता
। मनुक्रीशागारावतुजिनमहाराजसज्जनवान् ॥ ६ ॥ दिशश्चीमान्दे
वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥
तमात्राज्ञोमेवः परिकरिदरेवत्सलसदा, सदानंदकेवल्यचलपदमेवस्तु
तिरुते ॥ ७ ॥ कजन्माहं कायं किरवगणहं कीर्तिधवलं, कुबेरेऽयं

कूहाव्रततिपरशुकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं
 ददानंकंकहोपमसुरमराखंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं
 जचकुशकिदात्रंसुहृदयै रदोरात्रंछात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रज्ञो पवित्रं
 सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्मित्रंस्तुतपुरुषवित्रंसरणकम्
 ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंद्दृगुदकजवैः पीतममलै रिहावन्यांध्रन्याः सं
 फलजनुषस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्त्वाश्वतुसदसव्यक्तिविकला ज
 धारण्येष्टन्तकथमपिज्वलंनददृशुः ॥ १० ॥ नजानेहनेतः कुमततिमर
 प्रावृतदृशां गतिस्मीदृक्षाणादरहरजवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य
 ज्जिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदारभ्यांनोर्चितामणिमिवज्जन्तेस्तविधयः
 ॥ ११ ॥ त्वमेवेशोदानींमयिवितनुतात्कामपिरुपां जवास्ताघोदस्व
 चलनिपतितं प्रोद्धतराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणामीतोस्म्यशर
 णः शरणयोसिश्रेयान्प्रज्जुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयस्वंधीरत्वां
 धरितकनकाहार्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिज्जटगज्जोरत्ववि
 दितः दितःप्रत्यूहालिः शुज्जमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः
 कुमतिबसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविज्जदोर्धपरमपुरुषः सिद्धिन
 गरीं गरीयः सात्रज्यंगणधरमहामात्रमहितः दितः कर्तुंकर्माष्टकदि
 पुबलंज्जज्जयमहा माहतीर्थेशश्रीजरमतुलमाप्तः पृथुमहाः ॥ १४ ॥
 महाराज स्तुत्योडुरिततरुसिन्दुरतिलको लकोनः पालाकः सकलज्ज
 विनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं भेवरसरसिकादम्बश्वसन् वसज्ज्जी
 यात्पार्श्वप्रचुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीज्जोलोकोत्तरपद्
 मुपेतःसकलवि । ह्रवित्रंदोषालोयवसलवनेप्राप्तविज्जवः जवध्वस्त्यै
 नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुणं
 गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकबंधुरम् ॥ ज्वन्तंसद्योग प्रथि
 तपदवीचारिनिवहा अज्जस्त्रंविश्रामंप्रणिदधतिविश्वेश्वरसमे इदंस्थाने
 चन्तिप्रसृमरसितोखंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्चुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकजुरुप्रकाशोधतमसं हरद्वौकिंकुर्व
 न्नमलकमलोद्वासमयकम् प्रबोधं व्यातन्व निततः करतः पंकदलनो ज
 गच्चक्रुः पार्श्वोदिशतुकुशलं मे संमयजूः ॥ १८ ॥ नितान्तं सन्तापं स
 मतनुमतां च न्नमृतयुः कलान्निःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो
 षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरश्चा वताद्यामापुत्रः सपदिविपदस्तार
 कपतिः १९ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुधाचारुप्रकृति र्महीजन्मातङ्गा
 स्यं प्रजृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फूर्तिदददविरंतराजतनयो ह
 यातो तोलोकेतनुजवनमाप्नेति बलवान् ॥ २० ॥ थरादिस्थेशानं शु
 ज्जगुरुविज्जोगौरकरणः सदापायाद्वैमासुरगुरुरपायाङ्गिनपतिः स्थिरः
 स्फारश्चोकस्तुतिसमुचितौजानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशलकरः
 केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽथेज्यस्त्रिदसविसरेज्योवरतया सि
 लोके शोनूनं त्रिजगदवनात्वंकमलजृः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज
 न्माधिवसना चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्थुपदिशान् ॥ २२ ॥
 प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्परार्ध्यश्रीयोगात्कमलनेलयेतो
 सिज्जगद्वन्ननाकश्चिद्भिश्चातिशयज्जरचितस्त्रिजुवने जवाद्दहो गीतः
 परमपुरुषो तोहरिदयैः ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वं त्रिजुवनजनैकाधि
 पतया शिवः शश्वन्नुणां परमपददानैकसुविधेः अस्तित्वं सर्वज्ञः सकल
 जगदधौ धकलना न्नशूलीनोचोग्रेन च पशुपतिर्ज्ञो विषमदृक् ॥ २४ ॥
 अवाप्तः श्रेयः श्रीप्रवितरणलोलाविदलिता द्वितेया अहोशीरुदमहि
 मसारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसन्नः कृतकुमतज्जन्मः सुमनसां हिताया
 शेषाणां सुकृतपदवीं त्वंक कथयन् ॥ २५ ॥ जिनेन्द्राद्वारां बहु विपदम
 त्रं धृतमरं कलत्रं येनात्र कसहरिहरादिः सुरगणाः सकर्षानाकर्षामित
 चरितताधूर्तनिबद्ध प्रतारीसदोषः मित्तसततरोषः स्थितिदतः ॥ २६ ॥
 समग्रामग्रामप्रजवज्जयदो बोधरहितः सरुग्जव्यद्वेषी पुरुडुरितकृत्मा
 नकलितः पुरामोहान्नूतभिरमिह सद्वाहीनमहितः सदेवो प्राद्यत्वं कथ

भपिसमासादिमथकाः ॥ २४ ॥ प्रजोर्किंवाभैतैरभिमतविधानेन सतरै-
 रपासोपास्यस्तं खलु जिनवरेण्येन वरतम् मनोहिर्मैत्वत्यहनजयुगले
 सम्प्रतिवसन् परामेति प्रीतिप्रणयकरुणामिष्टसुहृदा ॥ २५ ॥ अद्वन्द्व
 स्रांसिन् इविषाजरमडीसदृशं विहायेनाप्रतन्धरसिकिलरत्नत्रयमहो
 दधत्सौवर्णानामुपरिनिक्षिप्तानाक्रमयुगं पुनर्निर्लोभानां धुरिसुमतिमद्भि-
 स्त्वमुदितः ॥ २६ ॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्न्यं सुवरण त्रयी
 मध्यं मेघोदधिधरावास्तोष्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिख
 ह्मांशिदधत कुतस्तेनैराग्यं शिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ २७ ॥ खलं
 प्राज्यं राज्यं विदितविज्रवापास्यलषतो महानंदानन्तामहदधिपतेन श्व
 रतरम् कृतेनिर्गम्यत्वं प्रशमरसचाद्वेस्त्यमुमतां महश्चित्रं चित्तेजनयित
 वेदंतुचरितं ॥ २८ ॥ निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनद्वृष्ट्यातिशयितं जगद्वा
 रिद्याभिं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणायु
 ग्मं सुधादया नतर्थं स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ २९ ॥ जग
 त्येकाधारादितरकरकारानिलयतः समुद्धर्तुं जंतून्परिवृढसमंतूनपिकि
 ल तवत्रातर्ज्ज्माजनिजननमुख्याकगणाहत् जवेवेशस्तोर्धोपिचनिर्ज
 पमानन्दरसिकः ॥ ३० ॥ अद्दीशस्ते शस्तक्रमणावरिवस्यस्य सुमना
 मनाक्षयस्येककोयदिश्वदनुगमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुंरु
 तेतं स्वपसमं समाङ्गल्यं वाथ प्रजवतिनकः स्वासिरुपया ॥ ३१ ॥ प्र
 लापायाहुद्धास्तवगुणगणान्जान्तिविशदा खिलोकीजूजनेसुरपयमणे
 ज्ञानवश्व रसज्ञानांकोट्याप्यमलधिषणोनव्यधिषणो नतानीष्टसख्या
 तुमदपरार्थं तुसरदां ॥ ३२ ॥ नमस्तुभ्यं संसृत्पतनुतटिनीतारणतरे
 नमस्तुभ्यं ज्ञीमामयसमददन्ताबलदरे नमस्तुभ्यं सूक्तातिमधुरिमदासी
 कृतसुधा समुद्राया मुद्गश्रुदवसिततुभ्यं जिननमः ॥ ३३ ॥ पादेयाद्
 महिमालयाय सुमनः सन्दोदशुश्रूषितां हिद्वद्वायकलिभिदेजगवते
 प्रव्यावलीहेतवे लोकेशे पुरुषोत्तमाय मदनामित्राय विश्वत्रयी मित्राय

(१६५)

क्षणदोदयायसतर्तश्रीपार्श्वतुन्यनमः ॥ ३४ ॥ सार्द्धलविक्रीमिंतं
 वन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्रमा न्नरनिर्जिततारकराजगणः कृतल
 क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवहे ॥ ३५ ॥ तोटकवन्द ॥
 न्नवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये
 हम् वितरविततबोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामधिन्ध
 स्वरूपम् ॥ ३६ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा
 दप्रसादसन्तृषंरघुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती
 प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ३७ ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भ्वसंततिवका
 वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अर्हाय्येषुस्तम्बेरमशशिमितेदायन
 थरे नन्नोमासकृष्णोगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु
 नाथाद्यामुनिना स्तवोवासासूनोरचितद्विस्वितोमोदन्नरतः ॥ १ ॥
 इतिश्री पार्श्वप्रन्नोमद्विस्वितोमोदन्नरतः संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवन्दनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवन्दन ॥

॥ सिद्धो विज्ञाह चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंनरीड मु
 निंदो । वाली पद्भुज संवो न्नरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो
 कोमी पंच इविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अण्णगे विम
 लगिरिमई तिडमेयं नमामि ॥ १ ॥ इति सिद्धाचल चैत्यवन्दनं ॥ सिद्धं ॥

॥ अथ श्रीयंमणापार्श्वनाथ चैत्यवन्दन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंन्नणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम
 सिरि पास सांम, राजे अजिरांम ॥ १ ॥ विवुधेसर सिरि अन्नय
 देव संववियाणं दिव थुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मं
 न्मिय ॥ २ ॥ सुर नर सुइ कुसुमावलीए, सिवफल दायक जाण ॥
 आराइड जदि एग मण, पावो पद कळ्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमाण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला
कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति
वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लाख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥
पूर्व विदेह विराजता ए, पुंनरीकनी ज्ञांण ॥ प्रभु द्यो दरसन सं
पदा, कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरव दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर निच । तीरथ सिख
र समेतको । चाहुं दरसंण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु ।
बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुढता सु
जगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥
जविजन जेटो जगतसुं । तीरथ करण कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाज । समरुं सुखकारी ॥ ज्ञावी
जिनवर जरद्विच । मंण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्या सुदेह
मान । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमान । जिनराज
समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरद निवारक जांण ॥
ज्ञावी जिनवर जेटिये । कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामाद्दे सकलमुज्जयः कालघटना । द्विधा ज्ञूतं
रूपं जगदज्ञिषेयं जवतिय ॥ तर्द्धतर्मत्रं मे स्मरहरमयं सेंडुममलं
निराकारं शश्वक्कप नरपते सिव्यतु सते ॥ १ ॥ अविरलशब्दधनोधा
। प्रह्वालितसकलज्ञूतलकलंकाः ॥ मुनिजिरुपासित्चरणा । सर
स्वती हरतु मे डुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनैश्याणां । साधूनां वंदनेन
च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । विद्धस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अथ प्रह्ला
दितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनैश्च
तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ इत्था जेह सुखकृणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर
पूज्या नहीं, ते परधर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो,
सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनैसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥
॥ २ ॥ जीवना जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा
नमे परजा नमे, आंख न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे वागमें,
बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंडमा, त्यूं सोजे महाराज ॥ ४ ॥
जगमें तीरथ दो वना, सेत्रुंजो गिरनार ॥ ठण गिरि रुषज समो
सरथा, ठण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो
मन रही लोझाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाखी लखी न जाय
॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज
हु न वावने, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांझ पंखियां,
वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच जेरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार
॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ रुद्धि बुद्धि
गोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेशरियानाथके,
केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके धारुले, वसे पहामा बीच ॥ १० ॥
इस रागको नांम कढ्याण हे, प्रजुजीको नांम कढ्याण ॥ सकल
सज्जा कढ्याण हे, जब प्रगटी राग कढ्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग
सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतरी, त्यूं त्यूं
मीठी आय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोनियो, लाखां ऊपर कोना
मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोरु ॥ १३ ॥

(१६५)

दया गुणारी बेलनी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव
मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु बेलनी, रोपी
आद जिनंद ॥ आवक कुल मंरुन जई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत
संत आत्म गुण रूप ॥ आचारज उवप्राय साधु समतारस धाम,
जिन ज्ञाखित सिद्धांत सुद्ध अनुजव अजिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज
गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद
अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परजव आषांद जगमांदि प्रसिद्धो, चिंतामणि
सम जास जोग वहु पुन्ये लक्षो ॥ तिहुअण सार अपार एह महि
मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संजारो ॥ ३ ॥ सिद्ध
चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कळ्याणनिधि
प्रगटे चेतन रूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिथीकां स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक
जगगुरु मुज आशाविशाराम ॥ पूरव विदेहे विजय जली पुष्कला
वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥
धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण
धरे जिहां जिनवर जाण ॥ धन ते जविजन जे रहे प्रजु ताहरे
परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु
मुखें प्रजु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मिलवाने उलसे मन मा
हरं धरं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी ठे मुज सधली
जोर, पण प्रजु लग पडूंचीजें तेह नहि पग दोर ॥ ३ ॥ आम्हा
रूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुजथी अवराये प्रजुजी
एटली दूर ॥ आंखरुली नलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

रुखी पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटरुखी वहतो
 कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ
 ॥ जाणूं शशहर सार्थे कहुं संदेशा जेह, पण अलगो अई ऊपरि
 वामे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय,
 तो इण जरतना वासी जविजन पावन आय ॥ साहिबनी तो सुन
 जर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारु फल प्रति जोय
 ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना
 आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ठे माहरो आत
 मराम, नहिय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे
 दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि
 महिर अवेह ॥ दूसम काळ तणो दुःख टाळो दीन दयाळ, पाळो
 बिरुद संजाळो निज सेवकशुं कृपाळ ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग
 थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर बत्तां नवि आय
 निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें
 सकलने जाणो हजूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वा
 मि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें
 एक पलक जो थाये प्रभु तुज संग, लाज उदयजिन चंड लहे नित
 प्रेम अन्नंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणूं, सामि सीमंधरा तुह
 जगते जणूं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियमे घणो, करिय सुप
 साय जे वोनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुहशुं कूरु अरिहंत शुं राखियें,
 जिस्थो अठे तिस्थो कर जोरि करि जांखियें ॥ अति सबल मुऊ
 हिये मोह माया घणी, एक मन जगति किम करूं त्रिजवन धणी
 ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिणमे, रीश चटको चढे

લોજી વયરી નેને ॥ નયણ રસ વયણ રસ કામ રસ રસીયો, તેમ
 અરિહંત તું હીયને નવિ વસીયો ॥ ૩ ॥ દિવસ ને રાતિ દિયને
 અનેરો ધરું, મૂઠ મન રીઝવા વલિય માયા કરું ॥ તૂંહિ અરિહંત
 જાણે જિસ્યો આચરું, તેમ કર જેમ સંસાર સાગર તરું ॥ ૪ ॥
 કમ્મવસિ સુખ ને ડુઃખ જે હું સહું, મન તણી વાત અરિહંત કિ
 ણને કહું ॥ કરિ દયા કરિ મયા દેવ કરુણા પરા, ડુઃખ હરિ સુસ્ક
 કરિ સામિ સીમંધરા ॥ ૫ ॥ જાણ સંયોગ આગમ વયણ પણ સુણું,
 ધર્મ ન કરાય પ્રત્નુ પાપ પોતે ઘણું ॥ એક અરિહંત તું દેવ બીજો
 નહિં, એહ આધાર જગ જાણજો અહ્મ સહી ॥ ૬ ॥ ઘણ કણય માય
 પિય પુત્ર પરિયણ સહૂ, હસ્યો વોલ્યો રમ્યો રંગ રાતો બહૂ ॥ જયો
 જયો જગગુરુ જીવ જીવન ધરા, તુહા સમોવન નહિં અવર વા
 લ્હેસરા ॥ ૭ ॥ અમિય સમ વાણિ જાણું સદા સાંજીલું, વારવર
 પરષદામાંહિ આવી મિલું ॥ ચિત્ત જાણું સદા સામિ પાય ઝંજણું,
 કિમ કરું ગમ પુંઢરગિરિ વેગલું ॥ ૮ ॥ જોલિના જગતિ તું ચિત્ત
 હારે કિસ્યે, પુણ્ય સંયોગ પ્રત્નુ દૃષ્ટિગોચર હુસ્યે ॥ જેહને નામે મન
 વયણ તન ઝલ્લસે, દૂરથી દૂકના જેમ દિયને વસે ॥ ૯ ॥ જલ
 જલો ણિ સંસાર સદુ એ અઢે, સામિ સીમંધરા તે સહૂ તુમ પઠે
 ॥ ધ્યાન કરતાં સુપનમાંહિ આવી મિલે, દેશિયે નયણ તો ચિત્ત
 આરતિ ટલે ॥ ૧૦ ॥ સામ સોહામણા નામ મન ગહગહે, તેદશું
 નેહ જે વાત તુહા જી કહે ॥ તુહા પય જેટવા અતિ છણો ટલવલું,
 પંચ જો હોય તો સહિય આવી મિલું ॥ ૧૧ ॥ મેરુગિરિ લેખણી
 આજ્ઞ કાગલ કરું, ક્ષીરસાગર તણાં દૂધ સ્વમિયા જરું ॥ તુહા મિ
 લવા તણા સામિ સંદેશના, ઇંડ પણ લલિય ન શકે અઢે એવના ॥
 ૧૨ ॥ આપણે રંગ જરિ વાત મુખ જેટલી, ઝપજે સામિ ન કહાય
 મુખ તેટલી ॥ સુણો સીમંધરા રાજરાજેસરા, લારુ ને કોરુ પ્રત્નુ

(१६८)

पूर सवि माहारा ॥ १३ ॥ पुत्र जवि मोह वश नेह हुवे जेहने,
समरिये एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल जम
रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतुं
ध्यान दिहने वस्थुं, बापहुं पाप दिव रहिय करशे किस्थुं ॥ गम
जिम गरुवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके
रही ॥ १५ ॥ पाप में कळ सावळ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा
तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख जे
मार संसार जय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही,
एह में बात अरिहंत आगल कही ॥ एवनी मारी जगति जाणी
करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम रुद्रिवृद्धि,
समृद्धि कारण, डरित वारण, सुख करो ॥ उवजाय वर श्री, जक्ति
जाजें, धुणयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी
सामि, मया घणी ॥ कर जोनि वलि वलि, वीनहुं प्रभु, पूर आ
शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप
जणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल
न्यान दिणंद ॥ त्रिगने गद्गह्यो ए, जवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥
न्यान वहुं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,
साचो सदेह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुबिलास, लोकाढोक प्र
काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणो किस्थुं ए ॥ ४ ॥ अधिक
आराधक जाण, जगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतुं, ए, किरिया
देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोद्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही
ए, कोरु बरस कही ए ॥ ५ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोळ्या

(૧૬૯)

સૂત્ર મંજાર ॥ કિરિયા ઢે સહી એ, પણ પાઠે કહી એ ॥ ૭ ॥
કિરિયા સંહિત જો ન્યાન, હુવે તો અતિ પરધાન ॥ સોનો ને સૂરો
એ, શંખ દૂધેં ઝરયો એ ॥ ૮ ॥ મહાનિશીથ મંજાર, પાંચમિ અક્કર
સાર ॥ જગવંત જાંઘીયો એ, ગણધર સાંઘીયો એ ॥ ૯ ॥

॥ ઢાલ ઢૂંજી ॥ કાલહરાની દેશી ॥

॥ પાંચમિ તપ વિધિ સાંજીયો, જિમ પામો જવપારો રે ॥
શ્રીઅરિહંત હમ ઉપદિશે, જવિયણને હિતકારો રે ॥ પાં૦ ॥ ૧ ॥
મિગસર માદ ફાગુણ જલા, જેઠ આષાઢ વૈશાખો રે ॥ ફળ ષટ
માસેં લીજિયેં, શુક્લવિન સંદગુરુ સાંઘો રે ॥ પાં૦ ॥ ૨ ॥ દેવ જુ
હારી દેહરેં, ગીતારથ ગુરુ વંદી રે ॥ પોથી પૂજો ગ્યાનની, સગંતિ
હુવે તો નંદી રે ॥ પાં૦ ॥ ૩ ॥ બે કર જોની જાવશું, ગુરુ મુલ
કરો ઉપવાસો રે ॥ પાંચમિ પન્નિકમણો કરો, પઠો પન્નિત ગુરુ
પાસો રે ॥ પાં૦ ॥ ૪ ॥ જિણ દિન પાંચમિ તપ કરો, તિણ દિન
આરંજ ઢાલો રે ॥ પાંચમિ સ્તવન શુરૂં કહો, બ્રહ્મચરિજ પિણ પા
લો રે ॥ પાં૦ ॥ ૫ ॥ પાંચ માસ લઘુપંચમી, જાવજીવ ઉત્કૃષ્ટી
રે ॥ પાંચ વરસ પાંચ માસની, પાંચમિ કરો શુક્લ દૃષ્ટિ રે ॥ પાં૦ ॥ ૬ ॥

॥ ઢાલ ત્રીજી ॥ ઝહાલાની દેશી ॥

॥ દિવ જવિયણ રે પાંચમી ઝજમણો સુણો, ઘર સારુ રે
વારુ ધન સ્વરચો ઘણો ॥ એ અવસર રે આવંતાં વલિ દોહિલો, પુણ્ય
જોમેં રે ધન પામંતાં સોહિલો ॥ ઝહાલો ॥ સોહિલો વલિય ધન
પામતાં પણ ધર્મકાજ કિહાં વલી, પાંચમી દિન ગુરુ પાસ આવી
કીજીયેં કાઉસતગરલી ॥ ત્રણ જ્ઞાન ફરિસણ ચરણ ટીકી દેડ
પુસ્તક પૂજિયેં, યાપના પહિલી પૂજ કેસર સુગુરુ સેવા કિજિયે ॥
૧ ॥ ઢાલ ॥ સિદ્ધાંતની રે પાંચ પ્રતિ વીઢાંગણાં, પાંચ પૂઠાં રે
મખમલ સૂત્ર પ્રમુલ તણાં ॥ પાંચ મોરા રે લેખણ પાંચ

मजीसणा, वासकूपा रे कांधी वारू वतरणां ॥ उल्लाखो ॥
 वतरणां वारू वलीह कमली पांच जिलमिल अति जली, स्थाप
 नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती परुपाठली ॥ पटसूत्र पाटी पंच
 कोथल पंच नवकरवालिवां, इण परें श्रावक करे पांचम छजमणुं
 उजवालिवां ॥ १ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजि
 यें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल
 ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लाखो ॥
 जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश जृंगार ए, आरति मङ्गलधा
 ल दीवो धूपथाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरु अंगलू
 हणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमानियें रात्रि जोगे
 रे गीत रसाल गवानीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें,
 ज्ञान दरिस्णरे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लाखो ॥ साधियें मारग
 एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञान
 वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे
 लहे, जे करे पांचमी तप अखंरित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥
 कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेतरो ॥ में
 शुणयो श्री अरिहंत जगवंत, अतुल बल अलवेत्तरो ॥ जयवंत श्री
 जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय
 सुंदर, जगति जाव, प्रशंसियो ॥ ५५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्त
 वन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥
 पहिलुं ज्ञान ने पठें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान बखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २॥
 मति अगदीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥
 दोय जेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥
 चंड सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान
 समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ
 प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण
 पासुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोमी पास ॥
 सेवा सारे जेदनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोजागी
 साहिब मेरा बे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा बे ॥ ए आंकषी ॥
 सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें
 पेखतां मानुं, नव नवि बबिय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥
 जव डःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी
 गुण तादरा मादरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥
 दूरयफी हुं आयो दहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिने
 नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु
 मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हस्ते
 रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥
 किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें
 तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा
 ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा
 रसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत
 रेशें बावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन जले ज्ञावशुं,
 मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परंजपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारीता, मोरी त
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय
॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल
जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियमुं
हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खन
खावा जाय ॥ आदर साहिवनो लही जी, कुण छे रांक मनाय
॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न ठेते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाय ॥
कुण सुरतरुथी ठाठिनें जी, बावळ घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव
अवर जो हुं करुं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज जवो
जवें जी, तुंदिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा जगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिदंत ॥
धारे परषदा बैठी जुनी, मागशिर शुदि इग्याश्श वनी ॥ १ ॥ म
द्धिनाथना तीन कळ्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर
दीक्षा लीधी रुवनी ॥ मा० ॥ २ ॥ नभिने ऊपनुं केवलज्ञान,
पांच कळ्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवनी ॥ मा०
॥ ३ ॥ पांच जरत ऐरवत इमहीज, पांच कळ्याणिक हुवे तिम
हीज, पंचासनी संख्या परगनी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत
गणतां एम, दोढशें कळ्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथि छे ए तिथि
जेवनी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इय परें गिणो, लाज अ
नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखनी ॥ मा० ॥
६ ॥ मौनपणें रक्षा श्रीमद्धि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ
॥ मौन तणी परि व्रत इम पनी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

कीजिये, चोविदार विधिंशुं कीजिये ॥ पण परमाद न कीजें घरी
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक
 उद्धास ॥ ए तिथि मोह तणी पावनी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं
 कीजें श्रीकार, ज्ञानतां उपकरण इग्यार इग्यार ॥ करो काजसंग
 गुरु पाये पनी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे छात्र करीजें वली, पोष्टी
 पूजीजें मन रली ॥ सुगतिपुरी कीजें दूरुमी ॥ मा० ॥ ११ ॥
 मौन इग्यारस यहेदुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पञ्च
 रक्षाश करो आखनी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसज शोल इक्याश। समे,
 कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो व्याहनी ॥ मा०
 ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाठं त्रिजुवनके स्वामी
 ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥
 सांत जपीने कीजै कांमा, सोइ कांम हुवै अजिरामा ॥ शांति ज
 पी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्जयकी
 प्रजु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति
 तणा गुण गावै, रुद्धि अर्चिती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रजु
 शांति सुहाई, ता नरकूं कुळ आरति नांही ॥ जो कबु वंगै सोही
 पूरै, दाखिइ दोष मिछ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति
 प्रकासी, घट२ के जीतर प्रजु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नबि
 जावै, कहितां मो मन अचरज आवै ॥ ५ ॥ फार दिया सबही ह
 थियारा, जीता मोहतया दल सारा ॥ नारितजी शिवसुं रंग राचै,
 राज तज्या पिण साहिब साचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजै देवा,
 कायर कुंशु न एक हयोवा ॥ रुद्धि सहू प्रजु पास लहीजै, त्रिका
 हारी नांम कहीजै ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम ज्ञायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तज्जी परिग्रह जए जग नायक, नाम
 अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सन्नु मित्र सम चित्त गिणीजै,
 नांम देव अरिहंत जणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहाजै, सेवक
 जाण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंजीरा, दुषण
 नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण
 न रहै प्रजु एकण ठांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रजुजी सब देखै,
 पिण सुपनो कबहु नवि पेलै ॥ रीस विना बाबीस परीसह, सैन्हा
 जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, मा
 या विना सबसुं मन लावै ॥ लोअ विना गुणरास ग्रहीजै, जिहु
 जये त्रिगुणो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर बत्र धरावै, नांम
 जती पिण चमर दुलावै ॥ अजय दांन दाता सुखकारण, आगे
 चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजै, कर्म
 सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ आपै, लख घणी
 देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहावै, ना किंसदी
 कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद्ध धरावै, पिण सोवन पंकज
 पगडावै ॥ १५ ॥ तजि आरंज निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं
 साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेय नही निगुणा
 संग बारै ॥ १६ ॥ तेरी मदिना अइजुन कहिये, तेरे गुणांको पार
 न लहिये ॥ तूं प्रजु समरथ साहिव मोरा, हुं मनमोहन सेवक
 तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकनणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन
 दयाला ॥ तूं सरणागत राखण धीरा, तूं प्रजु तारक बै वरुवीरा
 ॥ १८ ॥ तुम जेसैं वरुजागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स
 बायो ॥ कर जोनी प्रजु बीनहुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं
 ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, जवसायरथी पार उतारो
 ॥ श्रीदयशापुर मरुण सोदे, तिहां जिन शांति सदा मन मोदे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्रीगुणसागरके मन प्रायै ॥
जे जर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चै पावै ॥ २१ ॥
इति श्रीशान्तिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासो आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ बाल ॥ बिलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ प देशी ॥

॥ जयर जिण पास जगत्र धणी, सोजा ताहरी संसार
सुणी ॥ आयो हुं पिण घर आस धणी, करवा सेवा तुम चरण
तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पमे जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै
॥ आसातना चउरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संजालै ॥ २ ॥
जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाळी जूये रमै ॥ धनुषादि
कला सीखण हूकै, कुरखो तंबोल जखे झूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय बनी
लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुडिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रु
धिर क्रिया, चांदोनी नाखै चांमनियां ॥ ४ ॥ दातण ने बमन पिये
कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण बिसरावै, अज
गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै,
नख गाल वपुषना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, बिह
चन अपणो कर धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसै पग ऊपर पग चढिया, आपै
बाणा ठमै हुंढणियां ॥ सूकवै कप्पर पप्पर बनियां, नासीय डियै
नृप जय पनियां ॥ ७ ॥ शोके रेवै विकथा ज कहै, इहां संख्या
वैतालीस जहै ॥ इथियार घमे ने पशु बांधै, तापै नांणो परखै रां
धै ॥ ८ ॥ जांजी निस्तही जिनगृह पेसे, धरै बत्र ने मंरुपमें
वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अने पनहो, चामर वीजै मन गंम नही ॥ ९ ॥
तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, जूषण तज आप कुरूप धियै ॥
दरसणथी सिर अंजली न धरै, इगसानै उत्तरासंग न करे ॥ १० ॥

भोगो सिरपेच मोरु जोमै, दमिये रमने वेसे होमै ॥ सयणासुं
 जुदार करे मुजरो, करे जंम चेष्टा कहै वचन बुरो ॥ ११ ॥ धरे ध
 रणो जगमे उल्लंठो, सिर गूँथै बांधे पालंठी ॥ पसारे पग पहरे चावनि
 यां, पग ऊटक दिरावै दुखनियां ॥ १२ ॥ करदम छूदै मैथुन मंमै,
 जू आवलि अँठ तिहां बंमै ॥ उघामे गुज करै वयदा, काढे व्या-
 पार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अंधोले
 पीवा ठाम जरै ॥ दूषण जिनजवनमें ए दाख्या, देववंदन ज्ञाप्यमें
 जे ज्ञाख्या ॥ १४ ॥ सुझानी आवग सगति बंतां, आसातन टाँले
 धारसता, परमाद वसै कोई थायै, आलोयां पाप सहू जायै ॥ १५ ॥
 तंबोल ने जोजन पांन जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री जोग हुआ ॥
 जूषण पनहो ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर माहि वसै ॥ १६ ॥
 द्यत ने ज्ञावत दोय पूजा, एहनाहेज जेद कहा बूजा ॥ सेवा
 प्रजुनी मन शुद्ध करै, वंजित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥
 कलश ॥ इम जय प्राणी ज्ञाव आंशो, दिवेही शुज वातना ॥
 जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थ
 कर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ उवजाय श्री प्रनसीह बंदे, जैन
 शासन ते बली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमं रूपं जिनैस्तर पाय, धनुष पांचसै उंची काय ॥ बी.
 जो अजित जिन मुज मन वसै, मांन धनुष साढाव्यारसै ॥ १ ॥
 तीजो संजव सुख दातार, उंची काय धनुष सो व्यार ॥ अजिनं
 दन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम
 सुमतिनाथ जगवांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पदम प्रजू प्रै
 मन आस, देह धनुष दोयसे पञ्चास ॥ ३ ॥ साभि सुधारस सनम
 होय, देह प्रमांश धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रजु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमाण धनुष दौढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्र
माण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमै जग सवे, देह प्रमाण ध
नुष जसु निवै ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लासी, उंच प्रमाण धनुष
तनु असी ॥ वासपूज्य धारम जिन चंद, मान धनुष सितर सुख
कंद ॥ ६ ॥ विमल २ गुणकर गंजोर, साठ धनुष जसु मान तरीर
॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमाण धनुष पञ्चास ॥ ७ ॥
पनरम धरमनाथ जगदीस, मान धनुष जसु पैंतालीस ॥ शांति
करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोजंति ॥ ८ ॥
सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मान धनुष पैंतीस उदार ॥ अर अ
ठारम दीनदयाल, त्रिस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ९ ॥ महि
नाथ जिन जगणीसमो, मान पञ्चीस धनुष पय नमो ॥ बीसम
मुनिसुव्रत अरिदंत, बीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इकवा
सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम
श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपै जांण दिशंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री
पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चौवीसमा जिनवर श्री
वीर, सात हाथ जगनाथ तरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो
वीस, प्रथम प्रह शम धरिय जगीस ॥ तां घर रुदि सिद्धि उठ
रंग, रंग विनय प्रथम मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चौवीस जिन
देहमान स्तवनं ॥

॥ अथ चौवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ रुषभदेव प्रणमं जिनराय, लाख चोरासो पूरव आय ॥ बी
जो अजित जसु सूत्रे साख, आठ बहुतर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती
र्थकर संजव तीसरो, आठ लाख पूरव साठरो ॥ अजिनंदन पूरै
मन आस, आठ लाख पूरव पञ्चास ॥ २ ॥ लुमतिनाथ पंचम
जगदीस, आठ लाख पूरव चालीस ॥ श्री पद्मप्रभूनी ए अित

(१४८)

जाण, लाख तीस पूरब परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब
वीस, दस लाख पूरब चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लाख पूरब दोय,
इक लाख पूरब शीतल धित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी
लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो,
वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लाख साठ वरीस,
वरस अनंत तणो लाख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिशंद,
लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस धिति पयाणवै,
श्री कुंथुनाथ तणी संजवै ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि
सहस पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनि सु
व्रत परमाण उदार ॥ बीस सहस ननिजिन धित जणी, वरस स
हस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस
बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुषजतणा तेरे अवतार, सात चंड शंती-
सर बार ॥ ९ ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्ता-
बीस ॥ त्रिहुंश जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अरुतीस
॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन, गणधर चवदेसै बावन्न ॥
सहुने मुनि लाख अठावीस, सहस ऊपरै अरुतालीस ॥ ११ ॥ लाख
चमाल बयाल हजार, धरुधिक सहु साधवो सो ज्यार ॥ आवक
लाख पचावन धुरै, अरुतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोनि
आवका सुजगीस, लाख पांच सहस अरुतीस ॥ ए संघ चतुर्विध
सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री
चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ बाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं,
पञ्चणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लिखै निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ रूपज अजित संजव अ-
जिनंदन, सुमति पदमप्रजु नयनानंदन, सत्तम तेम सुंपास ॥ चंड-
प्रजु ने सुविध शांतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,
विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-
थुनाथ अर मल्लि सुदंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए
जिन चोवीस ॥ जग वल्लल जगगुरु जगदीस, प्रणामीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ बाळ २ जी ॥ प्रथम सुपनगज निरख्यो ॥ ए देगी ॥

॥ प्रथम ज़रत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो
उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कोस, ठठो
कुंधु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संजूमि सनाथ ॥
५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय
तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र ज़रत
सिपागार ॥ मघवा सनतकुमार, पोइता सरग मऊार ॥ ७ ॥ स-
जूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ अया सिवगामो, ते
प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ बाळ ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ट दूतरो, तीजो स्वयंप्रजु जा-
णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमांणिये
ए ॥ ९ ॥ ठठो पुरुष पुंमरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे
आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए
पिया नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला
पांच ठठो गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो
तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें जइ, सुप्रजु सुदर्शन,
आनंद नंदन शुज मती ए ॥ रामचंड बलजइ, बलदेव ए नव,
आठ अया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलजइ ब्रह्म देवलोक,

(१८०)

काल जसप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासनं ए ॥ अथवा निपुलाक
नाम, तीर्थकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत ज्ञे ए ॥ १३ ॥

॥ दाल ४ ॥ कुमरपणे प्रभु रहतां काल सुखे गमे ॥ ए देशी ॥

अस्वधीव नै तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंज वलय
प्रह्लाद, रावण जरासिंधु जिंसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक
गति गामियां ए, ते पिण जावि जिनेस केई प्रणामु मुदा ए ॥ १४ ॥

॥ दाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नै कुंभु अरि एह जव एकही, चक्रधर तीर्थकर दोष
पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत जव जूजूआ, देह तिणसति
पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव कैरा
पिता, एकहिज आय नव एण लेखै बता ॥ तीन चक्रधर तथा
मिलिय बारे टळ्या, एम त्रैसठना तात इकावन मिळ्या ॥ १६ ॥
तीन चक्रवर्त्तणी टाळ दीजे इसै, माय संहुनी षई साठ लेखे इसै
॥ एह नररयणनो ध्यान नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोह
पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम शुण्या तीर्थकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासु-
देव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रैसठ शलाका पुरुष जन्म
जगत जयवतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो
मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रैसठ शलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला
धर्म निवारणो, जय जंजण जगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुज मन के
लट अति घणो, सो दिन सफल गिणेत ॥ स्वामी श्री रिसदेसर,
जब नथये निरखेत ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निज्जाणूं वारं ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥
 इण गिरचंनमासे रद्धा, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामें
 शिव सुख सांभता, गणधर श्री पुंमरीक ॥ पुंमरगिरि तिण कारणें;
 जंगति केंरो निरजीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू;
 विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुज शिखरं समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥
 श्री० ॥ ६ ॥ आवच्चा मुनिवर सुक, सहस्र परिवार ॥ पंथग
 वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमव पांच
 महांबळो, सुणि जांदव निरवाण ॥ ते सोधा सिद्धाचलै, सुर नर
 करै वंखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इमसीधा इण मूंगरै, मुनिवर कोमा-
 कोमि ॥ पाजे चढंता सांज्रै, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ९ ॥
 जे वेधेण प्रतिबूजवो, ते दरबाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवम मिल्ही,
 सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर
 सेवक तासे ॥ राजेसमुद्र गुण गावतां, अविचल लोल बिलास
 श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचळ स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरबानी ॥

श्री सिद्धाचल मंमण स्वामी रे; जग जीवन अंतरजामी
 रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनामी, यात्रोमा जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥
 श्रीकृष्ण जिनैसर राया रे, जिहां पूरव निनाणूं आया रे, प्रभु
 समोसरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्री पूनम दिन वखासो रे,
 पांच कोमिसुं पुंमरीक जाणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या०
 ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, बे बे कोमिसुं साधु संघाते
 रे, एतो पोदता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने
 तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो बे कर जोमां

॥ या ० ॥ ५ ॥ इम जरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु धिर
 थाटे रे, पांम्या मुगति तयो ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोष सदस्त
 मुनी परवारे रे, थावचा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलंग अणगार
 ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे,
 ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांम्व इण गिर
 आया रे, सीधा नव नारद रुषिराया रे, वलो संव प्रजून कदाय
 ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते
 रे, इम ज्ञाप्यो श्रीजगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्जल गिर सम नही
 कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या०
 ॥ ११ ॥ एकादारी ने सचित पहारो रे, पदचारो ने जूमि संधारो
 रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम उदरी जे नर
 पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण जय टाले
 ॥ या० ॥ १३ ॥ धनश् ते नर ने नारी रे, जेटे विमलाचल इक
 तारी रे, जइये तेइतशी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंड
 सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण
 गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषज जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतमी अवधारो रे।
 जगना तारु ॥ मुज तारो जो कृपानिध स्वांमी, जग जसवार
 प्रगट ठे ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥
 निज गुण जोका पर गुण लोसा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥
 अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज०
 ॥ १ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण अवणो निसुणी, हुं तुम चरणे आयोरे ॥
 ज० ॥ तुम रीजावण देते ततखिल, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥
 मु० ॥ काल अनंत गहो एकैइ, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता बलि विकलेंडी, वेष धरया डुख धामी रे ॥ ज०
 ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंडीपणो
 धारयो रे ॥ ज० ॥ चौवीसे दंरुक मांदि जमियो, अब तो हूं पिण
 हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ जब नाटक नित करतो नव नव,
 हूं तुज आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो,
 निरखी तुजने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुज नाटक
 देखी रीज्या, तो मन वंजित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीज्या
 तो मुज जाखो, बलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥
 लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं डुखना नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता
 सेती सुंम जलेरो, बहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥
 तुज सरिषा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥
 तो मुज करमतणी गति अवली, दोसन कोइ तुमारो रे ॥ ज० ॥ ९ ॥
 मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥
 ज० ॥ सुगुण सेवकना वंजित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥
 ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥
 ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन जेटया, वीकानेर मजारो रे ॥ ज०
 ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन रुषजदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोमी हो कहूं मननी बात
 ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिजुवन तात ॥ वी०
 ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं जम्यो, जब मांहे हो स्वामीसमुझ म
 जार ॥ डुक्क अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥
 वी० ॥ २ ॥ पर जगारी तूं प्रज्जू, डुख जंजे हो जग दीनदयाल
 ॥ तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुजने हो निज नयण निहांल
 ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वांम ॥ हुंतो परम जस ताहरो, तिण तारो हो नही दीखो
 कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूज्या, जिण कीधा हो तुज
 ने उपसर्ग ॥ संक दियो चंरुकोसिये, तें कीधो हो तसु आगोसर्ग
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोळ्या हो तोरा
 अबरणवाद ॥ ते वलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण बै इंडजालियो, इम कहंतो हो आ
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रजुतानो वजी
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उद्याप्या ताहारा, ते जगज्यो हो तुज साख
 जमाळ ॥ तेहनें पिण पनरे जवे, शिवगामी हो तें कीधो कृपाळ
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमचो रिष जेरम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी
 पाल ॥ तिरती मूकी काबळो ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाळ ॥
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुषि बूहव्यो, चित चूको हो चारित्यो
 अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥
 नंदिषेण पिण ऊपरयो, सुर प्रदवी हो कीधो अति सार ॥ वी० ॥
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, गदवासे हो वर्यो वरस चौबीस ॥ ते
 पिण आडकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥
 १२ ॥ राय श्रेणक रांणी खेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह
 ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी०
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखनी, नही पोसो हो नही आदर दीख
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामो आप सरीख ॥ वी०
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊपरचा, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥
 सार करो दिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरनी वाते ॥ वी०
 ॥ १५ ॥ सुधो संजम नहि पले, नही तेहवो हो मुज दरसण
 ज्ञान ॥ पिण आधार बै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

बी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जेवे हो सम विखमी.
 वाम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंभित
 काम ॥ बी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो डुख
 जायै दूर ॥ तुम नांमे वंभित फलै, तुम नांमे हो मुऊ आनंद पूर
 ॥ बी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंरुन, तीर्थकर
 चौबीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंद लंठन, सेवतां सुरतरु समो ॥
 जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निखो, वाचनाचारज
 समयसुंदर ॥ संघुण्यो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा
 वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चौबीस दंडक स्तवनं ॥

॥ दाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ प्राप्त जिनसर, एह करुं अरदास जी ॥ ता
 एण तरण विरुद तुऊ सांजलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥
 इण संसार समुद्र अथागै, जमियो जवजल मांदिजी ॥ गिल गिचिया
 जिम आयो गिरुतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं
 झानी तोपिण तुऊ आगै, वीतक कहिये बात जी ॥ चौबीसे वंरु
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न
 रकतणो इक वंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नें
 तीन विकलेंडी ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें
 डी तिर्थच ने मानव, एह थया इकबीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी
 नें वैमाशिक, इम वंरुक चौबीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तिर्थच
 अने नर, परयासा जे होय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजै, इम देवां
 गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आठलै नर तिरि, निहचै
 देव न थाय जी ॥ निज आठलै सम के उठै, पिण अधिके नवि
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर ताई, समूर्जिस तिर्थच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरज्ज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥
 ॥ ८ ॥ आनु संख्यातै जे गरज्ज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर
 पृथ्वी नैं वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९ ॥ पर्यासा
 इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण
 आगै, अधिकांई कहुं देव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी
 मांझी सुर, एकैडी नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला,
 मानवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव जमै संसार।दोय गति
 नैं दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-
 ख्याते आयु परजापता, पंचेडी तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-
 ज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग
 जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ शुद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी
 लगे, सींह प्रमुख चोषीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सोमा सा
 पणी, ठठि लग खी जाय ॥ सातमिये माणस के माढलो ॥ ऊप
 जै गरज्ज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंरुके,
 तिरयंच के नर थाय ॥ तेपिण गरज्ज ने परयापता ॥ संख्याती
 जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरथा, जे
 फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे जांगे करते कहूँ, पिण निश्चै नही को
 य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्ति हुवै, बीजी हरि
 बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थकर पद लहै ॥ चोषीकेवल एव ॥ न० ॥
 ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरबविरति लहै, ठठि देसविरत्त ॥ सातमी
 नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्पो रे ॥ ए देसी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आञ्ज संख्यातै नर सहु दंमके रे, आवी लहै अवतार॥मा०॥१०॥
 तेज वाञ्छ दंमक बे तजी रे, दीजा जे बाबीस ॥ तिहांथी आया आयै
 मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असं
 खी आञ्जै रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरने मनुष्य हुवे
 नही रे, अरिहंत जारुयो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव
 तथा वली रे, चक्रवर्त्त ने अरिहंत ॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे,
 नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव अकी चवि ऊप
 जै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थकर ए हुवै रे, वैमानिकथी
 वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ बाळ ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेव ॥ ए देशी ॥

दिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमे
 इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आञ्ज संख्यातो जे नर तिर्यंच
 विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण
 तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कहा पहली तिण कारण न कहुं
 देव ॥ पंचेडी तिर्यंच संख्यातै आऊलै जेह, ते मरी चिहुंगतिमां
 जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंडी आव
 कहावे, तिहांथी आञ्ज संख्याता नर तिरयंचमे आवे ॥ विकल चवी
 लहै सरखविरति पिण मुगति न पावै, तेज वाञ्छी आयो तेहने
 समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीने सगलाही जीव संसार,
 पृथ्वी आञ्ज वनस्पतीमांहि लहै अवतार ॥ ए तीने इहांथी चवि
 आवै दसे ठाने, थावर विकल िरो नरमांहे उतपत पामै ॥ २८ ॥
 पृथ्वीकाय आद देई दस दंमके एह, तेज वाञ्छ मांहे आवी ऊपजै
 तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेज वाञ्छ बे जावै, विकलेंडी ते
 दसमांहि जावै पूगही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितयो मिथ्यात्वी
 जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी

पाणी अग्नि अने चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तां
जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेईडी तेईडी अने चौरिंदी मजारै, संख्याता
वरसां लगै जमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ जव लगि तां नर
तिरयंचमें रहियो, दिव मानवजव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो
॥ ३१ ॥ राग द्वेष बूटे नंदी किम हुवै ठूठकबार, पिण ठै माहुरै
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अ-
रिहंत लाथो, दिव संसार घणो जमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥
तूं मन वंजित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो में
नवनिध सिद्ध पांमो ॥ अवर न कांइ इहू इण जव तूंहिज वेव,
सूधै मन इक होज्यो जवर ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥
संवत सतर जगणतीसै, दिवस दीवाली तलै ॥ गुणविमल चंद
समान वाचक, विजय हरष सुतीस ए ॥ श्री पातना गुण एम
गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंनक स्तवनी ॥

॥ अथ इरियावही मिळामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमू रे पास जिनेसर भंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि
मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पम्किमी जिम इरियावही, श्री
वीरनी रे वाणी तदत्त कर सरदही ॥ उल्लाखो ॥ सरदही वांणी
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिळामिदुक्कड तणी संख्या,
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ जू दग जलण तिम वाज, वणसइ
विगल पण इंडी तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, डुर ते क-
रिवा जणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुनवि दग रे वाज तेज वणस्तइ, पण
आवर रे बादर सुद्धम दसे आई ॥ प्रत्येकज रे वणस्तइ इग्यारह

अथा, बावीसि रे पञ्चतम अपञ्चतया ॥ उल्लाखो ॥ पञ्चतम अपञ्च-
तम वखाण्या, विगल तिय न्ह जाल ए ॥ जल अल खचर जुयंग
डुइ, पण इंडिय तिरि अरुयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुवी,
नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद जेदे करी जाणो, पञ्चतम अ-
पञ्चतम जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया,
क्लिष्टविधिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंजिय दस रे नव
लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥ उल्लाखो ॥
वखाणियै दस विध जुवनपतिना, तार रवि सशि रिसिगहा ॥ चर
धिर दसै विध जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ बारह
विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीविके नव जण्या ॥ पञ्चतम अपञ्चतम
अठाणूं, अधिक सत संख्या गिएयां ॥

॥ टाळ ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देखी ॥

पंचजरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर जूमिका ए ॥ खेत्र
ए पनरह करम जूमि जाणोयै असि कसि मसिहि आजीविका ए ॥
हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरणवत सहीए ॥ मेरुपिशा
पाखती चारि ५ खेत्र दस कुरु अकरम जूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिम-
गिर सिद्धरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांदि विस्तरीए ॥ सात
२ अंतर दोय पालै दीप ळपन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै जेद डुइ
आगला जांणी मणुय पञ्चतम अपञ्चतयाए ॥ एक सौ एक समुर्द्धिम
जेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ टाळ ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देखी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसदू ठे एह अजिह्य आदिक दस
गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस ठसै वलि त्रीस अधिकते जाशि ॥
ते रागे दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह डुइ-
सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो दितनर आषा ॥ मन-

(१८०)

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात-
असी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किइ ॥
इकलकख सहसइग तिसय चाखीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत
वर्त्तमान वलिकाल जे अइयविराधना तिखि त्रिगुण संज्ञाख ॥ ८ ॥
तीन लाख सहस च्यार बेतै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख बह
साखै उगुण ज्ञाय ॥ इम लाख अठारह वलि सहस चउवीस ॥
इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ दाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देखी ॥

॥ इण परि मिछामि डुकरुंदेई जविक तरया जवजल नि
धिकेई ॥ तरै अगै वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी
वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम
करि निरमल ॥ सें मुखजाबै वीर जिणेतार ॥ सूत्रकरि गूणै ते श्रु
तधर ॥ ११ ॥ इम पन्किमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीत केव
ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम
सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलष ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुदंकरो ॥
तिथलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवजाय लहमी
किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लभ तवन करि
इम संघुण्यो ज्ञावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि डुकरु
संख्या स्तवन ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराजा ॥ वस्तु-
तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी
संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ तस जंग रचना विना, बंधन

बेसे वात ॥ ५ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे गम ॥
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह
 गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥
 धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नही किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रूप रे ॥
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥
 कालै ऊपजै विणसे कालै, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥
 कालै गर्ज भैर जग वनिता ॥ कालै जनमे पुत रे ॥ कालै बोलै
 कालै चालै, कालै जालै घरसूत रे ॥ ८ ॥ कालै दूधधकी दही धायै,
 कालै फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावै, अंत करे बे
 चाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचमवीसै बार चक्रवै, वासुदेव बलवंत
 रे ॥ कालै कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवतर्पणी आरा, ठै ठै जूजूये ज्ञाते रे,
 षट् शतु काल विशेष विचारो ॥ जिन २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री०॥
 कालै बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुद्धपणे दुष्ट
 बलिष्ठ दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुबा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वज्ञाववादी वदै जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वज्ञावे
 नीपजे जी, विणसै तिमज निस्तंक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारो जुओ
 ५ वस्तु स्वज्ञाव ॥ ए आंकणी ॥ ठते योग यौवनवतीजी, बांजलि
 न जणै बाळ ॥ मूढ नही महिला मुखै जी, करतल ऊगै न बाळ
 ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सज्ञाव नवि संपजै जी, किमह पदारथ कोय ॥

(१९२)

अंग न लागै नीबनै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपंख
कुण चोतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी,
सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा बोर वंबूलना जी, कुणें अशि-
याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥
॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस
ततकाल, परबत धिर चल वायरो जी, ऊरध अगननी जाल ॥ १८ ॥
॥ सु० ॥ मन्त्र तुंब जलमां तिरै जी, बूनै काग पाहाण ॥ पंख जाति
गयणो फिरे जी ॥ इण परै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय
सुंढरी उपशमै जी, हरमे करै विरेच ॥ सीजै नही कण कांगमो जी ॥
सकल स्वप्नाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,
भुंयमां थायै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वप्नाव
प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सशि सीयलो जी, जव्यादिक
बहु ज्ञाव ॥ उए इव्य आपायशा जी, न तजै कोइ सुजाव ॥
॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ हाळ ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ एदेसी ॥

काल किसुं करै बापमो रे, वस्तु स्वप्नाव अकळ ॥ जो न
होय प्रवतव्यता जी, तो किम सीजै कळा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म
करो मन जंजाल, ए तो ज्ञावी ज्ञाव निहाळ रे ॥ प्रा० ॥ ए
आकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोनि यतन करै कोय ॥
अणज्जावी होये नही जी, ज्ञावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥
आबै मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ खरया केइ खासुटी
जी, केइ आंभा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ बाजल जिम जव
तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥ परवत मन मानसतणो जी,
तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चिंतव्यं
जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

वितराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुनूमिते जी, समुद्र
पन्थी विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तयाजी, नयण हरे गोवाल रे ॥
प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहो कोयल करै जी, किम राखीस रे प्राण ॥
आहेसी सर ताकियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥
आहेसी भागे नस्यो जी, बाण लग्यो सीचाण ॥ कोकूहो ऊनी
गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हणया
संघाममां जी, रात पन्था जीवंत ॥ मंदिरमाहि मानवी जो,
राख्याही न रहैत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ श्लो ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ९ देशी ॥

काल स्वप्नाव नियत मति रुनी, करम करे ते थाय ॥
करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव ज्वंतरे जाय ॥ ३२ ॥
चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें
राम वस्या बनवासै, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावखनु,
राज्य थयो वितराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म कीनी कर्म कुंजर ॥
कर्म नर गुणवंत ॥ कर्म रोग सोग डुख पीडित, जनम जाये
विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्म वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे
अन्न ॥ कर्म जिननें जोतु निमा रे, खीळा रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥
॥ चे० ॥ कर्म एक सुखपाले बैसै, सेवक सैवे पाय ॥ एक हय
गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम
मांणी अंधतणी पर, जग हीनै हाहूतो ॥ कर्म वली ते लहै
सकल फल, सुखनर सैजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके
कीयो उद्यम ॥ करंभीयो करकोले ॥ माहे वणा दिवसनो भूखो,
नाग रह्यो नमनेलै ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु
सुखमां, दीये आपणुं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारया,
कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

(१९४)

॥ शल ६ भी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देखी ॥

दिव उद्यमवादी ज्ञयो ए, ए ज्यारै असमत्त तो ॥ सकल
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्त तो ॥ ४० ॥ उद्यम
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामें रथशायर तणी
ए, लीधो लंकाराज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां
सत्त्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥
उद्यमथी उंची चढै ए, जोवो एकेंडिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम
करतां इक समें ए, जेह न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि ऊर्यां विना
ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पमै कोलियो ए, मुखमां केपे
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म
तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दूढप्र
हार इत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमथी खट मासमां
ए, आप थया अरिईत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश् सरवर जरै ए, कां
करे ३ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंडुउ ए, करे पादाणमां गम तो ॥
उद्यमथी विद्या ज्ञयै ए, उद्यम जोमै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ शल ६ ॥ ए छिडी किहां राखी ॥ ए देखी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरखे आवै ॥ अमिय
रसै जिन वयण सुणीनै, आणंद अंग न माखै रे ॥ ५० ॥ प्राणी
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥
॥ प्रा० ॥ ते मिछ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए
पाचे समवाय मिछ्यां विन, कोइ काज न सीजै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे बूजै ते रजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी
 कोइ एकने, एहमां दिवै बमाई ॥ पिण सेना मिल सकल रांगण,
 जीते सुजत बमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै,
 काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन
 घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जोकादिक, जाग्य सबल
 सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उत्तमत जोवो विचारी
 रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीक-
 लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जई मिलियो रे
 प्रा० ॥ ५५ ॥ जवथितनो परपाक थयो तब, पंक्ति वीर्य उल्ल-
 सियो ॥ जव्य स्वजावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे
 ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ बर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गा
 वो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संश्रुण्यो
 ॥ संघ सतर संवत वल्लि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय
 देव सुरिंद पटधर, विजयप्रज्ञ सुखिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक
 सीत इण पर, वित्तय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स
 मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ चंदणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार,
 आणी जाव अपार ॥ चवदै गुण धानक सुविचार, कंदिस्थुं सूत्र
 अरथ मन धार, पांमे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिश्रयात कह्यो
 गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंशो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चो
 थो अविरत नाम कहाणो, देशविरति पंचम परमांशो, उद्यो प्रमत्त

(१९६)

पिगाणूं ॥ १ ॥ अप्रमत्त सत्तम सखहीजै, अछम अपुरव करण
कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्भ ॥ सुखम खोज दसम सुविचार,
उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्भ ॥ २ ॥ तेरम
सयोगी गुणधाम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम
विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म वखाणै, ए लक्ष्म मिथ्या गुणगणै,
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ बाळ ॥ २ ॥ सकल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती
ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय
मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प धर्षे, संत
सी नाम मिथ्यात चोथो जणै ॥ ६ ॥ समऊ नही काय निज
बंध रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ
नंत अजन्मने, करिय अनादि धिति अंतसुजन्मने ॥ ७ ॥ जेम
नर खीर घृत खंन जिमने वमै, सरस रस पाय बलि स्वाद केहवो
गमै ॥ चौथ पंचम ठेठ ठाण चढने पने, क्लिष्टादि कषाय वस आय
पहलै अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली, सहोय
सासावने धित इसी सांजली ॥ दिव इहां मिश्र गुणगण तीजो
कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमदुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ बाळ ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि
मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर
दहणा बेऊं ठती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांदि, मरणा लहै
नही, आठ बंधनपमै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकि-
त लहै, मति सरखी गति परजवै ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान,
बुद्धय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणगण, तेज्रीस सागर, साधिक धिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥
 दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥
 सहु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै
 ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरघतां, उत्कृष्टा जव
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमदुरते, चढते गुण शिवपद
 लहै ए ॥ १४ ॥ ब्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परदी उपशमै, ते उप
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते कय कीध, ते नर
 कायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ,
 तातैं तिहां थकी, तीजैं चोथे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ बाळ ॥ ४ ॥ इण पुर कंबळ कोइ न छेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणगण, प्रगटै चोकनी प्रस्थाख्यान ॥ जेषा
 तजैवा वीस अजक, पांभ्यो आवकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण
 इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संजारै ॥ पूजादिक षट्
 कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्च रौड ध्यान द्वै
 मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस ऊशी पुवकोन, पंचम
 गुणगणो धित जोन ॥ १९ ॥ दिव आगे साते गुणधान, इक २
 अंतरमदुरत मान ॥ पंच प्रमाद वसै जिण ठाम, तेषा प्रमत्त ठढो
 गुणधाम ॥ २० ॥ धिवरकलप जिनकलप आचार, साधै षट् आव-
 स्यक सार ॥ उद्यत चोथा ब्यार कषाय, तेषा प्रमत्त गुणगण
 कहाय ॥ २१ ॥ रुथो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत
 आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै, अपरमत्त सत्तम
 गुण ज्ञासै ॥ २२ ॥

॥ बाळ ॥ ५ ॥ नदी बमुनाके तीर जहै दोष पंलिया ॥ ए देसी ॥

पहिले अंसे अठम गुणगणातणें, आरंजे दोष श्रेण संख्येपै

ति गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कपकश्रेणि
 'कायक प्रकृति दस कय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम
 अपूरब गुण लवै, अछम नाम अपूरब करण तिणें कहै ॥ सुख
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अकिंग ध्याने
 धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां जाव
 धिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलणा हों,
 उवै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम
 लोचन कांइक शिव अजिखखै, तें सुखम संपराय दसम पंक्ति अलै ॥
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण गंम
 सहू उपशम लवै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किणही
 परै, तो धायै अहंभिइ अवर गति नादरै ॥ इग्यार बार समश्रेणि
 करै संसारमें, एक जेवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पैं, मोह उबय उत्कृष्ट अरथ
 पुदगल रनै ॥ कपकश्रेणि इग्यारम गुणगणो नही, दशमधकी
 बारम्म चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ बाल ॥ १ ॥ एक दिन कोइ मागष आयो पुरंदर पास ॥ एदेसी ॥

खीणमोह नामे गुणगणो बारम जाण, मोह खपायो नेनो
 आयो केवलज्ञान ॥ अगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात,
 हिव आगे तेरम गुणधानं तणी कहै बात ॥ २९ ॥ धातीय चोकनी
 कय गई रदीय अघातीय एम, प्रकृति पिण्यासी जेहने जूना कप्पम
 जेम ॥ दरसन ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान
 प्रगट अयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखै लोक अलोकनी गानी
 परगट बात, महिमावंत अढारै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे
 कणी कही इक पूरबकोनि, उत्कृष्ट तेरम गुणगणें ए धिति जोनि
 ॥ ३१ ॥ कर सेवेसी करण निरुध्या मन बच काय, तेण अयोगी

अंत समय सहुं प्रकृति खषाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊंचरता जेहनो
मांन, पंचम गति पामें सिवपद चउदम गुणधान ॥ ३२ ॥ त्रोजे
चारमें तेरमें मांहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चौथो परजव साथे
होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाजै पहिला ज्यार, धुरला पांच
तिरी मांहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहरु मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसाजलै ॥
गुणछाण चवद विचार वरणयो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतरैसै
ठत्तीसै, आवण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध,
कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणछाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ ब्रह्म ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवजाय ॥ साधु
सकल प्रणामी करी, प्रणामी श्रीगुरु पाव ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव
तत्त्वनी, गाथा ज्ञाता रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्युं
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निज
ब्रंष मोह ए नव तत्त होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,
सत्तावन बारै चौ नव कम जेदनी मात ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह
पलविह जविह जीव कहाय, चेतन त्रस आवर वेदै गई करणे
काय ॥ एगेही सुखम वादर ए बोय जिय गण, सन्नि असन्नि
पहिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जता अपज्जता चवदै
होय, अनुक्रम जीव गण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंमण
चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए वरु लक्षण लकत जीव इय
इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जती तीन, सासोसास

ज्ञाषा मन भरु ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगेंदी पंच पञ्जती
 विगलें जौय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें भरु पञ्जती होय ॥ ४ ॥ ईद्विप
 पांच उत्तास आठ बल ए दस प्राण, च्यार ठ सांत आठ एगेंदी
 विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदी नें नव दस क्रम प्राय, प्राणाधी
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनुना
 त्रिणश जेद, काल दसम इग आगास पुगल च्यार विवेद ॥ खंघा वेंस
 पंगुस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुगल नज्ज काल ए पांच
 न जीव ॥ ६ ॥ चलय सदाई धम्मेश्वर संठाण अधम्म, अवगाहें पूरण
 गल्लणें नज्ज पुगल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें
 साल पद्धयोपम सागर उत्तप्पणी तप्पणी कात्ता ॥ ७ ॥ भरु इग दो सग
 सग सग भरु इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तोन कतासें माण, केवलनाणी
 ज्ञणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर दुग
 पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति शरीर उवंग कहाय ॥ आदि
 संवेण संठाण चौवर्ष अगुरु लहु होय, परघ उत्तास तेम वलि आ
 तप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुजखगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल,
 सुर नर तिरि आठ तिष्ठंकर पुण्य वयाल ॥ तस बाइर पञ्जत्त प
 तेय श्वरं सुज सोय ॥ सुजग सुतर आइळ जलें तस दसको होय
 ॥ १० ॥ नार्णतराय दस कनव बीजा नोचअसाय, मित्थ थावर
 दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च दुग एगेंदी वि ति
 चौरिंदी तेय, कूखगई उपघा अपसत्थ वस चौ जेय ॥ ११ ॥ पद
 मं संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप त
 तनी ए जाण ॥ थावर सुदम अपञ्ज सादारण अश्वरै गेय, असुज
 दुजग दू सरणा इळ अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय
 ईदि कसाय अचय तिम जोग बायालीस सेय पचीस क्रिया संजो

न ॥ काँइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं
 प्रकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिह्मादंसल वत्ती
 तेम,, अपञ्चखाणकी दिह पुढ पाहुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवशि
 य ने सत्थि सहत्थै जेह, आझापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥
 १४ ॥ अणव केख पञ्चयना उवउगी समुदाय, प्रेम देष इरियाव
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म जाव
 ए चारित्त, पणतिग बाबीस दस बारै पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ
 रिया जाथा एषणा सुमतीना जेद होय, आदान जंम उच्चार नि
 र्केवण पाँचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण, हिं
 व आगे बाबीस परिसह कहूँ हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा
 सीत ठसन मीसा निरवत्थ, अरति जोषा चरिआ नैबिद्या सिज्जा
 सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलाज रोग त्रिण फास, मल सक्कार य
 ज्जा अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति महव अज्जाव मुत्ती तव
 संजम तम्म, सत्थं सौव अकिंचन बंजवेरज इ धम्म ॥ पढम अ
 नित्य असरणी संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संबर निज्जर ज
 वि जावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोध डुरलज इग्यारम गाम,
 धरम साधक अरिहंत ए बारै जावना जाव ॥ सापायक डेदोप
 स्थापन बीजो सोय, परिहार विश्रुव सूखम संपराय चउत्थो जोय
 ॥ १९ ॥ तिम अहक्काय चरित्त सरब जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु
 विधि आचरणे के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारै बिध निज्जर तत्त्व बंध
 ना ग्यार प्रकार, प्रकृति विई अनुजाग प्रदेस जेई निरधार ॥ २० ॥
 अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सद्धीनता
 बाहिर तप वरु जाग ॥ पायडित्त विनय वेयावच्च तेम सिज्जाय,
 ध्यान काउसंग अर्ज्यंतर तप वरु विध आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु
 जाव काल अवधारण अित निरवंच, अनुजागै रस तेम मसेवे दल

नो संव ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य बलि तेम, निगम चित्र
 कर कुंजकार जंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना ज्ञाप्या
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सज्ञाव ॥ इम संतेपे
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं हिव मोख
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल
 पांचमो ठो अंतर जाण ॥ जाग सातमो ज्ञाव आठ तिम अलप
 बहुत्त ॥ ए नव जेदे ज्ञावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक
 पदवी है जे पदे अविना ज्ञाव, व्योम कुसुम तिम ससिक मृग जिम
 नदीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मगल द्वार, विवरण
 कर वरणवस्युं सुणज्यो सुदुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै कायक सत्री
 असत्री येसत्री, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न द्वय प्रमाणे सिद्ध
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम जाग एग सिद्ध होय अणंत ॥
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रधी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सावि अनंती
 धित जिन आगमधी सुविदीत ॥ प्रतिपातां ज्ञावै नहि सिद्धां अं
 तर जोय, सरव जीवधी जाग अनंतम सद्ध सिद्ध होय ॥ २७ ॥
 वंशण नाण जेहने वे ते कायक ज्ञाव, जीवत जेहने बलि परणाम
 क ज्ञाव समाव ॥ सद्धधी थोमा वेद नपुंसकधी जे सिद्ध, तेहधी
 धीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक
 नव तत्त तत्त सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव
 जिनेसर मुखधी ज्ञाप्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत
 निश्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अ
 र्द्ध पुगल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उत्तपणिय अणंते इग
 पुगल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तद्गुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०
 ॥ इम नव तत्त जेद पमिजेदै विवरण कीध, आवक आग्रह कीन
 सहाय पूरण रस पीव ॥ कोटिक गुण सुज सदन प्रकास नदी उपमान,

श्रीजिनलान्नचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक
करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वनसाखानी पमिसाख ॥
ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखम माख, ए नव पद नव रयणे
विनाणें गूण्णी माख ॥ ३२ ॥ संवडर निश्चय नय विगई प्रवचन
माय, परम सिद्धि पद वामं गते ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन
ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा ज्ञज
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्त्व ज्ञापागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ इहा ॥ रुपजादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥
दंरुक रचनायें तहुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विष्णु अगन दीवो दही, दिसि पवणें
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आठ तेज वलि, वाठ वणस्तइ काय ॥ वि
ति चौरिंदी गजधर, तिरि नर तिहां मिळाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइल
वेमाशिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एदना द्वार कहुं द्विवै, गणनाये
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेशरनी ॥ ए देशी ॥

सररीर उगाहण संघयणेंसणा संठाण, कोदाई लेसिंदिय दो
समुघाय प्रमाण ॥ दिढी दंसण नाण जोग तिम बलि उवयोग,
उपपात वलि चवण ठिई पळति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार
सन्नि गई आगयवेय, वार गाहा डुगनो ए अरथ कह्यो संक्षेव ॥
दिव तेवीस दारनो रहिल समय अनुसार, अलप रुची हुं तेदथो
कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ जी ॥ देसी सूरती महीनाची ॥

चौ गज्जर तिरि वाळ कायें च्यार सररीर, मनुष्य सें पांच
दंरुक इगवीस रह्या ति सररीर ॥ धावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देइ

प्रमाण, जाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरबनो
 जेधन्य स्वप्नावक अंगुल जाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने
 विक्कात ॥ सुरनो सात हाथ गप्पय तिरि वणस्सय काय, जोयण
 सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेईदि तिगाव
 बेईदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंडी देह उंचै आकार ॥ आरंज
 कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, जाग एक इग अंगुलनो संख्या-
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख,
 नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साप्तावकथी डुगणो नारक
 वैक्रिय काय, एक मडूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥
 सुरनें पक्क एक उक्कोसविठवण काल, विगल संघयणो आवर सुर
 नारकनी माल ॥ गप्पय नर तिरनें परु विगलनें ठेवळ एक, सरब
 जीवनै च्यार दसेससाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें परु सुरनें सम-
 चौरंस संठाण, हुंरुग इग नारग विगलेंडी सूत्र प्रमाण, नाणाविह
 धयसूर्ममळरनी चंड आकार, वणसइ वाळ तेळ जू बुदबुद अप्पा-
 कार ॥ ६ ॥ सहनें च्यार कसाय गप्पय परु नर तिरि दोय, बेमा-
 णिय नारग तेज वाळ विगल त्रिक होय ॥ जोयति तेळ लेसा सेत
 रह्या ने च्यार, दार इंडियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥
 समुदघात सग नरनें पण गप्पय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार
 सेसनें तीनुं जेव ॥ विही दोय विगलमें आवरने निष्क्यात, सेसने
 तीन दिदि जिम प्रवचनमें विक्कात ॥ ८ ॥ आवर बि ति ने एक अव-
 स्कू दंसण होय, चौरिंडी ते चस्कू अचस्कू दंसण होय ॥ मनुजनें
 च्यार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर
 नारगनें लीन ॥ ९ ॥ आवर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण,
 गप्पय मणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें
 तेरे जोग, मनुजने ५ रे च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाङ्मयायने पाच तीन थावर संयोग, मनुजने बार नरग तिर देवने
 नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण पर चौरिंही थावर तीन, उववाय
 इग चवण दार दोनुं सम कीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या
 चवण पपात, गझय तिरि विकलेंडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ
 अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस उक्कि,
 वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिह ॥ नर तिर तीन पढ्य
 सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पढ्य अधिक खख वरष पढ्य
 जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें
 कृणा दोय पढ्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणवास
 दिवस उम्मास ॥ अंतमुहुत्तजइनें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥
 नुवनपती नारग व्यंतर दस बरस हजार, पढ्य तेना अमंस वेमा-
 णिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार ॥ विग-
 लनें पंच पङ्कती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय ठए
 दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मजार,
 दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पणसा
 सन्नि रहित धिर पंच ॥ १६ ॥ गझय मणुजनें दीह कालकी सन्ना
 होय, केइक आचारज कहे दिठिवायथी होय ॥ निच्चय पङ्कता पं-
 चिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां मोहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥
 संखानपङ्कत पंचेदी तिरि नर तेम, पङ्कता नू दग पचेय वणस्सई
 जेम ॥ ए सरबेमें निश्चै सुरनी आगति हुंति, पङ्कत संख गझय
 तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरल्या नर तिर
 उपजै न हुवे सेस, नू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजै असेस ॥
 पुढवाई दस पयमें नू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ
 उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊलो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

चाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति
 मणुआ सहुमें जाय, तेव वाळ्शी मरोने जीव मनुज नवि थाय
 ॥ २० ॥ धीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल
 नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पळ्ळा मणु बादर अगन वेमाणिक
 तेम जवळ नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एमा ॥ २१ ॥ बेइंड़ी तेइंड़ी
 पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥
 हे जिन ए सहु जावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिस्तां
 किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंरुगमें ते गति
 संयोग, लाथो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण
 दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत
 प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेदणी
 तुह दरसनानो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक
 दंशाण देव, आतम गुण संसार समत कम्म सयमेव ॥ २४ ॥
 खरतर गड जट्टारक श्रीजिनखाज सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहनो
 पद अरविंद ॥ २५ ॥ मकरंदे लोनो ग्यानसार तमु सीस, तेण तव्या
 तेवीस द्वार दंरुग चोवीस ॥ २६ ॥ संवत ससि रस वारण तेम
 चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ आवक
 आग्रहणी ए कीनो अलप विचार, अछम चौमासो कर जैपुर नगर
 मजार ॥ २७ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ डुहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥
 कइस्थुं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ दाळ १ ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव ड जेद, सत्ता जिनै सिद्ध अनं-
 तै रूप अजेदा ॥ संसारी थावर इग तिम अस दोय प्रकार, तु अप वाव

तैल वण स्सई थावर धारा ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि विङ्गम हिंगुल वलि
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी
 अरखेटो पालेवो पाषाण ॥ जोरुल तूरी ठस जूमि पाइण जे खाण
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विवेद ॥ जूमि आकास
 ठस हिम करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाइण जेम ॥ ३ ॥
 अंगारा जाला जोजर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक
 अग्नि जीव विहात ॥ उष्णामगजकलिका मंरुल वलि मुख वात,
 सुद्ध गुंज तिम घण तणु बाऊ जेदे हात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय
 चणस्सई जीव ड जेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं
 दा अंकुर कूपल फूलण बलि जंबाल, जूंफोमा अइसिय सरवे जे फ
 ल वलि ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वायलो थेग पालंको साग, गुपत
 सिरा सांथा गांठा ज्ञांजे सम ज्ञाग ॥ काटी माल जूमिमें रोप्यां पल्ल
 व आय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रे
 एक जीव जे ते अत्येक, फूल गल फल मूल काठ बीजै जिय एक ॥
 वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु
 हुचै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिढी निजर न होय, लोका
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवमी संख गंमोला लहिगा
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विहात ॥ ८ ॥ माय बा
 हाक्रम पौरादिक वेइंड़ी होय, गोमी भाकण जूआ कीमा कीमी दोय
 ॥ दीपक ईली धीवेलो गोगीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर
 कूम उतपात ॥ ९ ॥ बनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली
 कंथुक इङ्गोप तेइंड़ी एह ॥ बीवू ढंकण जमरा जमरी इंडी च्यार,
 तीमा माखी मांस मञ्जर कंतारी धार ॥ १० ॥ कवरुमोला मांक
 मिय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेइ च्यार विवेदा ॥

धम्मा वेसा सेला अंजने रिग क्हात, मधा माधवई नारग ए नांने
 सात ॥११॥ जलचारी थलचारी नजचारी तिरयंच, मळ कळ सुस-
 मार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय उरपरि जुजपरि साप जुचारी
 तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥१२॥ खेचर चरम
 रोम पंखी चमचेरु कपोत, मनुजलोकथो बाहिर समुग विगय पंख
 होत ॥ सरखे जल थल खेचर समुद्धम गज्जय दोय, कम्म अकम्म जूमि
 अंतर देवा मणु जोय ॥१३॥ असुरादिक दस होय वाण व्यतरिया अठ,
 जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु ते दिठ ॥ पनरे जेवे सिद्ध कद्दा ए
 जीव प्रकार, तनु मानादिक दिव एहनो कदिसु अधिकार ॥१४॥ देह
 आठखो एक सरीरे धितनो मान, प्रांश जेहने जेता तिम वलि योन
 प्रमाण ॥ अंगुल जाग असंख सद्दू एगिंदी काय, जोयण सदस साधिक
 पत्तेय वणस्तई काय ॥१५॥ वि ति चउरेंडो अनुक्रम उक्किव देह ऊंचास,
 धारे जोयण तीन गाठ इग जोयण जास ॥ सत्तमना नेरइया धणु
 सय पंच प्रमाण, तेदथी अरथ २ ऊणा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जो
 यण सदस गज्जधर मळ उरगनो देह, गाठ धणुअ पुदत्त जूचारी पं
 खी जेह खेचर नव धणु उरग जुयंग जोयण नव होय, नव गाऊ
 परिमाण समुद्धम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरु गाठ ऊंचास चउप्प
 थ गज्जय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ जुवन
 व्यंतर जेइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोस ऊंचपणै तणु
 हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेइ वरु ब्रह्म खांतर पांच, शुक्र स
 हस्त्रारे उक्कोस च्यार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथे
 तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणु तर इग तीन ॥ १९ ॥ बावीस सात तीन
 दस वरस सदस्से आय जू आऊ वाऊ वसती दिन तेऊकाय ॥ बार
 वरस गुणचास दिवस तिम वलि उम्मास, अनुक्रम बेइंडी तेइंडी
 चौरिंडी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसे आय, चौपय

तिरिख मनुजनौ तीन पढ्योपम थाय ॥ जलचर छरपर सुजपर
उक्तासे पुबकोमि, पंखिने इग जाग असंख्य पढ्यनो जोम ॥ २१ ॥
सरब सुखम साधारण समूहम मयुं जेह, जेहन्न उक्तासे अंतमुहुच
नियम थिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपै अधिकार, जे बलि
इत्थ वितेस वितेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य असंख्यो सहु
एगिंई आपणो काय, उपजै चवै अनंत साधारण वशस्सई काय ॥
संख्याता संवद्धर विगल आपणो देह, सात आठ जव पंचेइो तिरि
मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकणी उदवरती जीव नरक नवि जाय,
देव चवीने ते बलि देवपणे नवि थाय ॥ इंदिय सासोसास आठ
बल ए दस प्राण, ब्यार ठ सात आठ इग डु ति चौरिंइोय जाण
॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेई दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथक।
जेवि प्रयोग जिय मरणे होय ॥ ज्ञोम सायर संसार अपार अनंती
चार, जमियो जीव धरम विन जोण असीने ब्यार ॥ २५ ॥ सग सग
सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, ब्यार ब्यार तिम ब्यार चवद
लख सूत्रे लाख ॥ जू अप तेउ बाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ
पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न
पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित
विकात ॥ रोग न लोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहीब नपु-
सक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज
ए ब्यार अनंत, सिद्ध अया तेहथी सिद्धतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए
जीवविचार गाथाथो ज्ञाषारूप आवक, आयहथी में कीनो सुगम
सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गढ जटारक श्री जिनलाज सूरीस,
रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस
वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोष दिन कीनो जैपुर नगर
मजार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्षित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥
प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थीकर आवे
तिहां, त्रिगमो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहुं
अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकित्ती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥
सूर्य देख दरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर बखानी राणी बेलणा ॥ १ ॥ देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपठरह गंधर्व ॥
समवसरण रथै सुरवराजी, संखेपे ते कहुं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥
जुवनपति वीस इंदै मिढ्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस उ
दस वेमाणिय जुरुधा जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥
पवन सुर पूज परमारजै जी, जूमि योजन सम जान ॥ मेघकुमार
रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिन्काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर
सुज धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर दिव वेगसूं
जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण
उरध मुखै जी, वरषए जाणु प्रमाण ॥ जवणवइ देव त्रिगमो जलो
जो, करय ते सुणउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-
तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी,
कनकनो बीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी,
रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जीतरे जी, जिहां विराजै
जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ जीत नुंची वणुं पांचसै जी, सवा-
तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौख पचास
धणु व्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी
बोस हजार ॥ थाक अम नहिय चढतां थकां जी, एक कर उब
विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीधकी जी, उब

रहे त्रिगद आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर
आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं ९ दिस तिहां जी,
नीचमणि मोर निरमांश ॥ डसय धणु मध्य मणि पीठका जी,
उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां
चिहुं दिसै जी, मोतीयें जाकज्जमाळ ॥ सम विच कूण ईसाणमें
जी, देवहंदो सुविस्ताळ ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवडुंडजि नाद उपदिसै
जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अद्द जिम आइ सिर ऊपरे जी,
गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ दाळ २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुढ दिसि आसणो आय वेसे पद्दू, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू
॥ दीपे असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम
मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण उत्र सुविस्ताळ ए, रूप चि
हुं ९ दिसैं चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणा,
जगवंत उपदिसै बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग
निकूळें करी, गणधर साधची तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषो जु
वणनी वितरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊजो सुणे ॥ त्रिहंत
णा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणिय नर नारि ईसाण ए
॥ बारह परखदा मद मन्नर ठोरु ए, जूख त्रिस विसरै सुणै कर जोरु
ए ॥ १९ ॥ पूढ जामंमल तेज प्रकास ए जोगण सदस ध्वज जं
च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहू
वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाइण वहिल सहू धरिय पहिले
गढै, दोय पगचार नर नार उंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि
जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥
पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुयें जिनवाणि धन गणिय अव
तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांढिलो प्रौख

(१११)

माहे वसैं ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विदिसि
चौ कूष दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए,
स्नान पाने वपुं निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप
राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्ग अ
र्चिं माळ ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाळ ए ॥ २४ ॥ पहिलो
त्रिगणो नहुयपुर जिण आम ए, देव महर्दिक रचै तिण गंम ए ॥
करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही
होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी रुद्धि दीठी जियै, तेह थ
धन धन अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंठित पूरज्यो,
दिव मुज ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणौ रुद्धि वरणौ सहू जिनवर सारखी ॥ सर-
बहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिखंत
गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासंजिनंद पाठक धर्म
बर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवन ॥

॥ अथ श्री कृष्णभदेवजी सुण २ सैत्रंज स्तवन लि० ॥

॥ दाल ॥ पाटोवरजी पाटियै पवारो ॥ ए देखी ॥

॥ सुण २ सैत्रंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं
तो अंरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, जवसायर
पार जतारो, निज सेवक वान वधारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रजु भूरति
मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जानं वारी हुं वार हजारो
क० ॥ २ ॥ दिव किसिथ विमासण कीजै, मुज ऊपर महिर धरीजै,
दिल रंजन दरसन दीजै ॥ क० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया,
जवरेना पातिक टलिया, प्रजु जो मुजसै सुख मिलिया ॥ क० ॥
॥ ४ ॥ समरचा संकट टलि जावै, नव नव नित भंगल आवै, मुज

आतम पुन्य जरावै ॥ क० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर
चंदन चरबीजै, दिन धन तेह गिणीजै ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रभु दरसं
सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीदा चंद
चकोरो ॥ क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा जय
संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि
सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कोई, वाधै संपत शोजन सवाई ॥
॥ क० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंबर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,
ठलगे सुर असुर सुरिंदा ॥ क० ॥ १० ॥ जयकारी रिषज जिनंदा,
प्रह सम घर परम आषंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ क० ॥ ११ ॥
इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ बाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिखो ए, गवनीपुर मंरुण गुण निखो
ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन बंजित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥
नयरी नाम वषारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी
वै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु
घर नार ए तसु गुणहि न लखै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए,
तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,
अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूवै नूपतिनै कह्या ए,
करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ बाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मनै हरख्यो ॥ बीजै
वृषज ऊदार, घरणी जिण धरयो जार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान,
जसु बल कोय न मान ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुरसेवी
॥ ६ ॥ पांचमै पुष्पनी भाला, पंच वरण सुविशाला ॥ छै दीयो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥
 नवमें पूरण कूँज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,
 मनह'थयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि
 इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥
 तेरम रतननी रासि, दद दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें
 ए दीदो, पातिक धूमधी नीगो ॥ ११ ॥ सुपन कहा सुविचार, हरख्यो
 जूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, यास्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दहा ॥

चवद सुपन अवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,
 आवी मंदिर ऊचि ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकपल्य
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते वर
 पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ दाल ३ ॥

दिव जनम्या जगगुरुजगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकिये
 पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध,
 कर थानक पोहती बंजित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोस
 इंड मिली तिहां आवै, लेइ निज ज्ञै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क
 री जनम महोछव जननी पासै गावै, तिहांधी सुर सब मिल ही
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,
 घरए गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,
 तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रजु वाधै दिन२कला
 करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देविंद ॥ गुणकला
 विचक्षण विद्यातपो निधान, जोवनवय आयो परपायो राजान ॥ १९ ॥

(११५)

॥ बाल ४ ॥

कुमारपदै प्रभु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग
संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावै अवसरू ए, देश
संवहारी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय
इंद्रादिक सब मिळ्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदळ्या
ए, पांणीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, आपीय चौविह संघ
मुगति रमणी बरी ए ॥ २१ ॥

॥ बाल ५ ॥

इम श्री गौमीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह
परलोग सुवंबित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवनीपुर जावै,
चोर धाम संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणाराय
पठमावइ जास वहे सिर आंण, सांमल वरण सुतोन्नित नव कर
काय प्रमाण ॥ कळपवृक्ष चिंतामणि कामगवी सम तोलै, श्री गुण-
शेखर स्तीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-
जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु
अजिथ जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर
प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यजंमार जरेसु ए,
भानव जव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोरुहि लाख पचास ए, सागर
जिनसासण ज्ञास ए, रिसइ जिनेसर वंस ए, जवज्ञाय सरोवर
हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां
गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए
॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ जयर
वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आंखंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण
 सयल उच्चाह ए, क्रम२ बाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस
 तणी ए, गति सुखलित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति बाँह
 गैल ए, जाणो नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो सं
 सार ए, बलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखो गज गहगह्यो ए,
 खंढन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो
 ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु
 पालै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ दिव ह्यशापुर गाम ए, विश्व
 सेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणो बेव
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा उयरै सुत अवत
 रह्यो ए ॥ मांनव देव वत्ताणियो ए, चक्रीसर जिणवर जांणियो
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिय नांम दियो श्रीशांत ए
 ॥ जिन गुण कुण जाँयै कही ए, त्रिहुं जुवखे तसु जंम नही ए
 ॥ १२ ॥ नयण सलूखो हिरणखो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए ॥
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणो नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नखै लोक कुरंग ए ॥ तो छलग्यो स
 सि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग
 अति खलजळ्यो ए, जय जंजण सांमि सांजळ्यो ए ॥ आणंदियो
 मन आपणो ए, पाय सेवे मिस खंढन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति
 परणो घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल बल अ
 यण जोगवे ए, पीय राज जलौ पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर त
 णो मंरुल समे ए, पंजास सदस वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणध
 र जिसो ए, ऊपलौ चक्रयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी जरह व
 खंरु ए, वरतावी आण अखंरु ए ॥ चवद-रयण नव निहि सही
 ए, वसु सोख सदस जखै अही ए ॥ १८ ॥ सदस बहुतर पुर

(११७)

वरा ए, बत्तीस मौखबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, छिन्न
वे नमै बे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख
चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र धमधमै ए, बत्तीस
सहस नाटिक रमै ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला
वण्य लोला जरी ए ॥ जंगम सोदग देहरी ए, ऐसी चौसठ सह
स अंतेऊरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र
यण जंमार ए ॥ ते कद्विवा कुण जाण ए, वपुषपुरे पुण्य प्रमाण
ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूतम सूतम समो ए ॥ वरस
सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर बिहुं
तीर्थकरा ए, विर पाखिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए
सार ए, बिहुं लोधो संजम जार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर
ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन ज्ञाणा
समाण ए, बिहुं पांथ्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोम-
हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण
ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए,
बिहुं आगलि इंद अंतेउरी ए ॥ टिंगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि
गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर उत्र चमर विमल, बिहुं
मग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग
न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं उवचार जुवन जरी ए, बिहुं
सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं जंजी जव फंद ए, बिहुं उदयो
परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणो चिंतामण सुर
तरु समो ए ॥ शुणि अति संज विहाण ए, तिहां इह परजव नवि
हांस ए ॥ ३० ॥ बिहुं उच्चव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डरिय
हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज जुवण
रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते ज्ञोविमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण शुय जणि ए ॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेस्संवन
उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वुद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ दाळ ॥ १ ॥ कपूर हुवे अति ऊजळो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान
क्रिया जिण उपविसी जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन
धर श्रीजिन उपदेस, बूटे कर्म कलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पम्पिलेहण
मुहपत्ती तणी जी, ज्ञाखी बै पचवीस ॥ तिहां ए ज्ञाव विचारिये
जी, इम ज्ञाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पम्पिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रणी जी, मोहनी तीननो
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥
ज० ॥ सीष बधू टक गुरुयकी जी, वाम हाथ करनाछ ॥ नव
अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमाछ ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व
गुरुतत्वसुं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुशुरु कुदेव कुधर्मनो जी,
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी,
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, नीने दंस विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥
पम्पिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ दिव पम्पिलेहण
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति
रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांस वाह ॥ तज जय शोक डुगंठना
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ धुरली लेस्या तीन
ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि
मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सव्य तीन उरथनी जी, मा

या नियाण मिळयात ॥ च्यार कषायवेव गलथी जी, क्रोधादिक करा
 घात ॥ १५ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्हे सुद्ध
 होय ॥ ए पन्निखेइण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १६ ॥ ज० ॥
 इम पन्निखेइण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै
 करै जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १७ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-
 वरतणा मुखथी, अरथ गणघर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-
 णी, सुणो जविषण मन रली ॥ जवझाय वर श्रीखड्गिरीरत, मुख-
 थकी ए संप्रदी ॥ मुंदपती पन्निखेइण तणी विध, खड्गिरीरत गणि
 कही ॥ इति श्रीमुदपती पन्निखेइण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोचण स्तवन लिख्यते ॥

॥ बाळ ॥ सफल संसारणी ॥ ए देखी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाव उपगार
 थायै धणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित
 अने विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान घर तप जप खप
 करै, जियाथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागे जिके गुरुमुख
 आलोइयै, जीव निमल हुवै वल्ल जिम घोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ कियही
 कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै ॥ ३ ॥
 कीजिये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीथ परमाद संज्ञा धरौ ॥
 कूदतां प्रवृत्तां होय हिंसा जिहां, दर्प इया नांम करि दोष तीजो
 तिहां ॥ ४ ॥ विषसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथौ आकु-
 टिया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी,
 दोष घर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५ ॥

(५२०)

॥ ठाळ २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागष आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगरश-
तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमठ एकासणो आंबिल
उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए
जो खंरित आयै अथवा किहांई गमाय ॥ तो बलि नवा करायां
दोष सहू मिट जाय ॥ आपना अणपफिलेह्यां परिमढनो तपवार,
गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार
तिहां पुरमठ जघन्य, एकासण आंबिल अधम चिहुं जेव मन्न ॥
आशातन गुरु देवनी सादमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ
प्रसिद्ध, वि ति चउरेंडो प्रसायां एकासणथो वृद्ध ॥ बंधु बि ति चौरें-
डिय हण्यां वि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि डगुणा
डगुण प्रकास ॥ ९ ॥ नदेही कुलियावना कीनी नगरा जंग, बहुत
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कमि पातन
आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता होय उपवास विवेक ॥ १० ॥
संकल्पादिक एक पंचेंडी उपड्व होय, बोइ त्रिण आठ दसै उपवासै
आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपड्व ण अढनें दस बीस ॥ चिहुं
प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीत ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकनी
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें ण विचार ॥ साथ
समहें लोक समहें राज समह, कुमा आल दियां डइ चौथरु ण
प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंभायां तेम मरायां बीस, इक लल
असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग
इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास
॥ १३ ॥ सूआवमना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन
कीधां बहु असर्ताने पोस ॥ करीय डवाळत बार हजार गुणो मव-

कार, मित्राशुक्रम देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ बेकर जोडी ताम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पञ्चखाण, विण दीधां वांदणा, पन्किमणां
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै जणया, इ
कश् आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निबी आंबिल, ज्ञां
गै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास्त जंग उपवास्त, आंबिल ऊप
रां, अधिको दंरु वखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, जंग कियां
बलो, फिर अही पातिक हाणीये ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग,
चूले घरटियै, दीधै अछम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी
बुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री
जोजन, जल तिरणो खेखण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परडोई
चीतव्या, उपवास्त एक२-जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनेर करमांदान,
नियम करी जंग, मद्य मांस माखण जख्या ए ॥ आलोयण उ
पवास्त, संकप्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोढ्या
मिरखावाद, अदत्तां दान त्युं, जघन्य एकासण जाणिये ए ॥ अति
उत्कृष्टी एण, जाण आलोयण, उपवास्त दस२आंखियै ए ॥ २१ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥ गुण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत ज्ञाने अतीचार, जघन्य ठठ आलोयण धार ॥
मध्ये दस उपवास्त विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥
परियह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे जंग ॥ च्यार सिद्धा
व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी
नववामि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फस्त
हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने आवक
पोतोथ, एकेही सच्चि संधे कीध ॥ बीसर जोले सच्चि जलप्री

ध, दंरु एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां
पात्रै, एकासण तिम पुरिमद्ध मात्रै ॥ गइ मुहपत्तो आंबिल सारो,
तिम लुवै अरुम अवधारो ॥ २६ ॥ ध्यार आगार ठीमो राखै, अत
पञ्चखांण करै पट् सारखै ॥ दोषे मिच्छामिडुकरु दाखै, आलोयण
लेतां अज्जिदाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता
नावै पार ॥ तोपिण संकेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि
स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने
विधि पांमी ॥ जीतकळप गणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कळय ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ ए
कांत पूवै गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एइ करती
तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीभ्रमसिंह कीधो, चौ
पने फल वथी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहं रे ॥ रूप
ज्ञानन चंडानन वारिषेण, वर्द्धमान मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥
आठमो द्वीप नंदीसर अदन्नुत, बलयाकार विराजै रे ॥ तेदनेमध्य
चिहुं दिस सोजित, अंजन गिरिवर गजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण
सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अजिरामा रे ॥ मूलै प्रणुल सहस
दस जोयण, उवरि सहस कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद
प्रचूना, अति उच्चंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदि वि
विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यैश् इकसो चोवीस, बिंब संख्या
सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो ज्ञविजन जगते, सुध आगम कर सा
खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणै सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण
आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रचूप्रासाद सुदामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रज्जुनी, विविध रतनमई काया
 रे ॥ जिन कढ्याणक उज्ज्व करवा, सुरपति जेके आया रे ॥ नं०
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवैरे, चोमुख ध्यार विसाला रे ॥
 चाव३ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो
 सठ सहस जोयण उज्जै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि
 सि सोख सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासद सुविमला रे ॥ नं० ॥
 ९ ॥ वाव५ नैं अंतर विदसैं, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय२ संख्या
 जगदीसै, कहा नही ए कूमा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मानदस
 ऊंचा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ ऊल्लरिसम संगण जगत गुरु, नि
 श्चय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेद ऊपर प्रासाद सतोरण,
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपरिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिन
 राज बखायै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रज्जुना बावन, नंदीसर
 वर दीपे रे ॥ इव्य जाव विधि पूजा करतां, मोद महा जम जायै
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जोवाजिगमें जा
 यो रे ॥ इम अधिकार वै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आयो रे ॥
 नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुजव इहा
 ध्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाई द्वोपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंडु मनसुध विहरमाण जिणोसर वीत, दीप अढीमें विचरै
 जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, क्लिण २ ठामे
 कुण२ जिन कदस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र
 प्रमाण, बलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुडै सोहं
 द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाज्जुमीनो कहुं अधिकार ॥ २ ॥
 पहिलो जंबूद्वीप समै विच आल आकार, छांबो पिहुलो इक लख

जोयणने विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नामें मेर, तिणथी
 दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिण दिसि
 एह जरत सुज क्षेत्र, पांचसे ठवीस जोयणठ कहां तेहनो क्षेत्र ॥
 उत्तरखंरुमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांजूमी गए
 अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस ठते चोरासी जोयण जाण,
 च्यार कला ए महाविदेह विखंज वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण
 एक विजय पडुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने गण ॥
 ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरब पश्चिम, दोय विजाग, सोलै ५ विजय
 तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोषे आरे तारै श्रीअरिदंत,
 एहवे महाविदेह करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजय
 पुष्कलावतो आठमी ठांम, पुंरुरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंथ-
 स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नाम, पछिम विदेह
 बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वडविजय
 बलि पूरब विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥
 नखिनावर्त चोवीसमी पछिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी
 तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप
 मजार, महाविदेह सुदरसन मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा
 गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाळी दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो दीप ए, धन ५ घातकी खंरु ॥ पिहुलो चिहुं
 लख जोयणो, मंरुल रूपे मंरु ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय जरत दोय
 एरवत, दोय बलि महाविदेह ॥ करमजूमि खट ठै जिहां, उण-
 हिज नामें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम घातकी, खंरु गिणीजै
 दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पछिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥
 इक २ मेरुने अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांरिने,

लेखो चिह्नुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो,
ठठो स्वयंप्रभु ईस ॥ रुषजानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस
॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥
पूरव धातकी खंरुमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली
बिहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नामे अनुक्रमे,
विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो
देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥
दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंझानन जिन, पञ्चम धातकी मांदि ॥ विचरै
च्यालं जिणवरा, अचलमेरु उज्जाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी
खंरु ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-
दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींठ्यो चूनी जेम विचाल ए ॥
सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥
उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनै आधै पगै ॥ विच पळ्यो
परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहा लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख
योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमि ठ ए कहीजै, धात-
की खंरु जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करने पूरव दिसै, मंदिर
नांमे मेरु तिहां वसै ॥ पञ्चिम विष्णुमाली मेर ए, इहां किण इतरो
नांमे फेर ए ॥ २० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥
एक २ मेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कहो ॥ इम जरत एरवत
महाविदेहे, नाम सरखो हेत ए ॥ तिणहोज नामे विजय सगली,
सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंरु तिम पुष्कर
सही, इहां क्षेत्रानी रचना विधकही ॥ बार २ कहां ए विसतार ए,
पहिला पर लेख्यो सुविचार ए ॥ २० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पश्चिम जेहनी ते, तेह तिमहीज
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंडबाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर
 अरथ माहे, सरंबा जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाळ ॥ वैरसेनवंदू जिन
 सैतैरैमो, श्रीमहाजड अघारम भित नमो ॥ देवजला उगणीसम
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण च्यार पुष्कर
 अरंध माहे, कहा पश्चिम भाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमाळि चिहुं
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरातो पूरब लाख बरसा, आठ इक
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरणा सुहामणो
 ॥ ३३ ॥ ढाळ ॥ काल जघन्ये ए जिण वील ए ॥ दिव अकळे
 जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे
 जरते जिम पांचे लहै ॥ ३० ॥ जिण लहै पांचे तेम पांचे,
 एरवत भिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया,
 तिहा पिण ठे जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोनि
 नवसय केवली, नव सहस कोनी अवर मुनिवर, वंदियै नित ते
 वली ॥ २४ ॥ ढाळ ॥ इहां जरते एरवत आज ए, पंचम आरै
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, बिचरे वीसै जिन
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आज्ञे
 तारण तरण विचरै, केवली दोय कोरु ए ॥ दोय सहस कोनी सुसाधु
 बीजा, नमुं बेकर जोरु ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा
 जूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह ज्ञाख्या वीस विहरमाण
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सत्तर गुणतीसै समै, सुखविजयहरख
 जिनंद सानिध नेह धरि भ्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ घातकी खंरु ३ आधोपुष्करद्वीप एवं
 ४ द्वीपसै ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मेजूर्मामें विचः

रता साध्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाझाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र जणी ऊ
महेज्यो, तुम्हे नरजव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथा
मांहे ठाजे, आबू मारुनै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला
गो, जंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास
कहावै, निरखंता त्रिपति न थावे रे ॥ जा० ॥ एतो मुंगरियानो राजा,
एहनी ठै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ गह रुतु वास वणाथो,
एतो चंपला अंबला ठायो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा जाजा, जिहां
तिहां वनवेढ्या आजा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जार अढारे वषारई,
एतो इहांदिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू
लमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर जूमि विसाला, देवल
बीठा रलिवाला रे ॥ जा० ॥ निमलमंत्री वरदाई, चक्रेसरि देवी सहा
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवारु वंस वदीतो, जिणइलपति साहि जो
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेष करायो, पाइण आरास मंढायो रे ॥ जा०
॥ ६ ॥ जीषीर कोरखी ऊरयो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा०
॥ नवीर जांति वषाई, जिहां तिहां कोरखिया जिणाई रे ॥ जा०
॥ ७ ॥ उत्तरे पाइण जेतो, जोखीजे पाइण तेतो रे ॥ जा० ॥
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी दितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥
जगसिख कोरु सोनइया, इय लागत करि जस लीया रे ॥ जा०
॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥
पुठै चढिया हाथी, मंढाया पति साह सार्थारे ॥ जा० ॥ इण देवल
समवर कोई, जूमंरुल मांदि न होई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति
ण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमो
कहि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

हवो जिणहर पासै, बार क्रोमनी लागति ज्ञासै रे ॥ जा० ॥ देश
 एी जेठाणी, आखानी अजब कहाणी रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ इहां देव
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस
 वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल
 वामो दीगो, ते तो लागै नयणै मीगोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल
 पासै, लोक जेवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गात्र आ
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा
 च्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते
 धातो, जिंगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा
 लौ, जिण बिंबनो ज्ञाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली
 ज्ञोम सोजागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६
 ॥ एदनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा०
 ॥ १७ ॥ इण हुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन ज्ञावी रे ॥
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥
 ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥
 जा० ॥ साहमी वडल कीज्यो, जातमलीनो जसलीजो रे ॥ जा०
 ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥
 जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अहिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥
 ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥
 जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥
 २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषज्ज्ञानन ब्रधमान, चंज्ञानन जिन, वार्षिण नामे जि
 णा ए॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिजुवन सासता, प्रणमुं बिंब सोदा-
 मणा ए॥ २ ॥ चेइहर सग कोरि, लाख बहुत्तर, चैत्य प्रतिमा

(१२९)

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोनि, साठ लाख सुंदर,
 जुवनपती मांदि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद,
 चौरासी लाख, सहस्र विन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ दाढ ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

दिवै नवग्रीवैकै पंचानुचर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा
 सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अमृत्रीस सह
 स सत साठ अठै गुण बाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक
 वखाण, चउ१ चेईहर साठ सबे त्रिहुं गंण ॥ इकसो चोवीसै गुण
 प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चालिसा सात सहस्र प्रणमाम ॥ ७ ॥
 नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरु वन अस्सी दस कु
 रु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असो अति
 सुंदर वक्क सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ दाढ ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी इह सुजगीस ॥ कंचन गिर
 वरु ए, एक सहस्र धरु ए ॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ बैताढय, वीस सत
 रसो आढय ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥
 जंबू प्रमुख दस रुक्क, इग्यारैसै सत्तर सुक्क ॥ कुंरु त्रणसय असी
 ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ दाढ ॥ ४ ॥

त्रिण सहस्र सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,
 वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थकर प्रतिमा गुणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख
 सहस्र वलि ज्वासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरबावै सब
 मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोनि सत्तावन
 लस्का रे, दोयसै निव्यासी कयरुका ॥ दिव प्रतिमा ग्यान कहीजै

(१३०)

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोनी रे,
अम्वन लख अधिके जोनी ॥ ठत्तीस सदस अधिक कहीवै रे,
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ बाळ ॥ ६ मी ॥

जोइस बिंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥
पायकमल तेदना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥
विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्र-
तिमा चोविह देवता, वलिष विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥
जिनप्रतिमा बोली जिन सारणी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥
जविषणने जवसायर तारवा, प्रवदण जेम प्रवानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥
जीवाजिगम प्रमुख मांदि ज्ञाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियनै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संयुण्या जिनवर तणा, चिहुं
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज
समयसुंदर गुण जणै अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयल्यो
सदा मुज परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥
प्रज्जुजी विराजै रे सूरत बिंदरै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥
जगदितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीद्वारय नृप गेह ॥ श्रीवड
सोहे रे लांगन सुंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रज्जु देह ॥ २ ॥ ज० ॥
विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सधन घना-
घन जिम भ्रम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन ज्ञाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघांती कर्म ॥ दूर
निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥
संप्रति कालै रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन
लहियै रे प्रभु सुप्रसादश्री रे, मन वांगित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥
श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, छकृत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रह
सुग्रह संपजै रे, समकित पिण दृढ आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसङ्ग-
रुना मुखशी सांजिछवा रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे
निज चित्तमें धरवा रे, नेनी सुत जाईवास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य
कराव्युं रे सुंदर सोजतो रे, मनधर अधिक जलास ॥ शीतल प्रभुनो
रे बिंब भराबियो रे, सदसफला बलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस
अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मात मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-
वसे आपियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी
सङ्ग मेले जया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-
हनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सूरि-
श्वर दीपता रे, श्रीखरतर गढ जाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन
थुण्या रे, विबुध कृपा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल
जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारि हूँ तो भरवा गइयी तट जमुना के तीर जो ॥ १ ॥ चाल ॥

हारि मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरणा प्रीत जो, जीवरुखो
ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारि मुंने आस्यै कोइयक
समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुखी तव आस्यै महारी सबि बगे रे
लो ॥ १ ॥ हारि कोइ दुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उल-
वस्यै नही क्यारे कीथी चाकरी रे लो ॥ हारि मोरे स्वामी सरि-
खो कुण ठै डनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्था

करी रे लो ॥ ३ ॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध
जो, गली रे सी करवी तेदथी गोठनी रे लो ॥ हारे कांड़ फूवूं खाई
ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतनी रे लो
॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, बायो रे नवि
जाण्यो कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत
वञ्जल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥
हारे प्रभु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रद्यांथी
होइ उजोगलो रे लो ॥ हारे कृण जाणें अंतरगतिनी विण माहा-
राज जो, देजे रे हसी बोलो ठंणी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे
मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखरुली अशियाली का-
मणगारीयूं रे लो ॥ हारे मारे नयणा लंपट जोवे स्थि २ तुज जो,
राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा
ते पिण जांशज्यो करीनें इजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाणं
चारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,
गिरुआ थइ मन आंणो कलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोहूं
रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥
रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंरुप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा
च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही
संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल,
मांरुयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जोंयरा रे लाल, सूतां
ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो
देस मेवारु ॥ म० ॥ लख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धनो
पोरवारु ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

(૫૩૩)

સંતા સુખુ ધાય ॥ મ૦ ॥ પાંચ પ્રાસાદ બીજા વહી રે લાલ,
જોતાં પાતિક જાય ॥ મ૦ ॥ ૫ ॥ રા૦ ॥ આજ કુતારથ હું થયો
રે લાલ, આજ થયો આણંદ ॥ મ૦ ॥ યાત્રા કરી જિનવરતણી રે
લાલ, દૂર ગયું હુલ દંદ ॥ મ૦ ॥ ૬ ॥ રા૦ ॥ સંવત સોલ ધિયં-
તરે રે લાલ, મિગસિર માસ મઝાર ॥ મ૦ ॥ રાણપુરે યાત્રા કરી રે
લાલ, સમયસુંદર સુલકાર ॥ મ૦ ॥ ૭ ॥ રા૦ ॥ ઇતિ શ્રી
રાણપૂરા સ્તવનં ॥

॥ અથ દર્શનદ્વાર શ્રોઆદિજિન સ્તવનં ॥

સમકિત દ્વાર ગુંઝારે પૈસતાં જી, પાપ પમલ ગયાં દૂર રે ॥
મોહન મારૂદેવીનો લામલો જી, દેઠો મીઠો આનંદ પૂર રે ॥ સ૦ ॥
॥ ૧ ॥ આયુ વરજિત સાતે કર્મની જી, સાગર કોમાકોમી હીણ
રે ॥ સ્થિતી પઢમ કરણે કરી જીવેને જી, બીરજ અપૂરવનો ઘર
લીધ રે ॥ ૨ ॥ સ૦ ॥ ઝુંગલ ઝાંગી આદિ કષાયની જી, મિથ્યાત
મોહની સાંકલ સાથ રે ॥ બાર કઠામા સમ સંબેગના જી, અનુજવ
ઝવેને બેઠો નાથ રે ॥ ૩ ॥ સ૦ ॥ તોરણ બાંધૂ જીવદયા તર્ણ
જી, સાથિયો પૂરો સરઘા રૂપ રે ॥ ધુપઘટી પ્રજુગુણ અનુમોદના
જી, દ્વિગુણ મંગલ આઠ અનૂપ રે ॥ ૪ ॥ સ૦ ॥ સંવર પાણી અંગ
પસાલને જી, કેશર ચંદન ઉત્તમ ધ્યાન રે ॥ આતમ ગુણ રુચી
મૃગમદ મહમદે જી, પંચાચાર કુશમ પર્યાન રે ॥ ૫ ॥ સ૦ ॥
જાવપૂજાને પાવત આતમાં જી, પૂજો પરમેસર પૂન્ય પવિત્ર રે ॥
કારણ જોગે કારજ નીપજે જી, ક્રમા વિજય જિન આગમ રીત રે
॥ ૬ ॥ સ૦ ॥ ઇતિ શ્રી આદીસર જિન સ્તવનં ॥

॥ અથ શ્રીઆદીસર જિન સ્તવન ॥

આદિ જિનેસર અરજ સુણીજે, મોહન મહિર ધરીજે રે ॥
દિલરંજન પ્રજુ દરસણ દીજે, મ્હારો મનમો રીજે રે ॥ આ૦ ॥ ૧ ॥

પ્રજ્ઞુ દરસન લેહિવો જગ ધુલજન, વિન દરસન નહીં કિરિયા રે ॥
 જે દરસણ વિન કિરિયા પાલૈ, તે નવિ કહિયૈ તરિયા રે ॥ આ૦ ॥ ૨ ॥
 નય એકાંતિ દરસન ઘાપૈ, પિંન જરે તે પાપે રે ॥ આપ આપણા મતિ
 આલાપૈ, તે જૂલા જવ આપે રે ॥ આ૦ ॥ ૩ ॥ શુદ્ધ દરસન સ્થા-
 દ્વાદને સંગે, જે ગ્રહે આત્મ જમંગે રે ॥ આનંદઘન જપજૈ તસુ ગંગે,
 સિદ્ધમણને રંગે રે ॥ આ૦ ॥ ૪ ॥ જવ કોમાકોમીમેં જમતાં, તુજ
 દરસન નહીં પાયો રે ॥ સુકૃત સંયોગે તાહેરે સનમુલ, આજ જલે
 હું આપો રે ॥ આ૦ ॥ ૫ ॥ તાહરી મહિર લહિરનો લટકૌ, જો
 જગગુરુ હું પાઝું રે ॥ સદજે એક પલકમેં અદ્વજુત, આતમ ગુણ
 જપજાનું રે ॥ આ૦ ॥ ૬ ॥ મરુદેવાનંદન જગ વંદન, શ્યામી દર-
 સણ કીજૈ રે ॥ લાજનવદય જિનચંદ લહીને, સગલા કારજ સીજૈ
 રે ॥ આ૦ ॥ ૭ ॥ ઇતિ શ્રી આદિજિન સ્તવર્ન ॥

॥ અથ શ્રીઅજિતનાથ સ્તવર્ન ॥

॥ અનંત જિન આપજ્યોરે ॥ ૧ ॥ ચાલ ॥

જ્ઞાનાદિક ગુણ સંપદા રે, તુજ અનંત અપાર ॥ તે સાંજલતા
 ઝૂપની રે, રુચિ તિણ પાર જતાર ॥ અજિત જિન તારજ્યો રે ॥
 તારજ્યો દીનદયાલ, અ૦ ॥ તા ॥ ૧ ॥ ૧ ॥ આંકણી ॥ જે જે કારણ જે-
 હનો રે, સામગ્રી સંયોગ ॥ મિલતાં કાર્ય નીપજે રે, કર્તા તનય
 પ્રયોગ ॥ અ૦ ॥ તા ॥ ૨ ॥ ૨ ॥ કાર્ય સિદ્ધિ કર્તા વસુ રે, લહિ કા-
 રણ સંયોગ ॥ નિજ પદકારક પ્રજ્ઞુ મિલ્યા રે, હોય નિમિત્તમ જોગ
 ॥ અ૦ ॥ તા ॥ ૩ ॥ ૩ ॥ અજ કુલગત કેસરી લહે રે, નિજ પદ સિંહ નિ-
 હાલ ॥ તિમ પ્રજ્ઞુ જૈ જવિ લહે રે, આતમ શક્તિ સંજાલ ॥
 ॥ અ૦ ॥ તા ॥ ૪ ॥ ૪ ॥ કારણ પદ કર્તાપણે રે, કરિઆરોપ અજેલા નિજ
 પદ અર્થી પ્રજ્ઞુપ્રકી રે, કરૈ અનેક જમેદ ॥ અ૦ ॥ તા ॥ ૫ ॥ ૫ ॥
 અદ્વવા પરમાત્મ પ્રજ્ઞુ રે, પરમાનંદ સરૂપ ॥ સ્યાદ્વાદ સત્તારસો રે,

अमल अखंन अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोहित सुख ब्रम
 टट्यो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरथो अजिवाखीपणो रे, कर्त्ता
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ आदकता स्वामित्वता रे,
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणाता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा ज्ञासन रमणता रे, दानादिक परिणा
 म ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माइणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंड
 सुख सागरू रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोनी दीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूरु
 कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वोत ॥ १ ॥ रुपानाथ मु
 ञ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तूं समरथ त्रिजुवन घणी जी,
 सुजने डुत्तर तार ॥ क० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी,
 दीठां डुख अनंत ॥ जगसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत
 ॥ क० ॥ ३ ॥ जे डुख जोजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुख ॥
 परडुख जंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने थो सुख ॥ क० ॥ ४ ॥ आलोयण
 लीठां पलैं जी, जीव रुखे संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह
 सुण्यो अधिकार ॥ क० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सुथो गुरु
 संयोग ॥ परमास्थ पीबै नही जी, गरुप्रवाही लोक ॥ क० ॥ ६ ॥
 तिण तुज आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय
 बाप आगल बोखतां जी, बाखक केही लाज ॥ क० ॥ ७ ॥ जि
 न भ्रमं सहू कहैं जी, थापै अपणी जी वात ॥ सामाचार
 जुइ जुइ जी, शंसय परथां मिथ्यात ॥ क० ॥ ८ ॥ जाण
 अजाणपणो करी जी, बोढ्या उन्सूत्र बोल ॥ रतने काग

उमावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ क० ॥ ए ॥ जग-
 वंत ज्ञाण्यो ते किदा जी, किहां मुज करणी एह ॥ गज पाखर
 खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप
 परंपुं आकरो जी, जांखे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनंत में लछाजी,
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पानिया जी, किहां जइ करूं
 पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नही जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥
 सदज पण्यो मुज आकरो जी, न गर्मे जूंनी वात ॥ परनिंदा क-
 रता अकांजो, जायै दिन नै रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखै धंदे पण्यो जी,
 नरकै करसी रीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहूँता गुण को कहे जी, तो
 हरखूं निसवीस ॥ को हितसीख जखी दियै जो, तो मन आणूं
 रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश
 ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ क० ॥ १७ ॥
 सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक
 मनमांहे ऊपजै जी, मुज मरकट बैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध
 २ कर उच्चरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ बार २ ज्ञाजू बली जी,
 बूटकवारो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा
 आरंज कोनि ॥ जयणा न करी जीवनी जो, देवदया पर गेर
 ॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कहा जी, दारुया अनरस धन ॥
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत काधा सत खन ॥ क० ॥ २१ ॥
 अणदीधो लीजे ठुणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागा घणा
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही
 जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विठवन सी कहूं जी, ते तूं जांखे

सरूप ॥ क० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पक्यो जी, कीधो अधिको
 लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो जी, न चढी संजम सोज ॥ क० ॥
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीजो जन दोष ॥ में मन
 मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इण जव
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिठामिडुकनं
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कहा
 जी, प्रगट अगरे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगस २ माइ
 बाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार है एतलो जी, सरददशा है शुद्ध ॥
 जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूब ॥ क० ॥ २८ ॥
 रिषजदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया
 आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिठामिडुकनं जी, देतां
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब
 तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,
 करजोमि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद
 सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जयों ॥ ३१ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदधनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री ऋषज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए चारु ॥

ऋषज जिनेसर प्रीतम माहरो रे, ज़र न चाहूं रे कंत ॥
 रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, जागे सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥
 प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

संगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥
 कोइ कंत कारख काष्ट जकृण करें रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए
 मेखो नवि कहियै संजवे रे, मेखो वाम न छांय ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ
 पति रंजन अति धणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति
 रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥
 कोइ कहे लीला रे अखख अखख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥
 चित प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखं कित एह ॥ कपट रहित
 अई आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मार्द मन मोहं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥
 जे तैं जीत्या रे तेणो हुं जीतियो रे, पुरुष किस्थुं मुऊ नाम ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, जूजो सयल संसार ॥ जेणें
 नयणो करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥
 पुरुष परंपर अनुज्जव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही गाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क
 विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य
 नयणतणो रे, विरह पण्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं
 रे, ए आस्था अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे,
 आनंदधन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संजव देव ते घुर सेवो सबे रे, लहि प्रजू जेद ॥ सेवन
सेवन कारण पदली जूमिका रे, अजय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥
जय चंच लता हो जे परिशामनी रे, वेष अरोचक जाव ॥ त्वेद
प्रवृत्ति हो करतां याकिये रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥
चरमावर्त्त हो चरम करण तया रे, जव परणति परिपाका ॥ दोष टले
बली हृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन बाका ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय
पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यातम अ
वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण
जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विषा
कारज साधिये रे, ए जिनमत जनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सु
गम करी सेवन आवरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित ते
वक याचना रे, आनंदधन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसियै, दरसन डुल्लेज देव ॥
॥ मत २ जेदे रे जो जइ पूबिये ॥ सहु आपै अहमेव ॥ अजि०
॥ १ ॥ सामान्ये करी दरसन दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥
मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥
२ ॥ हेतु विवादे हो चित धरि जोइये, अति डुरगम नय वाद ॥
आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥
३ ॥ घाती डूंगर आमा अतिधणा, तुज दरसन जगनाथ ॥ धी
ठाइ करी मारण संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस्त
ए २ रटतो जो फिरूं, तो रणरोज समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवै
हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन उर्य
ज सुलज रुपायकी, आनंदघन मादाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवर्न ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांशिये, परि तरपण सु
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत
मा, बहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर
मातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक प्र
ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र
ह्यो, अंतर आतम रूपा ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा
तमतज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी अइ धिर ज्ञावा ॥ परमातमनू हो
आतम ज्ञाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम
पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवर्न ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ५ चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी०
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥
दानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २
॥ परदुःख वेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण परदुःख रीजे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
 जयदान ते मल कय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरण,
 विष्णु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
 शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निग्रंथता संयोगे रे ॥ योगी जोगीवक्ता
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥, इत्यादिक बहु ज्ञे
 न त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
 आनंदधन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्रो कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज
 तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज
 नी वातर बसती ऊजरु, गयण पायाले जाय ॥ सांप खायने मुखमुं
 थोथुं, ए ठवाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा
 अजिलाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अभ्यासे ॥ वयरीमुं कांइ एहवुं
 चितै, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
 धरनें हाथे, नावे किय विष आं० ॥ किहां कयो जो इठकरीइटकूं,
 तो व्यालतषी पर बांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो ठग कहूं तो
 ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांइ ने सहुषी अ
 लंगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
 कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंमित जन समजावे,
 समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाणयुं ए
 लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वार्ते समरथ ठै नर,
 एहने कोई न जेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
 गलूं सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नबि मानुं,
 ए कहि वात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं डुरा राध्य ते

(१४३)

चंस आणुं, ते आगमयी मति आणुं ॥ आनंदघनं प्रभुं माहरो आणो,
तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पढिक्रमणें बोलणें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ कुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेठियै, जवना संघित पाप परा सब
मेठियै ॥ मन घर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणदूते एक
कोरि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रभु दूरअकी में ताहरो,
जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ जव २ तुमहीज देव
चरण हूं सिर धरूं, जवसाथरथी तार अरज आहीज करूं ॥ ३ ॥
सूख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सदै, तप जप संजम जार त
णी नवी निरवदै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत घणी,
एहिज वै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विण स्वामं
जवोदधि हूं फिरयो, सहीया डुस्क अनेक न कारज को सरयो ॥
मिलिया दिव प्रभु मुज सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत
जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति इरी, सैन्यां
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो,
जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ कुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जुवन सिरताज ॥ आगेलाख,
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमलं
सुगुण निधान ॥ आगेलाख, वामासुत वरुजागीयाजी ॥ २ ॥ सेव-
कनी संजाल, करिय स्वरी ततकाख ॥ आगेलाख, संकट सहुं प्रभुं
परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रयव्यो आनंद पूर ॥
आगेलाख, वाट विषमता पिण ठली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

(३४३)

बीता सहु विलबाद ॥ अठेलाख, मन वंढित मुज सहु फट्या जी
॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया गो प्रजु आप ॥ अठेलाख,
देउयो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस कमा-
कट्याण ॥ अठेलाख, बाचक इम बीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादायी रे ॥ वामासुत वरदाय,
निरमल नाथी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रजु अंग, निरुपम निरुप्या रे ॥
तीन कमल मुज संग, आतम हरुप्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख,
चंद लजार्ण रे ॥ गगन जमे नितदीप्त, इम मन आंखू रे ॥ ३ ॥
सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुवेद्यात,
आख ज्युं गाजै रे ॥ ४ ॥ प्रजु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे ॥
ततरिण निज संवात, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदाए,
श्रीजिन राया रे ॥ साखे पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रजु-
गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पातिक पंक, आतम संगे रे
॥ ७ ॥ वरस अठार चोतीत, बदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम होत,
सहु संघ साखै रे ॥ नगर महेवा मांदि, पास जुझारया रे ॥ श्री
जिनचंद मुषिंद, वंढित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुज बीनती गोमीचा, अखवेसर अवधार हो गोमी
चाराय ॥ प्रगट रई पातालबी गोमीचा, सेवक जिन साधार हो
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख रई कृतावली, गो० ॥ दरसण देखण
काज हो ॥ गो० ॥ पांखीनलमे पातली, गो० ॥ यो दरसण महा-
राज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तू साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो
वै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो कृमही, गो० ॥ संप्रति क-
रवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवको, गो० ॥ सगली

(१४४)

आति सदीव हो, गो० ॥ छंची नीची वातमें, गो० ॥ ये मति धाखो
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीगं ते
न सुहाय हों ॥ गो० ॥ इक दीगं मन छलसे, गो० ॥ इक दीगं
उल्लास हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काखै बाळ्दै माहरे, गो० ॥
कीधी खरी सजीरु हो ॥ गो० ॥ वरसण देवानी नकी, गो० ॥
पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं
करै, गो० ॥ राखी चिहुं मदि छाज हो ॥ गो० ॥ बलि अवसर
संजारज्यो, गो० ॥ इम जंयै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वामी रे ॥ अश्व-
सेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवनजन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अ-
टवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥
दीनदयाल दया कर दीजै, अनुजव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल
सेवा चित चाहत, सुगण सदा दितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वशेन
वामाजीके नंदन, देख्यां बिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें
महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेव-
गकी येही अरज हे, जवडख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाई प्रज्जू-
जी, प्यारी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन
बांदवा, चितरुमें लागी वै चूंप ॥ सवाईप्रज्जूजी ॥ १ ॥ अशिया-

ली प्रजू आंखनी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां०
 ॥ नयण सलूण जी निरखतां, ऊपजै अधिक उद्धास ॥
 स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा
 निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीधो, दिल
 रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांशियै, सो
 य घनी सुप्रमाण ॥ स० ॥ जगतवड्डल जल जेटियै, जिनवर चतुरसु-
 जाण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगद जयो, श्रीचिं
 तामणिपास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पुरो जी
 आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम
 विन देख्यां एक घनी न रहाय, म्दारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे
 अमारा हीयनलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास ठियै निर
 धार ॥ म्दारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०
 ॥ चंद चकोरा जलधर नै जिम मोर ॥ म्दारा जि० ॥ २ ॥ नयण
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधोजिम तिम करि
 नै चोर ॥ म्दारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥
 आपो जवरे चरणकमलनी सेव ॥ म्दारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-
 नै आवे जे तुझ पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास
 म्दाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी आबै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांशि-
 ने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्दारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो मुऊ ऊ-
 पर निवर सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांशी ठिटक न देख्यो ठेह ॥
 म्दारा जि० ॥ खरतर गडपति श्रीजिनलाज सूरिंद रे, जि० ॥ तासु
 पसार्ये पज्ज्ये अनोपमचंद ॥ म्दारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

(५४६)

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रजुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने
मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं ठे प्रजुजी म्हारो अंतर
जामी, पूरव पून्यै थारी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तु-
जनें जाण्यो ठे साचो, कदिय न दिखमांहे अणुं हुं काचो राज
॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिखमुं राज करीय सगाई, सुगण प्रजु
जीस्युं वधज्यो प्रीन सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रजुजी ताद-
रो दिखमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणानो ठूं रसियो राज ॥
सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रजुजी चाकर ठूं खासो, कदिय न मेळूं
प्रजुजी पवजर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी मद्दे राज मोटा क-
हीजै, लाहो लाखीणो प्रजुजी संगे लहोजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥
पिंजर तो फिरती राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिखमांहे
रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोख मजीठ रंगाणो, नदिय विसरस्युं
प्रजुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये
जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजि-
नचंड सदा साधारो, तारक प्रजुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०
॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीग
आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रजु, तिम२ वाधे प्रीत ॥
तेन मन मारा ठलसै कांइ, रुनी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण
कमलदल पांखनी प्रजु, मुखनो पूनमचंड ॥ दीपशीखासी नासिका
कांइ, दीगं परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ काने कुंमल जिगमिगे प्रजु,
कंठै नवसर हार ॥ चंपकली सोहे जली कांइ, मुखमै ज्योत अपार
॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं ठे जगनो वाखदो प्रजु, थारे सेवग कोरु ॥ म्हादे

(१४७)

सूँहिज साहिबो कोइ, बंदू बे कर जोर, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज
मनोरथ सब फलपा, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तथा
कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै
२ जी माहाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरणी ॥ मुज मन
अमरतणी पर मोह्यो, गोमायो नवि बूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण,
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगअकां पिण हूं प्रभु तुमने,
नहिय विसारुं दिखसुं ॥ रात दिवस एहवी मन बरतै, जाणूं नइ
मिळुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यअकी में पायो, ए अवसर
आजूषो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सखूषो
॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग ठै बहूला, मो सरिषा लख ग्याने,
माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥
आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही जाखूं ॥ असृत जेम
खही तुज गुणरस, तारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन
ए मुझनी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें
गिषातां, कहो कुष मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपर्यै किंचित
गुण जाखूं, हूं स्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुज गुण
लायक, त्रिजुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ बरस अठार बली
इकताले, मिगसर परब उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे,
थात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं,
मेलो तिहां मंमायो ॥ लाज उदय जिनचंदने प्रभुजी, बांध्यो प्रेम
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पलशमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं भिनश्में ॥ तूं० ॥ १ ॥ का
हूको मन तरुणीसैं राख्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रजु
तुमहीसे राख्यो, ज्युं चात्रक चित्त धनमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ जोगीसर
तेरी गति जांणै, अखख निरंजन भिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर
तूंदी, साहिब तीन जुवनमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोहनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव
व्यासागर प्रजु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रजु सिद्ध
अया, संघ सकल आधारो रे, दिवइण जरतमां ॥ कुण करशे उप-
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे
संघ ॥ साथे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परदा अग्रनाथ ॥ वीर विहूणा
जीवना रे, आकुल व्याकुल आयो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय
बेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख छपजे रे,
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्धामक जवत्तमुदनो रे,
जव अटवी सत्तवाह ॥ ते परमेसरविण भिळ्यो रे, किम बाधे उस्ताहो
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुत तथो रे, हुंतो परम आधार ॥
हमणां श्रुत आधार ठे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥
इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि-
जना रे, जिनपनिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचा-
रिज मुनि रे, सहुने इण परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव-
चंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रुषज समोसरथा, जला गुण जरया रे ॥ सिद्धा
साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगें

(३४८)

गया रे ॥ नेमीसेर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,
गिरिसेहरो रे ॥ जरतें जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति
जत्रो, त्रिजुवन तिलो रे ॥ विमल वसई वस्तुपात्र ॥ ती० ॥ २ ॥
समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश
॥ ती० ॥ नयरो चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा-
सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरो, रुद्धें जरी रे ॥ मुक्ति
गया महावोर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥
अरिदंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज चंदीयें, चिर नंदीयें
रे ॥ अरिदंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो
रे ॥ फलोधी घंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ-
मीऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,
जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाकुलाई जादवो;
शोनी स्तवो रे ॥ अंवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,
बावन जलां रे ॥ रुचक कुंरुल चारु चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती
अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताळ ॥ ती० ॥ तीरथ
जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चाखो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-
चलगिरि जईए बहेनी, विमलाचलगिरि जईए रे ॥ आ० ॥ सुश-
बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिर्न इम जांखी ॥ जरतादिक
नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणा गि-
रिवरिये काल अनंत, साधु अनन्ता सीथा ॥ जन्म मरणनां दुःख
ठोमीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-
न्मुख पगलां जरतां, आतम शुद्ध सुजायें ॥ कोमि जवारां पातक
कीथां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेरु

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ
न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजमशुं नेह धरीने, आगें ठलग क-
रस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनैसर निरखी, प्रेम सुधारत पीस्यां रे ॥
॥ आ० ॥ ५ ॥ पुदप सुगंधा लेइ पचरेगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ प
हिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥
गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करिये ॥ मन गमती
अमती विच जेतां, जवस्त.पर निरंतरिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूर्व
नवाणूं वार प्रथम जिन, रागण कंठे आया ॥ ए तीरथ शुभ जाधें
फरसी, करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ दाज नवे ए गिरि
वर लहिये, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वस्तज,
प्रेम घणे वित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण पात्र ॥
मुनि जे झानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनु
मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आबक अच्युय गति लहे, नवअवेका
हेठ ॥ २ ॥ इल चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशा
लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ
ग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या
श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, जले में जेव्या श्री
जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे जग्य अनोपम माय
॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरो जी, तिहां प्रभु कानसग ली
थ ॥ पञ्चस्काण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीथ ॥ ज० ॥ ३ ॥
जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले आबकधर्म ॥ आकारे तिया ठल
रुखा जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा
सीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

ते ह्य देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चित्तवे जी, हो
 सी सफल मुज आस ॥ पद मास गिशातां थकां जी, पूरी पद वो
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तह
 थार ॥ प्रजुनो मारण देखतो जी, बेगो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥
 घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रजुजी कां न
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्युं
 पारणो जी, हूं प्रजुने पनिजाज ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय
 विन वरते आज ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊछा गोचरी जी, श्री
 तिहारप्रपुन ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत ॥ ज० ॥
 १० ॥ मिश्यास्त्री ज्ञाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेनी प्रते
 इम कहे जी, कांश्क तिका देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चादू जरने वा
 कला जी, प्रजुने आंगी दीध ॥ नीरागी तेही विया जी, तिहां प्र
 जू पारणो कीव ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डंडजि जी, जै बो
 ले कर जे नि ॥ हेम वृष्टि दुइ तिहां जी, साढोबारे कोमि ॥
 ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे म्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥
 लोकां प्रते इम कहे जी, में वदिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा
 दिक सद्गुण कहे जी, धन पूरणतेठ ॥ ठंची करणी तेंकरी जी,
 अवर सहू तुज देव ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वा
 जित डंडजिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रजु पारणो जी, मनमें थयो
 विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अज्ञागियो जी, मेरे न आया
 साम ॥ कळपवृक्ष किम पांमोये जी, मारुमंमल ठाम ॥ ज० ॥
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांदि ॥ निर
 धन जिमर चित्तवे जी, निमर निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पारु
 संतानिया जी, तिहां मुनि केवलघार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेसालापुर

राजियो जी, लोकांस्थुं आणंद ॥ राय प्रश्न पूवे इस्थों जी, सुगुरु
चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु
न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥
२१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो
जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे
केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न
कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण
घाढ्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०
॥ २४ ॥ घसी एक सुर डुंडुजि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-
तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥
राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुकनगरमें था
पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ २६ ॥ दांन दियो सु-
पात्रने जी, तें तिष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,
जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना
जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे म
नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोचन जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥
॥ द्विवे राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो ३
ग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुऊ मिठामिडकनं ॥ १ ॥ अ
रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु
॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख त
ऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव-
दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंडी जीवना, वे वे लाख विचार ॥
ते० ॥ ४ ॥ देवता तीर्थच नारकी, च्यार प्रकाशी ॥ चवदे लाख
मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणजव परजव ते

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध कर वोसके, डुरगति दातार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोळ्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादा
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो, की
 थो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ मै कीया, बलि राग ने द्वेष
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूना कलंक ॥ नि
 द्या कीधो पारकी, रति अरति निस्तंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाम्नी की
 धी चोतरे, कीधो प्रापणमोसो ॥ कृगुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं
 ण्यो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खादकीने जव जे किया, जीवना
 वध घात ॥ चिमिसार जव चिमकला, मारया दिन ने रात ॥ ते०
 ॥ ११ ॥ माढीगर जव माढला, जाळ्या जलवासा ॥ धीवर जील कोली
 जवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने जवे, पढी
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥
 ॥ १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंन ॥ वंदीवान मराविया,
 कोरना बनी दंन ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार
 क्री डुक्क ॥ वेदन जेदन वेदना, तामना, अति तिक्क ॥ ते० ॥ १५
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल पि
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख
 रुचा, फाळ्या पृथ्वी पेट ॥ सूराने दान किया घुसा, दीधा बलध
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोविया, नानाविध वृक्ष, मूल
 पत्र फल फूलना, लाग पाप ते लह ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही
 आंगमी, जरया अधिका जार ॥ पोठी छंट कोना पण्या, दया ना
 वी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ बीपाने जव बेतरयो, कीधा रांगणपास
 ॥ अगनि आरंज किया घुसा, धातुरवाद अज्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर
 पणे रणजूंजतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांत माखण जरण्या,
 खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणार्ई धातुनी, पाणो

छलं च्या ॥ आरंज कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संख्या ॥ ते० ॥ २२ ॥
 अंगारकर्म किया वली, धरमें दब दीधा ॥ सूत लेइ वोतरागना,
 कूना कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिछी जव ऊंर गिळ्या, गि
 छोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतये जवे, में जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥
 ज्ञानजूजातये जवे, एकैडी जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पारुता
 रोव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांरुण पीसण गारना, आरंज अनेक ॥ रांशण
 इंधण अगनिना, कीया पाप जदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकृषा ध्यार
 कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमाकिया, रोदनवि
 खवांद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने आवकतणा, जत लेइने जगा,
 मूल अने उत्तरतणा, मुज दूषण लागी ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विहू
 सिंद चीतरा, तिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतये जवे, हिंसा
 कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवने दूषण घणा, बलि गरज
 गलाया ॥ जीवाणी ढोळ्या घणा, शीलव्रत जंजाया ॥ ते० ॥ ३० ॥
 जव अनंत जमतं अकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध कर वो-
 सरूं, तिपासुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इयजव परजव इण परे,
 कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥
 ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरानी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर
 कदे पापयी, बूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इति आलोच्य सहाय सं० ॥
 ॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विकृत ॥ पासतणा गुण
 गावतां, मुज मुख बलज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणदिलपुरे, अह
 म्मदावादे पास ॥ गेली ॥ घणी जागतो, सद्गुनी पूरे आस ॥ २ ॥
 शुभ्र वेला शुभ्र दिन घणी, महुरत एक मंन्नाण ॥ प्रतिमा तीजे
 पासनी, अर्ध प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

(३५५)

॥ दाह ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥
 धरा कण कंचण मणि भाणक दे, गोमतीनो धणी जाचो जी ॥ गु० ॥
 ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणो घर हुंती जी ॥
 अश्वनी जूमे अश्वनी पीरु, अश्वनी बाल विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥
 जागंतो जह्नु जेहने कहिये, सुदणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि
 नेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुज संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहळ
 णीने परगट करजे, मेवागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ठगो
 मले जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मा
 रीस मुरसिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्रघन हयगय हाथी,
 खाब धणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुजने मिल
 स्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निखवट टीलो चोखा चोढया, वस्तु
 वदे तस पोठी जी ॥ ९ ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

ममसुं बिहंतो तुरकनो, माने वचन प्रमाण ॥ बीबीने सुह
 णातणो, संजलावे सदिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वना
 देव हे कोइ ॥ अब सताव परगट करो, नहिर मारे सोयं ॥ ११ ॥
 पाठलीरात परोमिये, पदली बांधे पाज ॥ सुदणामांहे सेवने, संज
 लावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ दाह २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुदणो जी ॥ पास
 तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूये जी ॥ ए० ॥ १३ ॥
 पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी
 पहुंचाडे धानक, प्रतिमा गुण संजारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुजने
 होसी बहु फलदायक, जाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणामे तेहन
 पाया, प्रहळणीने गुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुदणो देहने सुर चाढ्यो,

(२५६)

आपणो आनक पढुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहु, दीर्घे तुरकने
जोतो जो ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जानो दीर्घे गोठी, चोखा तिल
क निलामे जी ॥ संकेत पढुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लामे
जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुज घर प्रतिमा तुजने आपू, श्रीपास जिने
सर केरी जी ॥ पांचले टक्का जो मुज आपे, तो मोक्ष न मांगू फेरी
जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पढुतो रंगे जी,
केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी
रुनी रुनी कीधी, ते मांदि प्रतिमा राखे जी ॥ अमुकम आव्या
पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उडव दिन
अधिका आये, सत्तर जेइ सनात्रो जी ॥ ठांमरना दरसण करवा,
आवे लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन कळ
प्रतिमातणो, तीरथ अडे अजंग ॥ २२ ॥ सुदणो आपे तेगने, थल,
अटवी ऊजाम ॥ महिमा आस्ये अतिधणी, प्रतिमा तिहां पढुचाम ॥
॥ २३ ॥ कुशल कैम तिहां अडे, तुजने मुजने जांण, सैका बोनी
काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ दाळ ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वहाण एक वृषैज जोतरे ॥ पार
करथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश
आथां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनद विमासण थइ,
पास जवन मंमावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम कळं प्रयाण, कुट
को कोइ न दीसे बहाण ॥ देवळ पास जिनेसर सरतणो, मंमाण कि
म घरथे वियो ॥ २७ ॥ जळ विन श्रीसंव रहस्ये किहा, सिलावटो
किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निझ जहे, यकराज आवी इम

(३५७)

कहे ॥ २८ ॥ गूंदली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाशीज तिहा ॥
 स्वस्तिक सोपारी सहिनाण, पादणतणी उलटस्ये खांण ॥ २९ ॥
 श्रीफल सजल तिहां किय जुन, अमृत जल नितरिस्थे कूतं ॥ खां
 राकूआनो इह सद्नांणं, जूमि पळ्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सिं
 लावटो सीरोही वसें, कोढ परान्नवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं
 इहां आणजे, सत्य वचनं मांदरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन
 थिर आपियो, शिलाचंटाने सुदणो दियो ॥ रोग गमानं ने पूरुं आस,
 पासतणो मंने आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांदि मांन्यो ते वेण, हेम
 वरण देखाज्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया
 तेमवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे स्त्रीखांन घृत चूरमो ॥
 घने घाट करे कोरणी, लगन जले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज ३
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंरुप रलियामणो
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग
 संमो मंने आवास ॥ दिवस विचारी ईमो वळ्यो, ततखिण देवल
 ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ गुंज लगनं गुंज वेला वास, पद्मासण वेठ
 श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समान, एकलमल वगने रहे वान ॥
 ॥ ३७ ॥ दातं पुराणी में सांजली, तवनमांदि सूधी सांकली ॥
 गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विमोक्षणं जहं जंग, तेहनो अकलं सरूप ॥ प्रीत करे
 श्रीसंघने, देखाने निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरठं गौमीपांस जिन ॥ आपे
 अरथ जंमार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥
 नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असंवार, मारग चूकां मानवी,
 वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

(૪૫૮)

॥ શાલ ૪ ॥

વરણ અઢારતણો લહે જોગ, વિઘન નિવોરે ટાલે રોગ ॥ ૪૧ ॥ નિર
વિત્ર ઘડ સમરે જે જાપ, ટાલે સગલા પાપ સંતાપ ॥ ૪૨ ॥ નિર
ધનને ઘર ધનનો સૂત, આપે અપુત્રિયાને પૂત ॥ કાચરને સૂરાપણો
ધરે, પાર ઝતારે લઢી વરે ॥ ૪૩ ॥ દોઝાગીને દે સોઝાગ ॥ ૪૪ ॥
વિઠૂણાને આપે પાગ ॥ ઠાંમ નહીં તેહને થે ઠાંમ ॥ મમ વંઝિત પૂરે
અઝીરાંમ ॥ ૪૫ ॥ નિરધારાને થે આધાર, ઝવસાયર ઝતારે પાર ॥
આરતિયાની આરત ઝંગ, ધરે ધ્યાન તે લહે સુરંગ ॥ ૪૬ ॥ સમરણાં
સાદ દિયે જઠરાજ, જેદના મોટા અઢે દિવાજ ॥ બુદ્ધિદીનને બુદ્ધિ
પ્રકાશ ॥ ગૂંગાને થે વચન વિલાસ ॥ ૪૭ ॥ હુલિયાને સુલનો શ
તાર, ઝયઝંજણ રંજણ અવતાર ॥ બંધન તૂટે બેનીતણા, શ્રીપાર્શ્વ
નામ અક્ષર સમરણા ॥ ૪૮ ॥

॥ દુરા ॥

શ્રીપાર્શ્વ નામ અક્ષર જપે, વિશ્વાનર વિકરાલ ॥ હસ્તિયુદ્ધ
દૂરે ટલે, હુલ્લ સીંદ સિયાલ ॥ ૪૯ ॥ ચૌરતણા ઝય ચૂકવે, વિષ
અમૃત ઝનકાર ॥ વિષધરના વિષ ઝતારે, સંગ્રામે જય જયકાર ॥ ૫૦ ॥
રોગ શોગ દાલિહ હુલ, દોહગ દૂર પૂલાય ॥ પરમેસર શ્રીપાસનો, મ-
દિમા મંત્ર જપાય ॥ ૫૦ ॥

॥ શાલ ૫ ॥ ચાલ કહલાની ॥

ઝંજતતૂ ૨ ઝંજ ઝપશમ ધરી, ઝું ઝીં શ્રી શ્રીપાર્શ્વ અક્ષર જ
પંતે ॥ ઝૂતને પ્રેત ઝોટિંગ વિંતર સુરા, ઝપશમે વાર ઝકવીસ ગુણતે
॥ ૫૧ ॥ ઝું ૦ ॥ હુલ્લ રોગ શોગા ઝરા ઝંતરા, તાવ અંકંતરા હ
ઝપંતે ॥ ગર્જબંધન ઝયં સર્પ વિઠૂ વિષં, ચાલિકા ઝાલ મેવાઝલતે
॥ ૫૨ ॥ ઝું ૦ ॥ સાણી માણી રોહણી રંકણી, ફોટકા મોટકા
ઘોષ હુંતે ॥ ઢાઢ ઝંઢરતણી કોલ નોલાં તણી ॥ શ્વાન સિયાલ વિ-

(३५९)

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ धरणीं पद्मावती समर सोजावती, वाट
आघाट अटवी अटते ॥ लखमी लोंढो मिळे सुजस वेला वळे ॥
सयल आस्या फळे मन हसति ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ अष्ट महाजय हरे
कानपीना टले ॥ ऊतरे शूल शीतल जणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं
प्रीतविमल प्रजु, श्रीपास जिण नांम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति
श्रीगोनीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं
संति, जस्त धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डम्मस्त पुप्फेसु, जमरो
आवि अइरत्तं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एव मेए समस्सा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु,
दाणाज्जे सयोरया ॥ ३ ॥ वयं ष वि चिं लभामो ॥ नहि कोइ उव
हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार
समा बुद्धा, जे जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिं रयाहिंता, तेण वुच्चं
ति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, सर्व कळयाण
कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मंगलं जगवान्बी
रो, मंगलं गौतम प्रजु ॥ मंगलं स्थलजज्ञद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेश्वि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म
रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥
शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सब सिद्धाणं, मुखे मुखपटवरं ॥ २ ॥
॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव
झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दंडं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सब साहुणं,
मोचके पादयो सुजे ॥ एतो पंच नमोकारो, शिला वज्रमई तले
॥ ४ ॥ सब पावप्पणासणो, वप्रो उज्जमयोवहि ॥ मंगलान्त्रं व स-

बैलिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वादांतं पदं ज्ञेयं, पदमं,
द्वयं संगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा,
प्रज्ञावात् रक्षेयं, कुक्षेपञ्च नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता
पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य
नस्यान्नयं व्याधि, राधि अपि कदाचनः ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षा
स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारणं नवविषयं समये नित्यं नवकारं नित्यशाशन
आगम चवदे पूरक सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कदितां न लहुं
पार, सुरतरु जिम चितित वंढितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव
मानव सेव करे कर जोरु, नूयमंरुल विचरे तारे नवविषय कोरि
॥ सुरवंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिं
जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध अया जगवंत, पंचमि
गति पुद्गता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक
जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गङ्गा
धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण बत्तीसे शोम
॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गंजीर, तीजे पद नमिये आ
चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र जणावे सार,
तप विष संयोगे ज्ञाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुता ते क
हिये भवज्ञाय, चोखे पद नमिये अहनिश तेदना पाय ॥ ५ ॥ पं
चाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार
॥ त्रस थावर पीढर लोकमाहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमुं परमा
रथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण साइख जूत वेताल,
सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर ट
खे ततकाल, जंणे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ (छंद)

॥ शैवो पास्त संखेसरो मन सुदे, नमूं नाथ निश्चे करी एक
 बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गो, अहो जग्य लोको जुला-
 कां जमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गो, पछ्या पाश
 मे जूतमाने जजो गो ॥ सुरथैनु बंझी अजाने अजो गो, महापंथ
 मूकी कुपंथे ब्रजो गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे,
 अहे कोण राजाजने हस्ति साटे ॥ सुरकुम कृपामने आक वावे,
 महामूढ ते आकुला अंत पाषे ॥ ३ ॥ किहां काकरोते जे किहं मेरु,
 शृंग, किहां केडरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथ किहां अन्य
 देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती
 प्राणनाथ, सहू जीवने करे सह सनाथ ॥ महातत्व जाणी सदा
 जेह ध्यावे, तेहना दुःख दलित् दुरे गमावे ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने
 वृथा व्यु गमो गो, कुशीले करी देहने कां दमो गो, नहि मुक्ति
 वासं विना वितरांग ॥ जजो जगवंतं तजो दृष्टिदरांग ॥ ६ ॥ उदय
 रत्न ज्ञाखे सदा हेत आणी, दयाज्ञाव कीजे मोहि दास जाणी
 ॥ मोरे आज मोतीअमे मेह बूढा, प्रभु पास्त संखेसरो आप तूढा
 ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेश्वर केरो शीश, गौतम नाम जपो निश वीश
 ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यान, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥
 गौतम नामे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नामे
 नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे बैरी विरुद्धा वंका
 रुा, तसनाने नावे हुंकरा ॥ जूत प्रेत नवि मंमे प्राण, ते गौतम
 ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे
 वापे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिषगार, गौतम नामे जयशकार

॥ ४ ॥ शाल बाळ सदा घृत घोळ, मनवंडित कप्पर तंबोल ॥
 घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नांमे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ-
 तम उदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नांम जपो जगजाण ॥ मोटा
 मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विदाण ॥ ६ ॥ घर मयगल
 घोरानी जोरु, बाळ विलसे वंडित कोरि ॥ मदियल मनि मोटा
 राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक ठले, उत्तम
 सरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे बाधेवान
 ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे बहू ॥ कहे ला-
 वण्य समय कर जोरि, गौतम तूठा संपत कोरि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये
 ए ॥ प्रजात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजिये ए ॥ १ ॥
 बाळकुमारी जगदितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहिनकी ए ॥ घट २
 व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांदि जे वरी ए ॥ २ ॥ बाहुबल
 जंगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नांमे रुषज सुता ए ॥ अंग स्व-
 रूपी त्रिभुवनमांदि, जेइ अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला
 बाळपणेशी शीलवती शुद्ध आविका ए, उरुदना बाकला वीर प्रति-
 लाज्या, केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी
 नंदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम
 लेइ देव डल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांरुव नारी, हुपदा नांम
 वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि
 ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंडिका ए,
 शील सलूणी राम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौश-
 बिक ठांमे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर ध-
 रणी मृगावती नांमे सुरभुवने जज्ञ गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां पाप
 पुलाये नाम लेतां मन छल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी जेहनी का
 मण जनकसुता शीता शती ए, जग सडू जांणे धीज करता अनल
 शीतल अयो शीलधी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी कू
 वाथकी जल काढियो ए, कलंक छतारवा शतिय सुज्ज चंपा बार
 उघामियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद
 गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल अइये बलिहारी तसु नांमनी ए
 ॥ १२ ॥ इस्तिनागपुर पांरवरायनी कूता नामे कामनी ए, पांरव
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील
 वती नामें शीलव्रत धरणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जप
 ता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषयानगरी
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पनियां शीलज राख्यो,
 त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विधाता कामित दाता, शोलमी
 शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र ठे साखी, उदयरल्ल
 जाये मुदा ए ॥ प्रह कवीने जे नर जणसे, ते लहिये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ हृषीकूख
 रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ चार वेद चतुरवीर मन्मथ अ
 चतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, नृञ्जा सुरलोक गंग ॥
 करत धरत गात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत
 प्रभु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शंशय
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेखा ॥
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय
 अंग बार, स्वना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार, जये गुरु

(५६३)

गणेशधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरमे
लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुंदन युति सारी ॥ ज० ॥ ६ ॥
सिद्धियोग नंद चंद, कार्तिक शित संध वृंद ॥ फूलत घर कल्प
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इन्द्रजुति
जगधणी ॥ कुशल निधान सुख जणी, पाठक रुदिसारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे ठे जी मुनिवर जेस ॥ म्हांने हाथ
लकनिया कांधे कंबलियां, शिर शोजित तनु केश म्हां ॥ १ ॥
चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्ज्वल रहत हमेश ॥ म्हां ॥ २ ॥ ज
यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां ॥ ३ ॥ धि
वरकलप जिनमुडांधारी ॥ कांठत कर्म कलेश ॥ म्हां ॥ ४ ॥
दे उपदेश जबिक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां ॥ ५ ॥
करत रामरुदिसार बंदना, निरसत एसो जेस ॥ म्हां ॥ ६ ॥ इति पद ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राम नाटक ॥

॥ जबसे सरसी शुद्ध जई, मन अरिहंत रघ्याते हे ॥ अरि
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय
२ जय श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत
उधारण, सुरनर चरण लुजाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ़ स्वाते,
अपठर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवडंडति नाद बजाते हे, धर्म के
ते हे सुख देते हे ॥ जबिक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें
खाते हे ॥ रामवृक्ष कहै रुदिसार, तू आधार प्रजु मोहै तार ॥ ज०

॥ अथ श्री आर्विक करणीनी सज्ञाय ॥

॥ चोपाड ॥ आवक तुं ऊठे परजात, चार घड़ी ले पावली
हात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे जव सायर पार ॥ १ ॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अ
 मारो ठे व्यवसाय, एवं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामाधिक ले
 जे मन शुद्ध, धर्मनी हेन घरजे बुध ॥ पन्निक्कमणुं करे रयणी तणु,
 पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पञ्चक्राण सूधि पाले
 जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सज्ञाय, जिणहुंती निस्तारो
 आय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदें नीम, पाले दया जीवतां सीम
 ॥ वेहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोपालें
 गुरु वंदन जाय, सुणो दखाण सदा चित लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां,
 सगण मद्दोटा साहम्मीतणां ॥ डःखीया हीणा दीना देखि, क
 रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारे देजे दान, मद्दोटाशुं
 म करे अजिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखनी, धर्म न मूकीश ए
 के घनी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, जंग अधिकानो परिहार ॥
 म जरिशकेनी कूनी साख, कूना जनशुं कथन म जांख ॥ ९ ॥
 अनंतकाय कहिये बज्रीश, अजहय बाविशे विश्वावीश ॥ ते जकण
 नवि कीजें किमे, काचा कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो
 जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुं
 ली, मधु धावनी मत वेचो बली ॥ ११ ॥ बली म करावे रंगण
 पास, दूषण घणां कद्दां ठे तास ॥ पाणी गलजे वेवे वार, अणगल
 पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ठंकी
 करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूजे जोय, वावरजे जिम पाप
 न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावजे नीर, अणगल नीर
 म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे
 ॥ १४ ॥ कद्दां पझरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं
 म लेजे अनरथ दंरु, मिथ्या मेल म जरजे पिंरु ॥ १५ ॥ समकि

तं शुद्ध हैने राखजे, बोल विचारीने जाखजे ॥ पांच तिथि म करो
आरंभ, पाखो शीयल तजो मन वंज ॥ १६ ॥ तेलें तक घृत दूध
ने वरिं, ऊधार्मा मत मंखो सही ॥ उत्तम ठाम खरचो वित्त, पर
उपगार करो शुद्धवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे घोविहार;
चारे आहार तणो परिहार । दिवस तथां आलोए पाप, जिम जां
ओ सघला संताप ॥ १८ ॥ संव्याये आवश्यक साचवे, जिनवर च
रण शरण जंव जवे ॥ चरे शरण करी दृढ होय, सागारी अण
सण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवां, तीरथ शत्रुंजे जा
यवा ॥ समेतशिखर आबू रिनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥
॥ २० ॥ आवकनी करणी ठे एह, इष्टी पाये जवनो वेद ॥ आवे
कर्म पने पातळां, पाप तणा दुःखां ॥ २१ ॥ बारु खदिये
अमर विमान, अनुक्रमे प.मे शिवरधाम ॥ कहे जिनदर्श घणंसत
नेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति आवकनी करणीनी त० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिघोसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि प
जशिसुं सामी साल गायम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणो एकंद कर
वि निसुणहुं जो जविद्या, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह
गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिजरहस्वित्त खोशी तल मंण, मगदवे
स सेणियनरेस रिजवल बलखंण ॥ धणवर गुहर गाम नाम जि
हां गुणगणसज्जा, विण्य वसे वसुज्जू तळ तसु पुद्वी जज्जा ॥ २ ॥
ताणपुत्त सिरिइंद चूय जूवलपसिखो, चवदह थिज्जा थिवदहव ना
री रस खुदो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सा
त हाथ सुप्रमाणदेह रुवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण
जणवि पंकजलपानिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास जमानिय
॥ रुवहि मयण अनंग करवि मेळ्यो निरधानिय, धीरम मेरु गंजी

र सिंधु चंगम चयचानिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रुव जास जण
 जंपे किंचिय, एकाकी किल ज्रीन इठ गुण मेढ्या संचिय ॥ अह
 वा निश्चयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पठमा गवरि गंग
 रतिहां विधि वंचव ॥ ५ ॥ नय बुध नय रुर कविय कोय जसु
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र गात्र हीने परवरियो ॥ करय
 निरंतर यइ करम मिछ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण,
 वंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव जरह वासंमि
 खोणीतल मंरुण, मगह देस लेणिय नरेसर, वरगुवरगाम तिहां,
 विप्प वसे वमजूइ, तसु पुहवि जळा, सयलगुणगणरुवनिहा
 णा, ताणपुत्त विळा निळा, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ जास ॥ चर
 म जिनेसर केवखनाणी, चौवेहसंघ पइछ जाणी ॥ पाघा पुर सामी
 संपचो, चठविह देव निकायहिं जुतां ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण
 तिहां किजें, जिण वीठे मिछ्यामत गीजे ॥ त्रिचुवनगुरु सिंहास
 सन बेठा, ततखिण मांह विंगंत पइछ ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया म
 वपूरा, जाये नाग जिम दिनचोरा ॥ देव डंडुजि आगसैं वाजी,
 धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा,
 चठसठ ईंज मागे सेवा ॥ चामर बत्र सिरोवरि सोहे, रुवहि जि
 नवर जग तहु मोहे ॥ ११ ॥ छपसम रसजर वरवरसंता, जोज
 नवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर
 किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजखइलकंता, गयण
 विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंडजू मन चिते, सुर आवे अम
 यइ हुवते ॥ १३ ॥ तीरतरंगक जिम ते वहिता; समवसरण पुढता
 गइगहिता ॥ तो अज्जिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ
 मोले ॥ मो आगल कोइ जाण जणीजें, मेरुं अवर किम जंपम दी

जे ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर
 महिय, पचनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण
 बहु सुख कारण ॥ जिणवर जग ठाँव करे, तेजहि कर दिन
 कार सिंहासण सामी गयो, हुठ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ जास
 ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदजूय जूयदेव तो ॥ हुंकारो करसं
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन जूमि समोसरण, पे
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंन ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरवि
 चर्जितजंगुण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर,
 इंड इंडाणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चित्तव ए, सेवतां प्रभु पाय
 तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाले
 तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंड जाळ तो ॥ तो बोला
 वइ त्रिजग गुरु, इंडजूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे,
 फेरे वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद वेळ करे, जगतहिं नो
 म्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो
 ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिजूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आज्ञासं
 करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररण, आप्यावीर
 इग्यार तो ॥ तो उपदेसे जुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं ठपवां
 सें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय
 कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंडजूइ इंडजूइ चढियो बहुमान
 हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पढुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि स
 वे, चरमनाह फेरे फुरंततो ॥ बोधबीज सजायमनें, गोयम जवहि
 विरत्त ॥ दिक्क लेई सिस्का सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ जास
 ॥ आज हुठ सुविहाण, आज पचेजिमां पुण्यजरो ॥ दीठा गोमय
 सामि, जो नियनयणें अमिय जरो ॥ समवसरण मजार, जे जे

संता ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूजे मुनि पवरो ॥२३॥
 जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कर्ने अणहुंत, गो
 यम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरुं जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा
 पद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम
 सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणाइर
 संचरिय ॥ तापस परसएण, जो मुनि दीगो आवतो ए ॥२५॥ त
 पसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ
 काय, गज जिम बीसे गाजतो ए ॥ गिरुन ए अजिमान, तापस
 जो मन चितवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न, दंरु कलस ध्वज वरु सहिय ॥
 पेखवि परमाणंद, जिणइर जरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्र
 माण, चिहुं दिसि संठिय जिणइ बिंब ॥ पणमवि मन उद्धास, गो
 यम गणाइर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजुं
 जकवेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन जणी ॥
 चलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साध,
 चाले जिम जूषाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांर घृत आण, अमीय
 वृत्त अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचस
 थां शुज जाव, उज्ज्वल जरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, क
 चल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाइ, समवसरण
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे ज
 णवि पीयूष, गाजंती धन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इय अनुक्रम इय अनुक्रम नाण
 पन्नरेसें, उपन्न परिरिय, हरिडुरिय जिणनाइ वंदइ, जाणेवी जग
 गुरु त्रयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम जणे,

गोयम म करिस खेव, नेह जाय आपण सह्री, होस्या तुल्ला वेव
 ॥ ३१ ॥ जास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम ठल्ल
 सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ गव
 तो ए कणय पउमेण, पायकमल संधें सहिय ॥ आवियो ए नय
 साणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर
 मपए ॥ बलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥
 तो मुनि ए मनविखवाद, नादजेव जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इस
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टाखियो ए ॥ जाण तो ए तिहु
 अण नाह, लोक विवहार न पाखियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो
 सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चितव्यो ए बालक जेम, अहवा
 केन लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतदिं जोजें
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए जंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥
 साचो ए ए बीतराग, नेह न हेजें टाखियो ए ॥ तिणसमे ए गो
 यम चित्त, राग त्रैरागे वाखियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो ठल्लइ,
 रहितो रागे साहियो ए ॥ केवल ए नाण गुणपन्न, गोयम सहिज
 जमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे
 ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पञ्चास, गिहवासें सं
 वसिय तीसवरससंजम विजूलिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस
 तिहुअण नमसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाज, सामी
 गोयम गुणनिहो, होसे सिवपुर गाज ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम सह
 कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल मइके, जिमचंदन सो
 गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरिषां लइके, जिम कणयाचल ते जें ऊ
 लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हेसा, जिम सुरतरुवर कणयय तेंसा, जिम महुरराजीववनें ॥ जिम
 रयखायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गु
 रु केल घवे ॥ ३९ ॥ धूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महि
 सा जिम जगमाहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गि
 रिवर राजे, नर वड धर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि प
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम
 उत्तम मुख मधुरी जाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जू
 मीपती जुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधे
 गद्गद्गो ए ॥ ४१ ॥ पितामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे
 वंजिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन
 कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सांमी गोयम अणुसरी ए ॥
 ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पन्नणी जें, मायावीजो श्रवण सुणीजें ॥
 श्रीमिति सोज्ज संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पदू
 उवझायं शणीजें, इण मंजें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां
 काय करीजें, देस देसांतर काय जमी जें, कवण काज आयास क
 रो ॥ प्रह ठळी गोयम समरीजें, काज समगल ततखिण सीजे,
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें,
 गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं
 भंगल ए पन्नणीजें, परव महोत्तव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि क
 ढयाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीक्षियो ए ॥
 विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुढवी न लस्रइ पार, बरु जिम
 साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजें, चडविह संघ
 रक्षियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कढयाण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन
 ठमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

षो ए ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सरेसी,
नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो-
रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ चूरुयां जोजन
संपजे, कुरखा करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तथा जं-
कार ॥ जे गुरु गोतम समरिये, मनवंडित दातार ॥ २ ॥ पुं-
रुरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊगीने प्रशमता,
चवदेसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिलमंगुणकलियं, सुविशियं सबलहि स-
पसं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसांमि ॥ ४ ॥ सर्वा-
रिष्टप्रणाशाय, सर्वान्निष्ठार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्व-
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दहा ॥

॥ श्रीरिसदेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास ज-
णूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हु-
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहातम कियो, शिलादैत्य हजूर
॥ २ ॥ वीर जिअंद सप्रवसरथा, सेत्रुंज ऊगर जेम ॥ इंडादिक आ-
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो,
नदी ठे तीरथ कोथ ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तेरथ सगला जोथ
॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीग डुरित पुलाय ॥ जेटता जव-
जय टवे, सेवता सुख आय ॥ ५ ॥ जंबू नामे दीप ए, दक्षिण-
जरत मऊर ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ बाल पहिडी ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंरुरीक, सिद्धकेत्र कहूं तहतिक ॥ विम-
लाचंदने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

(२७३)

ने महागिरि पुन्यरोस, श्रीपदपर्वत इन्द्रकास ॥ महातीरथ प्रखे
सुखकांम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिर्लो
तिण कीजे नक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगंम ॥ ए० ॥ ३ ॥ प
रुवीपीठ सुज्जड केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम
कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बे
ठा अपने गंम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते खदे, महावीर जगवंत
इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पिहुलो
मूल उंचपण, उबीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जाणवो, बीजे
अरे विस्ताळ ॥ वीस जोयण उंचो कह्यो, मुज वंदना त्रिकाल ॥
२ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोळ जोयण
उंचो सही, ध्यान धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण,
चोखे अरे मजार, उंचो वस जोयण अचल, नित प्रणामे नर नार ॥
४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणै विस्तार ॥ दो जोयण उंचो
अरे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेके अरे, पिहुलो पर
बत एह ॥ उंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ टाळ बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा इण गंम रे ॥
अनंत वली सिजस्ये इण गमे, तिण करूं नित प्रणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं
जसाधू अनंता सीधा, सीजसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती
रथ नही जेळ्यो, तेगरजावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि
आठमने दिवसे, रुषजदेव सुखकार रे ॥ रायणरुख समोसरया
स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जरतपुत्र वैत्री पुनम
दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोमीसुं पुंमरीक सीधा, ति

रा पुनरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर,
 बे बे कोनी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण
 प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदसने दिन, न
 मीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सह सी
 था एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, दावन ने
 वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोनी
 मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांनव इण गिर सी
 धा, नव नारद रुबिराय रे ॥ संब प्रऊज गया इहां मुगते, आवू क
 र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विनो तेवित तीर्थकर, समवस
 रया गिरिभृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर बेहूं, रह्या थोमासे सुरंग
 रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सदस साधु परिवार संघाते, यावञ्चासुत साध
 रे ॥ पांचसैं साधुसुं सेखग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०
 ॥ १० ॥ असंख्याता मुनिसैत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाठ रे ॥ रा
 म अने जरतादिक सीधा, मुकितणी ए बाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥
 जाखि मयाली ने छवयाली, प्रमुख साधुनी कोनि रे ॥ साधु अन
 ता सैत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोदि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ दाल मीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सैत्रुंजना कहुं सोल छक्षर, ते सुणज्यो सहुको सुबिचार
 ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनमरुना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु
 षजदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी दित करी ॥ जरत गयो
 चंदणने काज, थे उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमहि मोटा
 अरिहंत देव, चोसठ ईड करे जसु सेव ॥ तेदही मोटो संघ कहाय,
 जेहने प्रणमें जिनवराय ॥ ३ ॥ तेदही मोटो संघवी कह्यो, जर
 त सुणीने मन गहंगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पांमिये, प्रजु कहे ते
 अंज जात्रा क्रिये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मुज, थे आपे

हूं अंगज तुझ ॥ इंदे आण्या अकृतवात, प्रभु आपे संघवीपद ता
 स ॥ ५ ॥ इंदे तिण वेला ततकाळ, जरत सुजडा बिहुने माल ॥
 पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष
 जदेवनी प्रतिमा वली, रतनतणी दीधी मन रखी ॥ जरतें गणधर
 घर तेनिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू
 की सहु देस, जरत तेमायो संघ असेसं ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिषणो, स
 ष चलायो सेत्रुंज जणी ॥ गणधर बाहुबल केवली, मुनिवर कौन
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रुई, जरते साथे ली
 धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कदां नाथे पार
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कदवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥
 संघ आयो सेत्रुंजा घात, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे
 निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वथाय ॥ तिण गंमे
 रदी महोच्चव कियो, जरते आपांद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ
 सेत्रुंजा ऊपर चढ्यो, फरसंता पातिक ऊरु पढ्यो ॥ केवलग्यानी
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरुंख वे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी
 आत्र निमित्त, ईशानेंद्र आली सुपवित्र ॥ नदी सेत्रुंजे सोदामणी,
 जरतें दीगी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंदे
 बलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरी, जरत करायो गुरि
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उचंग, रतनतणी प्रतिमा मन
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोदामणी ॥ १६ ॥
 मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रखी ॥ बांदी सुंदरि
 प्रमुख प्राशाद, जरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक
 प्रतिमा प्राशाद, जरतें करायो गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो
 उद्धार, सगलोही जाये संसार ॥ १८ ॥

दाल चोथी ॥ राग सिंधुदो आसावरी ॥

॥ ज़रततणे पाट आठमे, दंरुवीरज थयो रायो जी ॥ ज़र-
ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज
उद्धार सांजलो, सोख मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा
वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपात-
णो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलयो बिंब जंमारीयो, पडिमदि-
सि तिण बारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल
कियो अवतारो जी ॥ दंरुवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंरुवीरजथी जिवारो जी,
इशानेइ करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा
देवलोकनो धरणी, मादेंइ नाम उद्धारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा
वियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धरणी,
ब्रह्मेइ समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इइनो कियो, ए उछो उद्धारो
जी ॥ चक्रवर्त्ति समरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥
अग्निनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइइ करा
वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीनो
पोतरो, चंडशेखर नाम मद्धारो जी ॥ चंड्यशराय करावियो, ए
नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वा
मी बारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥
से० ॥ १२ ॥ पांरुव कहे अमे पापिया, किम बूटां मोरी मायो
जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र किया पाप जायो जी ॥ से०
॥ १३ ॥ पांचे पांरुव संघ करी, सेत्रुंज जेख्यो अपारो जी, काष्ट चै

स्य विं व लेपना, ए वारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी
 पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी,
 थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अघोतर सो वरसां गया,
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवान जावरु करावियो, ए तेरमो
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत वार तिमोतेरे, श्रीमाखी सुविचां
 रो जी, वाह्मवे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥
 से० ॥ संवत तेरे इकोतेरे, देतलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स
 त्यासिये, बैसाख बदि गुज्ज वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए
 वरतेवे उद्धारो जी ॥ नित रकीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दूरा ॥

॥ वलि-सेत्रुंज महातम कहूं, तांजलो जिम ठे तेम ॥ सूरि
 घनेतर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेब मानता, लाज हुवे तह-
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांख
 समो खहे, पढ्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो
 नीपावे कोय ॥ जीखौंदार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥
 तिर ऊपर नागर धरी, छात्र करावे नार ॥ अक्रवर्चनी स्त्री अई,
 शिवसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप
 वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती
 परब मोटो कह्यो, जिहां सीया दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक ह
 त्या, पापयी नाखे ठोरु ॥ ७ ॥ सहस लाख आवाक जशी, जो
 जन पूत्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलाज नां, अधिको तेहथी देख ८

॥ दारु पांचमी ॥

॥ सेतुंज गया पाप बूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप
 जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जि
 ण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुं
 ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी
 करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सैतुंज चढी, एक करे
 उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी
 कीधी जेषो जी ॥ सात दिवस पुरिमद्ध करे, तो बूटे गिरि एणो
 जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो
 जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥
 से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते जेटे सिद्धहेत्रो जी ॥ सेतुंज
 तलदटी साधुने, पमिलाजे सुधे चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण
 जिणे हरया, ते बूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, ग्रह
 छठी बहू वेळो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध
 थाये एमो जी ॥ अधिको इव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो
 जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय जैस घोमा मही, गज ग्रह चोरणहारो
 जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥
 पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नामो जी ॥ बूटे उम्मासी
 तप कियां, सामायक तिण गमो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परि
 ब्राजका, सधव अथव गुरुनारो जी ॥ व्रत जांजे तेहने कह्यो, उ
 म्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक रुषि,
 एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, बूटे तप कर
 तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ दारु छठी ॥

॥ संप्रति काखे सोलमो ए, ए वरते वे उद्धार ॥ सेतुंज यात्रा

करे ए, सफ़ल करे अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ ठेढ़ी पालती चाखिये
 ए, सेतुंज कैरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि
 ळ्या बहु धाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्ता
 नी बावि ॥ तिहां विसरांमो छीजिये ए, बनने चोंतरे आवि ॥ ३ ॥
 से० ॥ पालीताणे पाजमी ए, चढिये ऊठ परजात ॥ सेतुंजनदिय
 सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये दिंगलाजने हने
 ए, कलिकुंरु नमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग
 उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीदूक मनोहर ए, गज चढी मरुदेवी
 भाय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥
 ॥ ६ ॥ वेस पोरवाने परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ
 ची करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा
 चरचिये ए, जमतीमांहे जला बिंब ॥ पांचे पांरुव पूजिये ए, अद्भुत
 आदि प्रखंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं
 अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टाळूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥
 धरमंडुवारमांहे नीसरुं ए, कुगति करुं अतिदूर ॥ आठ आदिनाथ
 देहरे ए, करम करुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनाथक प्रणमुं मुदा
 ए, आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, जमतीमांहे जमंत
 ॥ ११ ॥ से० ॥ सेतुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल
 श अगेतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥
 प्रथम आदीसर आगले ए, पुंरुरीक गणधार ॥ रायण तल पग
 ला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तल प
 गला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी जूमि बि
 बावली ए, पुंरुरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंरु नि
 हाखिये ए, अति जखी उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध
 शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा

ज उतरूं ए, सिद्धवरुं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम इण पर करी ए, सी
 था वंगित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफळ
 कियो अवतार ॥ कुसल कैमसुं आवियो ए, संघ सद्धू परवार ॥ से०
 ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोदामणो ए, सांजलज्यो सद्धू कोय ॥ घर
 बेगं, जणो जावसुं ए, तसु यात्रा फळ होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव
 त सोल वयासिये ए, आवण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत
 णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गढ खरतर
 तणो ए, श्रीजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल
 चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीत जग जाणिये ए, सम
 यसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रुवमो ए, सुसतां आणंद था
 य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजराम संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ वादी बीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाख ॥ तीरथ शि
 खरसमेतनी, महिमा वनी विशाख ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले,
 प्रगळ्यो शिखरसमेत ॥ कोलाकोली मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥
 २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुत्राय ॥ जविजन जे
 टो जावसुं, जुं सुख संपद आय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी,
 कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए ती
 रथ होय ॥ ८ ॥

॥ दारु १ ॥ चोर्पनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब
 जग होय ॥ बीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी
 ने रहा ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जखी, तिहां जितशत्रु

(१०१)

भरेसर बली ॥ विजयाराणीने सुत जाण, अजितकुमर सहु गुण
नी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उज्ज्व धरे ॥
तीर्थकरनी पदवी लीही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु
क्रम इम जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिळ्यो सहु जोग ॥ अवस
६ दे संवत्तर दान, संजम लीनो आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपावो
प्राप्त्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुढवीमंनलमांदि,
अन्यजीव प्रतिबोधन साहि ॥५॥ सिंदसेनादिक गणधर जया, पं
जाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरया, आवक
आवकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख बलि तीस हजार, साधव
थां जाणो सुविचार ॥ आवक सहस्र अष्टाशुं सही, दोय लाख
संख्या गढगही ॥७॥ पांच लाख पैताळीस हजार, आवकणी सं
ख्या सुविचार ॥ बहुतर लाख पूरबनो आय, कंचनवरण तरीर
सुहाय ॥८॥ साढीच्यारसे धनुष तरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं
नीर ॥ गज लांगन प्रजुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण
॥९॥ अनुक्रम प्रजुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत
सहस्र मुनिवरने परिवार, भासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥
चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ झूचर खेच
र किन्नर सुरी, इंद्रादिकसहु उज्ज्व करी ॥११॥ थाणो तीरथ मोटो
मही, अठाइ महोज्जव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते
अवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ वृहा ॥

॥ श्रीसंजव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे
त सुहामणो, प्रगळ्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही सांजन श्रीसीमंवर स्वाम ॥ ६ देशी ॥

॥ सावळीनगरी जरी धन संपद बहु शोक, जैतारि नृप
३६

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनारानी भीठी बाणी गुणानी खी
 ण, जेहनै सुत श्रीसंजव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण
 सररीर मनीहर प्रजुनो जाण, खंवन अश्वतथो सोहे प्रजुनो परधान
 न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रजुनो आयु प्रमाण, धनुष ध्यारसे वध
 पणै प्रजु देह वखाण ॥ १ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रजुने गणधर
 होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख
 श्रमणी बली ऊपर सहस गचीस, जूमंभव विचरे प्रजु श्रीशंजव
 जगदीस ॥२॥ तीन लाख बलि सहस प्रमाणुं आवकलोक, षट
 लाख सहस गचीस आवकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु ड
 रितोदेवी सानिधकार, विचरंता प्रजु सकल संघमें जयशंकार ॥३॥
 सहस श्रमण परिवारे प्रजुजी सिखरसमेत, एक मास संखेखण
 कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रजुजी पद निरवांण,
 तीरंथ महिमा महियल मोटी बड्य सुजाण ॥४॥

॥ इरा ॥

॥ अजिनंदन जिन बंदिये, पायो पद निरवांण ॥ शिखरस-
 मेत सोहामणो, जेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ बाल ब्रिजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमणरो ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जली, संबर राजा सोहे
 मन रखी ॥ सिद्धार्थ राणी प्रजु तसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्रग
 टया चंद ए ॥ उल्लाखो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष सादी
 तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि खंवन ते नित वसे ॥
 पूर्व लाख पंचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि
 उलाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी
 दो लाख आदनी, संख्या चौ लाख सत्ताबीसनी ॥ आवकहयारी संख्या
 जाण ए, नायकयक्ष कालिका गण ए ॥ उल्लाखो ॥ षण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेखणा, इक सहस्र साधू परवरया प्रजु
 मुक्ति पहुँचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं
 गला, श्रीसुमति जिनवर जए नंदन सदा होत सुमंगला ॥३॥ चाल ॥
 सोवन वर्ष धनुष तसु तीनसे, लंठन क्रोंच सोहै सुजगे हसै ॥
 पूरब लाख पव्यासी आठ ए, इकसौ गणवर गुणगण जाउ ए ॥
 उल्लाखो ॥ जाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहै सहस्र बीस प्रमणां
 ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी आवक दोय लक्ष जाण ए ॥
 संख्या इक्यासी सहस्र ऊपर आवका इम आणिये, पण लाख
 सोहै सहस्र तुंबरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिवर ऊपर सात
 संख्या सहस्र साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रजु मुक्ति
 पुहता चंग ए ॥३॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनुष तात
 सुतीमा मात ए, पदम प्रजु तसु अंगज नाथ ए, लंठन कमलत
 यो सुज हाथ ए ॥ उल्लाखो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाणा पूरा अढाई
 सै त, कहौ, तीन लाख पूरब शित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥
 लख तीन तीस हजार साधू बीस सहस्र लख च्यार ए, साधवी
 दोय खल सहस्र बिहतर आवक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच
 लाख बलि पांच हजार ए, आवकण्यारी संख्या सार ए ॥ कुसम
 देव श्यामादेवी कहौ, लाखवरण तन प्रजु सोहै सही ॥ उल्लाखो
 ॥ सोहए शिवरसमेत ऊपर, आवसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं
 लेखन प्रजुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रजुजी मुक्ति पहुता,
 गिर शिवर महिमा जई, ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आन
 व गदजही ॥ ५ ॥

॥ दुरा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आरास ॥ जविजन ब्रह्म
 रसु सेवतां, पांमे वंजित काम ॥ १ ॥

॥ हॉल चौथी ॥ श्रीसीमंघर साहिब ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोजता, राजा तात प्रतिष्ठ लालरे ॥ दे
वी पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंगन सिष्ठ लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व
जिनंद जी, बीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोधसे देहनो, कं
चनवरण मुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कहा, सा
धू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपर, सहस सा
धवियां जौय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्षनी, आवक
संख्या आय लालरे ॥ च्यार लाख बली त्रेणवै, सहस आवकणी
जाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक शांतासुरी, पांचसे मुनि पर
वर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार ला
लरे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥
देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडाप्रभु वेस लालरे ॥ ६ ॥ श्रीचंडाप्रभु
चंदिये, चंडवरण तनु जेह लालरे ॥ लंगन चंडतणो जलो, धनुष
दोढसे देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधता, सेवे
मुरं नर यक लालरे ॥ दस लाख पूरव आठंखो, तेणवे गणधर
दक लालरे ॥ श्रीचं० ॥ ८ ॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि अ
मणी तीन लक लालरे ॥ असी सहस संका कही, आवक बलि
दोय लक लालरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर बली, आ
विका चंड लक धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपर, प्रभुजी
नो परिवार लालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव ऋकुटीसुरी, स
हस साधु परिवार लालरे ॥ संखेखन इक मासनी, पुहता
मुक्ति मजार लालरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जंय श्रीसुबिद्ध जिनेसरु, जंगपति दीनदयाल ॥ समे
हशिखर मुगते गया, जविजनके प्रतिपाल ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिजो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा
मातां सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रज्जुनो आयु
सुजाण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ ल
ख दो मुनि विंशति सदस, इक लख अमणी जाण ॥ ३ ॥ दोय
लक्ष आवक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकतर चौ लख सदस,
आवकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा
निधकार ॥ सदस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥
मास संलेखण कर प्रज्जु, मुक्ति गए इह गेर ॥ तीरथ महिमा म
हियलै, प्रगटी ग्यारुं उर ॥ ६ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, दिव सु
णज्यो अधिकार ॥ जइलपुर द्दरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥
७ ॥ लंबन सुज श्रीवडनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेत्र
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रज्जुनो आयु
प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजाण ॥ ९ ॥
एक लाख चालीस सदस, अमणी संख्या उर ॥ सदस तयासी
दोय लख, आवक संख्या जोर ॥ १० ॥ सदस अठावन लक्ष चौ,
आवकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानि
धकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सदस एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति
गए प्रज्जु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ ढाल छठी ॥ वनर संगति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कं
चनवरण श्रेयांस प्रज्जुजी, जपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो
रे नमो श्रीत्रिज्जुवन राजा, खरुग लंबन प्रज्जु पायजी ॥ धनुष अस्त्री

देहमांन चौरांसी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर
 बहुतर सदस चौरांसी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सद
 स वलि सदस गुण्यांसी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥
 अरुतालीस सदस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ ज
 क अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥
 न० ॥ सदस मुनीसरनै परिवारै, प्रज्जुजी सिखरसमेत जी ॥ मा
 स संलेखण कर प्रज्जु पोहता, मुक्तिमद्वय सुख देत जी ॥ न० ॥
 ५ ॥ दिव कंषिलपुर तात जूपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्या
 मादेवी अंगज कृपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सू
 कर लंढन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख व
 ड्डरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सदस
 मुनि अरु सय इक लख, श्रमणी श्रावक जाण जी ॥ आठ सदस
 दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ ४
 एमुख सुरवर विदिता देवी, प्रज्जुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार
 साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख देत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम
 अयोध्या नरवर, सिंहासेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणो सुत
 जायो, प्रज्जुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंढन श्येन सो
 वन सम काया, धनुष पचास प्रमाण जी ॥ तीस लाख वड्डरनो
 आयु, गणधर पचवीस आण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ बासठ सदस
 मुनीसर सोढे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ ठ हजार लाख दोय
 श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ चार लाख व
 लि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताळ यह श्रीसंघके
 सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनि
 वरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि
 कपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दृष्ट ॥

॥ अऐ धर्म जियेसरू, पुढता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत
गिरिंद पर, नमोश् जगज्जाण ॥१॥

॥ दाल सारथी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ १॥ देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धरणी जी, जानुराय सुजाण ॥ राणी
सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥२॥ जगतपति धर्म जिने
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र खंडन सुखकार
॥३॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कहा जी, चौसठ सदस प्रमा
ण ॥ अमणी बासठ सदसस्थूं जी, आवक दोय लक्ष मान ॥ ३ ॥
ज० ॥ न्यार सदस बलि ऊपरं जी, चौ लाख एक हजार ॥
आवकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥
किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सदस परिवार ॥ समेतसिखर मु
गते गया जी, बांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हथशापुर विश्वसेनना
जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन
अयस्कारा ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ भृगु लांडन सोवन
समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, ठ
चीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ बासठ सदस मूनि ठसै जी, इगसठ
अमणी हजार ॥ दोय लाख आवक कहा जी, ऊपर नेऊ हजार
॥ ८ ॥ ज० ॥ सदस त्रयाणूं आविका जी, तीन लाख परिवार ॥
गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ नवसै मु
नि परवार स्थूं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें
जी, पुढता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ अऐ हथशापुर जलो
जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंभुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन त
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंभु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ गग
खंडन पैतीसनो जी, धनुष देहनो मान ॥ सदस पंच्याणव वरस

(१८८)

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥११॥ ज० ॥पैंतीस गणधर दीपता
जी, साठ सहस मुनि जान ॥ ठसै साठ सहस वली जी, भ्रमणी
संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी, आव
क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, आविका सं
ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी ब
ला गंधर्व॥कुंजनाथ मुगते गया जी, माख संखेखण सर्व ॥ज०॥१५
॥ दुरा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्थुं अब अधिकार ॥ श्री
ता सुणज्यो प्रेम धर, आस्थै लाज अपार ॥ १ ॥

॥ दाल आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हारे लाला श्रीभिनकुशल सूरीसर ॥ देसी ॥

॥ हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या
चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंददेवीना नंद रे लाला

॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंठन नंद्यावर्तनो, तीस धनुषदेहीनो मान रे

लाला ॥ कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥

॥ २ ॥ श्रीअ० ॥ इक लाख आवक ऊधरे, बलि संख्या अधकी जाण रे

लाला ॥ सहस वहुत्तर ताननी लक्ष आविका संख्या आंश रे लाला ॥

श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परचार

रे लाला ॥ मुक्ति गए इय गिर प्रभु, कर मास संखेखण सा

र रे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रजावती, मात पिता श्री

कुंज राय रे लाला ॥ लंठन कलस प्रचीसनो, वपु धनुष सोवन

सम काय रे लाला ॥ श्रीमद्विनाथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सहस पचा

वन वर्षनी, अित गणधर अकावीस रे लाला ॥ जविक कमल प्रति

बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ ला

लीस सहस मूनेसरू, भ्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस

त्रयासी लक्षनी, आवकनी संख्या सार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म० ॥

(५८९)

आविका सिद्धर सहस्रनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लावा ॥ सहस्र
मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संखेखण धार रे लावा ॥ श्रीम० ॥ १० ॥
राजमही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लावा ॥ श्यामव
रण तनु शोभता, जे कपिल लंबन विख्यात रे, लावा ॥ श्रीमुनिसुव्रत
स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वबर तीस हजार
रे लावा ॥ अष्टादश गणधर थाया, तीस सहस्र मुनिसर सार रे
लावा ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ अमली सहस्र पचवीसनी, संख्या ब
हुतर हजार रे लावा ॥ एक लक्ष छपरि आविका, तीन लक्ष प
चास हजार रे लावा ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी जली,
नरदत्ता सानिधकार रे लावा ॥ सहस्र मुनि परवारसे, गए मुक्ति
मंदल सुख सार रे लावा ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा
मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लावा ॥ नीलकमल लंबन
कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साय रे लावा ॥ श्रीनमिनाथ, जिने
सरु ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सिद्धर परिमाण रे
लावा ॥ वीस इकतालीस सहस्र क्रम, साधु साधवी संख्या जाण
रे लावा ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ एक लाख सिद्धर सहस्रनी, तीन ल
क्ष सहस्र बलि होय रे लावा ॥ आवक संख्या आविका, अनक्रम
करि संख्या जोय रे लावा ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमरुले,
आया सिद्धर समेत मज्जार रे लावा ॥ नृकुटी यक्ष गंधारी सुरी,
एक सहस्र मुनि परवार रे लावा ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ इति ॥

परमेश्वर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि
रोमणि सहस्रफण, जगजीवन जंगतात ॥ १ ॥

॥ शक नवमी ॥ आदर जीव त्रयागुण आदर ॥ ५ देखी ॥

॥ जय१ परम पुरुष पुरुषोत्तम; पारस पारसनाथ जी ॥

सौवरियां साहिब जगनार्थक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥
जय शिखर समेत सिरेभिषि, श्रीसौवरिया पासे जी ॥ ध्यावे
सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंजित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी के
सं चपारसी नगरी, श्रीअश्वसेन मरिद जी, वामामाता जगविख्या
ता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय ० ॥ पन्नग छंढन नील
वरण ठवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयु इसो वरस प्रमाणे,
गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सदस मुनिवर
अरु अमणी, कही अमृतीस हजार जी ॥ भूमरेख विचरे जवि
जनक, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सदस लाख इ
क आवक, गुणबालीस हजार जी ॥ तीन लाख आवकणी स
ख्या, पार्श्वयंक सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनसर मुगते
पुहता, महिमा अइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगव्यो जग
में, मुक्तितपो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ बदरी पाले जे नर
जावे, जेठे सिखर गिरिद जी ॥ ते नर मनवंजित फल पावे, ए सु
रतठनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करे जक्ति, स
धेपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पामी, जेहनो
सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पामे, जा
आ करे गढ़गाट जी ॥ साथमी वखल मुनिजक्ति, पूजा छव था
ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूकर पर चरण प्रभुना, पूजा जविज
न जाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उ
जाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां
नवनिध आय जी ॥ तिण ए जविजन जाव धरीने, सुणज्यो म
न धिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गढ़पति महिमाधारी,
कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरेश्वर, अमृत
वर्धन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसार्ये रास रच्यो ए, अ

भुतसमुदने सीत जी ॥ बाखचंद निज मति अनुसारे, श्रेष्ठो विहृ
घ जगीत जी ॥ १४ ॥ अ० ॥ संवत उगणोत्तै सितमोत्तर, सुदि
वैशाख सुढाख जी ॥ रास अजीमगंजमांदे कीनो, जणतां मंगल
माख जी ॥ १५ ॥ अ० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ दाल १ ॥

रुषज प्रमुख जिन पाषयुग प्रथम, सिवमुख वायक मनह
उल्लास ॥ पुंररीक श्रीगौतम आदिक, गणेशर गुरु मन कमल वि
कास ॥ १ ॥ प्रह तम सूधा साधु नमु नित, ज्ञावे अमण सुगुरु
जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखाल, परमानंद सुमति विकसं
त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जगत महामुनि प्रथम चक्रीतर, बाहूबल उप
शम जंगार ॥ सूर्यस्तादिक आठ मुनितर, पांभ्यो विमलाचल ज
बपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषजवंत जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोनो
जाख असंत, श्रीतेजुजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूकी कं
ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ तगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्ति, साधु महा
बल संजम सींद ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषोत्तर न-
वम अवीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ठ वसुंदर, श्रीमद्धि
नाथ पूरबजव नित्र ॥ पटुंता परम रुषोत्तर शिवपुर, पाली श्रीजि
न आंश पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लवधि निधि, सौं
दर सूर्या सीत तव पंच ॥ कार्तिकसेठ मुसाधु कीर्तिधर, अम
ण सुकोतख त्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीवडवंत अहोजसु ता
गर, प्रमुख आठ अखगार प्रधान ॥ श्रीरदनेमि नेमजिन बंधव,
निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने
जवयाली, पुरतसेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संव अने अनिरुद्ध रुषीतर,
सत्यनेमि ददनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमार अनीकजस्तादिक
षट मुनि, गुणगुरु श्रीगजसुकमाख ॥ दंडण रुषि श्रीधाव

सुत, सहस्र साधु संजतसु कृपाळ ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ दाळ बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस्र श्रमणसुं मुक संजमधरो, पंचसयांसु तेलग मुनि
वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंरगरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥
उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिषीतर साधु सारण सोद ए, अं
तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोद ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध
नारद मुनि प्रमुख पैताळ ए, दमदंत महाशुषि कुंजवारे साधु नमुं
त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषजदत्त रतनत्रय मुणी, स,
मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांरुव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी
बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती वालक पुत्र मेइल शिवर
आणंद रक्खियो, अणगार कासव धर्म जारुयो सोधि सिवपुर स
त्कियो ॥ कालासवेसी पुत्र आतम अरण साधक उपसमई, श्रीपुं
ररीक महामुनीतर प्रणमिये शुज संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंड
वलकलची रीकेवली, श्री अयमचो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू
डुमई नमि निगया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लाखो ॥ श्री
जुवा ए वृपजादि देखी थया चरु वहरागिया, संजमसिरि जज मो
हनिडा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया
एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रद समे ॥ १३
॥ चाल ॥ खंतै कुल्लुमारसु ध्याइये, लोहचा मुनि चरणे लय ला
इये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुख जयंती साहुणी
॥ उल्लाखो ॥ साहुणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया
॥ श्रीश्रमणजइ सुजइ सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठ
तीस सुव्रत, साधुसुवत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत मोजइ गरुड गरि
मा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रुषीतर बंदिये, दसारण
जइ नमुं डाल बंदिये ॥ अर्जुनखली सुख संजमधरो, मुददप्रहा

श्री सिवरमणी बरो ॥ उल्लाखो ॥ सिवरमणी बरो श्री कुरगमू कमावत
 प्रसिद्ध, कोमिल्ल विन्न अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो
 तम प्रबोधत सिद्ध पुदता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥
 गरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रणवीचंड प्रणम्यां सुख पाइये ॥ खं
 दकुमार सदा अजिनंदिये, नमिह ज़रह मित्र मन आणंदिये ॥
 उल्लाखो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुष
 लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र दीये धरी ॥ श्रीई नामं निर्मथ निर्मम
 धर्मरुचि धर्मांगिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी
 संसे ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि ३ जसतणो, श्रमण सु
 वंसेण सील सुदामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आङ्कुमार ए, चित्त चतुर
 नर चित्त चमकार ए ॥ उल्लाखो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर
 देवतांनिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजे सुजिन पालत हि
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीत धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥
 श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरखेव ए ॥ १७ ॥
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषे जुठ, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुठ ॥ श्री
 इन्दुकार नृपति कमलावती, रांणी जूगुसुं प्रेदित सुजमती ॥ उल्ला-
 खो ॥ सुजमती जेदनी जसान्नाथी पुत्र बोध वस्त्राणिये, ए बहू
 खेइ चारु चारित्र मुगति पदुता जाणिये ॥ रुत्रिय मुनिसर साधु
 संजम धर्मरुचि मदावती, निर्ग्रन्थनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुतं
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्भापुत्र नमुं केवल कळपो, विषसुं शीतल
 सिवकमला मिळ्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, बीरप्रज्ञ
 स्यो तप गुण बीर ए ॥ १९ ॥ श्रीबीर दीक्षित श्रीसुबाहु जड नं
 दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेदना सुख विपाक उदार ए ॥
 श्रीचंद्ररुद्र सुसीत खंदग हमानिधि कदिये इया कलै, कुरुवत्त सुत
 तीतग सरोरुद रिष नम्यां आस्था फजे ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुंख रिष च्यारे आवरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अनेकुमार
मुनि अजयंकरो, दह्य विदह्यसु आतमः हितकरो ॥ उल्लाखो ॥
दितिकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधिये, सुनहन्न
ने सर्वानुभूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने
वैदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसाखजइ सुधंन मुनिवर समरता
भंगलकरो ॥ १० ॥

॥ हाळ ३ ॥ राग पत्थासिरी ॥

वन्वेरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रजव सिधंजव
परगदो, सुजंत जसोन्नद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी,
नामे घर नवनिध वावै रिद समुद्र ॥ महा ॥ ११ ॥ जग संजु
तिविजय जयो, जद्रबाहु कतजद्र, जग जोयीतर जागतो, मुनिवर
ओथूलजद्र ॥ १२ ॥ म० ॥ जद्रबाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्ये
मुनीराय ॥ सीत परीषद जिणसह्या, सारया २ आतम काज ॥ म० ॥
॥ १४ ॥ अज्जमहागिरि जांथिये, अज्जसुद्धि विसाज ॥ संप्रति वृष
पन्निबोद्धियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ १५ ॥ आरिजसांमि
यसंसियो, अज्जसुजद्र मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निखो, सींहगि
श्री समुनीस ॥ म० ॥ १६ ॥ धनगिरि थिवर महामनी, श्रीवरं
स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, जद्रगुपति निरमांय
॥ म० ॥ १७ ॥ वयरसेन विद्यावरु, श्रीरक्त गुरु वरु ॥ पुस
मित्र गुण गदगदो, प्रजु डुरबलका पद ॥ म० ॥ १८ ॥ विज सा
धु सुविंघ जंरयो, श्रीवंमिल सुविदह ॥ सूत्रअरं रतने जरयो,
कमोअमण देवह ॥ म० ॥ १९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री
हुपसें सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सदी, जिन आज्ञा प्रतिपाल
॥ म० ॥ २० ॥ इम पत्तर कर्मजुमी जिके, दुआ होख्ये अणंत
॥ वर्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रय गुणवंत ॥ म० ॥ २१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि रात्रिने, साहुणी चंदनबाळ ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक
रण सुद्ध त्रिकाळ ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल ळचीस ए, श्री
विमलनाथ सुरसाळ ॥ दिक्का कड्याळक दिने, गूंधी श्रीमुनिमाळ
॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रळियामणो, श्रीशीतळ जिनचंद ॥
सूरि विजय राजै सदा, संध सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री
अतिजड सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंध वलाणिये,
सदांर जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमाळका, गुणग
ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख जंरपूर ॥ म० ॥
३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम
हासिद्ध घेर फळे, सदांर कड्याळ ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाळ
का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नं जिन स्तवन लि० ॥

॥ दो० ॥ धरतमान चौवीसी वंदू, मन सूषे नित मेव री माई ॥
रुषज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रजु सेव री माई ॥
॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्थ चंड प्रजु प्रणम, सुविध शीतळ श्रेयांत री
माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंघु परसंस् री
माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी
पास जिनंद री माई ॥ चौवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणम परमा
जंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ डाल २ ॥ ग्रह सर्म सूषा साधु नष्ट नित ॥ ए देखी ॥

नित २ अतीत चौवीसी नमिये, जेहना नाम प्रगट ए जाण ॥
केवलग्यानी ते निरबाणी, सागर महाजस विमल वलाण ॥ ४ ॥
॥ नि० ॥ सर्वाजुजुति श्रीधरदत्त जिनवर, वामोदर सुतजाश्रीस्वा
मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नाम
॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कतारण, श्रीजिनेसर सुद्धमे

ति सुजगीत, सिवकर स्थंदन संप्रति नामे, वंदीजे जिनवर चौबी
स ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ शाल ३ ॥ सकल संसारनी ॥

जे जविस्संतिअणागए काळ ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं
काळ ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज प्रण
मीस सदीव ए ॥ १ ॥ बीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुसी
जिन बीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए,
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो
साव ए, चौथो स्वयंप्रभू नाम आराधि ए ॥ द्वादयुष जीव सिद्धा
तमें जाणिये, पंचम सर्वानुभूति प्रमांणिये ॥ ३ ॥ कीर्त इण नाम
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते ठगो स्वांमि सुखहीजिये ॥ सुख
आवक हुस्ये उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाळ जिन
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिणं, सतक आवक
शतकीर्ति दसमो जणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्य
कीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव त्रिकषाय
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निर
मम देव सुलता कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥
समाध जिन सत्तरमो आवका रेवती, अठारमो शंखजीव संवर
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव
ते विजय जिन बीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकबीसमो जीव नारदतणो,
देव बावीसमो अंबळ आवक जणूं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत
बीरज नमो, स्वातबुधजीव ते जइ चौबीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम
चौबीस जिन जाणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आणिया ॥ केइ पर-
सिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कहाया, साख अनुसारथी साच कर सखदया ॥ ए॥

(३७३)

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहैजो रे दीसे नाहाछो ए देशी ॥

विहरमांन जिन बीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर
शुगमंधिर वाहुंजो, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु
रुग्गानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रवर चंडानन
चंडबाहुजी, जुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा
प्रभु नमुं बली, देवयसा यसोरिद्ध अढीढीपमे विचरे आज ए, नांम
लिगं नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन बर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता, इणहिज अजिधान ॥ रुक्मनानन चं-
डानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार० ॥ ए ॥ अठ कोनि ठप्पन्न
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे उयासी देहरा, त्रिहुं लोक मजार
॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोनिया, बिंन भ्रेपन लाख ॥
संदह अठावीस च्यारसै, अठयासी जाल ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विजु
जिणवर नांम ए, समरथा सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, तम
कित सुद्ध आय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

डम त्रिण चौवीसी बीस विहरमाणं चऊ जिणवर सासता,
संयुगया सतरसै बयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रत्नचिंता
मणितणी पर प्रबल वंठित पूर ए, प्रहंसमै त्रिकरणं शुद्ध प्रणमै
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री विभूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पौसह सिद्धाय लि० ॥

जग चूनामणिजुठ, उसजो बीरो तिलोय सिरि तिलठ ॥
एगो लोगाइछो, एगो चक्कू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवहरमुसन्न जिणो,
उम्मासे वद्धमाण जिणचंडो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए ऊएउव
माणोण ॥ २ ॥ जइता तिलोयराहो, विसइई वहुचाई असरितन्न

यास्त ॥ इय जीर्यतकराई, एस्त खमा सबसादूणं ॥ ३ ॥ न चइ
 ऊह चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग सइस्तेहिं
 वि, मेरु जहा वाथगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, पढम
 गणइरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमअं; विन्धिय दियउ
 सुणइ सब ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इअंति ॥
 इय गुरुजण मुह अणियं, कयंजविउमेहिं सोयबं ॥ ६ ॥ जइ
 सुर गणाण इंदो, गइगणतारागणाण जइ चंदो ॥ जइय पयाण
 नरिंदो, गणस्त वि गुरु तदाखंदो ॥ ७ ॥ बालुचि महीपालो, न
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काठं, विहरंति मुणी
 तहा सोवि ॥ ८ ॥ पनिरूवो तेइस्ति, जुगप्पहाणागमो महुरवको
 ॥ गंजीरो थिइमंतो, उवएसंपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्तावी
 सोमो, संगइसीलो अजिगइमई य ॥ अविकउणो अचधलो, पसं
 तदियउ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
 पइं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयजा सइस्त वंदेहिं ॥ तइवि न करे इ
 माणं, परिय उइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्त दमग, स्त
 अजिमुहा अऊचंदणा अऊ ॥ नेउइ आसणगइणं, सो विणउ सब
 अऊाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अऊाए अऊदिक्खिउ साहू ॥
 अजिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो
 पुरिसप्पजवो, पुरिसव रवेसिउ पुरिसजिओ ॥ लोएवि पदू पुरिसो,
 किंपुण लोउत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ सवाइणस्ससरसो, तइया वाणा-
 रसीइ नयरीए ॥ कत्ता सइस्तमदियं, आसी किरूववंतीणं ॥ १६ ॥
 तइ वि थ सारायसिरी, उल्लइंती न ताइया ताहिं ॥ उयरइएण
 इके, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिजाणसु बहुयाण वि, म
 ऊाउ इइ समत्त धरसरो ॥ रायपुरिसेहिं निऊइ, जणेवि पुरिसो

(३९९)

जहिं नहिं ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सत्किं
सुक्यं ॥ इह जरहचक्रवट्ठी, पसन्नचंदो य दिवता ॥ १९ ॥ वेसो वि
अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्त ॥ किं परियत्तियवेसं, विस्
न मारेइ खळंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ वेत्तो, संकइ वेत्तेण दिक्खित्तं
मिअइ ॥ उम्मगेण पनंतं, रक्कइ राया जणवत्तं यं ॥ २१ ॥ अप्पा
जाणइ अप्पा, जहदित्तं अप्पसत्किं धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह,
जह अप्पसुदावदं होइ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ
जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुदासुदं बंधए कम्मं ॥
॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविअन्ति ॥ संव
जरमणीत्तं, बाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियम्मइ विग
प्पिय चिं, तिण्ण सत्तं बुद्धिचरिण ॥ कत्तो पारत्तदियं, कीरइ गुरु
अणुवएत्तेणं ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणीत्तं गविं निरवणा
मो ॥ साहुज्जास्त गरहित्तं, जणेवि वयणिकुयं जहइ ॥ २६ ॥
धोवेण वि तप्पुरिता, सणकुमारु क्केइ बुद्धंति ॥ देहे खणपरिहाणी,
जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता खवत्तम सुर, विमाण
वासीवि परिवर्तंति सुरा ॥ चित्तिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥
॥ २८ ॥ कहंतं जन्नइ सुखं, सुचिरेण वि जस्त उक्कमस्सिदियए ॥
जं च मरणा वत्ताणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह
स्सेहिं, बोदिज्जंतो न बुद्धइ कोई ॥ जह बंजदत्तराया, उदाइनिव
मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिचच्चाइ रायलढीए ॥
जीवासक्कम्म कलिमल, जरिय जगतो पनंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तं
णवि जीवाणं, सडुक्करा इति पावचरियाइ ॥ जयवंजा सा सासा
पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पन्निवज्जिज्जण दोसे, नियए सम्मं
च पायवनियाए ॥ तो किर भिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥
इति पोसइ सिखा० ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिद्दी निस्सिद्दी नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥
महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिज्जंतं ३, कहिये, अणुजाणह जि
ठिक्का, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणारयणोहिं मंनिअसरोरा ॥ बहु
परिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं,
बाहुवदाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुरु पाय पसारण, अंतरं तु पमज्झए
जूमि ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्ठंतेय काय परिखेदा ॥ दवाई
उवज्जंगं, कसासनिरुंजणाखोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमात्तं, इमस्स
वेदस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि वेहं, सबं तिविहेण बोरिरियं
॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा जस्काण परपरीवात्तं ॥ अरइ
रई पेसुत्तं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरित्तु इमाइसु, स्कम
ग्ग संसग्ग विग्घ जूआई ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं
॥ ६ ॥ एगो हं नच्चिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण
मणासो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासत्तं अप्पा, नाण
दंसणसंजुत्तं ॥ सेसा मे बाहिरा ज्ञावा, सव्वे संजोगलस्सणा ॥
॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥ तम्हा संजोग
संबंधं, सबं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं
सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलि
पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोघुत्तमा, अरिहंता लोघुत्तमा, सिद्धा
लोघुत्तमा, साहु लोघुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोघुत्तमो ॥ च
त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव
ज्जामि, साहुसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥
अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ता
णं, वोसिरामित्ति पावणं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ अर
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,
 वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ
 देवया ॥ उवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ सा
 हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,
 वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अणणि मारुय, इक्किक्के सत्त
 जोणि लस्कांठ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चन्दस जोणि लस्कांठ ॥
 ॥ १ ॥ विगळिंदिणसु दो दो, चनरो चनरो य नारय सुरेसु ॥ ति
 रिणसु हुंति चनरो, चन्दस लस्का यमणुणसु ॥ १ ॥ खामेमि सव्व
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वज्जुणसु, वेरं मझं न
 केषवि ॥ ३ ॥ एवमइं आलोइअ, निंदिअ गरुडिअ दुर्गठिअं सम्मं ॥
 तिविहेण पन्निक्कंतो, वंदामि जिणे चण्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमां
 विअ मइ खमिअ, सव्वइ जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणइ,
 मझइ वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चण्डइ राज
 जमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेइ खमंतु ॥ ६ ॥ इति
 संधारा गाथा स० ॥

॥ अथ निदाचारक सञ्चाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोद्धयां महा
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाचे घणो रे, निंदा करतां न गणो माय
 वाप रे ॥ नि० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगमां रे, कदो केम छ
 जजा होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोमे घणो अवगुणें सहु जरयां रे,
 केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेमहुटकबारो आय रे, ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण प्रहजो
सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जालअपार रे ॥ सु
जाणें सीता ॥ जाणो केसू फूलियां रे जाल, राता खिरअझार रे
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे जाल ॥ शीज तणे परि
भाषा रे ॥ सु० ॥ लहमण राम खुशी यया रे जाल, निरखे राणो
शण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे जाल, पावक
पासैं आय रे ॥ सु० ॥ कज्जी जाणो सुराङ्गना रे जाल, अनुपम रूप
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे जाल, कज्जा
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म हुशी इण आगमें रे जाल, राम
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बाँधो हुवे रे जाल,
सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो रे
जाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आग
में रे जाल, तुरत अगन ययो नोर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलहुं
जरयो रे जाल, जीले धरम मुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम
वरणां करे रे जाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें क
तरी रे जाल, साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रविघायत स
हुको ययां रे जाल, सखे यया ठगरंग रे ॥ सु० ॥ लहमण राम
खुशी यया रे जाल, सीता शीखा सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग
माहि जस जेहनो रे जाल, अविचल शीख कहाय रे ॥ सु० ॥ क
हे जिन हर्ष सती तणा रे जाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥
॥ ९ ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिन्धाय ॥

॥ श्रेष्ठिक रयवली चढ्यो, पेखियो मुनी ए कंत ॥ वर रु
पकाते मोहियो, राख पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेष्ठिकराय हुं
रे अनाथी निर्धय ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए
आकशी ॥ इण कोसंबी नगर वले, मुऊ पिता परि गल धन्न ॥
परवार परे परवारयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ
क दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु
जूरी रंझा, तोही पल रे समाधि न घाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी
गुण मन ठरनी, ठरनी अबला नार ॥ कोरमी पीना में सही,
नहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवेद्य बुझाइया,
कायला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह
नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेखं सं
जमझार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, अत लीधो रे हरष अपार ॥
॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमादे को केहनो नहिं, ते जशी हुं रे अनाथा ॥
बीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥
॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे
ष्ठिक समकित तिहां लहे, बांदी पहुंचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥
॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि समय
सुंदर तेहना, पाय वंदि रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिन्धाय ॥

॥ कर पक्रिमणो जावसुं, दोय धनी शुज जाण ॥ लाल
रे ॥ परजव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥
कर पक्रिमणु जावसुं ॥ ए आकशी ॥ श्रीमुख बीर समुच्चरे, श्रे
ष्ठिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंमी सोना तणी, दीये दिन
प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते बली, एम

दीये इय्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामाधिकनी तुला, नावे तेह लेंगार
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चण्विसडो, जलुं वंदन दोय
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रतं संजारो रे आपणां, ते जव कर्म नि
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर कान्तसग गुनंध्यानषी, पञ्च
 स्काण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सद्या ये ते बलो, टालो टालो
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादषी, लहीये
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिधाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठाने समरिजे हो ॥ जवियण मंगलिक सरणां चार
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोखतनो दातार ॥ हियमे रा
 खिजे हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ ज० ॥
 केवलि ज्ञाख्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां अकां हो ॥ ज० ॥ दूटे
 आवुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारुं सुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए चारु
 मङ्गलिक ॥ ए चारुं उचम कहां हो ॥ ज० ॥ ए चारुं तदतीक
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वारं
 वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघन निवारणहार ॥
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ साकण साकण जूतनां हो ॥ ज० ॥ सिंह चित्ताने
 सूर ॥ वैरी दुसन चोरटा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा
 खो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेमों नहिं आवे रोग ॥ वरते
 आनंद सुख सही हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥
 निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी
 नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

भनेचित्त मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोर कळ्याण ॥ शुद्ध
भने करी समरता हो ॥ ज० ॥ निर्भे पद निर्वाण ॥ दि० ॥ ए ॥
ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर
णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मजार ॥ दि० ॥
॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥
जोधमेल्ल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ दि० ॥
॥ ११ ॥ इति श्रीमंगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिंहाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ दंडण रुपीनी सहाय ॥

॥ दंडण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उरुछो अणगार रे हूं
री खाल, अजिग्रह लीधो एहवो हूं ॥ लेख्युं शुद्ध आहार रे ॥ हूं०
॥ १ ॥ दंड ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हूं ॥ न मिलै शुद्ध आहार
रे ॥ हूं० ॥ मूल नवै अणसूजतो हूं ॥ पंजर कीधो गात रे हूं०
॥ २ ॥ दंड ॥ हरि पूठे श्रीनेमने हूं, मुनिवर सहस्र अढार रे ॥ हूं०
वां ॥ उरुछो कृपा एहमें हूं ॥ मुजने कही विचार रे ॥ हूं०
॥ ३ ॥ दंड ॥ दंडण अधिको दाखियो हूं ॥ श्रीमुख नेमजिणंद
रे हूं० ॥ कृष्ण ऊमाहो वादवा हूं ॥ धन जादवं कुलचंद रे हूं
वां ॥ ४ ॥ दंड ॥ गलियारे मुनिवर मिळ्या हूं, बांधा कृष्ण
जरेस रे हूं० ॥ किराही मिळ्यास्वी देखने हूं, आयो जाव वि
सेसरे हूं ॥ ५ ॥ दंड ॥ मुज घर आवो साधजी हूं, ध्यो मोदक ठे
शुद्धे हूं ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरचा हूं, आयां प्रभुजीने प्राप्त रे
हूं ॥ ६ ॥ दंड ॥ मुज खंबधै मोदक मिळ्या हूं, कहीने तुम्हे
किरपाल रे हूं ॥ खंबध नही वळ ताहरी हूं, श्रीपति खंबधि
निधान रे हूं ॥ ७ ॥ दंड ॥ एलेवा जुगतो नही हूं, च्याळ्या परत-

न काज रे हुं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० चूरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ टं०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांभ्यो केवल नाश रे हुं० ॥ टंदण रुषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ए॥ टं० ॥ इति टंदण रुषि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धनारुषी सिंहाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्या, अमिय समाणी मोरा नंदन,
मनमै तो मांणी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्या,
धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनमो रे किम परधावसुं
॥ २ ॥ वस दिस्ती दीसे रे धन्या, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनु
मति देतां रे जीज वदे नहीं ॥ ३ ॥ बचासै नारी हो धन्या,
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥
बालक तो कामणी रे धन्या, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले
रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्या, ए सुख सज्या मो० ॥
कोम बचीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांखो रे धन्या, वय
पिण जांयो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत
अति बोहिलो रे धन्या, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधु क
हावणो ॥ ८ ॥ घर १ जिक्का हो धन्या, गुरुतणी शिक्का मो० ॥ कहाणी
रे रहणी नहीं ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्या, अ
गम जणिये मो० ॥ जिनवर जांयो हो डुकर जोग ठे ॥ १० ॥
वनवासै रहणा हो धन्या, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल
केसां रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें ज्ञाण्यो हे अम्मा,
जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥
सुख अजिजाणी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नहीं परमार
धि मोरी अम्मा, बीर बखाण्यो परखदा सहु सुण्यो ॥ १४ ॥

मैं इस जाण्यो हें अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जौ-
वन आयु धिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे
मोरी अम्मा, जो खिश्त जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो
रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ ठठर पारणो हे अम्मा, विगय निवा-
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरमर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-
जम पावे हे अम्मा, दुषख टावे मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ
रुना जणै ॥ १९ ॥ संजम पाव्यो हे अम्मा, नव पखवाने मोरी
अम्मा, मास संघारे सरबारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना
शुवि सिन्हाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिन्हाय लिख्यते ॥

देव दाखव तीर्थकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम
तपो वस सुख डुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिव
स रह्या झूवा ॥ वीरने बारे वरस डुख बीधा, कपना ब्राह्मणी कूलै
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सदस सुत मारचा एकण दिन, जोष
जुवान नर जैसा ॥ सगर दुष्ट महा पूत्रनो डखियो, कर्मतला फल
एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सदस देसारी साहिब, चक्री
सनतकुमार ॥ सोखे रोग तरीरमे कपना, कर्म कीयो तनु गार रे
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म द'ख किया हरचंदने, वेची सुतारा रांपी ॥
बारे वरस लग मध्य आण्यो, नीचतणो घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥
॥ ५ ॥ दिगवाहन राजा बी बेटा, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्युं
चहुटामे वेची, करम एसा द'ख ला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे
आठमो चक्री, कर्म मार नाख्यो ॥ सोखे द'ख जह उजा देखे,
पिण किराही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो बकी, कर्म कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी,
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न को न जा
 दवरो लादिव, कृष्ण महाबल जाणी ॥ अटवी मांदि मूंत एकलमो,
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांशुव पांच महा
 जूजारा, हारी डोपदा नारी ॥ बारे बरस लग बन रुवनिया, ज
 मिया जेम जिल्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस जुजा दस
 मस्तक हुंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलमै जग सह नर जीत्या,
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांण्या,
 बीतक बहु तस बीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी
 श्रेष्ठिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥
 करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिव तिरोमणी डौ
 पदि कडिये, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी,
 गुरव कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे
 स्वामी, साधो राजा चंद ॥ मांदि कीधो पंखां कूकनो, कर्म नारुवो
 ते फंड रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क
 रता पुख कदावै ॥ अहनिम महिल मसांणमे वासो, जिहा जो
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,
 रात दिवस रहे अटतो, सोल कलाससीधर जग चावो, दिन २ जाये
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंन्या नर कर्म,
 प्राज्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरण कर जोमीने विनवै, नमो २
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंहाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिंहाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेदनो सुविचार वि
 वेकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपे डुक्क अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पर्यायकां, परन्व पांच
 प्रतिद्व विवेकी ॥ नखराजा पिण इण विसने पण्यो, खोइ सङ्ग रा
 जरिइ वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस नक्षण अवगुण घणा, करै
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवतो, नरक गइ
 निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन
 तजी, चित धरी बलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिषि दहव्यो जा
 ववे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चौथे विसने वे
 स्याधर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कथवन्नादिकनो गयो
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहने
 कुविसन साचवै, प्राणी इणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ ठे
 चोरीने विसने करी, जीव लहे डक जोर वि० ॥ मुंजदेव रा
 जायें मारियो, चावो हुंरक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥
 इम जांणीने ज्ञाय तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण
 जव परजव आणंद अतिवणा, कहे भ्रमसी सुखकार ॥ वि० ॥
 ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिंहाय लिख्यते ॥

वीर बांदी बलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथा॥ राति वन
 मांदि कासलग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा
 णी राणी चेलणा जी, सतिथ सिरोमणि जाण ॥ भेम्भराजानी
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत
 ङंगर सबलो पने जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे
 वस्यो जी ॥ सौमि बाहर रह्यो दाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ जबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो दुस्यै तेद ॥ कुसती मनमाहि ए कुण
 वस्यो जा ॥ श्रेणिक पळ्यो रे संदेद ॥ बी० ॥ ४ ॥ अंतेजर परो
 जालज्यो जी, श्रेणिक दिव्यो रे आदेस ॥ जगवंत सांतो जाजियो
 जी, चमकियो चित्त तरेस ॥ बी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां
 जी, पैसतां नगर मजार ॥ धुआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे
 अजयकुमार ॥ बी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत
 लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत
 णो पार ॥ बी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिंहाय ॥

॥ जूखो मनजमरा कांड जमै, जमियो दिवस ते रात ॥
 भायारो लोत्री प्रांशियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुं
 ज काचो काया कारमी, जेदना करो रे जतन ॥ विषसतां वार लागे
 नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केदना बोक केदना
 वावरु, केदना माय नै बाप ॥ ठ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य
 नै पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्या तो रूंगर जेवनी, मरवो पगला रे
 हेठ ॥ धन संची संच कांड करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू०
 ॥ लखपति बत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी
 गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजल
 डुख जरयो, तिरबो ठे रे जेद ॥ बीचमें बीह सबखो अडै, करमें
 वाय ने मेद ॥ ६ ॥ जू० ॥ छलट नही मारग चालवो, जायवो
 पहिले रे पार ॥ आगल नहि दट वांशियो ॥ संबल लेज्यो रे लार
 ॥ ७ ॥ जू० ॥ मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥
 वस्त्र विना जाय पोदवो, लखपति लाकरु माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ मह
 मंद कहे वस्त वारीये, जे कुळ आवे रे साथ ॥ अपणो लाज उवा
 रियै, लेखो सादिव दाण ॥ जू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिन्हाय ॥

॥ राजतंषा अति खोजिया, जरत बाहूबल जूजे रे ॥ मूंड
छपानी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूजे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजध
की ऊतरो, ब्राह्मी सुंवरी जासै रे ॥ रुषज जिनेसर मोकली, बा
हूबलने पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढ्या केवल न होई रे ॥
वी० ॥ २ ॥ लोच करी चरित्र लियो, बलि आयो अजिमांनो रे
॥ लघु बांधव बांदू नही, काठसग रह्यो शुज ध्यानो रे ॥ ३ ॥
वी० ॥ वरस दिवस काठसग रह्यो, बेलनियां वींटाणो रे ॥ पंखी,
माला मोनिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व
चन सुण्या इला, चमक्यो चित्त मजारो रे ॥ हय गय रथ में प
रिहरया, पिण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन
वालियो, मूक्यो निज अजिमांनो रे ॥ पांव छपानी बांदिवा, ऊप
नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंचतो केवली परखदा, बाढ
बल रुषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे
पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिन्हाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाड्या गोचरी, तनके दाजे सीसो जी ॥
पाय डवराणा रे बेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर०
१ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊजो गोखने हेगो
जी ॥ खरै डुपहरै रे दीगो एकलो, मोही माननी मीगो जी ॥ २
॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, रुषि थंच्यो तिण वारो
जी ॥ दासीने कदे जाय ऊतावली, उरिषि तेनी आणो जी ॥
३ ॥ अ० पावन कीजे रुषि घर आंगणो, बहिरो मोदक सारो जी
॥ नवजोवन रस काया कांड दहो, सफल करो अवतरो जी ॥
४ ॥ अ० ॥ चंझावदनी रे चारित चूक्यो, सुख विलसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगतै, तब दीगो निज मातो जी ॥
 ए ॥ अ० अरसकृश करती माय फिरे, गलियैर मज्जरो जी ॥ क
 दि किय दीगो रे मादरो अरसखो, पूछै लोक हजारो जी ॥ इ ॥
 अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिया
 रो जी ॥ धिगूर पापी रे मादरा जीवने, एह में अकारज धारयो
 जी ॥ उ ॥ अ० ॥ अगन घुखंती रे सिखा छपै, अरसक अणस
 ण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवर, मन वंछित फल
 सीधो जी ॥ ण ॥ अ० ॥ इति अरसक मुनि सिखाय संपूर्ण ॥

॥ अथ इलापुत्र सिखाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जांशियै, धनदत्तसेवनो पूत ॥ नटवी देखी रे मो
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न ठूटे रे प्राणिया, पूरब नेह
 विकार ॥ निज कुल बंसी रे नट थयो, नाखी सरम लिंगार ॥
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, उंयो वंत विवेक ॥ तिहां
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ बोक
 पग पदरी रे पावनी, बस चढयो गजगेर ॥ निरशारा ऊपर नाचतौ,
 खेलै नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर
 साव ॥ पायतल घूँघर घमघमै, गाजे अंदर नाव ॥ क० ॥ ५ ॥
 तिहां राय चिते रे राजियो, लुखो नटवी रे सः ॥ जो पमै नट
 वी रे नाचतो, तो नटवी मुऊ हः ॥ क० ॥ ६ ॥ वान न आयै
 रे झूपती, नट जाणै नृप वात ॥ हूं धन वंतू रे रायनो, राय वंछै
 मुऊ वात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथो मुनिवर पेखियौ, धनश साधु
 नीराग ॥ धिगूर विषया रे जीवना, मन आययो वैराग ॥ क० ॥
 ॥ ८ ॥ संबरजावे रे केवली, ततखिल कर्म खपाय ॥ केवलि मदि
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिन्हाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुषा देशन वै
रागीचौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुऊ आज ॥
संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वठ तूं केवो ज़ोख
क्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊखौ किण वूहव्यो रे, हूं भवि
हुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस ज़ार रे
जाया ॥ हूं न० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुख्यो जी, सहिया डस्क
अणंत ॥ सासोश्वाले जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥
॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ दिवणा तूं बालक अठे जो, जोवन ज़रघौ
रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे
जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातयौ जी, डस्क न
सह्यौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कान हे
मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वठ कांठखीचै जीमणो जी ॥ अरल विरल
आहार ॥ जुंइ पावा नित हीनयो जी, जायसि तुऊ कुमार रे जाया ॥
हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत ज़म्यो जी, धर्म डहेखो होय ॥
जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायमी ॥
॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो
बनजरे ठोरु नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥
॥ ८ ॥ हंसतूखिका सेजमी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि
सुंदाखी वेहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥
॥ ९ ॥ स्वादअनो सहू ए सगो जी, अरख पखे सहु कोय ॥ विषय
विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥
१० ॥ खमिष माठ पसाय करी जी, मै दीधुं तुऊ डस्क ॥ दिठ आवेस
जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें व्ह्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥
तन फाटें लोयण जरे जी, डख न सहया जाइ ॥ वठ सुखी हुयो

તિમ કરો જી, મેં દીધો આદેસ રે જાયા ॥ સંયમ વિ० ॥ ૧૨ ॥
 મણિ માંણક મોતી તજ્યા જી, તોજ્યો નવસર દાર ॥ મુંગનયણી
 આઠે રમે જી, દિવ અહ્મ કવણ આધાર નરેસર ॥ સંયમ ० ॥ ૧૩ ॥
 કુમર જણે સુકુલી ધિયા જી, બહુ હાલ એ સંસાર ॥ નેહ તુમારો
 જાણિયો જી, જો હ્યો સંયમજાર રે નારી ॥ સંયમ ૦ ॥ ૧૪ ॥ રથ
 સિલ્કા તબ સજી કરી જી, કુંવર ધારણી માફ ॥ શ્રેણિકરાય ઝ
 ઝવ કારે જી, ચારિત્ર હ્યો રિષિરાય રે જાયા ॥ સં ૦ ॥ ૧૫ ॥ ફમ
 જાંણી વૈરાગિયો જી, વરજે જે નર નારિ ॥ કરજોમી પૂનો જણે જી,
 તે તરસ્યે સંસાર દે મા ૦ ॥ અ ૦ ॥ ૧૬ ॥ ઇતિ મેઘકુમાર સિં ૦ ॥

॥ અથ અસિજ્ઞાઈ નિર્ણય સિજ્ઞાય ॥

શ્રાવણ કાતી મિગસર માસ, પહિલી પરુવા ત્રીન વિમાસ ॥
 ચૌથી પરુવા વદિ વૈસાલ, ચ્યાર પુહર અસિજ્ઞાઈ જાલ ॥ ૧ ॥ જાં
 લગિ હોલી ઝમે વાર, ધુંવર પરતી હુવે જિવાર ॥ જાં પરચક્રનો
 જય નવિ જાય, તાં લગ અસિજ્ઞાઈ કહિવાય ॥ ૨ ॥ ધૂલવૃષ્ટિ ને
 કેસ પાશ્વણ, વરસે તાં લગ અસિજ્ઞાઈ જાણ ॥ ઝૂઝે મહા માંદોમાંદિ
 જાંમ, તાં લગ અસિજ્ઞાઈ તિણ ઝાંમ ॥ ૩ ॥ જૂપતિ પરજન પોદતો
 હોય, જાં લગ પાટ ન બૈસૈ કોઈ ॥ તાં લગ બોલી ઠૈ અસિજ્ઞાઈ, સ
 હુકો સરવહજ્યો મન માંદિ ॥ ૪ ॥ ઝલકાપાત અને દિગદાદ, એક
 પોદર અસિજ્ઞાઈ થાય ॥ નિવલ મેદ તિમ જાંણો સહી, આઠ પહોર
 સબલ જલ કહી ॥ ૫ ॥ ચૈત્ર સુદિ પાંચમ દિનચક્રી, પનિવા લગ
 અસિજ્ઞાઈ વકી ॥ પનિવા બીજ તીજ ચાંદણી, સમીસાંજ અસિજ્ઞાઈ
 ગિણી ॥ ૬ ॥ આશ નક્ત્ર ન લાગે જાંમ, ગાજ વીજ અસિજ્ઞાઈ તામ ॥
 ગાજ વીજ જો હુવે અકાલ, અસિજ્ઞાઈ બે પુહર સંજાલ ॥ ૭ ॥ ચંદ્રમદણ
 અસિજ્ઞાઈ જણી, વારદ પોદર ઝલકી ગિણી ॥ જઘન્ય પ્રકારે આઠ વિ
 ચાર, સૂર્યમદણ પોદર જઘન્યે વાર ॥ ૮ ॥ સોલ પ્રદર ઝલકી કહી,

सुगुरु मुखे जविषय सरदही ॥ नगर प्रधानं मेरे जो कोइ,
 आव पुहर असिजाई होय ॥ ए ॥ वसतीशकी सातां घर मांदि, नर
 विदमै अहोरति असिजाई ॥ पुरुष पज्यो होय मृतकअनाथ, तां
 असिजाय कही सो दाय ॥ १० ॥ पुत्रतलै प्रसवै दिन सात, बेटी
 आव दिवस विदात ॥ सो कर मांदि कही असिजाई, नारी रतु दिन
 तीन कहाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन
 गइ ॥ असिजाइ सो कर मांदि, त्रिणद पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥
 असाढै चौमासै दिने, पत्तिकमणा गायंथी गिणै ॥ बार पोहर
 असिजाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर
 असिजाई वै बहु, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही
 संखेवि, हरखै पय प्रज्जु कीजै देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेइ,
 च्यार मावठबीजे तेइ ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तब कबि नांम
 कहियो इण परै ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जि शासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व
 ए निरता करो ॥ मिथ्यानत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सदि पालों
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित
 शुद्ध पालौ, टाखो दोष दया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,
 च्यार सिक्काव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो जवि
 यण मनरली ॥ दाखविण गुण परइ केरा, दोष सम काढौ बली ॥
 ॥ २ ॥ मम काढो रे लोन्नी नर कूनौ करौ, जांणी सावद्य रे अ
 जक बावीसे परिहरौ ॥ वरु पीपल रे पिलखण नें कटुंबरो,
 कंवरफल रे रखे तुमें जकण करो ॥ ३ ॥ उछाखो ॥ रखे
 तुमें जकण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम
 करहा उंनि परहा, दोष मूल साटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र

शशीजोजन, प्रथम दुरगति बारणौ ॥ मम करौ व्याखू अति अ
 सूरौ, रविउदय विन पारणौ ॥ ४ ॥ अथाणौ रे अनंतकाय सब
 नाम ए, काचागोरस रे मांदि कगोल न जिमिये ॥ एह वैगण
 रे तुड फला सवि ठाम ए, आपणापूं रे व्रत लीधो नविखं
 ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंए व्रत नियम लेइ, बेइ फल
 व्रत जंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चवित रस दोष
 जेहनो ॥ संवर आणी अजक ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥
 गुरु वयण विगैं वली पूबयौ, अनंतकाय बचीस ए ॥ ६ ॥
 अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु जकण रे पातिक बोड्या
 बै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आहुं वली ॥ वजचूरण रे कंद
 बहू कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै
 चतुर नर आविलौ ॥ रतालू पिनालू श्रेण ओहर, सतावरी लसण
 कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवहुलौ, पळयंक
 सूरण बाल वीली मौष नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ बंसकारेला रे
 कूपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी
 रे जमरवृक्षनी बालनी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलनी ॥ ९ ॥
 वेलनी तानु ताजा खिलोन ने खरसुआ, जूय जूंफोम ठग्रा
 कार जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बचोस बोल प्रसिद बोड्या
 लहमीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जाणौ प्रांणी
 ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अजक तिऊय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सिधाय ॥

॥ संवेगरसमे जीवता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोह
 टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धनश गजसुक
 माल, तेहने करुं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रचू
 प्राप्त संयम आदर्यौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया बसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ ३ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा
 यवा अलजयो, परुषैन दिन दस बीस ॥ साहसीक इम उचरतो,
 पिछ दिन जावे रे तो ठेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय
 काउसग रह्यो, तिण सांछि प्रजुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चिं
 त्तवै, एहनै साची रे ठे मुंह मूठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुज सुता विन
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाव ॥ सिगरी रचि सिर ऊपरै,
 चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ
 धिक बधै, तिम बधै मन परिणाम ॥ चवदमें गुणगार्यो चढ्यो, मु
 निवर पामी रे केवलग्यान ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जामणने आई,
 ते रयण वरस हजार ॥ बांदवा आवी प्रह समे, पिण नवि देखे रे
 आंणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रजु मांमी करी, रातिनी बी
 तग वात ॥ हरि देखी हियसो फूटसी, तेणें कीधो रे रुबिजीनो
 थात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पामियो अविचलरा
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रणचंद्र सिद्धाय ॥

॥ राज बंसी रलियामणो रे, जांखी अधिर संसार ॥ वैरागै
 मन बालियो, कांइ लीधो संजम जार ॥ प्रणचंद्र प्रणमूं तुमारा
 पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग रह्यो
 रे, पग ऊपर पग छाय ॥ बांढ बेउं उंची करी, सूरज सांमी इष्टी
 खगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, बीरजीने वंदन
 जाव ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविष खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डरमु
 ख वृत्त वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां
 मियो, जीव पळ्यो जंजाव ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूढियो रे,
 एहनी सी गति थाय ॥ जगवंत कहे द्विषां मरे तो, सातमी नर-
 के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिषा इक अंते पूढियो रे, सरबारअसिद्धि वि

मानं ॥ वाजी देवनी डुडजी, मुनि पांम्था केवलज्ञान ॥ प्र० ॥
॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावारना शिष्य ॥ रिद्ध
रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पति सिद्धाय ॥

॥ उत्पत जोय जीव आपणी, मनमांदि विमास ॥ गरुना
वासे जीवमो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाजी
तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नामी ठे
दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥
आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर
श्रवे तिण मांसणी, रुतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,
तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित
दुरगंध ॥ तिण आनक तूं ऊपनो, दिव हूत अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥
नामी वांसतणी जरिये घणी, रूघाल ॥ ताती छोट सलाकतैं, जाले
ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, ठे नव लख जीव
॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी
मिळ्यां, पांचेंडी जेद ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एद ॥
उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो वार ॥ जीव ज
घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य
तिहां रदे, महुरत परिमाण ॥ बार वरसनी धिति तिहां, उत्कृष्टी
जाण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवमो, जंपै जग
दीस ॥ फिर नर आवंतो रदै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥
महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां
पडै, आथे पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूले नर वसै,
तिम वामे नारि ॥ बीच नपुंसक जाणिये, जिनवचन विचार ॥
१३ ॥ उ० ॥ दिव सामान्यपणै इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ ३० ॥ १४ ॥ आठ व
 रस तिर्यच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गरजावासै जोगव्या, इम बहु
 जंजाख ॥ ३० ॥ १५ ॥ कर्मण काये कर लियो, पहिलो आहार
 ॥ शुक्र अने स्त्रोषिततणो, नही जूढ खिगार ॥ ३० ॥ १६ ॥ पर-
 जापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा-
 रिक मीस ॥ ३० ॥ १७ ॥ पवन अठै उदरै तिको, उपजायै अंग
 ॥ अगनि कौ शिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ ३० ॥ कठन
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचजूत सरिरमें, इम कौ प्र-
 कास ॥ १९ ॥ ३० ॥ वारै महु रत तां पठै, विलसै नर नारि ॥ गर-
 जतणी उतपति तिहां, नही अवर प्रकार ॥ २० ॥ ३० ॥ कलख हु-
 वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदणी पेसी बधै, घन मांस
 कहात ॥ २१ ॥ ३० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमृतालीस टांक
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ ३० ॥ सु-
 धिर मास बीजे हुवै, द्वि तीजे मास ॥ करमतणै वलि ऊपजै, मां-
 ता मन आस ॥ २३ ॥ ३० ॥ चौथै मासै मातना, प्रणमै सह अं-
 ग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ ३० ॥ पि-
 च रुधिर ठे पनै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे-
 सी सय पंच ॥ २५ ॥ ३० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि
 ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २६ ॥ ३० ॥ आठमें मा-
 सै नीपनो, इम सकल सरिर ॥ उंघै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥
 ॥ २७ ॥ ३० ॥ सोषित शुक्र सलेषमा, लघु ने वरुनीत ॥
 चात पित्त कफ गरज्जणी, आयै नर नीत ॥ २८ ॥ ३० ॥ मात-
 तणी सूटि लगै, बालकनो नाख ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल
 ॥ ३० ॥ २९ ॥ जननी छये आहारते, जाय नामोनाम ॥ रोम इंडी नख
 चख बधै, तिम मीजी ने हाथ ॥ ३० ॥ ३० ॥ सबहू अंगे ऊख

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरजै सुविचार ॥
 ॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, आये ज्ञान विजं
 ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥ उ० ॥ ३२ ॥
 कटक करे वैक्रियपणें, जूजी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी
 करी, मरी सुर पिण आय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊँचै मुख गोमा
 हिये, सहितो बहु पीर ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुघी
 जींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिके, ऊपजै आ
 घान ॥ अथवा विहुं नारी मिल्यां, कह्यो गरजविधान ॥ उ० ॥
 ॥ ३५ ॥ कोइ उचम चितवै, देखी डखावास ॥ पुन्य करी तिम
 नीकलूं, नाउं गरजावास ॥ उ० ॥ ३६ ॥ ऊँठ कोमि चांपे सुई, कोइ
 समंकाल ॥ तिणथी गरजै अठ गुणौ, सहे वेदन बाल ॥ उ० ॥
 ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख आय ॥ माता सूती
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरजअकी डस लख
 गुणो, जामें जिण वार ॥ जन्म थयां डस बीसौ, धिग्ग् मोह वि
 कार ॥ उ० ॥ ३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणो जिहां, मल मूत्र कलेस ॥
 पिंरु अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तु
 रंत रुदन करतो अको, जामें जिण वार ॥ मात पयोधर मुख गवै;
 पीयै दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दिन १ दीसे दीपतो, करै रंग अपा
 र ॥ लारु कोरु माता पिता, पूरै सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र
 इग्यारे नारिनें, नव नरने जाण ॥ रात दिवस बहिता रहै, चैतो चतुर
 सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, जे सातसै न
 मि ॥ नवसे नामी पिंरुमें, तिम तीनसे हार ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि
 एकसो साठ है, सतोचर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै,
 ढांकी है चरम ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब
 सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्तीस
 स सलेखमां, जायै जंगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणयकी
 यदा, उठो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजें काय ॥
 ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खानें
 पान जूषण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै
 दसके जणयो, विद्यां विविध प्रकार ॥ तीजें दसकै तेहने, जाग्यो
 काम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आनक तूं ऊपनो, तिणमें
 मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोरु ऊपाय ॥ ५१ ॥
 उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें संसनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा,
 परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ ठठे दसके प्राणिंयो, बले परवसं
 थाय ॥ जरा आई जौवन गयो, तृष्णा तौही न जाय ॥ ५३ ॥
 उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणिं तेह ॥ बल जागो बूढो
 अयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो,
 खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिर धुखै, करे फोगट वात ॥
 ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणिंयो, तन सूकत जाय ॥ सांखै
 वचन बहुआंतणो, दिन फुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपक्यो
 खूंखूं करे, सडू गाली देह ॥ हांख हुकम हांखे नही, दीयो परिजन
 बेह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुरु मिले, पैस मुंहने जाल ॥
 बेटा बेटी ने वडू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा
 ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो
 जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाखे निर
 मल सीख ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लीख ॥ ६० ॥
 उ० ॥ कोनि रतन कवनी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै
 पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया
 कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जौवन कारमो, साचो धरम

(३५५)

संज्ञार ॥ ६२ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण ए, ठै लोक मइत ॥
 जनम मरण कर फरसियो, ते बार अणंत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप
 सवारधिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै,
 सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां
 लग सबल सरिर, धरम करो जीव तां लगे, होय साहसधीर ॥
 ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाधो गुरु संयोग ॥
 अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० ॥ श्रीनमि
 रायतणी परै, चेतो चितमांदि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ
 कियारो नांदि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहु, अथा जे
 अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥
 सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणधी सुख संपति
 वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलबेयाली अवे, एह
 नो अधिकार ॥ तिणधी ऊद्धरनै कह्यो, नही जूव लिगार ॥ ७० ॥
 उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांजलि लिये संजमज्जार ए,
 परि सिंह केरा सदा पावै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख
 सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनदर्ष सुसीत रंगै इम
 कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उत्तपत्ति इकहचरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिष्ठा लिख्यतै ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें
 प्रवृत्ति, यह रसगृहीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोष धनी
 मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,
 कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने
 हराममें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुयुष्में, कज्जी तूं कु
 देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन
 विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदंभमें, कज्जी व

चनदंनमें, कज्जी कायदंनमें, कज्जी हास्यमें, कज्जी रतिमें, कज्जी
 अरतिमें, कज्जी ज्ञयमें, कज्जी सोकमें, कज्जी डुंगामें, कज्जी
 कृष्णलेस्यामें, कज्जी नीललेस्यामें, कज्जी कापोतलेस्यामें, कज्जी तुं
 रुद्धिगारबमें, कज्जी तुं रसगारबमें, कज्जी तुं सातागारबमें, कज्जी तुं मा
 यासद्वयमें, कज्जी तुं नियाणासद्वयमें, कज्जी तुं मिथ्यादर्शनसद्वयमें,
 कज्जी तेरे तेरेकाविया आय फिरता है, कज्जी तेरे बाहिर कर अ
 ठारे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा दुष्टो, महा
 दुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुत्रिया, अरे तूं
 हीणदृष्टी, अरे तूं अयोद्धा कामका करणहार, रे तूं दुष्ट पापिष्ठ जीव,
 आयें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामान, अनंतानु
 बंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोज्जरी चोकनो, विचारा तेरे स्वर्ण
 नही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा
 दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव
 जेसा कल्लोल तेरे उबल रहा है, तें जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य
 मनसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें
 करी जो क्रिया सो राख पर लीपये जेसा है, अरे चेतन ! लोगन
 नही लेवे सो पापी, ठर लेकर जगि सो महापापी, तैं अनंतकाय,
 अजक, शीलव्रत, जरदा, ज्ञांग, अमल, तमाखू, आदिकरा लोगन
 लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तैं पुञ्जलरे
 वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,
 मेरे नवनिधान, मेरे रसकृपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ
 मृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो
 जाउं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन
 करूं, ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगणोवालेकेही लोज्जका
 त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो कैसें सरे, है चेतन ! तूं मनमें विचारतो

हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुत्र
 ल, अरे चेतन ! चौरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,
 संसारमें न किसीका तू है, नहि कोई तेरा है, रे चेतन ! तू
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणो, केइ वखत पूत्र
 पणो, केइ वखत पुत्रीपणो, किसी वखत स्त्रीपणो, जैसे ठगकी बेटी
 ने अपणी मांसे पूढा-माताजी में जो पाप करतीहूँ सो कोण जो
 गेगा ? मा बोली-बेटी, करेगा सो जोगेगा, तबतो उसने कहा धिक्
 है इस स्वारथिये संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,
 आर्यदेस, आर्यकुल, आवकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका
 धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जैसे क
 नएकूं उरुणो चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसे तें चिंतामणि
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-
 नंबरी कुगुरुठके उपदेससे चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म
 आझाप्रमाण जो था सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा कैसे
 होय, विष्टामें कृमिपणो तें अनंती वार पेदा जया, मानरूपी गज
 पर बाहुबल चढ़ा उर संज्वलनमान था, उर बाह्मी सुंदरी बहिना
 जैसी समझायेवाली थी जब समझै, उर तेरे सो ऐसा मान, अरे
 चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तू जरतमादाराजा जिणोके
 केसीक राजशुद्धि सो केसीक जावना जावतां, धिःकार राज्यमें, धिः
 कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं,
 धन्य श्रीतार्थिकर मादाराजका सो देसविरती धर्म पालते है, धन्य
 जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो दान देते है, धन्य जो
 सीख पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो जावना जाते
 हैं, ऐसे जावना जावते जरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन
 पायां, इस तरे रे जीव तू उनोही बराबरी मतकर, वहतो तेसव

सत्ताका पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका जरतहैत्र-
 का कीना जनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-
 ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों
 करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों, गि
 साया; इग्यारमें गुणगणैका जीव जुवनजानु केवलीजी, कमलप्र
 ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योक्तं ऋगाय दिश्या तो तेरी तो
 विसायतही क्या, आठ करम अद्यावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जोता
 जाय, मोहकर्म पीठै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-
 की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आझामें रह सदागमसुं परि-
 चय रख, संतोषगुण धार, दृष्टारूप दाहकूं पीछी मार, जेसेंतें तिर
 जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तोने गुप्ते गुप्ता,
 बकायका पीयर, सात महाज्ञयका टालणहार, आठ मदका ज.प-
 क, नवविध ब्रह्मचर्यकी वारुका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका
 वजवालाक, इग्यारे अंगका जणणेवाला, बारे जपांगका जणणेवाला,
 कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि
 प्रभुकी आझा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुजै कब उदै आवेगा, रे
 चेतन तेरे उदय कहासें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसत्र-
 ती पाले जिके प्रभुजीकी आझा पाले, जिके प्रजात उठ सामायक
 करे, पन्निकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी दादसांगी वाणी
 सुणे, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी
 पोसा, संध्याकूं देवसी पन्निकमणा जिनाझा प्रमाणै बनावश्यक करै,
 सुजेजी कज्जी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा
 हवाल होगा, बुरे परणामोसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-
 मायक मनसुद्धै करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पदण गुणना वां-
 चनेकी खप करो, जेसें जवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण है, उर तेरी सामायक तो निंदा विकारूप है, तुजें पढ़णे गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया. जो श्रुतज्ञानकी प्रकृति करते है उनोको ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती है, केवलज्ञान उर केवलदर्शन पाता है वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका प्रचार होता है. दिवस प्रते दै कोई सुजाण सोना खंरी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतखो, सामायक कीधा तेतखो ॥ १ ॥ लेकिन तूं इस जरोसे मत झूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणाव कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंडावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी है काम काज घरका चितवै, निंदा विकारा कर खिज रहै; आरत रौडव्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण ऐसे है अपणा पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवन धरै, साचो थोमो आगम जणे, ते सामायक शुद्ध करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपणा जला चाहता, वो पराया बुरा या नही चाह्या वो तेनें अपणे आत्माकाही बुरा चाह्या, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रस्के, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे जाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा है, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है, अधाती है, अलेसी है, अविनासी है, तें दिलमें विचारता है यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन उर कोण तेरा दुस्मन है, आठ कर्मरूपिया सत्र है जिनोको तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाख जस्म कर जिस्से तेरा गरज सरे, अहोहो में जव्य हूं अजव्यहूं अथवा डुरजव्यहूं, मेरे संसार पोते वढोत दिखता है, आयेतो में अजव्यही दिखताहूं पीठे तो ज्ञानीयोने जाव देखा सो सही, है रे जाइ तें तो एसी सामायक करता है, खुणे खाज मोढे

करनका, उंचतर्णा लेवे सरनका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सि-
कारेगा जब लेखे लगेगा, उदा-आत्मनिंदा आपणी, ज्ञानसार मु-
नि कीन; जो आत्मनिंदा करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥
इति आत्मनिंदा संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववन्दनभाष्यादिकसें मंदिर

जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहा-

निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकण्ड्यसूत्रमें ऐसा लिखा हे ठती शक्ति साधु जिनमंदि-
रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका मंदर उर आवककूं बेलेका
मंदर ॥ प्रथम आवक दो प्यार घनी रात रहे पिठली तब काउके
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या
मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासें दिलको
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुद्धि करके
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदोरासरकी पूजा करे,
पीठे यथाशक्ति अन्नावल आजूषण पहरके घोना हाथी रथ पाल-
खी सिंघाई नोकर चाकर जाई बंधु परिवार सभेत पूजाके लायक
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर जगज्जीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञावना करता थका जिनमंदिरमें जावे,
जिन मंदिरमें प्रवेश करके डोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार
१० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्तही कहणेका, जिसमें १ निस्तही
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर संबंधी कुबज्जी
कार्य विचारणा न करे १: दूसरी निस्तही प्रवक्षणा तीन दियां पीठे
कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार शंजाल
रखीथी सोजी ठोने ३; (इसमें इव्यपूजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्सही केहे पीठे निकेवल जावपूजाही करे, लेकिन् इयं पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक—ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक—मूलनायकजीके बिंबको पंचाग भिलाके तीन बेर नमस्कार करे. ३.

चौथा त्रिक—प्रभूकी अंग १ अग्र २ उर जाव ३ ऐसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे. अब निस्सही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसे लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंडियोकुं वसमे रखे, चरणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चितमें व्याकुलता नहि रखे, कुंछजी देवकार्यकों ठोमके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ठोमे, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया जया खोटे कार्य कों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन अधिको अंधा, गोलेकुं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसने मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासें किया हे उस जीवके जावसे निस्सही होय, उर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र इयनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आठ तहका उज्जल वस्त्रसें मुखकोस बांधे, धूपादिकसें अंग अपणा शुद्ध करे, जावसें दुसरा निस्सही कहते मूलगुंजारमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल जगवानकी स्तवनामें चित रखे. प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचासृतसे स्नान करावे, सुकमाल अन्ना कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसें विलेपन करे, शुभवर्ष शुभगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुलाब चंपा चंपेली केवला जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अंगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्ज्वल अक्षतोसे प्रज्ञूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लाखे—दण्ड १ जडासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ महयुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंदावर्त्त ८ एसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसे अष्टमंगलीककूं पूजे, अष्ट फेसर चंदनके हठा देवे, उत्तम नैवेद्य चढावे, अष्ट खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाग्निगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे, पीठे अंतरंग जक्तिसें प्रज्ञूके सन्मुख नाटक करे, जेसें देवेंद दानवेंद नारद उदाइराजाकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण प्रमुख केश जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपाजन किया नेसें शंकारहित जन्मजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रज्ञूके सन्मुख नैवेद्यादिक चढाधाजावे सो अग्रपूजा २ प्रज्ञूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो ज्ञावपूजा ३. इव्यपूजा गर्जित बोधा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक—तीन अवस्था विचारणी. पिंमस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंमस्थ अवस्थाके तीन जेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, अमणावस्था ३, उर केवल अवस्था कों विचारणा सो पदस्थ अवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब उठा त्रिक—तीन दिशा ओरके प्रज्ञूके सामने नजर रखे.

उर्द्ध १, अध २, तिरगी ३, दहणी ३४ वांछ पिढामी निजर नही करे. ६.

अब सातमा त्रिक—तीन वेर धरती प्रमार्जके उस त्रिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्षादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्षाशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रखे सो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ७.

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाएणी सो योगमुद्रा कहिजे, इस योगमुद्रासे शकस्तव कहे १, काउसग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसे हाथ रखणा सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासे प्रणिधान जयवीरराय कहे. ८.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावन्ति चे इयाइ इह संतो तउसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावन्ति केविसाहू तिविहेण तिदंरु विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीररायसे लेके आज्ञवमखंता तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अज्जिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहने हैं. स चित्तद्वय जो पुष्पादिक अपणे जोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट उत्र खरग चमर पाडुका अक्षितवस्तुउकाजी ओरणा आज्ञूषण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोजुवणबंधुणो एसें नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बैठके ज गवंतकूं वांछे, स्त्री वांछ तरफ बैठके ज गवंतकूं वांछे.

अब चौथा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देववांछनामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बैठके देव वांछे १, मध्यम नव हाथसे उपरांत बैठके देव वांछे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वांछे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन जेद हे. एमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहला सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसे नमोब्रूयांसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचवंदक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांछे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोमे. दो हाथ, नर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासे लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसे प्रज्जुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण आवक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित १, द्रव २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्स ६, कुसुमेसु ७, वादण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंज ११ दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ आवक नितप्रति नियम संज्ञावे दिनमें जो चीज अपने अंग खाते लगे उसका प्रमाण रक्के, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित वस्तुका प्रमाण इस तरेसे करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका वेदन जेदन, तरकारी फल परबल जीमी तोरी केला मतीरा ककनी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रक्के, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण, तहां घातु वस्तुकी शक्ती तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें मालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर दोणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे, जेसें गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी बाटी यह सब जुदा द्रव्य कह लाता हे. इस तरे ज्ञात दाल रोटी कट्टी मांनिया कट्ट तरकारी सब जात पापन खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चहिये सो रक्के बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नाम लेकर रक्के सो एकही द्रव्य कहलावे, जेसेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी जई हे तोजी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसे आवककूं चार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ ऊर सदतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण रक्के. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खमन मोजा अपनां इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रक्के. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीना सुपारी लोंग इला यची गेटी ऊर बनी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारण प्रमाण रक्के. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ षष्ठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ बूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रक्के, पोसाख १ में पधनी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहें जे. एसेंइ स्त्रीके स्त्री मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपर्णा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र जूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवना केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ अथ गाम्नी वहली इका बग्घी कोच पालखी घोडा हाथी छंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब थलवाहन, पाणीमें चलणैवाले मोरपंखी वतक घुनुदोर लचकार मगर पनसोइ पलवार वज्रानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेख वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी ढालका चमनेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूँका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकू इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोमे परमलम प्रमुख आंखोंमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाया सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०.

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ मेरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरब १ पश्चिम ३ दक्षिण ३ उत्तर ४
अदिकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदि
शि ९ उर्ध्वदिशि १० यह दश दिशिका अपणो जाणे आणेका
प्रमाण करे, चिह्न लिखणी आदमी जेजणा देशांतरकी चिह्नी
वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम, तहां आज दिनमें स्नान २ बेर
अथवा ४ बेर भोक्ला लेकिन पाणीका तोल रक्के, घने प्रमुख
का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं थादा
नही गिरावूं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा ज्ञात नियम. दिनमें ज्ञात ३ सेर तथा ३
बेर जीमूंगा अथवा चार बेर उपरांत डुविहार या चोविहार
धारणा प्रमाणे रक्के. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका
प्रमाण रक्के तोलते या मापते. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम, जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र
पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढ़ावे, पीठे अखंड
तंडुल मुंडे ३ थालमें रक्के उस पर नारेल रुपया या मोहर
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पन्निक्के इच्छाका ० सम्य
क्त सामाग्र्यारोहणार्थ चेइयाई वंदावेद गुरु केह वंदावेमो चैत्यवं
वण करे. बाधे पासे चावलांको साधियो करे श्रीफल धरे पीठे
गुरु वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप
करे, वर्द्धमान स्तुतिसे देववंदन करवावे पीठे सत्तेर शुईमें नवकार १
एकेकका काजसग करे पीठे शासनदेवता निमित्त चार लोगस्स
का काजसग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीठे ३ नवकार
गुणें शक्रस्तव कहे नमोर्द्धत् ० कहे वमा स्तवन कहे पीठे जय

धीयराय कहे उति भेड़ी विधिः । पीठे खमासमण देई श्रुतसी
 मायक सम्यक्तसामायक आराधणार्थ काउसंग करावेद, गुरु कहे
 करावेमो सम्यक्तसामायक आरौगनार्थ करेमिसाउसंग, ४ लोग
 रस्तका काउसंगा करे पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे १ वेर नव
 कार गुणकर गुरूके पात तीन वेर सम्यक्तदंरुक उच्चरे गुरु पाठ
 बोले उसकी मनने धारणा रखे, सूत्रं अद्वंजते तुह्माणं सम वे
 मिहताउ प.मेकनामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पज्जिइ
 अन्नतिविवा अन्नतिविदेवयाणिवा अन्नतीविपरिगहिय अरिहंत
 चेइयाणिवा वंदित्तावा नमंसित्तावा पुर्विअणात्तिएणं आलवित्त
 एवा तेसिअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पाउंवा
 तेसिगंधमझाई पेसिउंवा नन्नठरायान्नियोगेणं गणान्नि योगेणं बला
 न्नियोगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविइं तंजहा
 दवउं खित्तं काळउं जावउं तउदवउं दंसण दवाइं अदिगिअ खित्तं
 जाव जरइमझिमखंने काळउं जावजीवाए जावउं जावठलेणं नठ
 लिज्जामि जावसन्निवाएणं नज्जविज्जामि जावकेशइ, उम्माइवलेणं
 एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवरइ तावमे एसो दंसणाज्जिग्ग
 हो अन्नठराज्जोगेणं सइस्तागारेणं मइत्तरागारेणं सबसमादिवत्ति
 यागारेणं वोसिरइ, पीठे उँ ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एते अक्षर श्रीगुरूके
 पाससें हाथमें लिखाके जिन प्रतिमाकूं वासहेप चढावे, नवकार
 पढतोथको १ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वादे, पीठे श्रुतसामायक
 धिरि करणार्थ सत्तःवीस उत्तास प्रमाणे एक लोगस्तका काउस
 ग करे पीठे प्रगटलोगस्त कहे पीठे सम्यक्तरूप कछपवृक्ष पायके
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमइदेवो, जावज्जीवं सुता
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १. पीठे गुरु
 धर्मदेशना देवे, मिअगएवरूप सम्यक्तेके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवन्दन इतनी वेर कळंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल
केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरेमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चा
रित्रके प्रक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वनिधिमें पा
लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब कळंगा, दिनकी नवकारसी आ
दिक रात्रिकों डुविहार तिथिहार चउ विहार तर बावीस अजक
बत्तोस अनंतकाय बिदल वगेरे उडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा
प्रमाण सब वस्तुका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टोप
सुणे अतीचार नहि लगे ऐसे उपयोगसे सदा वर्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंरुक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं स
मीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पितं निरवराहं पञ्चस्कामि जावज्जीवाए
एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेशं वायाए काएणं
नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पक्कमामि निदामि गरिदामि अ
प्पाणं वोसिरामि ॥ यह पदले व्रतका दंरुक तीन वेर उच्चरावे॥१॥
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहाड्याइहेअं
कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं थापणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं
पञ्चस्कामि दस्किन्नाए अविसए दवउं खित्तउं कालउं जावउं सबउणं
मुसावायं खित्तउणं इडवा अणडवा कालउणं जावज्जीवाए जाव
उणं जावगहेणंनगहेज्जामि जावगलेणंनगहज्जामि अण्णेणकेणवि
रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ तावअज्जिगइ डुविहं तिविहेणं
अन्नत्थणाज्जेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरइ ॥ २ ॥
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं
रायनिग्गइकारयं सच्चित्ताचित्त वज्जुविसयं पञ्चस्कामि ववउं खित्तउं
कालउं जावउं दवउणं अदिन्नादाणं खित्तउणं इडवा अणडवा कां
लउणं जावज्जीवं जावउणं जावगहेणं नगहज्जामि जावगलेणं नग
हज्जामि अण्णेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ ताव अ

जिग्मह उविहं तिविहेषं अन्नत्थं सदस्सा० महत्त० सब० वोसि
 रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंजंतुम्हाणंसमीवे उदारिय त्रेकिय जेयं थूलमेहुणं
 पच्चस्कांमि अदागहियजंगणं दिव्वंतिरिद्धं माणसिय एगविहं एग
 विहेषं पच्चस्कांमि दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं मेहुणं खि
 त्तं इत्था अन्नत्थवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेषं
 नगहेज्जामि अन्न० सद० मह० सब० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
 जंतं तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पमुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चस्कांमि
 धणधन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इत्थापरिमाणं उवत्तं पज्जामि अदाग
 हियजंगणं तंजहा दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं नवविह
 परिग्गहं खित्तं इत्था अन्नत्थवा कालत्तं जावज्जीवं जावत्तं
 जावगहेषं नगहेज्जामि अन्न० सद० मह० सब० वोसिरइ ॥ ५ ॥
 अहन्नंजंतं तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चस्कांमि तंजहा दवत्तं
 खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं दिसिपरिमाणं खित्तं धारणाप
 माणं कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेषं नगहेज्जामि जाव
 त्तावअजिग्मह अन्न० सद० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंजं
 ते तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगयेजोयणत्तं अनंतकायबहुवीया राइ
 जोयणाइं परिहरामि कम्मत्तं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
 इं बहुतावज्जाइं खरकम्माइयं रायाजियोगंच परिहरामि तंजहा दवत्तं
 खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं जोगाव जोगवयं खित्तं इत्था अन्न
 त्थवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेषं नगहेज्जामि अन्न०
 सद० मह० सब० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंजंते तुम्हाणंसमीवे
 अन्नत्थदं पच्चस्कांमि अववज्जाणा पापोपेदेशं हिंसोपकरणा
 दांशं पमायवरितं चउविहं अन्नत्थदं जहासत्तीए परिहरामि तंज
 हा दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं अन्नत्थदं खित्तं इत्था
 अन्नत्थवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेषं नगहेज्जामि

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंजते तुम्हार्णसमीवि
सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविज्ञागवयं जइ स
त्तीए पन्निवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवयं सत्तसिस्कावयं डुंवा
लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह०
सवस० वोसिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख उ ठंभी च्यार आगार संयुक्त
पालुं ॥ इति आवककुं संक्षेप बारे व्रत उचरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथानकका छोटा स्तवनं देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करो, वीस थानक रे
गणपतुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं
गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी धुणउ ॥ नूटक० ॥ धुणउ
प्रवित्रां बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी
स जिननी, पुंरुरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण
स्स, प्रजावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउअइ थानकि,
आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो धेराणं रे पांचमइ धिवर
पूजा करो, नमो उवज्ञायाणं रे ठणइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल
र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ
पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी जगति
करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते
नमो विनयंकारीणं विनय वरुानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया
कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थानक रे नमो वंज
धारीणं सदा, वृत्तधारी रे मन वचक्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय
धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिघरणं रे रात्रइ गीत गान
वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दान ते
पनरमे, नमो वांयगस्स विगयनउ त्याग करो थानक सोलमें ॥
सतरमे नमो वेयावचकारीणं, उषध गुरुनइ आपिये ॥ अठारमे

नमो नाण धराणां, नवूं जणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्जतीणं
 रे जगणीसमे ज्ञविया मुण्डं, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं
 सुणो ॥ वीसमे धानक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघजगती रे
 यथासक्ति कीजे सही ॥ ब्रू० ॥ सही कीजे वीस ठंडी एक षठ
 मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पद्मिकमणो
 छाहो लीजिए ॥ त्रये काले देववंदन नाहण धोअण टालिये,
 आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु
 साधवी रे आवाक आविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेषे नामकर्म
 बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणां रे
 सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ ब्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा
 सुपास उदाई नृप बलि, पोष्टिख मुनिवर अने द्वादयुष शंख
 शतक आवाक रुली ॥ सुखसा रेवती आविकाये एह धानक
 फरसिआं, सेवकजन कळयाणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥
 इति वीसधानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥
 वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कै, जेठे सहु जिवि चित्त सुखं
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रभु
 पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखनियां, मुख सुंदर जास ॥
 मे० ॥ १ ॥ कानें कुरुल दोय जलकै, शशि सूरज सम जास ॥
 मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिभुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

(३४०)

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसासं ॥ मे० ॥ लालचंद
अरज सुनीजै, पुरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ वुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुषो सुजाण नेमजी, हारे में
खमी युकारुं नेम तुंदीं तुंदीं तुंदीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में
पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन
अवगुण क्युं तजो मेरे सादेब, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥
॥ २ ॥ हरख चंदनेमी राजेसर, हुं जव जवकी बेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसैं आंखमली, मोरी रैन
दिवस नित लग रहीर ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पदेखी आब उन
दोस्ती कीनी, ले पीछें छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया
करीने, सितरमणी तें वर लेई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई
जविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिछ्यातनिंद में खोई रे ॥
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन जखो मेरे, आनंद चित्त अब
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन छर न कोई मेरे, देख्यो त्रिजु
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत बिनति, तुम
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोये
जिया जागरे ॥ रा० ॥ होय घमी तरुको अब रहियो, कठ धरममें
लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी बरबीच धार ले, छर जरम
सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए
सुधो शिवभाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथे पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ, क्यानिधि, कोन खबर
ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ अमृत फिखो संसार जगतमें, मेढो जव
ही फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जव जवके प्रभु तुम जगनायक, राखो
शरण तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड़ो तेरो, सरण
झही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कमलानी देही ॥ जाव धरि धन्य दिन आज, सफलो
गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर जरि विमल
गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥
प्रग पग उमंग धर पंथ नित प्रवृत्तां, धन्य दोय चरख तिहां चलत
आयो ॥ आज धन दीह जाणी सुकतकी दिशा, आज धन दीह
गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं
करी, पुण्यजनार पोतें जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि
शिखर, रुषज्जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंघर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंघर साहिबा, वीरतनी, अवधार, लाख रे ॥
परमात्म परमेश्वर, आत्म परम आधार लाख रे ॥ श्री० ॥ १ ॥
केवलज्ञान दिवाकर, जगि सावि अनंत लाख रे ॥ जासक लोकलो
कको, कायिक होय अनंत लाख रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंद चक्र
सर, सुर नर रहे कर जोर लाख रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणदूति
एक कोन लाख रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ त्ररषकमल पिंजर वस्यो, मुज
मनहंत नित्यमेव लाख रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, जवजव
देवाधिदेव लाख रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण जे तुमें, दूर
दूरो जवहुं लाख रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल
सुख लाख रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंघर जिन स्तवनम् ॥

(३४३)

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपुं निशि
दीप्त जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन
चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावन
शाला आठ जी ॥ आठ जोजन उंचुं देहरं जी, दुःख दोहण
जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ जरते जरायां जलां देहरां जी,
सो जोंयरां घूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने
ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली
जागीरघ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाये जोई जे
ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊने पांखरी जी, आवुं केम
हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह जगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रजु आशा
राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजे कबुक दिवासा
राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चामी चटकी जवमाहि जटकी, नाच्यो में
विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी,
लागुं प्रजुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ ते हम टाली मुगत
संजाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली
वाजे ताली, वात अचंजना वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परजपगारी
पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी
मन शुद्ध धारी, श्रीधमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥
सांजलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक
अरज करे ते राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकशी ॥ तदु

कोना मनवाञ्छित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह विरुद ठे राज-तु-
मारुं, किम राखो ठो दूरो ॥ सेवक० ॥ १ ॥ सेवकने बलबलतो देखी,
मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार
न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही ठे, परतक
वरिसण दीजें ॥ धूंवामे धीजुं नहीं साहिव, पेट पळ्या पतीजें ॥
॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंरुण साहिव, वीनतनी अवधारो ॥
कहे जिनदर्ष मया करी मुऊने, जवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥
जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मऊ ॥
॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आनो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु
मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो जानला, कागल थुं किय
हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें
दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता
घणो मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलयो जीहो
अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण कण कण
जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥
मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रखो, फलशे ते दिन आश ॥
॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास्त ॥
॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ जिनराज, वधाई वाजे ठे ॥
नगर अयोध्यामाहि, मेघ घर आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ॥
भात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जइ
सदु देशमें रे, प्रगट जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इत्यादिक सहु

सुर मट्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मङ्गल पूजन बहुविधे रे;
भिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे,
घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख
कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोदधव रंग रत्नो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत
त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥
सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥
आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥
आ० ॥ २ ॥ इंडाणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी
री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, बेना बीन मोचंग बली री ॥
आ० ॥ ३ ॥ इंड हुकुम कर घरणीइ पठायो, सब वसुधा धन,
धान्य जरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम बिलेरत
गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार ज्यो जिनशासना
व्याधि व्यथा सवि विपत हरो री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो,
मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

॥ चञ्चलीसय अतिसय जुन, वचनातिशये जुन ॥ सो परमैसर
देख जवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ दाख ॥ सिंहासण बेग जग
जाण, देखी जविजन गुणमणि स्वाय ॥ जे दीजे तुज निम्नले
जाण, लहिये परम महोदय दाण ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो आ
दिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोबीस पूजो रे चोबीस सोजागी चो
बीस वैरागी चोबीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा ॥ ३ ॥
(इतना कह कुसुमांजलि चढाई जे चरणोके टीकी दोजे) ॥ गाथा ॥
जोनिअगुण० जा रम्यो, तसुअनुजवएगन ॥ सुहृपुगलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु-
 गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेस्तर निजपद लीन, पूजो प्रणामो
 प्रणय अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह
 जोमे टीकी दीजे) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयात्तकर, निम्मलगु-
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पइधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, जविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर
 मानंदतणी नीसाणी, तसु जगते मुऊ मति उहरांणी ॥ १ ॥ कु-
 सुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे)
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिज्ञासिज्ञंतिजे, सिज्ञस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन
 उविषमण, सोसेवोअरिदंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह
 त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले ॥ उच्चम साधन मार्ग दिखा-
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा
 तोरा च० ॥ (एसा कह खांथोके टीकी दीजे) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म
 विद्विसेत्तजय, साइसाहुणीसार ॥ आचारजउवज्ञायमण, जोनिम्मल
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोहतणो
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुत्तमवर जात गदेवी, तसु चरणे प्रण
 मंत ठवेधी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह
 मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पोडे स्नात्रिया चमर ले के प्रजुजीकूं
 हुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर १ नमिय मनरंग, कल्लाणक वि-
 दि संठविय, करित धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर
 र, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥
 जम्म समय इगवीस, जचहि जावे पूजिया, करो संघ सुज
 गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्भा, जिनजक्की प्रमुख
 गुण परिणम्भा ॥ तजि इंडिय सुख आसंसना, कर आनक वीसनी
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रजावता, मन जावना एदवी

ज्ञावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी ज्ञावदया मन उल्ल
 सी ॥ १ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम
 लूं ॥ आनबंध विचे इक जव करी, अज्ञा संवेग ते धिर धरी ॥ ३ ॥
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवतेज सार ॥ म
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥
 ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेषे ॥ गजवर
 उज्जल सुंदर, निरमल वृषज मनोहर ॥ निरजय केसरिलिह, लख
 मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शशि सुकमा
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश
 पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण
 सायर ॥ बारमें जुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, दोस्ये पूत्र मनोहर ॥
 इंद्रादिक जसु नमस्थे, सकल मनोरथ फलस्थे ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य
 उदय २, कृपना जिणनाह ॥ माता तब रयणी समे, देख सुपन
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले
 सो ज्ञागी ॥ त्रिजुवन तिलक महागुणी, दोस्ये पूत्र निधान इंद्रा
 दिक जसु पाय नमी, करस्थे सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥
 चंडाजलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अबधे मन आ-
 णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, जवजल तारण
 प्रगळ्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविथ पारग सन्नवाह, केवलना
 णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण जल-
 ठ्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तब रोमराय, बलयादिकमां
 निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी कळ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन
 आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुहा आवि तब, कर अंजलि

प्रणमिय मठ सत्थ ॥ मुख ज्ञाषे ए कृण आज सार, तिय लोय
 पढू दीगे उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल
 तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या
 विष चूरण गरुवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समठ, प्रगळ्यो
 तसु प्रणमी हुठ सनत्थ ॥ इम जंपी सकठव करेवि, तव देव
 देवो हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तवरंजा गीत गांन, सुरलोक हुठ मंग
 लनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस ठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥
 ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उठव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥
 सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने ठमंग ॥ ८ ॥
 गुज वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंझादिक हर्ष साथ ॥ सुख
 पांम्या त्रिजुवन सर्व जीव, वधाइए अई अतीव ॥ ९ ॥ (एसा पढ
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साधिया करणा पीठे कलस पंचामृत
 का लेकर खमा रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख
 कार, नरखित मंगल उह विहरण जविक मन आधार ॥ तिहां
 राव राणा हरख उठव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि वि
 शेष जांशी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु
 मरी गावती गुण ठंड, जिनजननी पासे आय पट्टती गदकती आ
 णंद ॥ हे माय ते जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म
 निम्मल करण कारण करित सूर्यकम्म ॥ २ ॥ तिहां जूमिसोधन
 दीप दर्पण वाय वीज्याधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज
 ननि मज्जशकार ॥ वर राखनी जिन पांण बांधी दिये इम आसी
 त, जुग कोमिकोमी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उला
 लनी ॥ जिन रयणीजो दस दिसि उज्जलता घरे, मुज लगनेजो
 ज्योतितचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे,
 तिण अवसरजी इंझासण पिण घरहरे ॥ बूटक ॥ घरहरे आसन इंद्र

चिते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उन्नावकाल जांणी अतहिं
 आषांद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण जगते ऊ
 मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥
 ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह
 दिराव ए ॥ नरहेत्रेजी जिनवर जन्म हुन अवे, तसु जगतेजी सुरप
 ति मंदिरगिर गढे ॥ ब्रूट० ॥ गढे मंदिर शिखर ऊपर नुवन जीवन
 जिनतणो, जिन जन्मउन्नाव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥
 तुम शुद्ध समकित आस्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पा
 तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखावतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज
 लजी सुरवर कोनि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांझमी
 चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी
 स्वामि वधाविया ॥ ब्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं क
 तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीगो मुण समो कुण अन्य ए ॥ हे
 जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उन्नंग तुमचे वलिय
 आपिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज
 करकमले उब्बा, पांच रूपेजी अतिशय महिमार्थे स्तब्बा ॥ नाटक
 विधिजी तब बत्तीस आगलि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ
 भदे ॥ ब्रूट० ॥ सुर कोरुकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा
 वती, अबपरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो
 २ तूं जिनराज जगगुरु एम थे आसीस ए, अम त्रांण सरण आ
 धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरमिरवरजी पां
 नुकवनभे चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥
 तिहां आणीजी शोके निज खोले ग्रह्या, चोसणेजी तिहां सुरपति
 आवी रह्या ॥ ब्रूट० आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणि व
 णाव ए, सिद्धार्थ पमुदा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्यु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोनाकोरने, जिन मज्जनारथ नीर
 ल्पावो सबे मुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रस्ती देव
 कोनी हसी, उल्लासीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पञ्चमदह आदि
 दह गंग पमुदा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति
 अरु कलश कर सदस अघोचरा, उच्च चामर सिंहासण सुजतरा ॥
 उपगण पुष्प चंगेरी पमुदा सबै, आगमे जासिया तेम आणी ठवे
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता
 धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम
 सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म
 आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे
 सर्व आच्या वही, शक्र उडंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥
 इंदोदेवा अणाइकाळो अविष्टपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥
 भिन्नचमोदविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवादिदेवोदिष्टो २ हि
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पज्जणंति वण जवण जोईसरा, देव
 वेमाणिआ जत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पडिया केविमिन्ताणुगा, केवि
 वररमणे वयणेष अइज्जगा ॥ १ ॥ वस्त ॥ तत्थअच्चुयइ इइ आ
 वेस, करजोनी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदञ्जुत
 रूप सरूप जुय कवण एइ पुडंति सामिय, इइ कहे जगतारणो पा
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मेनो करिये तसु अजिषेस ॥
 ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे
 न्दामे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वधते सुज परिणामे ॥ अ
 च्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी
 पमुदा, इम अजिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाथा ॥ तबईसा
 णसुरिंदो, सकंपज्जणेशकरिसुपसाठ ॥ तुम्हअंकेमहताठ, खिणामि
 संअम्हअप्पेइ ॥ १ ॥ तासकिंदोपज्जणइ, साहमीयवज्जलम्भिबहुला

हो ॥ आणाएवंतेणं गिएहह दोउकयत्थाजो ॥ १ ॥ (कलस ढाले)
 सोहन सुरपति वृषज रूप करि, न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय वि
 लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आजरण अजंग ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु जय
 रव कर, नच्चे धरि प्राणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पांभ्यो, ज्ञांज
 सु हिव जवफंद ॥ २ ॥ कोरु बचीस सोवन उवारी, वाजंते वर
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥
 आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्यारो
 धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख
 ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीस
 र, करे जिन जक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर,
 कहता प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळ्याणक, इहा चित्त
 मजार ॥ ६ ॥ खरतर गह्व जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद
 जिन जगते गायो, जनम महोच्चव वंद ॥ बोधबोज अंकूरो उल
 स्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो,
 आत्म दित काज ॥ तजिय विजाव निज जावमा, रमता सिव
 राज ॥ ९० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥
 संपइ सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ ९० ॥ २ ॥ जन्ममहोच्चव
 इण परे, आवक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन
 खंत ॥ ९० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन
 प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मजार ॥ ९० ॥ ४ ॥ इतिस्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महो
 दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलोद्यतः, शुचि मनाः स्नपयामि वि
 सुद्धये ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमङ्गलनेत्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ ब्रजि चं-
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव शुभं
 जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्त्व विकास कृतेर्ष्येः ॥
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं केसरचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रींजी पुष्प पूजा ॥ विक-
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विंशद चेतन ज्ञाव समुन्नवेः ॥ सुपरणा
 म प्रसून धनैर्नवैः, परम तत्त्व मयं हिय जाम्बवं ॥ ॐ ह्रीं
 प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोषी धूप पूजा ॥ सकल कर्म
 मर्द्दधन दाहनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुभ पु-
 ञ्जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु मुद्वर्ततः ॥ ४ ॥
 ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ नविक नि-
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि-
 शुद्ध समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प०
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ षष्ठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि-
 केतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ अथति नव्यजना इति दर्श-
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं
 यजामहे ॥ सातमी नैवेद्य पूजा ॥ सकल पुञ्जल संग विवर्जनं, स-
 हज चेतन ज्ञाव विलासकं ॥ सरस ज्ञोजन नव्य निवेदनात्, पर-
 म निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं ॥
 विहत मोह फलस्थ प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥
 ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं नक्तितः पूजयं-
 ति, सकल गुणनिधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व
 सुब्रावयंति, परम सहज रूपं मोक्षं सौक्ष्मं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 प० अर्थं यजामहे ॥ (वस्त्र) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्ते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वाञ्जनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १. ॥ हैं ह्रीं श्रीं प० वस्त्रं
थजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेबीमें कुंकुम तथा
केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें
ढालै मुखकोस बांध उचरासण कर तीन नवकार गुणै तीन बेर नमस्कार कर हाथ
को धूप देकर रकेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरतो मुनो कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ ज्ञाव ज्ञवै जगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ पर
सिद्ध कीर्धी झोपदी, अंग ठहै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति
सकल जग जागती, द्वारे अश्यो जा० सरसति समरि सुजिंद ॥ सतर
सुविध पूजातणी, पञ्जशिसु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विलेवण
२ वत्थयुगं ३, गंधारुहणचं ४ पुष्करोहणयं ५ ॥ मालारोहण ६ व
न्नयं ७ चुन्न ८, पन्नागय ए आत्तरयो १० ॥ २ ॥ मालकलासुय
वंसुधरं ११, पुष्पं पगरंच १२ अढमंगलयं १३ ॥ धूव जखेवो १४
गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तद्वा जणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध
पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मज्जार ॥ उपदसुता झोपदि परै, करियै विधि
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसास ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अद्वत धोती धरी उच्चि
त मानी रे, अश्योउ० ॥ विद्वत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुजृत
मणिकलस कर विविध वांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं,
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ जणिय कुस
मांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन ईइ जिम तिम अ
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ डुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण मुगति
सोपान ॥ धरमरूप तरू सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

ह्रीं पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पंखाल जिनतनु
 तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र
 कारी, सुख जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण उदयोरी सुधारस, तप-
 त बुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रज्जुकु विलोक नमि जंतन
 प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-
 म निज वृजन पुलावत, पंककु वंश जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि
 तरणि जवलिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥
 शिवपुर पंथ दिखावन दोषी, धूमरि आपदेवल मरदनकी ॥ पू० ॥
 ३ ॥ संकल कुशलरंग मिढ्योरी सुमति संग, जागी सुदिता शुभ
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कदे साधूकीरति सारंगजरकरतां, आस फलो
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पद पंचामृतसु न्हवण कीज । हावे पांवके अंगुठे जलधार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगदूहणसे अंग जिनविष्का प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके लडा रहै)
 रामगिरिमें राग ॥ गात्र लूहै जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससुं हारे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलिये
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे सृग-
 भद कुंकम जेलिये, कर लीये हारे दे० क०, रयण पिंगणि कचो-
 लिये ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंवै सिरै रे देवा, जाल कंठ उर
 उदंत रै ॥ डुख हारै हारे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजियै ॥
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, आवक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम
 सुरगिरै, तिम करै हारे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखलदन,
 श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे जवोदधि तीर
 ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शशिरता संग ॥ चित्त खेद सम
 उपसमें, सुखमें समरसरींग ॥ २ ॥ राग वेलाजत्र ॥ विलेपन कीजै

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद
यक कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर
खंधै सिर जाल कंठ, नर उदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर
त विलेपन, तपति बुझित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव
१ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि
करो सुखलित पूजा, जैसै गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितीय
विलेपन पूजा ॥ १ ॥ एसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्ज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥
लाज्ज ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गौरी ॥
कमल कोमल धन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हरि
अश्यो० ॥ कनक मंजित हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति
अधिवासिया ए ॥ दारि अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्नो
यथा, करिय पहरावणी होइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो दे-
वनें, वस्त्रयुग पूज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरामी ॥
देवद्वययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवद्वय हर अब इतनो मांगुं ॥
तूही हे सबहि हितु तूही हैं सुगति दाता, तिण नमि प्रजुजी कै
चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहै साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण,
देवद्वय मिस देहु उत्तम वांगूं ॥ अवण अंजलि पुट सुगुण अमृत
पीतां, सब राम डख संसय घुरम जांगूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृति-
य वस्त्रयुगल पूजा ॥ (एसा कह प्रजुजीकुं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासस्त्रपूजा ॥

॥ गोरी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण
वास ॥ कुमति कुगति दूरे हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग
सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन धस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो
 अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासितें, पूजै जिन अंग
 उवंगू ए ॥ हा० लाठि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अन्नं
 गू ए ॥ ३ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौरी ॥ भैरै प्रभुजीको पूजा आ-
 नंदमेळै, पू० ॥ वासजवन मोह्यो सबलो ए, संपदा जेळै ॥ पू० ॥
 ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण
 तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन
 राजें तत्ताथेइ, चतुर गति डुरक गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥
 इति चतुर्थी वासकेप पूजा ॥ (एसा कद चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगै पुष्प उत्तम के के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुढप अनेक प्रकार ॥
 प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥
 चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई
 जूहिका, वनलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए,
 अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन
 पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग काननो ॥ सोदे री माई व
 रणें, मन मोदे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसुम जिनच
 रणें ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रभु हम सर
 यै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी, कु० ॥ पंच
 विधै हां० पं० डुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग
 वंतकी, जविक नरां हारे जग सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठी पूजाए ठती, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण
 गूंथी थापे गलै, जेम टलै डुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज
 री ॥ नाग पुलाग मंदार नवमाजिका, मालिकासोग पारिध कली

ए ॥ जलां पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल
 गुलाब पामल जिला ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-
 गरा वेजला मालती, पंचवरणै गुंधी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ हे
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालती ए ॥
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसाजरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक
 एधतिनंदै, चकोरकुं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदै ॥ दे० ॥
 ॥ २ ॥ ठढी रे तोमरपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरियण हारे सप
 होइ तिम ठंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख,
 जविक जगत हारे ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठढी
 तोमर पूजा ॥ ६ ॥ (एसा कद फूलमाला प्रभुकुं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसैं अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवना, सोजै तेम सुगात ॥ चाढो
 जिम चढतां दुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौनी ॥
 कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारे अ० ॥ कुंद
 गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी
 अलंकियै, अंग आलंक मिस माननी सुगति आर्खिगियै ए ॥ २ ॥
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥
 कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोधन जाती ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पामल अरविंदो, अस जुई वेजलवाती ॥
 पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी जाती ॥ पं० ॥
 ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण जाती, जैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवली अथवा धूप लेकर खडा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेहद्वारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु जावसैं ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥
 कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥
 सुरजि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोदण अधिकारो जी ॥
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुज करम चूरीजै जी ॥
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तब
 कुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदरै, गोत्र
 तीर्थकर बांधइ ॥ जलांश गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-
 व्हारस, लावे जिन तनु रागै ॥ धार कपूर जाव घन वरपत, सामेरी
 मति जागै ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूदव गीत समूल ॥ दीजै
 तीन प्रदक्षिणा, परतिद नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौरी ॥ वस्तु ॥
 सदसजोयण २, हेममय दंरु ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत
 घुग्घरीय बाजै ॥ मृदु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद
 ल सयल जाजै ॥ मुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए बि० ॥ न
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर आवक धज वहन, ति० ॥
 आपै दान अजंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नटनारायण ॥ जिनराज
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधवधू
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ जाति वसन पंचवरण बन्यो री,
 विधि कर ध्वजको रोदणा ॥ साधू जणत नवमी पूजा नव, पाप
 नियाणा खोदणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कही ध्वजा चढाई ॥ पहली बाजित बाजतां सधवद्धी चांदीके थालमें
 धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंढली कर धजा पर गुरु
 पास वाससिध कर के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारै ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के लडा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारमे ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथाग्र
नेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे
जिनवरतलै, रयण मुगट जलकंत ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण
कुंरुल अति जंति ॥ २ ॥ राग अधजास गुंनमब्दहार ॥ आसावरी ॥
पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणक लाल रसणिया, हीरा
सोहे रे ॥ धूनी चनी मुख कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अं-
जना, मनमोहे रे ॥ ३ ॥ मौलि मुगट रयणै जळ्यो, काने कुंरुल
हारे अति जुगतै जुळ्यो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक
वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, डुलहारू
रे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ प्रजु सिर सोहे मुगट मणि रयण जळ्यो,
रय० ॥ अंगद वाहुं तिलक जालस्थल, यदुनीको कवण घळ्यो ॥
॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंरुल शशि तरुण मंरुल जीपे, सुरतरुं
अलंकर्यो ॥ डुलकेदार चमर सिंहासन, उत्र सिर उवरि धर्यो,
अलंकृत उचित वर्यो ॥ प्र० ॥ १ ॥ इति ॥ रोक इत्याभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोजतो, फुंदै लहकै फूल ॥ महके
परिमल फल महा, इग्यारमी पूज असूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥
कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू
ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिष
पारुलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुचै, कुश
मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हारे अ० ॥ गुड चंडोदयं जूवकाउमयं,
जालिका गोख चिचोरणूं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो
मन मोह्यो माईरी फूलघर आषांद जिलै, फूल ॥ असत उसत दांम
वधरी मनोहर, देखत तवही सब डरित खिलै ॥ फूल ॥ १ ॥

कुसुम मंजुष शंज गुह्य चंदोदय, कोरणी चारु विभाण सऊँ ॥ इग्या
रमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसैं तिपुरि जजै ॥
॥ १ ॥ फू० मे० ॥ इति इग्यारमी फूलधर पूजा ॥ (फूलधर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके सड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसुम बादलिया फूज ॥ हर
ण ताप डुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग ज़ीम
मढ्हार करुखेकी जाति ॥ मेघ वरसै ज़री पुष्प वादल करी, जानु
परिमाण कर कुसुम पगरं ॥ पंचवरणों वणयो विकच अनुक्रम चिणयो,
अधोवृंते नही पीर पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास मढ्के मिलै ज़मर
ज़मरी ज़िलै, सरस रसरंग तिण डुख निवारी ॥ ज़िणप आगै करै
सुरप ज़िम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥
राग ज़ीममढ्हार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-
जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥
गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणों ॥
गुंजत२ मधुकर इम पज़णै, गुं० ॥ मधुरवचन ज़िनगुण गुणइ ॥ पु०
॥ २ ॥ कुसुमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणों, पु० ॥
समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥
॥ ३ ॥ बारमी पूज ज़विक तिम करै, कुसुम विकस हस उचरै ॥
तसु ज़ीमबंधन अधरा हुवै, जे करहिजे ज़िन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥
इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके सड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै
सुमनै सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल
मिढ्या, अखंर गुणै ज़िढ्या, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्रवण
समाजक विध पंच वरणाक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥
अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, ज़िनप आगै सुधानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टतिद्ध
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वशी ते रसमें,
रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण जज्ञसन नंदावर्क पुर्णकुंज, मन्त्रयुग
श्रीवज्र तसुमें ॥ वर्द्धमानं स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेढहारस घनसार ॥ कर
प्रज्ञ आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलावल ॥
कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सेढहारस सार, गंध
वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस जेखियै,
श्रीवास धूप दसांग अंवर, सुरजि बहु द्रव्य मेखियै ॥ वेरलिय दंन
कनक मंन्ति धूपधांणो कर धैरे, जववृत्ति धूप करंति जौंग रोग
साग अशुज है ॥ १ ॥ राग मालवी गोमो ॥ सब अरति मयन
मुदार धूप, करति गंध रसाख रे, देवाक० ॥ घामधूमावलिध धूसर,
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म
धिमधे करनाख रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विताख रे ॥
आरती मंगल माल रे, मालवीगोमी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति
चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥
जावो अधकी जावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें
आर्या ॥ यद्ददनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण
वर्षा तान वाद्यै, मात्रा जाषालैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः,
स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारोचारी गीतं गानं सुपीयूषं
॥ १ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंजुदि अ
नाहत तानं, केरल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

(३६१)

कुमारी कुमरी आलापै, सुरज उषम नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र
बंध धूयो प्रतिमानं, आयति नंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद
समान रुच्यो त्रिचुवनकुं, सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर
भान शिव श्रीगोते, वनरमी पूज हरै दुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करै ॥)

॥ हूहा ॥ करजोनी नाटिक करै, सज सुंदर सिपागार ॥
जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनद
काव्यं ॥ जावादिप्यवशा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा
सम रुच वेस वयसो मचेज कुंजस्थला ॥ लावसा सगुणा पिकस्त
रई रागाईआ जावणा, कुम्भारी कुमरावी जैन पुरज नचंति सिं
भारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएखंते अहसरं कुमारिकुमरोज सुरियाजे
पदेवेशं संदिदा रंगमनवेपविदा जिणनमंता गायंता वायंता नचंतिति
॥ १ ॥ राग नद त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, झगनदि तचाथेई
॥ अ० ॥ झगनदिश्क औगिशन, मुखेतचाथेईयं ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे
षु वीणा सुरज बाजै, सोलही सिपागार साजै ॥ तनन्नन्नजेईय ॥
अईयो० ॥ ब्रषण ब्रषण ब्रषणाय घुगुरु घमके, रषाससससेईय ॥
॥ अईयो० ॥ २ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेकार क
रणी ॥ सोजंती कुमरीय ॥ अईयो० इस्तक हावादिजावै, ददन्ती
जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटिकतणी, सुरोयाजे
रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगतें जविक
खोलां, आणंद तत्तेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजिन पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजिन पूजा ॥

॥ हूहा ॥ ततधन सुखिरे आनधै, वाजित्र चौविध वाय ॥
जगत जेली जेगवंतनी, सतरमिये सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर
मदल कंसाखो, महुयर मदल सुवज्जिए प्रषवो ॥ सुरनारि नंद तरे,
प्रषणइ तूं नंद जिणनाइ ॥ २ ॥ राग मधुमांधवी ॥ तूं ननिआ

नंद बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्मल वावन मुखवेदी, तिबल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥ जेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैशावंती ॥ जैन शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंध परपरिध वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥ सेव जविक मधुमाधव फेरी, जवनी फेरी नप्पजणंती ॥ कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कदंती ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ जवि तूं जण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ धुणत शक्रस्तव, ध्रुय रंगे हम ठाजै ॥ जवि० ॥ १ ॥ अणदलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सिद्ध आवाजै ॥ सतर सुपूज सुविध आवककी, जणी में जगति हित काजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अद्वार आवण धुर, पंचमि दिवस समाजै ॥ ज० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु पसायै सुविध हय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब लीला सुख साजै ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उचरासण करकै तिलक करके रकेबीमें स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोर चरणकमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी केनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृग लंठन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोदे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै० ॥ ४ ॥ मंगल आरती जोरहि कीजै, जन्म को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपदे
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंदुवा धूप चावल गहूँ चणोकीदाल मूंग उडद
नव प्रकारका नैवेद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्काज खजली मिश्री पतासा
ओला नगैरे अंगलूइणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासलेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे
नवनालीकिकलस ॥ ९ रकेथी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप
नामैं रोकनाणा रु?) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसैं जाननी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणामी करो, तास धरी उर ध्यान ॥
अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमांश ॥ १ ॥ काव्य ॥ ॐ पद्म
सन्नाय मङ्गोभयाणं, सप्पाणि देवा सणसंविद्याणं ॥ सदेसणाणं
दिय सङ्गणाणं, नमो१ होठ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत
प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ अथा जेहना
ध्यानथो सौख्यज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ क
र्या कर्म दुममर्म चक्रचूर जेणें, जला ज्ञव्य नवपद ध्यानेन तेणें
॥ करी पूजना ज्ञव्य ज्ञावे त्रिकाले, सदा वासियो आत्मा तेण
कावै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना ज्ञव्य
ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाणिहारे समेता, सुरेसैं नरेसैं स्त
व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, जवोप
ग्रही च्यार ठे जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकढ्याणके मुख पांमै, नमो
तेद तीर्थकरा मोहकांमै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं,
परम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वरुं
वीरो जी ॥ ती० ॥ छुछाखो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व
ज्ञाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म ज्ञावे चरण शिरता वास

ता ॥ जिन नामकर्म प्रज्ञाव अतिसय प्रातिहारज सोजता, जगजंतु
 करुणावंत जगवंत जविकजनने थोजता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी
 मंथर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर थानक तप कर, जि
 न बांधुं जिननाम ॥ चउसठ इंदै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र
 णाम रे जविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै नं
 दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीनो वंदो रे
 ॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे
 हने होय कळयाणक दिवसे, नरके पिण उजवाळूं ॥ सकल अधि
 क गुण अतिशयधारी, तेजिन नमि अथ टाळूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्न ऊपन्ना, जोग करम खिण जांणी ॥ लेह
 दीक्षा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्प्रवाह ॥ उप
 मा एहवी जेहने गजै, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 १० ॥ आव प्रातीहारज जसु गजै, पेंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबो
 धै करे जगजनने, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥
 ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दबह गुण पर्यायै रे ॥ जेद छेद
 करी आतमा, अरिहंतरूपी आयै रे ॥ १२ ॥ वीर जियेसर उपदिसै, सां
 जलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, रुद्धि मिले सब
 आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ नै हूँ श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान
 शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमस्तिद्धचक्राय अष्टङ्ग्यं
 यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ वूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अ
 शुभ करम दूर ठले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण
 माणंद रमावयाणं, नमोऽर्प्यं चतुष्कयाणं ॥ सम्मग्न कर्मरक्षक

रगाणां, जन्मजरा दुष्क निवारणां ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय
 पार पांभ्या, जरा जन्म मरणादि ज्ञय जेश वाभ्या ॥ निरावरण
 जे आत्मरूपें प्रसिद्ध, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रि
 ज्ञागोनेदेदावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत
 सार्वभ्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्जवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥
 ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ
 व्याबाध प्रज्जुतामई, आतम संपत जूपो जी ॥ उल्लाखो ॥ जे जूप
 आतम सद्गज संपति, शक्ति व्यक्तिपर्यो करी ॥ स्वइव्यक्तेत्र स्वका
 लज्ञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वज्ञाव गुणपर्याय परणति, सि
 द्दसाधन परज्जणी, मुनिराज मानसरदंस समवर, नमो सिद्ध महा
 गुणी ॥ १७ ॥ दाख ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिज्ञाग
 विलेस ॥ अवगाइन वही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे
 ॥ १८ ॥ ज० ॥ पूरव प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग
 ॥ समय एक ऊरथगति जेदनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ज० ॥
 ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लो
 कंत ॥ सादि अनंत तिदां श्रिति जेदनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥
 ॥ २० ॥ सि० ॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम
 गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवमांदि, ते सिद्ध दिनु उल्लास
 रे ॥ ज० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम,
 विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स
 हज समाधि रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ सि० ॥ दाख ॥ रूपातीत स्वज्ञाव
 जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु
 ण खाणो रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ हैं ॥ ह्रीं ॥ इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ वृत्तिय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दिव आचारज पदनणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

इतिमर दूरै हरै, सूरै जाव असेप ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरिणदूरीकय
 कुण्ठहाणं, नमोऽसुरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अ
 स्कंढत्तोसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंजग
 में प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ षट्बर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारने पा
 लवे सावधाना ॥ २॥ जविप्राणिनें देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकळ्या, जगत्ते चिरंजीवज्यो
 शुद्धजळ्या ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवत्तीसे
 धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परजावे निकामो जी ठल्लाखो
 ॥ निकाम निरमल शुद्ध चिदधन, साध्य निज निरधारणो ॥ वर
 ज्ञान दरसन चरण बोरज, सायना व्यापारणी ॥ जविजीवबोधक
 तत्त्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संबर समाधी गत ऊपाधी, दु
 विधत्त पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै,
 मारग जाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या
 चो रे ॥ ज० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वत्तीसगुणैकरि सोजै, युगप्रधान
 जगबोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥
 ज० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम नवएसे, नहि विकथा
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमिये, अकलुस अमल अमाय रे
 ज० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पकिचो
 यण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छुंज आचारज, ते मान्या मुनिम
 नने रे ॥ ज० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदी
 जे जगदीवो ॥ नुवन पदारथ प्रगठनपटुते, आचारज चिरंजीवो
 रे ॥ ज० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज जला, महामं
 त्र शुभ्र ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ते हैं आचार्यपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहा ३
 ॥ अथ चौथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोजित गात्र ॥

उवङ्गायापद अरचियै, अनुजवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतेश्वर
 वित्थारणतप्पराणं, नमोऽवायगकुंजराणं ॥ गणस्सत्तंधारणसायरा
 णं, सत्तप्पणावज्जियमहाराणं ॥ १ ॥ नदी सूरि पिण सूरिगुणने सु
 द्वाया, नमूं वाचकात्यक्त भदमोदमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदा
 ने, जिके सावधाने निरुद्धजिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्गवर्गितगु
 णौघा, प्रवादिद्विपोहेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगणसंधारणेस्थंजपूता,
 उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रज्ञता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ,
 अज्जव महवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंअर्किचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥
 उल्लाखो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुत्तगुत्ता, सुमति सुमता गुजधरा ॥ स्या
 द्वादवादं तत्वसाधक, आत्मपरविजंजनकरा ॥ जवज्जीरुसाधनधी
 रसासन, वदनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदानसमरथ, नमोपाठ
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिद्धाय करे जे, पारगधारण
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रतिक ते, नमो उवङ्गाय उल्लास रे ॥
 ज० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दानविज्ञागे, आचारज उवङ्गाय ॥
 जवत्रिणै जे जहै शिवरूपद, नमिथेने सुपसायरे ॥ ज० ॥ ३५ ॥ सि०
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पादणने पल्लवआणै ॥ ते उवङ्गाय स
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजाणै रे ॥ ज० ॥ ३६ ॥ सि० ॥ रा
 जकुमर सरिखा गणार्चितक, आचारजपद योग, ते उवङ्गाय सदा ते
 नमतां, नावै जवज्जय सोग रे ॥ ज० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनचंद
 नरस समवयणै, अद्वितताप सवि टाखै ॥ ते उवङ्गाय नमिजे जे
 वलि, जिनशासन उजवाखे रे ॥ ज० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥
 तपसिद्धायै रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते
 आत्मा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ नै ह्री० श्रीपा.
 उकपदे अष्ट इव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अय पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमार्ग साधनज्ञानी, साधनान् अया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल आये देह ॥१॥ काव्य ॥ सांख्य स
 साह्यसंजमाणं, नमो २ शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुतगुत्ताणसमाहियाणं,
 सुखीणमाणंदपयद्विआणं ॥ करेसैवनासूरिवायगगणीनी, कंठवर्णना
 तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुतेनहाकाम
 जोगेषुलिता ॥ ४१ ॥ बलाबाह्यअग्र्यंतरेग्रंथटाली, दुईमुक्तिनेयो
 गचारित्रपाली शुजष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निजं पा
 प टाली ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निक्का
 मो निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी
 जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा;
 कान्तसगमुखा धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै
 कर्म जीपै नैव बीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र
 णमो हितजणी ॥ ४३ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूत्रे जमरो बेस, पीका
 तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय
 रे ॥ ज० ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचरंडीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ ज० ॥
 ४५ ॥ सि० ॥ अढारसदस सीलंगना धेरी, अचल आचार च
 रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज०
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बरे बिध तपसूरा ॥ ए
 हवा मुनि नमियै जो प्रगटे, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥ ४७ ॥
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन २ चढतै वानै ॥ संजम
 खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ ज० ॥ ४८ ॥ सि०
 ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषै नवि सोचै रे ॥ साधु सु
 धा ते आतमा, स्युं मुनै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ छैं हँ ॥
 साधुपदं अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छद्मी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर ज्ञापित शुद्ध नर, तत्त्वदर्शी परतीत ॥

(૩૬૯)

તે સમ્યગ્દર્શન સદા, આદરિયે શુભ રીત ॥ ૧ ॥ કાવ્ય ॥ જિણુ
 પત્તેરુહારકણસ્ત, નમો ૨ નિમ્મલદંસણસ્ત ॥ મિઠતનાસાંસમુ
 ગ્ગમસ્ત, મૂલસ્તસધમ્મમહાહમસ્ત ॥ વિપર્યાસદોવાસનારૂપમિથ્યા,
 ટલેજેઅનાદીઅજેકુપથ્યા ॥ જિનોકૈદુઈસદજથીશુદ્ધધ્યાન, કદિ
 બેદર્શનંતેહપરમેનિધાન ॥ ૫૦ ॥ વિનાજેદથીજ્ઞાનમજ્ઞાનરૂપ, ચરિત્રંવિ
 ચિત્રંજવારણ્યકૂંપ ॥ પ્રકૃતિસાતનેઝપસમેકયતેહદોવે, તિહાંઆપરૂપેસ
 વાઆપજોવૈ ॥ ૫૧ ॥ ઢાલ ॥ સમ્યગ્ દરસણ ગુણ નમો, તત્ત્વ પ્રતીત સરુ
 પી જી ॥ જસુ નિરધાર સ્વજાવ ઢે, ચેતન ગુણ જે અરૂપી જી ॥ ચાલ ॥
 જે અનૂપ અદ્વા ધર્મે પ્રગટે સયલ પર ઈદા ટલે, નિજ શુદ્ધ સત્તા જાવ પ્રગ
 ટે અનુજવકરુણાઝઠલૈ ॥ બહુ માંન પરણિત વસ્તુ તત્ત્વે અદ્વ સુલકારણ
 પણે, નિજ સાધ્ય દૃષ્ટે સરવ કરણી તત્ત્વતાં સંપતિ ગિણે ॥ ૫૨ ॥ ઢાલ ॥ શુદ્ધ
 દેવ ગુરુ ધર્મે પરીક્ષા, સદ્દશા પરિણામ ॥ જેદ પાંમીજે તેહ નમીજે,
 સમ્યગ્દર્શન નામ રે ॥ જ૦ ॥ ૫૩ ॥ સિ૦ ॥ મલ ઝપશમ ક્યંઠ
 પશમ જેદથી, જે હોઈ ત્રિવિધ અજંગ ॥ સમ્યગ્દર્શન તેહ નમીજે,
 જિનધર્મે દૃઢ રંગ રે ॥ જ૦ ॥ ૫૪ ॥ સિ૦ ॥ પાંચ વાર ઝપશ
 મ લહીજે, ક્યંઠપસમીય અસંલ ॥ એક વાર કાયક તે સમ્યક્,
 દર્શન નમીઈ અસંલ રે ॥ જ૦ ॥ ૫૫ ॥ સિ૦ ॥ જે વિણ નાંણ પ્ર
 માણ ન હોવે, ચારિત્રતરુ નવિ ફલિયો ॥ સુલ નિરવાંણ ન જે
 વિણ લહિયે, સમકિત દરસન બલિત્ત રે ॥ જ૦ ॥ ૫૬ ॥ સિ૦ ॥
 સમસઠ બોલે જે અલંકરિયો, જ્ઞાન ચારિત્રતું મૂલ ॥ સમકિતદર્શ
 ન તે નિત પ્રણમું, શિવપંથનું અનુકૂલ રે ॥ જ૦ ॥ ૫૭ ॥ સિ૦ ॥
 ॥ ઢાલ ॥ સમસંવેગાદિક ગુણ, લયઝપસમ જે આવૈ રે ॥ દર્શન તે
 દિજ આત્મા, સ્યું હોય નામ ધરાવૈ રે ॥ વી૦ ॥ ૫૮ ॥ ણી
 પ૦ દર્શનપદે અષ્ટ ધ્યં યજામહે સ્વાહા ॥ ૬ ॥

॥ અષ્ટ ૭ મી જ્ઞાનપદ પૂજા ॥

॥ દુહા ॥ સસમ પદ શ્રીજ્ઞાનનો, સિદ્ધવક્ર તપમાદ ॥ આ
 ૪૭

રાષ્ટ્રીજે ગુણ મને, દિનરે અધિકે જાણે ॥ ૧ ॥ કાવ્ય ॥ અન્નાણ
 સમ્મોહતમોદરસ્ત, નમોરે નાણે દિવાયરસ્ત ॥ પંચપંચારસ્સુવગા
 રગસ્ત, સત્તાણસંવત્થપયોસંગસ્ત ॥ હોરેજેદેથીજ્ઞાનગુણપ્રબોધે, યથા
 વર્ણનાસેવિચિત્રાવિબોધે ॥ તિરેજાણીયેવસ્તુષ્ટદ્વ્યજ્ઞાવા, નંદોવે
 વિકઙ્ઠાનિજેઙ્ઠાસ્વજ્ઞાવા ॥ ૫૫ ॥ હોરેપંચમંત્યાદિસુગ્યાનેજેદે, ગુરુ
 પાસથીયોગ્યતાતેદવેદરે ॥ વલ્લીકેર્યદેયાંજપાદેયરૂપે, લહેવિંચમંત્રે
 મંધ્યાનેપ્રદીપે ॥ ૬૦ ॥ હાલ ॥ જવ્ય નમો ગુણે જ્ઞાનને, સ્વંપરપ્ર
 કાશક જાવે જી ॥ પરચાય ધરમ અનંતતા, જેદાજેદ સ્વજ્ઞાવે જી
 ॥ ચાલ ॥ જે મોક્ષ પરણતિ સકલ જ્ઞાયકે બોધવાસ વિલાસતા,
 મંતિ આદિ પંચ પ્રકાર નિરમલ સિદ્ધસાધન લેખના ॥ સ્યાદાવંત
 ગી તત્ત્વરંગી પ્રથમ જેદ અજેવતા, સવિ કંઠ્ય ને અવિકંઠ્ય વસ્તુ
 સંકલ સંસય જેવતા ॥ ૬૧ ॥ હાલ ॥ જંક અંજક ને જે વિણ લે
 દિયે, પેય અપેય વિચાર ॥ કલ્યે અકલ્ય ને જે વિન લદિયે, જ્ઞાને
 તે સકલ આધારે ॥ જ૦ ॥ ૬૨ ॥ સિં ॥ પ્રથમ જ્ઞાન ને પીઠે અદિસા,
 શ્રીસિદ્ધાતે જાણ્યું ॥ જ્ઞાનને વંદો જ્ઞાનમ નિંદો, જ્ઞાનીયે સિંધુસંતે ચા
 ર્યું રે ॥ જ૦ ॥ ૬૩ ॥ સિં ॥ સંકલે ક્રિયાનું મૂલ તે અધ્યા, તેહનું મૂલ
 જે કદિયે ॥ તેહ જ્ઞાન નિતરે વંદીજે, તે વિન કદો કિંમ રદિયે
 રે ॥ જ૦ ॥ ૬૪ ॥ સિં ॥ પાંચજ્ઞાનમાદે જેદ સંદાગમ, સ્વંપરપ્રકાશ
 ક તેહ ॥ વીપકપર ત્રિજુવન જપગારી, વલિં જિમ રવિ શંશિ મેદ
 રે ॥ જ૦ ॥ ૬૫ ॥ સિં ॥ લોક કરથ અથ તિર્યગ્ જ્યોતિષ, વૈમાનિ
 ક ને સિદ્ધ ॥ લોક અલોક પ્રગટ સ્થ જેદથી, તે જ્ઞાને મુજ ગુહી
 રે ॥ જ૦ ॥ ૬૬ ॥ સિં ॥ હાલ ॥ જ્ઞાનાવરણી જે કર્મ છે, ક્ય
 જપશમ તસુ પાયે રે ॥ તો હોરે દિજ આતમા, જ્ઞાન અબોધતા
 જાયે રે ॥ વી૦ ॥ ૬૭ ॥ હૈં હૈં પં જ્ઞાનપદે અષ્ટ દ્વ્યં યજા
 મંદે સ્વાહા ॥ ઇતિ ॥

॥ अथ आठवी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम प्रद चारित्रनो, पूजो धरी कमेद ॥ पूजत
अनुत्तरवत्स मिले, पातक होय उभेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराधिया
खंतिअसक्रियस्त, नमोऽसंजमवीरिअस्त ॥ सद्भावणासंगविवद्विअ
स्त, निष्ठादाणाइसमुल्लासस्त ॥ बलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरा
संसताचाररोधेप्रसंगे ॥ जवांजोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरंतेदचारित्र
अप्राप्तमध्यं ॥ ६७ ॥ होइजाससहिमाथकोरंकराजा, बलिघादशां
शीतलीहोइताजा ॥ बलिपापरूपोपिनिष्पापथायै, धईसिद्धनेकर्मने
प्रारजायै ॥ ६८ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण बलि३ नमो, तत्त्वरमण
जसु मूलोजी ॥ परस्मणीयप्रणो टलै, सकलसिद्धिअनुकूलो जी ॥
उल्लाखो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तल धिरता दममयी, शुचि
परम खंति मुनीद संपद पंच संवर उपजयी ॥ सामायकादिक जे
द धरमै यथाख्यातै पूषीता, अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल काम
कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, अही
यतिने अजिरांम ॥ ते चारित्र जगत जगवंतो, कीजै तास प्रणाम
रे ॥ ७१ ॥ ७१ ॥ सि० ॥ ठण पर जे षट्खंर सुख ठंमी, चक्र
वर्त्त प्रिण वरिष्ठ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में सन्महि धरि
ठरे ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद
नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिष्ठ ज्ञान आनंद रे ॥
७३ ॥ ७३ ॥ सि० ॥ बारमासपर्यायै तेइजें, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥
शुक्ल३ अजिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ ७४ ॥ ७४
॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेइ ॥ चारित्र
नांम निरुके जाख्यूं, ते बंदू गुणगेइ रे ॥ ७५ ॥ ७५ ॥ सि० ॥
॥ ढाल ॥ जांशि चारित्र ते आतमा, निजस्वजावमांदि रमतो रे
॥ लेस्या शुद्ध अलंकस्थो, मोहवने नवि जमतो रे ॥ ७६ ॥ ७६
॥ ठैं हौं ५० चारित्रपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन
॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म
हुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽतिव्रतवोवरस्स ॥ अणो गलक्षीणनिबंधण
स्स, दुसङ्काअत्थाणयसादणस्स ॥ ४७ ॥ इयनवपयसिख्खिदि, विज्जास
मिदं, पयमियसरवगंहीतिरेहसमगं ॥ दिसिवइसुरसारं खोशिपीढाव
थारं, तिजयविजयचक्कंसिद्धचक्कनमामि ॥ ४८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म
कषाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप
बाह्य अन्न्यंतर ड जेदे, कमायुक्ति निर्देत डुध्वान बेद ॥ ४९ ॥ होई
जास महिमायकी लब्धि सिद्धि, अवांगकपणो कर्म आवरण शुद्धि
॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतै, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संके
ते ॥ ५० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवजव सिद्ध
जावै देव नर जवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रजा
वै, सवि दुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ५१ ॥ ढाल ॥ इहा
रोधन तप नमो, बाह्य अन्न्यंतर जेवै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व
ता, पर परणति उन्नेवै जी ॥ १ ॥ उल्लाखो ॥ उन्नेव कर्म अनादि
संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुद्ध योग संग आहार टाली जाव अ
क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व सावै सर्व संवरता करी, निज आ
त्मसत्ता प्रगट जावै करो तपगुण आदरी ॥ ५२ ॥ ढाल ॥ इम न
वपद गुणमंजलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स
भ्यगुणानें जाणै जी ॥ उल्लाखो ॥ निरधारसेती गुणो गुणानो करइजे
बहुमान ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें आयै निरमल ध्यान ए ॥
इम शुद्धसत्ता जलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अकथ अनंत म
हंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ५३ ॥ कलश ॥ इम सखल सुख
कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लब्धि विज्जा सिद्धि मंदिर ज
विक पूजो मन रखी ॥ उवज्ञाय वर श्रीरजसागद ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरणा सेवक देवचंद सुशोजता ॥८४॥ ढाल ॥
 जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म
 खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि
 काचित पिण कय जायै, कमासहित जे करतां, ते तप नमियै ते
 ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही
 पमुहा बहु लद्धि, होवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र
 गटै, नमियै ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव
 सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो
 वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां
 हि पढलो मंगल, वर्षावियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरणा नित न
 मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद
 धुणतो तिहांलीनो, हुं तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोप्रे
 खंनै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ
 छारोधन संवरी, परणित समता योगै रे ॥ तप ते एहिज आतमा,
 वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,
 जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै थिर हुं, परजावै मत
 राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकलं समृद्धिने, घटमांदे रुद्धि दा
 खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणव्यो, आतमराम ठै साखी रे ॥
 वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य ठै जिनकह्या, नवपद मुख्यते जाणो रे
 ॥ ए हतणै अविलंबने, आतमव्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल
 वारमी एहवी, चोथै खंनै पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय
 न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ उँ हँ प० तपपदे अष्ट इव्यं
 यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव ज्ञात्रिया केसरसैं निलक करे, हांथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साधिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके गइली पंचामृतके नह
कलस-ढाले केर-केसरकी टीकी देकर चरणो पर वाससेप चढ़ावे यथाक्रम अष्ट द्र
व्य चढ़ावे ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी घजागोटा चढ़ावे, आचार्यपदमें चिणोकी
दाल पीले रंगकी घजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें लड्ड, बाकी न्यारपद
में चावल चंदनलेपित गोटा चढ़ावे, श्वेतधजा चैत्रीपूजम आसोजीपूजम बगेरोंमें करे,
नमो सिद्धाणं इत्यादि त्रवपदो के न्यारे कह के चढ़ावे, गड़े गुजब पड़े पर त्रव सा
धिया कर बीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र गुजत्र यथाक्रम चढ़ावे ॥

॥ ओली करनेवाला वाससेप पूजा करे तो एकैक पूजामें चालकी गाय
तथा छछाले तक गाय कर अरिहंतपदे वाससेप यनामदे कह्या. एसे तंत्रपदो की
चाल और छछाला पद वाससेप चढ़ावा ॥

॥ अथ दादाशुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्दवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल डुष्कृत
दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंशित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्वरणां
यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं
यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसरवारिषा, निखल
जाण्यरुजातं प्रहारिषा ॥ सकल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु ॥ २ ॥
॥ अथ धूपपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत्-
स्पद वंदकैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥
३ ॥ अथ अकृत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलैः, प्रवर सौ
क्तिकं पूजं वडुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं प० अकृतं यजा
महे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहु विधैश्वरजिर्वदकेयकैः, प्रवर
मोदकपुंज सुखकैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे
॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खुदीपकैः, विमल कं
चनजालन संस्थितैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि० दीपं य
जामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगलैः, प्रसरि
ताखिल दिहुसुधूत्रकः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री० धूपं यजामहे
॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पत्रा मोचं सदाफल कर्कटैः, सुसुखदैः

किंल श्रीफल चिन्तै ॥ सकल मँ० ॥ है ही श्री० फलं यंजामहं
स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्वरुप्रदीप-
क धूप फलादिभिः ॥ सकल मँ० ॥ है ही श्री श्रीजि० अर्घ यज्ञ
महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कौजै, श्रीजिनकुशल सूरि तमरी
जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहण सब
दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमैती धारा, जयवारण तूही सुख
कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरकं तेरी, दूर हरी सब दुर्म-
ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चोथी सुगलपूत जियदायक, सुरवर दुक-
म धरै र्जु पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांव नदी जिण तारी, संघ स-
कलनो संकट चारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ षठी आंनोवज विदारी, विद्या-
पोषी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी,
सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ ८ ॥ इण विध सात आरती
कीजै, मनवंजित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलान खर-
सर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥
इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० इस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो-
नेसे दिन १२ बार सूतक ॥ घर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके
एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पामे, तो दिन १ एक सूतक ॥
परदेश मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैष, घोमी,
सांढ, घरमाहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हवां कले
वर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी
नेषायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ उर जितना मदिनाको गर्ज गिरे, तितने दिन सूतक ॥
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार
 दिन देवपूजा न करे. उर मृतकके सूतक में घरका जो
 मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥
 उर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. उर जो मृत
 कको बुवा होवे, सो २४ चौबीस प्रहर पम्कमण न करे ॥ जो
 सदाका अखंरु नियम होवे, तो समताजाव रख के संवरपणामें
 रहे. परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापना
 जीके हाथ लगावे नहिं. उर जो मृतकको बुवा न हो तो मात्र
 आठ प्रहर पम्कमण न करे ॥

जैसेके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीठें दूध पीणों
 कढ्ये. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीठें दूध पीणों कढ्ये.
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणों कढ्ये ॥

१ ऋतुवती स्त्री, चार दिन ज्ञानादिकको न बुवे. २ चार दिन
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक कां
 रणों तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीको रक्त चलता दीसे, जिसका
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसे पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें
 स्थापना पुस्तक बुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा
 न करे, साधुको पम्कमण. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल
 होय. परंतु ऋतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न
 होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सू
 तक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहेरे.
 सूतकवालेका घरका जखसे तथा अग्निसे १२ बारा दिन तक देव
 पूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत
 कवालेका घर दुर्गन्तिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चौबीस प्रहर पीठें, जैषके मूत्रमें १६ सौल प्रहर पीठें, गामर, गधेनी, घोमीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीठें, नर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीठें, संमूर्धिन जीव उपजे, इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतरसे जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असञ्चायकी विगत कहते हैं ॥

१ धूंआरी पने, तासोम असञ्चाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती गया तथा अरण्य संबंधी रज उने, निरंतर पने तो दिन ३ तीन उपरांत असञ्चाय.

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असञ्चाय.

४ जाना ठांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अने न रहे तो असञ्चाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जालगें होय, तां सीम असञ्चाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असञ्चाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असञ्चाय होय.

७ चैत्र शुद्धि पांचमहंती पन्निवा लगे असञ्चाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजउझावणठं काउस्तग करुं? इठं. अचित्त रज उझावणठं करेमि काउस्तगं. पठी लोगस्त उझायगरेना चार काउस्तग करवा.

८ आशोशुद्धि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंजीने पन्निवा लगे असञ्चाय.

९ दश दिग्दर्शन प्रहर १ एक असञ्चाय.

१० अकाले गाजतां प्रहर ९ वे सीम असञ्चाय.

११ अकालें बीज उडकापात होय तो प्रहर १ असन्ध्या,
१२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पन्वो, बीज, त्रीज,
इयारी असन्ध्या, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असन्ध्या.

१४ जूमिकेंपे प्रहर ७ आठ असन्ध्या,

१५ चंडग्रहणें प्रहर १३ वार उत्कृष्टे, अने जयन्ये प्रहर
७ आठ असन्ध्या.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोख, अने जयन्य प्रहर
१२ वार असन्ध्या.

१७ आस्ताढ चनुमासा पम्किमण गायार्दूती प्रहर १३
वार असंज्जाय.

१८ कार्तिक चनुमासे पण प्रतिक्रम्या पीठें पम्किवा लगें प्र
हर वार असंज्जाय.

१९ मांडोमांडे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असंज्जाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असंज्जाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यांपर्यंत असंज्जाय.

२२ फागण चनुमासे रजपर्वी ज्यां लगें रज उने, अने उप
शामें नहिं, तां लगें असंज्जाय.

२३ दंनको मार पकते जांखगी अनेरो न हुवे, तां लगी
असंज्जाय.

२४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां
लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांडे प्रधान पुरुष विदने, तो अहोरात्र असंज्जाय;

२६ उपाश्रयशी सात घरमांडे जो कोइ पुरुष विदने, तो
अहोरात्र असंज्जाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणानक्षरे एतले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असखाय.

२८ तिर्यचना रुधिर परुवाथी हाथ १०० सो माहे अहो-
रात्र असखाय.

२९ मनुष्यना रुधिर परुवाथी हाथ १०० सो माहे अहो-
रात्र असखाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, हांत, दाढ पमे हाथ १०० सो माहे
सूत्र पढवुं सूजे नाई.

३१ स्त्रीने रुतु आवे अके दिन ३ ऋण असउज्जाय.

३२ आर्द्रा नक्षत्र आठवा पीठें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,
बीजे, मेह वरसे, तो असलज्जाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ स्यात असखाय. अने वीकरीने प्रस
वे दिन ८ आठ असउज्जाय.

३४ कालग्रहण विषकी जखवो गुणवो नाई. प्रहर १२ बार
असउज्जाय.

३५ वैशाखवदि १, आषाढवदि १, कार्तिकवदि १, मागशि
रवदि १. ए चार दिवसें सदैव असउज्जाय अने सूत्रनी असउज्जाय
तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछे न सावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, बील प्रहर २०, गढी
प्रहर २४, दई प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीबर्मा प्रहर २४,
घोमवर्मा प्रहर ४, सट्ट्यां वर्मा प्रहर ४, पूनी प्रहर ८, रोटी प्रहर
४, तथा ६. बाजरा कृष्ण प्रहर १२, जवार कृष्ण प्रहर १२, बा
जरीकी खीचनी प्रहर ८, जवारकी खीचनी प्रहर ८, चावलकी

‘खीचनी प्रहर’ ४, सीयाखे आटो दिन १०, उन्हाखे आटो दिन ८, वरसाखे आटो दिन ५, पक्कान्न सियाखे दिन ३०, उन्हाखे पक्कान्न दिन १५, वरसाखे पक्कान्न दिन ४, उन्हाखे लूण फासू ८ दिन, वरसाखे लूण फासू दिन ३, सीयाखे फासू लूण दिन ५, सीयाखे फासु घी दिन ८, उन्हाखे फासु घी दिन ५, वरसाखे फासु घी दिन ३, तथा इमेसका सियाखे फासु पाणी प्रहर ५, वरसाखे फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजंकी घूघरी पाणी ज़ीजोइ प्रहर ८, पाणीकीउसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलेकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४, वनी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६, रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६, एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चखितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन और पूजन

विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली उर कांकणमोरा मंत्राय के बांधै ॥ (तुं नमो परमेष्ठि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरुआश्रमरक्षा करावै, पीठै एक थालीमें १०, एक थालीमें ९, फेर एक थालीमें फेर ९, ऐसे ३८ नागरवेलका पान रखै, जिसपर पुष्प अकृत नैवेद्य फल रोकड्य यथाशक्ति धरै उरजी पंचाश्रुत फूल पुष्पमाला अकृत नैवेद्य तरे २ के गीले उर सूकेफल अनर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेकां सांमान रखै, फेर स्नात्रपूजा की थापना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीठै दसदिग्पाल के पड़े ऊपर जलका बीटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढ़ाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेलका पान चढ़ावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ नैऋत्य सायुषाय सवाहनाय सपरिकराय इह अस्मिन् जं
 वूदीपे दक्षिणऋतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो
 ऽह्ने आगच्छ १ वलिगृहाण २ नदयमञ्जुदयं कुरुस्वाहाः नैऋत्याय न
 मः इति इन्द्राह्वानपूजा ॥ (पूर्वदिशि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य च
 ढावै) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्ये सायुषाय सवा
 हनाय सपरिकराय अस्मिन् जं वूदीपे दक्षिणऋतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे
 अमुकचैत्ये अमुकपूजामहोऽह्ने आगच्छ १ वलिगृहाण २ नदयमञ्जु
 दयं कुरुस्वाहाः नैऋत्याय नमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ नैऋ
 त्याय सायु० संवा० सपरिहृदा अस्मिन् जं बु० दक्षिण० अमुकन०
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजा० आग० वलिगृ० नदयम० स्वाहा नैऋ
 त्याय नमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय
 सायु० संवा० सप० अस्मिन् जं० दक्षि० अमुक पूजामहोऽह्ने
 आग० वलि० नदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि
 ग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० संवा० सप० अस्मिन् जं० अमुकपू०
 आ० वलि० नदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ पश्चिम० ॥ ५ ॥ अथ वा
 यव दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० संवा० सप० अस्मिन् जं० द०
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजामहोऽह्ने आ० वलि० नदयम० स्वाहा
 नैऋत्याय नमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय
 सायु० संवा० सप० अस्मिन् जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमु
 कपूजामहोऽह्ने आ० वलिगृ० नदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः उत्तर
 दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु०
 संवा० सप० अस्मिन् जं० द० अमुकपू० आ० वलि० नद० स्वाहा
 नैऋत्याय नमः ॥ ईशानकूष ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्मा दिग्पाल पूजा ॥
 नैऋत्याय सायु० संवा० सप० अस्मिन् जं० द० अमुकन० अमुकचैत्ये

अमुक पू० आ० बलि० नदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ नैनागायनमः ॥ १० ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ नैनागाय० सायु० सवा० सप०
अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्यै अमुकपू० आ० बलि०
नदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ १० ॥ अथोदिशि अष्टद्वय चढावै ॥
ऊपर कसूमल वस्त्र बाँधै मौलीसे, पीठे ॥ नैनादिग्पालायनमः
॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकमध्य समेत नागरवेलका पानः आदि
सर्व द्वय चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक घरे अथवा एक
दीपक आगै घरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ नैनमोआदित्याय सायुधाय सवाहना
य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणरतकोत्रे अमुकनगरे अमुक
चैत्यै अमुकपूजामहोदधे आगच्छ १ बलिपूजांगुहाय २ नदयमभ्युदय
कुरु ३ अत्रपीठेतिष्ठ ४ स्वाहा नैसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि
अष्टद्वयचढावै) ॥ १ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ नैचंडाय सायु० सवा० स
प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० बलि १०
नदय० अष्टपीठेति० स्वाहा नैचंडायनमः ॥ २ ॥ अथ मंगल पूजा ॥

नैनमोजोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु०
अमुकपू० आ० बलि० अत्रपीठे नदय० स्वाहाः नैजोमायनमः ३ ॥
अथ बुधपूजा ॥ नैनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ
मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० बलि० नदयम० अत्रपी०
स्वाहा नैबुधायनमः ॥ ४ ॥ अथ वृहस्पति पूजा ॥ नैनमोवृहस्पतये
सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक
पूजाम० आ० बलि० अत्रपी० नदय० स्वाहाः नैवृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥
अथ शुक पूजा ॥ नैनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं०
द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० बलि० अत्र

पाठे उदयम० उंशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥
 उंनमोशनिश्चराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन०
 अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ१ उदयम०
 स्वाहा उंशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ उंन
 मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अनुकचै
 त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० उंराहवेनमः॥८॥
 अथ केतू पूजा ॥ उंनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि
 न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे
 तिष्ठ१ उदय० स्वाहा ए उंकेतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपरलाल
 वस्त्र मोलीते बांधे पीठै नागरवेलकेयान आदि अष्टद्वय रोकन इत्य
 संमेत सामने जेट धरे फेर एता कहे ॥ उंनवग्रहायनमः ॥ च्यारों तरफ
 नवदीपक वा एक दीपक सामने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः
 ॥ बाये तरफ मंरुलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे बाजू वस्तुदिग्पाल
 की थापना करे ॥ जित मद्बोद्धवमें इनोकी पूजा कराणी उस मद्बो
 द्धका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल
 से पवित्रपणे बणायाजया सधवल्लीके या पुरषके हाथसे पांचरंग
 के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा
 मालपूवा पांचरंगकेलड्डु इत्यादिखाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें
 सब इव्य एकठे करै उंर धृत खान् अत्तर गुलाबजल पंचरंगेफूल
 यदजी बाकलोंमें मिलावे पीठै गुरु ३ तीन बार मंत्रके तीन बेर
 बाकुलो पर वासहोप मालै,) अथ वासहोप मंत्र ॥ उंहांहींसवोप
 इवंविंस्परहस्स्वाहा उंशमोअरिहंतांशं उंशमोसिद्धांशं उंशमोआ
 यरिआंशं उंशनोउवज्ञायांशं उंशमोलोएसबसादूषं उंशमोआगास
 गामींशं उंशमोचारणलद्धींशं जेइमे किन्नर किंपुरस मद्बोरग गरुम
 गंधर्व जस्क रस्कत पिशाच चूअ माइणप्पजइउ जिणघरनिवासि

णा सन्निहिंयाय तेसवेविलेवण ध्रुवपुष्पफलवश्वसंयाहिं वलिपनि
 ङंता तुङ्किराज्वंतु पुङ्किरा संतिकराज्वंतु सवजणकुर्वंतु सवजि
 णाणं संहणप्पजावज पसन्नजावतणे सवत्थरक्कंतुकुर्वंतु सवडुरियाणी
 नासंतु सवाशिवमुवसमंतु संतितु ण्णुडिसिवसत्थयणकारिणो ज्वंतु
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासकेपकू मंत्रके बलबाकुलोमें
 मालके सुद्ध करे ॥ पीठै आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखडोने. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर
 इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पदला एक श्रावक चौटीके बाल खों
 लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खमा रहे, २ दूसरा कैसरकी
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा श्रेता, ५ पांचमा धूप
 धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा
 जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग
 लवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खमा रहैं.
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल चंदन फूल बर
 कुलादिक चढावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ
 बलबाकुल चढावै) (अग्निकूशके सामने) ॥ सदावह्निविशो
 नेता पावकोमेववाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥
 (एसा कह बाकुलादिङ्ख्य चढावै) (दक्षिणदिशाकी तरफ) ॥
 दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥
 (बलबाकुल चढावै वाजित्र बजावै) (नैऋतकूशकी तरफ) ॥
 यमापरांतरालोको नैऋतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥
 (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीची दिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

(३८५)

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूप) ॥ हरिणोयादनयस्य
वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि)
॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥
(ईशान कूप) ॥ सितेदृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य०
वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म
वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ उर्ध्वदिसि) ब्रह्मलोकवि
भोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि
ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि कुर्यां पीठे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ ओर बल्लवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ उैनमोईंशाय पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र
नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणाईं अमु रुन
गरे अमुकचैत्ये अमु रुमहोष्ठवे सर्वोपद्वाहलिरक्क्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥
पूर्वदिशाकी तरफ उईंशयनमः ॥ १ ॥ (अग्नि कूप) ॥ उैनमोअ
ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०
सर्वोपद्वाहलिरक्क्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणादिशि) उैन
मोयमाय दक्षिणादिग्धिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण
मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्वाहलिरक्क्ष १ गच्छ १ स्वा
हा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेस्तकूपे) ॥ उैनमोनेरुताय स्वरुगहस्ताय
सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्क्ष २ गच्छ २
स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ उैनमोवरुणाय पश्चिम
दिग्धिष्ठायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०
सर्वोपद्वाहलिरक्क्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायव्यकूपे) ॥
उैनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०
सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्क्ष २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ नैनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्ठायकाय नरवाहनाय
गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ१ स्वा
हा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूपे) नैनमोईशानाय त्रिसूखहस्ताय
ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाह
लि० गच्छ१ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (उर्ध्वलोके) नैनमोब्रह्मणे रा
जहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०
अमु० सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके)
नैनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०
अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलि१ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इत
तरे पदे वाद सर्व देवतोके विसर्जनका श्लोक पढ़ै ॥ यथा ॥ शक्राद्या
लोकपालादिशिविसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ताः, आयातास्त्रात्रकाले क
लुषहृतिरुते तीर्थनाथस्यज्जक्त्याः न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसु
खाः स्वरूपदंसांप्रतंते, स्त्रात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकल्ल्याण
प्ताजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षम
तंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि
पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठे यथाश
क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश
दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्त्रात्रिया मंत्रितजलसे स्नान
करे (जलमंत्र) नै ह्रीं अमृतेश्वराय अमृतवर्षणी अमृतंश्राव
य१ स्वाहा (इस मंत्रसे जलमंत्रे, पीठे) नै ह्रीं अमलेविमले वि
मलोज्ञे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाग्रशुचिशुचिज्जवाभिस्वाहा (इस
मंत्रको सातवेर पढता हुवा स्नान करे, पीठे ॥ नै ह्रीं आँ क्राँ॥ (सा
त वेर इस मंत्रसे वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीठे ॥ नै आँ ह्रीं क्राँ अर्धते

नमः) इस मंत्रसे सात बेर गुरु पाससे केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीठै) नै हँ। अवतर २ सोमे २ कुरुष वडगु २ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ठैकवलीकः कः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसे मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै नर जब मंगलजीके च्यारु तरफ मोलीमेंढल बांधे सोजी इसी मंत्रसे मंत्रायके बांधे. इस तेरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोम्के बैठे तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पढ़िली लिखा दे उससे तीन बेर पढेके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन बेर नवकारमंत्रसे मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो इरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंगलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्थ कराणी चाहिये. पीठै मं दिरजीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टङ्ग्य चढावै. पीठै चंपेलीके तेलमें दिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकङ्ग्य इत्यादि सर्वङ्ग्य (उक्तेत्रपाला यनमः) एसा बोलता हुंवा चढावै. पीठै मंगलजीके दइये तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी आपना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढेके जल चंदनादि सर्व ङ्ग्य चढावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढेके ऊपर लाखवस्त्र मोलीसे बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीठै बायें तरफ नवग्रहके पट्टेकी आपना कर पूर्वोक्त काव्य पढेके इसी मुजब पूजा करै.) पीठै सर्व स्नात्रिया कुं १७ स्तुतीसे देववंदावै.

अदारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पढ़ली इरियावही पन्निक्में च्यार नवकारका काउसंग कर लागेस्स कहे. नीचे बैठके दहिणागोमा धरतीपर रखे के मावागोमा नमी जूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोऽनुषं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्ननु० १
 एक नवकारका काउसग्न करे, नमोर्हत्तु सिद्धा० कहके यदंहीन
 मनदेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वंदण० अन्ननु० एक
 नवकारका काउसग्न इस शुईकी दुसरी गाथा कहे, पुक्क
 रवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्न० शुईकी तीसरी
 गाथा कहे, सिक्षाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका
 काउसग्न शुईकी ४थी गाथा कहे, पीठै बैठके नमोऽनुषं कहके खना
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्न वंदण
 व० अन्ननु० १ नवकारका काउसग्न कर० ॥ रोगशोगादिजिदोंषै रं
 जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विदितानतशांतये ५ (ततः
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्न० १ नवकारका काउसग्न)
 ॥ श्रीशांतिजिनज्जाय ज्ञव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति
 मपनीयते ६ (ततः श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालनीदेयात्
 द्वादशांगीजिनोन्नवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥ (ततः श्री
 ज्ञवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ८ ॥
 (ततः श्रीअंघिकादेवतानिमित्तं०) अंबानिहितमिंबामे सिद्धुस्सम
 न्विता सितेसिंदेस्थितागौरी वितनोत्तुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुडो
 पड्वतःसामां पातुफुल्लत्फणावलो ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदे
 वतानि०) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निजा विरंचकेश्वरीदेवी
 नंदतानिवज्राच्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअनुसादेवतानि०) खड्गले
 टककोदंरु वाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगममनाहुता कड्यासानिकरो
 तुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुबेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्थ श्री
 पार्थस्तूपरकका श्रीकुबेरानगरारूढा सुतांकावतुवोजयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया
 द्वीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥
 (ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-
 दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्रा
 दिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः
 देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धायि
 का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्तको काठस्तगकर स्तुति
 कदे) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु
 चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्त कदके बैठे चैत्यवं० नमोबु०
 जयवीरराय पर्यंत कदै ॥ इस तरे १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठाविधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दी
 पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै (पीठै) सो
 ने चांदी बगेरे के कलसमें अबोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें
 कलस लेके सात नवकार गुणै ॥ नै हूँ जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु
 स्वाहा ॥ इस मंत्रसे सात वेर जलको मंत्रके मंमलजीके चारों तर
 फ धारा देवे, ऊपर जरा गीटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीठै)
 नवतारी मौलीसूत्रका साढातीन आंटा मंमलजीके बाहर करदेवे,
 पूर्वोक्त मंत्रसे मंत्रके मौली तथा मंडल मरोमाफली चारुं तरफ
 धावे (पीठै) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ नै आँ हूँ श्री अर्द्धतेनमः ॥
 इस मंत्रसे मंत्रके मंमलके ऊपर केसरका गीटा देवे (ऊपर) चा
 वलोंको साधियो करै, टीकीदेवे, मंमलके अगामी साधिया चाव
 लोंका वा नंदावर्त्त करके नाथेर रुपिया ऊपर जेट धरै (पीठै)
 केशरचंदन लेकर मंमलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क
 रै ॥ (पीठै) वासुदेव पुष्प हाथमें लेके ॥ नै जूग्लीजूतधात्रीविश्वा

धारैः नमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंरुलजूमें तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरुवासकेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हत्पीठाय नमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंरुलपीठकी पूजा करै (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन बेर मंरुल कों बधावे. नीचे चावलोंका साधिया करके रुपिया नाखेर थापना कों धरे (पीठै) स्नात्रिया मंदरके जीतरसे प्रतिमांजी लायके त्रिं गनेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ नमो अर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग्गुमरी परिपूजिताय च तुषष्टिसुरासुरैर्हतेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति शृष्ट्वा स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंरुलप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वंख, सपेद धजा, ८ कर्कतनरत्न, ३४ होरा, पुष्प अकृत फल नैवेद्य दीप धूप दार्घ-में ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज क-र्षिकायां जिनेश्वरान् आविर्भूतोत्तमहोधा नाग्रतः स्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषे धनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजैः समस्ता तिशयैः कहेतून् श्रीमद्भिनानां बुजकर्षिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हत्प्रयोनमः स्वाहा (इस मंत्रकू बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीठै रकेबीमें लालगोटा, लालवर्षा लालवस्त्र, ८ मांशकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्य पूर्वदले सिद्धान् सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदं प्राप्तां निदधेऽन्नकिनिर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रे शतितः प्रणष्टः दुष्टाष्टकर्ममधिगम्य शुद्धिं प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान् यजेशांति करान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धे प्रयोनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै, सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रकेबीमें पीला गोटा,
 पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि
 सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण
 स्मिन्इलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंस्त्युषैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू-
 रीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैरुनिवा-
 रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्प्रकृतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीच्योनमःस्वा-
 हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य आपना पूजा करै इति ॥ पीठै)
 हरगोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालहु, ४ इंद्रनील, ५५ मरकतप-
 न्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे, उपाध्याय पद पूजा पढे (यथा)
 द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्
 पवित्रेष्वभ्येदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशान्त्यै पठंति येन्या-
 न्यपि पाठयंति अभ्यापकस्तांन पराञ्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज-
 यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेच्योनमः स्वाहा (पश्चिमदि-
 शाकी तरफ उपाध्यायपदकी आपना पूजा करै इति ॥ पीठै)
 स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरुदकालहु, ५ राजपट्ट, २७
 अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै (यथा)
 व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान्
 साधुवासीसमुब्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा-
 दशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प-
 रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुच्योनमः स्वाहा ॥ ११ ॥
 (उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी आपना पूजा करै इति ॥
 पीठै) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व डव्य
 हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै (यथा) जिनेंद्रोक्तमनश्चक्षुः, ल-
 क्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमयनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्वले ॥ ११ ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः (ईशानकूर्णमें दर्शनपदकी

(३९५)

आपना पूजा करै इति ॥ पीठै) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,
 श्वेतवस्त्र, चावलोकाखरु, आदि सर्व द्रव्य ले खमा रहै ॥ काव्य
 पढै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाश्रयप
 त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ तैं हूँ श्री सम्यग्ज्ञानायनमः
 स्वाहा ॥ ७ ॥ (अग्निकूषकी तरफ ज्ञानपदकी आपना पूजा करै ॥
 इति ॥) फेर) रकेबीमें ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे
 तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खमा रहे, काव्य पढै (यथा) सामायि
 कादिजिन्हेंदै, आरित्रं चारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैर्हमैरु
 तेक्रमात् ॥ १३ ॥ तैं हूँ श्री सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा (नैऋ
 त्कूषकी तरफ चारित्रपदकी आपना पूजा करै इति ॥ ८ ॥)
 पीठै) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व
 द्रव्य लेके काव्य पढै (यथा) द्विधाद्वादशधाजिन्नं, पूतेपत्रतपस्व
 यं ॥ निधाययामिज्ञस्तथात्र, वायव्यादिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ तैं हूँ
 श्री सम्यगूतपसेनमः स्वाहाः (वायव्यकूषकी तरफ तपपदकी आ
 पनापूजा करै इति ॥ अथअर्थ) निःस्वेदत्वादिविद्यातिशयम
 यतनन्श्रीजिनेद्रान्सुसिद्धान्, सम्यकादिप्रकृष्टाष्टगुणजृदाचार
 साराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं,
 स्तस्तिद्वयैपाठकानां यतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं
 अष्टदलंपद्मं, पूरयेदहंदादिजिः ॥ स्वादांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त
 ये ॥ १६ ॥ तैं हूँ श्री अहं असिआजसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चा
 रित्र तपसेज्यो हूँ श्री अहं परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव
 परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुर्ज्यननः (इति मूलामंत्र)
 इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो बीचमें चार दिशिमें चार विदि

सोमे एते अष्टदल कमलके आकार नव कोठ मंजुके मध्य जग
में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै (पीठे) दूसरे वलयमें
चूनीके आकार १६ कोठा होय (जिसमें) एकेक कोठाके अर्ध
तर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करै (ओर) एकेक
कोठा बीचमें खाली रखा दे उत्तमें अनाहतपद नै हौं एमो अरि
हंताण) एसा पद स्थापन करै (पीठे) एक रकेबीमें मिश्री ल-
वंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खना रहे. अनाहन
पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै (यथा)
(नै हौं एमो अरिहंताण) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई
उ ऊ रु ऋ नृ ए ऐ उ औ अं अः (नै हौं स्वर वर्गायनमः)
(इहां) १६ दाख चढावै २ (नै हौं एमोअरिहंताण) मिश्री
लोंग १ क ख ग घ ङ (नै हौं व्यंजनकवर्गायनमः) १६ दाख
चढावै ४ (नै हौं एमोअरिहंताण) ५ च छ ज झ ञ (नै हौं
चवर्गायनमः ॥ ६ (नै हौं एमोअरिहंताण) ७ ट ठ ड ढ ण
(नै हौं टवर्गायनमः) ८ (नै हौं एमोअरिहंताण) ९ त थ द
ध न (नै हौं तवर्गायनमः) १० (नै हौं एमोअरिहंताण) ११
प फ ब ज म (नै हौं पवर्गायनमः) १२ (नै हौं एमोअरिहंता
ण) १३ य र ल व (नै हौं यवर्गायनमः) १४ (नै हौं एमो
अरिहंताण) १५ श ष स ह (नै हौं शवर्गायनमः) १६ पहिले
अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोलेश दाख चढावै सब ए६
(उर) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोंमें ६४ चोसठ
दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अब तीसरा वलयमें) चार दिश चार विदिशिमें आठ
परमेष्ठिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके
बीचमें बलाका तीन देवे तीनु बलाकामे २४ खाना होय एके
५०

कं खानेमें १ दोय १ दोय लब्धिपद स्थापन करणेतैं चोवीस घरो
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अय लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें (ॐ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा) एसा
८ वेर कदके ८ बीजोरा चढावै, उर लब्धिपदका नाम बोलके खा
रका ४८ चढावै (यथा) ॐ ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं
अर्हणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥
॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसबोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअ
णंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोकुब्बुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं
अर्हणमोबायबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं अर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥
॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोस
यंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अ-
र्हणमोबोदिवुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥
ॐ ह्रीं अर्हणमोविज्जलमईणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोदसपूर्वीणं ॥ १७ ॥
ॐ ह्रीं अर्हणमोचउदसपूर्वीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअङ्गनिमत्तकु
सत्ताणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोविज्जवणइट्ठिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं
अर्हणमोविक्कादराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोचारणलद्धीणं ॥ २२ ॥
ॐ ह्रीं अर्हणमोपप्सासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोआगासगामी
णं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोस-
प्पियासत्ताणं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अ-
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥
ॐ ह्रीं अर्हणमोजयवया महाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिणीं ॥ ३० ॥
ॐ ह्रीं अर्हणमोउगातवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाण-
सियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोवक्कमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हण

भोदित्तवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोततंतवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रींअ
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ
 -ह्रींअर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरपरिक्लमाणं ॥ ३९ ॥
 ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरबंजयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोआमोसहि
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रींअ
 र्हणमोजल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोविप्पोसहिपत्ताणं ॥
 ॥ ४४ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोसबोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोम
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रींअर्ह
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रींअर्हअरुयाललब्धिपेदज्योनमः ॥ इत
 तरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका
 चढ़ावे ॥ (पीठे) मंरुलजीके गलेमें -ह्रींकारजी स्थापन किया हे
 (जहांसे) सादातीन नवलाका मंरुलजीके चोतरफ देके नीचे
 (क्रों) एता अकर लिखा हे (जिसके) प्रथम वलयमें आठे दि-
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दानिमफल चढ़ाव
 (यथा) ॐ-ह्रींअर्हत्पाडुकाज्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढ़ावे ॥ ॐ-ह्रींसि
 हपाडुकाज्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रींआचार्यपाडुकाज्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ
 -ह्रींगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रींपरमगुरुपाडुकाज्योनमः ॥
 ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रींअष्टगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रींअनंतगुरुपाडु
 काज्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रींअनंतानंतगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ
 -ह्रींअष्टगुरुपाडुकाज्योनमः स्वाहाः ॥ इत तरे ठेके वलयमें ८ वा
 रुम चढ़ावे (पीठे) सातमा वलयमें आठों दिशामें जयादिक् ८
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढ़ावे (यथा) ॐ-ह्रींजयायैनमः
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रींजंजायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रींविजयायैनमः
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रींयंजायैनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रींजयंत्यैनमः
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रींमोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रींअपराजिता

यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अंघायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इसी
 तरे) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढ़ावै (पीठे) आठमें वलयमें
 १६ बिद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके बर्ण लपेटी १६ सुपा
 री चढ़ावै (यथा) ॐ ह्रीं रोहण्यैनमः ॥ १॥ ॐ ह्रीं प्रहसैनमः ॥ २॥
 ॐ ह्रीं वज्रमृगं वलयैनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ
 ह्रीं चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं
 काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं माहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं
 गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र
 भद्राज्वालयैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यैनमः ॥ १२ ॥
 ॐ ह्रीं विरोध्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अद्भुतायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं
 मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं माहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे
 आठमां वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढ़ा के पूजा करै पी
 ठे नवमें वलयके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ १४ की थापना
 कर पूजा करै ॥ १४ पुंगीफल चढ़ावै (यथा) ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १॥
 ॐ अजितवलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ इरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यैनमः
 ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः
 ॥ ७ ॥ ॐ नृकुट्टियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः
 ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंदायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदि
 तायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदप्पाययिनमः
 ॥ १५ ॥ ॐ मिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ बलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐ धार
 ण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः
 ॥ २० ॥ ॐ गंधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्माव
 स्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐ सिद्धाधिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दक्षिणे त
 रफ १४ यद्दाराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढ़ावै ॥
 (यथा) ॐ ब्रह्मशांत्यैनमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २५ ॥ ॐ गो

मेधायनमः ॥ २२ ॥ उँनृकुटयैनमः ॥ २१ ॥ उँवरुणायनमः ॥
 २० ॥ उँकुबेरायनमः ॥ १९ ॥ उँयक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ उँगंध
 र्वीवनमः ॥ १७ ॥ उँगरुमायनमः ॥ १६ ॥ उँकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥
 उँपातालायनमः ॥ १४ ॥ उँषण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ उँकुमाराय
 नमः ॥ १२ ॥ उँयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥
 उँअजितायनमः ॥ ९ ॥ उँविजयायैनमः ॥ ८ ॥ उँमातंगावनमः
 ॥ ७ ॥ उँकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ उँतुंवुरुयैनमः ॥ ५ ॥ उँयक्षनाय
 कायनमः ॥ ४ ॥ उँत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ उँमहायकायनमः ॥ २ ॥
 उँगेमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ द्वारपालकी
 स्थापना कर के पीछा बलवाकुल चढावे (यथा) उँकुसुमायनमः
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ उँअंजनायनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ उँवामनाय
 नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ उँपुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥
 पीठे चार विदिस्की तरफ चार वीरपदमें काले बलवाकुल चढावे
 (यथा) उँमाणज्जायनमः ॥ १ ॥ उँपूर्णज्जायनमः ॥ २ ॥ उँक
 पिलायनमः ॥ ३ ॥ उँपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ (इस तरे दसमें बल
 यमें आठ दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल
 सके आकार ऊपरसे कियाज्या सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठि
 काणे नवनिधान पढ़े तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति
 रोकनाणा मालके स्थापन करै) (यथा) उँनैसर्पकायनमः ॥ १
 ॥ उँपांडुकायनमः ॥ २ ॥ उँपिंगलायनमः ॥ ३ ॥ उँसर्वरत्नायनमः
 ॥ ४ ॥ उँनहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ उँकालायनमः ॥ ६ ॥ उँमहा
 कालायनमः ॥ ७ ॥ उँमाणवायनमः ॥ ८ ॥ उँशंखायनमः ॥
 ९ ॥ (इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे
 कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें बंगली
 का आकार किया है (जहां) उँहोविमलस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ एसा

कदकेचढ़ावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के वायनेत्रके पास वंग-
 लीमें (उँहोत्रपालायनमः) एसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठै तीसरा
 कोइलाफल) हाथमें ले के नीचै पीँदिके दक्षिणे तरफ वंगलीमें)
 उँचक्रेश्वरैनमः (एसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ (पीठै) चौथा को
 इलाफल हाथमें ले के नीचे पीँदिके बाँये तरफ वंगलीमें (उँअप्र
 सिद्धसिद्धचक्राधिष्ठायकायनमः) एसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ (पीठै
 दसूं दिशामें इँझादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै, ब्रह्मसकेतो अ
 पणा ९ वर्षा मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इव्य चढ़ावै अथवा सर्वकों
 एक इव्य सर्व समान चढ़ावै (यथा) उँइँझायनमः ॥ १ ॥ कनक
 वर्षा चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकइव्य आ
 दि सर्व इव्य चढ़ावै ॥ (अग्निकूले) उँअमयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्षा
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) उँयमायनमः
 ॥ ३ ॥ काले वर्षाका वस्त्रादि इव्य चढ़ावै ॥ ३ ॥ (नैरुतकूले)
 उँनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्षाका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै (पश्चि
 मदिश) उँवरुणायनमः ॥ धूसरवर्षाका सर्व इव्य चढ़ावै ५ (वा
 यव्यकूले) उँवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्षाका वस्त्रादिक द्रव्य च
 ढावै ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) उँकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव
 र्षाका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूले) उँइशाना
 यनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्षाका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥
 (अथोदिसि) उँनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्षाका वस्त्रादिक इव्य
 चढ़ावै ॥ ९ ॥ (उर्द्धदिशि) उँब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्षाका
 वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था
 पन पूजन करै ॥ (पीठै यंत्रके पीँदीके स्थानक नव कोठा किया
 जया दे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) उँसूर्यायनमः
 लालवर्षाका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ उँसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ मैत्रोमायनमः ॥ ३ ॥ लीं
 लरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ३ ॥ मैत्रुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंजरंग
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ४ ॥ मैत्रुहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ५ ॥ मैशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंदोल
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ मैशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ मैराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ मैकेतवेनमः ॥ ९ ॥ गीटरंग व
 स्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ९ ॥ इस तरे नीचे नवग्रहकी स्थापनपूजा
 करै. पीठे स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढ़ावै चैत्यवंदन कर शुद्ध क
 इकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीठे गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर
 वास्तुकेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठे यथाशक्ति साथ
 मी वास्तुछय करै ॥ इति मंजुल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये
 (जब) कोई श्रीमंत मंडलीकी तपस्या करै तब तो गए महीने मं
 नुल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण
 जये बाद उद्भव के साथ मंजुलपूजा कराकें नव२ उपगणशेसे उ
 द्यापन करै. जलजात्रादि अष्टाईमदोद्भव कर धर्मशास्त्रासिपागरे
 (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च
 ढावै. इतिरहित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढ़ावै (नर) पंचा
 यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंजुलपूजादिक नवपदपूजा
 अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणजस्वामीसर्वज्ञाय
 नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा०

धनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥
 ॥ ८ ॥ श्रीरुष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री
 अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तर्मेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥
 श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र
 प्रज्ञसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त
 सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ रूपज्ञनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिज्ञद्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥
 अजितज्ञद्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजे
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति
 सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पुंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमृ
 र्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ आगमिकसर्वज्ञा०
 ॥ १० ॥ कुक्तिनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥
 महत्त्वनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ जलमृत
 सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमैत्रसर्व
 ज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा०
 ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥ ०
 २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजलसर्वज्ञा ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा ॥ २५ ॥
 श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥
 श्रीरुषिपालसर्वज्ञा ॥ २८ ॥ श्रीकुंगदत्तसर्व ॥ २९ ॥ श्री
 वज्रधरसर्वज्ञा ॥ ३० ॥ श्रीज्ञानंदसर्वज्ञा ॥ ३१ ॥ श्रीती
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ ॥ पातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा ॥ १ ॥ श्रीज्ञमिपतीसर्वज्ञा ॥ २ ॥
 श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा ॥ ४ ॥ श्रीपेश
 नाथसर्वज्ञा ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व
 ज्ञा ॥ ७ ॥ श्रीमहाधोषसर्वज्ञा ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा ॥
 ९ ॥ श्रीज्ञमिपालसर्वज्ञा ॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा ॥ ११
 ॥ अतिव्युत्तसर्वज्ञाय ॥ १२ ॥ श्रीदलितगंगसर्वज्ञा ॥ १३ ॥
 श्रीतीर्थज्ञानसर्वज्ञा ॥ १४ ॥ श्रीअरचंडसर्वज्ञा ॥ १५ ॥ श्रीतमा
 धिसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथ
 सर्वज्ञा ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर
 सर्व ॥ २० ॥ श्रीवैवेन्द्रनाथसर्वज्ञा ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा ॥
 २२ ॥ श्रीनद्योतनाथसर्वज्ञा ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा ॥
 २४ ॥ श्रीकपिनाथसर्वज्ञा ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा ॥
 २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा ॥
 २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा ॥
 ३० ॥ श्रीसहस्रान्नसर्वज्ञा ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धमयमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा ॥ १ ॥ श्रीजाविरुषिकसर्वज्ञा ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा ॥ ४ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा ॥ ५ ॥
 श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा ॥ ६ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा ॥ ७ ॥ श्रीज
 गत्पूज्यसर्वज्ञा ॥ ८ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा ॥ ९ ॥ श्रीमहाभ

हेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरज्जुतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलज्जद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०
 ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीहृदयसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा
 यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीभोक्तृनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ श्रीपुष्पकेतु
 सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमतकेतुस
 र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितिये महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र
 नाजसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीवयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुज्जसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजङ्गुप्तसर्व
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुदधसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥
 ॥ २० ॥ श्रीअजिचवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मज्जुतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥
 २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतत्र
ह्यनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेन्नरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०
॥ १ ॥ (धातकीखंमेप्रथमन्नरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥
(धातकीखंमे द्वितियन्नरतेजिननाम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥
॥ ३ ॥ (पुष्कराद्वैप्रथमन्नरतेजिननाम) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४
॥ (पुष्कराद्वैद्वितियन्नरतेजिननामः) प्रज्ञावकनाथसर्व० ॥ ५ ॥ (जं-
बुद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननाम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धात
कीखंमेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ (धातकीखंमे
द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्कराद्वैप्रथमएरव
तेजिनना०) आत्माहिकसर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ (पुष्कराद्वैद्वितियएरवतेजि०)
श्रीवलिन्ननाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका
गुणना संपूर्ण ॥ १६ स्याम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०
श्वेत, सर्व संख्या १४० ॥

॥ अय सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त-
रपद नामी रुंधरा, कारण तिव सुखकंद ॥ १ ॥ वाङ्मयासरदातपो,
जर धरे समरण शक्ति ॥ सद्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु
वि जक्ति ॥ २ ॥ ठे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाज ॥
पूर्वापर जवि तेहने, विजय नामको लाज ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु
प्रतिदिशा, कयनामै युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतपो, कारण वि
श्वावीस ॥ ४ ॥ खंरु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन
गिरि युग ठे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

णिये, द्वीप सकल गुणखांख ॥ अर्थ ज्ञाग जसु उत्तमें, त्रिरि युग
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो बत्तास
 ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ठ्युत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढाई
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिदां सदा, ज्ञाण्यो
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचरथा जे जिनरा
 थ ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञाणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (द्वाल
 पारणोकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिदाज ॥ ज्ञविकजन ध
 रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां
 णी गुणपैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि
 चरथा महियल बोधता जी, विजय मऊार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥
 पंचर ज्ञरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता
 रता जी, समरथां संपति थाय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन
 वरू जी, अतुल सकल गुणखान ॥ श्यांमवरण सोले कहा जी,
 अकल कला द्युतिवान ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कहा जी,
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊलखद ज्ञाथरू जी, कनकवर
 णा बत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित
 विमल प्रकाश ॥ ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, बीस प्रमित
 जपमाख ॥ त्यक्त कषाय शुज्जातमां जी, चरिये ज्ञाव विशाल ॥
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण दुयां जी, उजमणो निज शक्ति ॥
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ
 नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत मूनि सर लोक नारद चंड ज्येष्ठ पटुर ए, वदि सप्तमी रवि
दिने हितवल्लभ कथनधर झूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-
त जैनचंड सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए
॥ ११ ॥ इति श्रीसचर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती-मतिज्ञानावरणीरहितायश्री
सिद्धान्तनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धान्तनमः २, अवधि
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणीरहितायश्रीसि
द्धान्त ४, केवलज्ञानावरणीरहितायसि० ५, (दर्शनावरणकर्मकी नव
प्रकृती ए)-चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण
र० ७, अबधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निष्कार्म
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच
ला० १३, धीणाद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकृति २)-समावे
दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी
कर्म की प्रकृती १८)-सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय
१८, मिश्र्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २१, अनंतानुबंधिलोचर०
२१, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोचर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,
प्रत्याख्यानीलोचर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर०
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोचर० ३५, हास्यमोह
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, डुंगमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ (आयुर्कर्मकी प्रकृति ।

४)-देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३)-देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, ऐकंद्रीजातिर० ५३, बेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीर० ५८, वैक्रियशरीर० ५९, आधारकशरीर० ६०, तेजसशरीर० ६१, कर्मणशरीर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आधारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्किबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आधारकबंधनर० ७२, आधारकतेजसबंधनर० ७३, आधारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतेजसकर्मणबंधनर० ७६, आधारकतेजसकर्मणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आधारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररुषज्जनाराचसंघयणर० ८६, रुषज्जनाराचसंघ० ८७, नाराच० ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्वसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुजसंस्थानर० ९६, हुंरुकसंस्थानर० ९७, ऋणवर्षरहि० ९८, तीलवर्षर० ९९, लोहितवर्षर० १००, पीतवर्षर० १०१, स्वेतवर्षर० १०२, सुरजिगंधर० १०३, डुरजिगंधर० १०४, तिक्तसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लसर० १०७, कषायसर० १०८, मधुरसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, जारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुक-
 मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरदितया०
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुजविद्यायोगति १२२, अशुज-
 विद्यायोगतिर० १२३, पराधातनामकर्मर० १२४, कृतासनामकर्म
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ
 शुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थीकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम
 कर्म १३०, उपधातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बाद
 रनामकर्मर० १३३, पर्यासिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुजनामकर्म १३७, सौजाग्यनाम
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,
 यशनामकर्म १४१, आवरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनामकर्म १४३,
 अपर्यासिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर
 नामकर्मर० १४६, अशुद्धनामकर्मर० १४७, दौर्जाग्यनामकर्मर०
 १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयश
 नामकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृति २) उच्चैर्गोत्र १५२, नी
 चैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर०
 १५४, लाजान्तरायकर्मर० १५५, जोगांतरायकर्मर० १५६, उप
 जोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धान्तनमः ॥
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणानो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंजव जिनराज ॥
 मूलकरम उत्तर पगड़, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकूं
 कय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदा
 नंद विदधन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयन्ति विस्ता

૨ ॥ વરણું જીવિજન હિતજીણી, પ્રવચનને અનુસાર ॥ ૩ ॥ (દાલ ॥
 ॥ રામચંદ્રેકે વાગ એ દેશો) ॥ અષ્ટ કર્મ તીર્થેશ, નાંમે જિન્ન કહ્યા
 રી ॥ હેયવસ્તુ પરિત્યજ્ય, આતમગુણ ગ્રહ્યા રી ॥ ૧ ॥ નાણ દંડાણ
 આવર્ણ, વેદની મોહ વૂરો રી ॥ આઠલો નામ કર્મ, કર્મતરાય ચૂરો
 રી ॥ ૨ ॥ જ્ઞાનાવરણી કર્મ, દર્શનાવર્ણતથો રી ॥ વેદનીય અંતરાય,
 તીસ કોનાકોનિ જાયો રી ॥ ૩ ॥ નામકર્મ ગોત્રકર્મ, વીસ કો-
 નાકોનિ હુવે રી ॥ આયુ સાગર તેતીસ, દિવ મોહનીય યુવે રી ॥
 ॥ ૪ ॥ સત્તર કોનાકોનિ સાગર માંન જાયો રી ॥ એ બલ્કલ
 શ્રિતિ જોન, કેવલી કાલ ગણ્યો રી ॥ ૫ ॥ જયન્ય સ્થિતિ પંચકર્મ,
 અંતરમુદુર્ત્તપણો રી ॥ નામ ગોત્ર દોય કર્મ, આઠ મહુર્ત્ત ગણો રી ॥
 ॥ ૬ ॥ અકપાય વેદની વર્જ્ય, વેદનો કર્મ વઢે રી ॥ વારે મહુર્ત્ત
 માંન, શાસ્ત્રાનુસાર મુદે રી ॥ ૭ ॥ નાણાવરણ અંતરાય, પંચ જ્ઞેદ
 જુદા રી ॥ વેદનોય ગોત્ર કર્મ, દો દો જ્ઞેદ જુદારી ॥ ૮ ॥ દર્શના
 વરણ નવ જ્ઞેદ, આયુ ચ્યાર વિયે રી ॥ મોહ કર્મ અનવીસ, સૌ ત્રિક
 નામ સધે રી ॥ ૯ ॥ એકસો અઠાવન, ઉત્તર પ્રકૃતિ કહી રી ॥
 અષ્ટ કરમના જાણ, સર્વે વિકલ્પ સહી રી ॥ ૧૦ ॥ દાલ ॥ નણ
 દલ ચુમલે જોવન જિલ રહ્યો ॥ એ દેશી ॥ પાટે સમ જ્ઞાનાવરણ
 ઠે, દર્શનાવરણ પ્રતીહાર, જીવિયણ કર્મ વિવેચન કીજયે ॥ મધુ
 લિસા અસિધારાની પરે, વેદની કર્મ મુદાર ॥ જીવિય ॥ ૧ ॥ મ
 દિરાઠાક સમાન ઠે, મોહ સુજટ મહરાણ, જીવિ ॥ ૨ ॥ લોને બંદીલાંન
 સારલો, આયુકર્મ પ્રમાણ ॥ જ ૦ ક ૦ ॥ ૨ ॥ ચીતારે સમ નાંમ કહીજે,
 ગોત્ર કુંજાર સમાંન, જ ૦ ॥ શ્રીધર જંફારી સમ દાલ્યો, અંતરાય
 કુપ્યાંન ॥ જીવિ ૦ ક ૦ ॥ ૩ ॥ અષ્ટ કર્મ એ જાવના, વીર વઢે વ્યા
 ર્યાન, જ ૦ ॥ કર્મ સંસાર સ્વરુપ ઠે, અકરમ સિદ્ધિ સુથાન ॥ જ
 વિ ૦ ક ૦ ॥ ૪ ॥ નિજ સાસાડન મિત્રા રિતિ, દેસવિરિતિ પ્રમત્ત,

ज० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सर्बमै, करमबंध अठ सत्तै ॥ ज० क०-
 ॥५॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमै, आयु वरज संत बंध, ज० ॥ सुदुम-
 संपराय दशशम ठाणें, बिन मोहायु षट खंध ॥ जवि० क० ॥ ६ ॥
 उपशम खीण सजोगमै, वेदनी बंध उदार, ज० ॥ अयोगी गुण
 चवदमै, नही बंधत कर्म द्वार ॥ ज० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु
 कहुआ, मिथ्यात अविरत जोय, ज० ॥ क्रोध प्रमुख कषायशी, यो
 न युगत च्यार होय ॥ ज० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमै, कर्म
 स्थिति पद लेय; ज० ॥ कर्म वेद पणवीसमै, कर्म प्रकृति वेद ज्ञेय
 ॥ जवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयमी कर्मग्रंथमै, कर्मतणो निरधार,
 ज० ॥ बंध सत्ता उद्दीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ जवि० ॥ क०
 ॥ १० ॥ इकसो अढवन अथा, चउत्थजत्त तप सार, जवि० ॥ त
 प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ ११ ॥
 अष्ट ज्ञानोपगरण जला, अष्टगंगल वृद्ध आल, जवि० ॥ वात्सल्य
 चउविद्ध संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज० ॥ क० ॥ १० ॥ इडा
 रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम
 लही, शिवरमणी जरतार ॥ ज० क० ॥ ११ ॥ कलश ॥ जिन-
 चंद सूरि मुखिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचने
 स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद
 फाल्गुन द्वादशी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित्त
 नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयमी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर ममी, पंच परमेष्टि सार ॥ परम
 मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर
 आर्य सुदस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरबंतणो,
 नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट सदा

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमृत वरं विस्थातं,
 सात गुरु अकर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,
 जाये अस्कोरे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर दीपार्द,
 सिद्धावट गांम, पासे परबत कंदरा ए ॥ चोमासी पञ्चस्काण, करने
 तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ ज्ञील ज्ञीलणी वेअ,
 मन सुध जावसुं, नवकार मुनि पासे ज्ञणी ए, बीजे जव राज-
 सिंद, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत
 नंपुरी यसोज्झ, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति
 आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुण बहु जणूं ए ॥ ५ ॥
 एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धरयो ए ॥
 नवकारने परजाव, सबल संकट टळ्यो, सोनापुरसो तिण करयो ए ॥
 ॥ ६ ॥ ढाल १ ॥ चरणकरणाधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री
 नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज्ज ठामो जी ॥ सेठ सु-
 ज्ज तणी सुता श्रीमती, आविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥
 मिश्यामते किय एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम
 नं मूके हणिये मन धरी, कलसमें मूक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥
 साप फीटीने फूलमाला अई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने
 कुटंब सद्गू प्रतिबूज्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 क्तिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन वूठो मेहो जी ॥ नदीपूर
 बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद
 लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर जहू करे
 नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी
 जिनदाससेठनी, आवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार जण बीजोरो
 अहो, बूज्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी
 खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

ज्ञा नांमे नारि सुहाया ॥ चंरुपिंगल चोरथो नृप हारा, गणिका
 ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पदस्थो हार ते जाणी, सूखी
 दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पढतावे, चोर समीपे
 ठानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंजित
 सीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एखे ऊधरियो ॥
 ॥ ३ ॥ मधुरानगरी जिशदाससेठ, तिहां किण हुंरुक पापनी डेठ ॥
 एकदा चोरी करतां जाड्यो, राजा हुकमें सूखी घाड्यो ॥ ४ ॥
 हुंरुक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार
 दीधो उपगार आंशी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणो ॥ ५ ॥
 चंपानगरीमें जे कीधूं, सुज्जल सती निकलंक प्रसीधूं ॥ श्रीनवकार
 प्रताद ते जांणो, मनमें एदनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ दाल ४ ॥
 चरतनृप ज्ञावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, वांजल।
 वांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपानी चलावियो ए,
 अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूया एक चारतो ए,
 नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो
 ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ इत्या चार करी हवे ए, वली करथा पाप
 अनेक, न० ॥ डुटकरबारो एदथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥
 ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणो मनरंग, न० ॥ ती
 र्थकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन २
 अधिकी संपदा ए, मनवंजित सुख थाय, न० ॥ द्यांकुसल वाचक
 वरू ए, धर्मसंदिग्ध गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका
 चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुजदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका
 जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ॥२०००॥

शुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ उपवास ३ ॥
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा-
 वास ३ ॥ ४ । एमोउवझायाणं ॥ उपवास ३ ॥ ५ । एमोखोए
 सबसाहूणं ॥ उपवास ५ ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ७ ॥
 ७ । सबपावप्पणास्तणो ॥ उपवास ७ ॥ ८ । मंगलाणंचसवेत्ति ॥
 उपवास ७ ॥ ९ । पढमंदवइमंगलं ॥ उपवास ९ ॥ एसे नवकार
 मंत्रका ६७ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वरानवकार अथवा ऊपर
 लिखा सो स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेतें यथाशक्ति नवपदका
 उच्चव करे, चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावसें अनेक
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिष पयकमल सुज्जवाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण
 दिणं जणिसु जिनवरतणा ॥ कतिण कचीतयै पस्सि पंचमि दिणै,
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण
 सुरजवणथी बारसै, पञ्चमपद् जम्म वलि दिस्क तसु तेरसै ॥ वीर
 सिवमां वसै पस्सि दिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार
 सि मिळे ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि
 थो, सोइ ठहै रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-
 यम आदरथौ, इग्यारसि रे उपमप्पद् सिवसिरि वरथौ ॥ सिर वरथौ
 मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति
 पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसै वलि
 मल्लिजिणने जम्म दिस्क सुनाणीया, वलि मल्लि दिस्का नाण ठहै
 अंग पोसि वखाणिथा ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संज्ञा
 विवै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण जाविवै ॥ ते परि सक्कि रे गीता-
 इय सदगुरु लहै, श्रुतकेवलि रे वचन सद्ध सम सद्धे ॥ सद्धे

सहूयै ते प्रमाणजि बलि इग्यारसि नमितयौ, श्रीनाण कढ्याणक
 चवदसि जनम संजवनों थुणौ ॥ पूनिमें संजव दिस्का पांमी दया
 धरि जगजोवनी, दिव पोस वदि वसमी इग्यारस जनम दिस्का
 पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, बलि तेर
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशोतल थयो के-
 वली, पोसह सुदि रे ढढ विमल नाणी वली ॥ नाणी बलि थयौ
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अजिनंदनें केवल पूनि
 मै धम्मैं वसें ॥ माहाइ ढढे पठम चवियो बारसें शीतल थयौ,
 बलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥
 अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुद्धे दिव
 अनुक्रमें ॥ सित बीजे रे अजिनंदन वासुपूजनों, कढ्याणकरे ज
 नम गंश अनुक्रम मनौ ॥ अनुक्रमें मानौ बिहू बीजे विमल धरम
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथि अठमि अजित उतपति पांमि
 था ॥ नवमियें दिस्का अजित पांमी बारसें अजिनंदनें, श्रीधर्मनाथें
 सार संयमतिर वरि तेरसि दिनें ॥ ६ ॥ जास ॥ फागुण वदि ढढे सुपास
 केवलतिरि पत्तो, सत्तम बलि तसु मुगति चंडप्रभु नाणें जुत्तो ॥
 नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुव्वथ नाण
 जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिक्कंस तथो चवदस वसु
 पुळ, जम्म हुठ अम्मावसें ए तसु संजम रळ ॥ सुकळ बीज चउथि
 अठमियें अर मल्लि संजव, चवण सुवारसि मल्लि मुगति सुव्वथ वय
 उव्व ॥ ८ ॥ (ढाल फागनी) चैत्र पठम पस्कि चउथि नाण च
 वण पासस्त, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्त ॥
 बलि संजम पिण रिसहस्तांमि अठमि आदरियो, धवल तीज दिव
 कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने सं
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण बलि पांम्यो सुमनि ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना
ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ ज्ञास ॥ दिव वैसाख वंदेपनिवा दिन,
कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ ठठे, श्रीशी-
तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम
अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतह, जनंम हुठ श्रीकुंथु
जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध-
रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम-
तिनाथ अठमिये जायो, नवमैं संयम सांमे पायो, गाथो धरि आ-
णंद ॥ दशमैं नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा-
मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण प्रस्कि
ठठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि सुगति
सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुठ ए ॥ धरमनाथ
सिव पत्त, चवली पंचमैं, नवमैं वसुपुक्क अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास
जिण जम्म; बारसि तेरसि, जगयुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥
ज्ञास ॥ दिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिदि सिरि
विमल ॥ मुक्क नवमि नमि वय गहण, सेय ठठे चवण ॥ वीरनी
अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुक्क जिणंद, ठ सय वर साधु
कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस छख पुरि चंपापुरें, करमदणि सुग-
ति रमणी वर्यो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि दिव तीज सु-
गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविठ अणंतनाह अठमि नमि जा-
मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुठ अह निम्मल बीजे, सुमति
चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म जणीजै ॥ १६ ॥ ठठे मुनिवर ने-
मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुवय पूनिमरयणि, चविठ गु-
णमणि वास ॥ १७ ॥ ज्ञाड्व वदि सत्तमैं संति सति चवण जव-
स्कर, अठमि चविय सुणास नवमि सुदि सुविभ सिवंगय ॥ दिव

आसु वदि तैरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गङ्ग ॥ हरण अम्मावसी
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पुनिम नमि जिणवर चविय, इण
 पर बारह मासिं ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळयाणक रासि
 ॥ १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दि
 ने, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कळयांण नीते
 कोमि पांमी अनुक्रमे सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी
 एहं कळयाणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच जरते ऐरवत करि एक
 दिन जिनवरतणा, दस कळयाणक हुवे इण दिन सुर करे उज्जव
 षणा ॥ जिम दूआ ते तिम वली होस्से पंच कळयाणक सदा, श्री
 पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच
 कळयाणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ अथम आद्यंताकर संलक्ष० यह रुषिमंडल स्तोत्र धूप
 दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रजात समय सुषै. रुषिमं
 न्दलमें जो मूल मंत्र हे सो शुद्ध दिन शुद्ध घनी दाधमें फल
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ८००० आठ हजार जाप
 आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो
 आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा
 करै. ऊजमणोके दिन एकसो आठ बेर सुषै. पीठै शक्ति होय तो
 विधि संयुक्त रुषिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष जक्ति
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुजकी करे, साहमीवञ्चल करै.
 विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रुषिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा
 ले जव्यजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाहरहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट यत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

कृष्ण चरण अंगूठनो, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का
 उत्सर्ग रह्या, विचर्या देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यो, पूजो
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥
 कर कंठे प्रभु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय
 अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, जुजाबले जवजल तस्या, पूजो खंध म
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसराम ॥ ना
 जिकमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदयकमल
 उपशम बले, बाढ्यो राग ने द्वेष ॥ हेम ददे वनखंमने, हृदयक
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल,
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तर्षकर पद
 पुन्यथी, त्रिजुवन जन सेवंत, त्रिजुवन तिलक समा प्रभु, जाल
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक जगवंत ॥ ९ ॥
 सिया तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥ १० ॥ उपदेशक नव
 तत्वना, तिम नव अंग जिपंद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुभ
 वीर मुखिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन हुदा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें
 परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,
 जल विन कुंज न होय ॥ जनि बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे
 गुरुवाणी वेगला, रमचमिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,
 जावे दीजे दान ॥ जावे जावना जाविये, जावे केवलज्ञान ॥ ४ ॥
 पांच कोमीने फूलने, पांम्या देश अदार ॥ राजा कुमारपालने, व
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवन्दन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवन्दन ॥

जय२ श्रीअरिहंत ज्ञानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कथ
कृत मल रासी, शुद्ध चरम शुचि पावसै, जयो वर अविन्यासी ॥
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुण्य दणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-
तित्थं० नमोर्हं ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री
तेरम गुण बसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारणी होवे हीनि ॥ म० ॥ १ ॥
बादरकायें मन वच जोग, तनु२सैं फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुद्ध
मकार्यतें मन वच रोक, मिज चीथैं ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥
संझी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि
समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥
॥ ३ ॥ एषां योगधी समयें एक, होना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥
समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥
वेदसमेनादारता पत्य, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें
गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणो करि पूरो जी ॥ ताजै जव
थानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अ
रिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ, सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्वा प्रांत, तनुर्द्दिनत. जागी ॥ पुढ पन्थपसंग
सें, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय, एकमें लोकप्रांत, गयो. निगुण
निरागी ॥ चेतनचूर्पे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल
दंशानाणथी ए, रूपातीत स्वज्ञाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म,
वंदे धरि शुभ्र ज्ञाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ यारि महिलां ऊपर भेह झरोलै वीजली, ॥ ए चांळ ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोफी पूर्वमें, म्हा० लाल ही० ॥
उत्कृष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता;
म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०,
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे
नगरऊर्ते अक्रिय होयने, म्हा० अ० ॥ पुढ पयोग असंग स्वज्ञाव-
अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लकै
कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाज्ञास निरालंबन सही, म्हा०
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मही प-
क्षी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपञ्चारा नाम
सिलासें जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें ज्ञाग अलोककुं स्प-
र्शन, म्हा० अ० ॥ लघु-अंगुल बत्तीस प्रमाणज्वाइणा, म्हा०
प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासें हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥
मिलिया एकमेंनंत अबाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि
रम्य सिरिही जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म
नगहमें, म्हा० घ० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा०
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद दुई ॥

अष्ट करमकुं घमन करीने गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिद्रससी जी ॥ परमात्मपद पूर-
ण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव
पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद शुद्धि ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥
प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्वादिक जि
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ जवकूपें पापें परत, जगजन
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं
वंदे हीरधर्म, अघोतर सौ वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल बींदली ये ॥ १ ॥ चाल ॥

खंती खरुगथी जेयो, हणयो क्रोध सुजट ससं देयो हो, गण
पति गुणपेखी ॥ टेरा ॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोजन महा वयरे
हो ॥ ग० ॥ १ ॥ वंज्ररूप विसवेली, वर अज्जवकीलै ठेलो हो ॥ ग० ॥
मुर्छावेलथी जरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन
नाग मद दीनो, जिण दमसमं जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा
मछ ताळ्यो, पुण वैराग मुगर्गे पाळ्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोस गवंद
वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेया,
सुरवर पिण जिण शिषेया हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कति गुणथी लीणो,
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद शुद्धि ॥

॥ पंचाचारकुं पाळै उजवाळै दोष रहित गुणधारी जी, गु
ण ठत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, कृपा सहित जे संज
म पाळै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति शुद्धि ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ धन धन श्री उवज्जाय राय । सठता धन रंजन । जिन वर विसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण जं जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंघ लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण॥१॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए। आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांबळिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ दुयने३ दूरी दुयने, चेतन जावै सठने, दूरी दुयने ॥ तुं मुऊ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुऊनें कुण वतलावे, दू० ॥ एआंकशी ॥ तो संगै निज पंचेंडीनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी खयउपसमसें, जावेंडी मंभाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इयै ते परजासे कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एंवतो गो तुरग गजादिक, किण क में उपदेश ॥ दू० ॥२॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में जयो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३॥ उप कहिये हणियो जवियानो, अधियां लाजतआय ॥ आधीनांमन पीमानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर आगम, सूत्रसें ते उवज्जाय ॥ तत् सेवाते हणि सठताकूं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद शुद्ध ॥

॥ अंग इरयारै चवदै पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरपधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर आगम पूरा नय निहोपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद शुद्ध ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवन्दनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुद्ध शुचि चक्रते, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्तते,

जये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनजूत, समदम अजिरामी
॥ २ ॥ चारुति धन गुणगण जरथो ए, पंचम पद मुनिराज ॥
तत्पदपंकज नमत दे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मास्मन् मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहे, धारै चउगति वसनसें रोस हो,
मुनिंदजी ॥ राग हीण जय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो
मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० ठहै पूरब कोरु हो
मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो
मु० ॥ २ ॥ स्थानक्षीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच
क्षानिद्रा में रहै, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि
ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो
पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक धन गुणनी ख्यात हो मु० ॥
॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथें, सा० साधन पर वर जीव हो मु०
॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु जवतु जगतीव हो मु०
॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद युग ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीस टालै जी,
षट् काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म
हाव्रत सूधा पालै धर्म शुद्ध उजवालै जो, रूपकश्रेणि कर कर्म
खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परियट्ट, अट्ट परमित संसार ॥ गंढिजेद
तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ हाथक वेदक शशि अस्
ख, उवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव
दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लब्धन अजिरांम ॥
दरसनकुं गणि हीग्धर्म, अद्वित्स करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अय दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके वाग आबो मोहि रह्यो री ॥ ए चारु ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साथ जणयो री ॥ धर्म जिने
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितयो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सप्तम
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, ताते अधिक बुरो री ॥ २ ॥
मिथ्या तापे तप्त, बोधही बांध लहेरी ॥ उपशम कार्यक वेद, ई
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुल अस्तांभ क
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अय दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपक्षतत्त सूधा सरथै समकित गुण उजवाले जी,
जेद वेद करि आतम निरखी पशु ठाखी सुर पावे जी ॥ प्रत्या-
ख्याने सम तुल्य ज्ञाख्यो गणधर अरिहंत मूरा जी, ए दरशनपद
नित ५ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अय ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ किंप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि
लापसैं जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पक्कवि
उंहि होय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, इक के
वल जाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासणी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अय ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति बछरंगे ॥ ए चारु ॥

जिनवर जाषित आगम जणिया, तत्व यथास्थित गमिया
जी ॥ म्हारे जगजन तारु ॥ ते उचम वर नाण कहायै, जविजन
अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जहाजक कुपंथ सुपंथा, पे-
यापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें
जेश विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुते मति होय वै इंदी तारु,

तेषां परोक्ष विचारु जी ॥ म्हा० ॥ उद्दी मण केवल दे वारु, जीव
प्रत्यक्ष सुधारु जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अविजस्त वलें जग जाणें,
लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजै जासु पसायें,
धारी शुभ्र अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम
कथयी, चेतन नाणकुं बिलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि
जन हरखे, निसदिम कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद शुद्ध ॥

मति श्रुति-इंदी जन्मिंत कहियै लहियै गुण गंजरीरो जी,
आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि म
नपर्यव-केवल बलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए-पांच ज्ञानकूं वंदो
पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति शुद्ध ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्त पसायें साहु पाय, जुग २ समितेंद ॥ नमन करै शुभ्र
जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि
कर्म निकंद ॥ सुमति पंचतीन गुप्ति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इच्छु-
कति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरितकूं दीर
धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निस्तंग ॥ सुग्यानी
साजलो ॥ डेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०
॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जो
गसुधामता, लव्या संख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्यासा लघु जो
गमें, रुद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समयें लहे, अंते दौते
जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सइकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥
सु० ॥ प्राप्ता घन प्रकारता, सप्त धृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तडो
घन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर धन मिल पद

धर्ममें, कुशल जवतु अजिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद युई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, बारे
जावना सूधी जावै सागर पार कतारै जी ॥ खट खंन राजकुं दूर
तजीनें चक्रो संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम
गुण हितकारै जो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरुषजादिक तीर्थनाथ, तन्नव सिव जाण ॥ बिहि अं
तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर भित आमो स
ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदें समता युत शिखें, दृग्धन कर्म
विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद जखो ए, श्छारोध सरूप ॥ वंदनसैं
नित हीरधर्म, दूर जवतु जवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस जेव जणया जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजें
रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण जव सिद्धितणा
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स
मता सहितें जिनतें जारी, जखी कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे
शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसैं कर्म कचौरा, दहे तप पावकका जोरा
रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे रुद्धि, देव नरनी
फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप
जानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्त पसायें लहियें
वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्ह० ॥ अति उक्कर फुन
साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्ह० ॥ ४ ॥ श्छा
रोधन रूपी कहिये, तपपदही चैतन बहिये रे ॥ म्ह० ॥ पाठक
आहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकुं जासे रे ॥ म्हारे शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

(४३५)

॥ अथ तत्र पदं युई ॥

इन्द्रारोयन तप ते ज्ञात्वा आगम तेहनो साखी जी, इव्य
जावत्ते द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण
परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लवधि संकलनो कारण
देखी ईश्वर तें मुख जाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ धनुर्विंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्वृषभ सर्वज्ञ, वृषभांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाहा,
नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ सुगस्यादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न
यत् ॥ जनन्या मरुदेवाद्याः, बावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषभ
स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांठन शाखिना ॥ जितसत्रु
महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुकि रत्नेन, जगदं-
स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोवेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥
इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनुपतेर्वर्धातु, संजवः संजवाजिधः ॥
सेनाधा नंदनो हेम, वक्षो गंधर्व लांठनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य,
ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पूंगवो देवो, नित्यं दित्तुमांजिनः ॥
॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्व, वीतरागं जग-
त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, दुवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन
नामानं, विशुद्ध हृदयं तदा ॥ वस्तुति परया ज्ञत्वा, सनालोकेजि
नंदते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेवाजिध धरि त्रोस, तन
यो भंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्ष्म जृक्षे, मरीचिर्मगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं
सुनतिनाघेश ॥ सुमतिं तनु सचमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग
सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुनति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र
सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपेक्षुनः, पद्म लक्ष्मण
धारकः ॥ ११ ॥ जवान्यौ जव संकीर्णो, दुस्तरे पततां नृणां ॥
त्राणाय सनतं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वान्निघोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकजृत् ॥
 प्रतिष्ठ नृप संजात, आमीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र
 इव गंजीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं
 नौमि सदा विष्णु ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंडप्रज्ञ प्र
 ज्ञोकांत, चंड लक्षण संयुतः ॥ तमापतिश्च विज्ञान, तमोव्यूह विं
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा
 पुत्रमां स्वामि, न्नव केवल बोधनृत् ॥ १६ ॥ इति चंडप्रज्ञ स्तुति ॥
 (अत्रायश्चत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तुतोबोधवत्वाश्च, सुरासुरनरेश्वरैः
 ॥ सुविधिर्बोधितशर्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीकननीरा
 मा, माननीयादिवोकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांघिनः
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमो) ॥ श्री
 मञ्जीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांक्षां
 कधारक ॥ १९ ॥ स्वदीयचरणान्नोज, सेवकानांविपुर्जृतां ॥ प्राक्क
 तंवृंजनव्यूहं ॥ डष्टंशंज्ञोद्यदेविजौ ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु
 तिः ॥ विष्णुर्वैशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोदिरण्यजः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोज
 स्त्रं, खड्गलांघिनजृज्जितः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्व, श्रेयांसश्रे
 यतैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदं परं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां
 स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवार्त्तिरामीदा, जवतांश्यदि ॥ ऊटितिष्ठे
 दितुंचिते, ज्ञोन्नव्याः प्राप्तुमहं ॥ २३ ॥ तदाज्ञजध्वमेनंदि, वासु
 पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकं चरक्तजं ॥ २४ ॥ इ
 ति वासपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्धिमलनाथेऽ, कृतवर्मसमुन्नवः
 ॥ गूकरांकधरस्यामा, पुत्रकल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंडवद्धिमलज्ञान,
 स्वर्दायस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्मा, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपुत्रस्य, सुयशःसिंह
 सेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्धनान्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ ईशद

योपिवस्वांतं, गुणानालेजिरेनेहि ॥ अनन्तस्य गुणान्तस्य, कमोवक्तुं
 नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंतं स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक,
 भानुबंशार्कसन्निजः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाथान्निधेश्वरः ॥ २९ ॥
 तबागोपिपुराहारी, जूतलेधारयशोकतां ॥ अनुचरफलाः संति, सत्
 संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी
 सं, नन्दनंमृगलक्षणां ॥ आचिरेयंतुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥
 ॥ ३१ ॥ तंश्रीमन्नांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां
 वृष्टिं, विबुद्धाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शान्तिनाथ स्तुतिः ॥ श्री
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यज ॥ सूरिभूपतिसंजात, ङागल
 क्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंशुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं
 पापसंदोहं, जवांतरकृत्यनं ॥ ३४ ॥ इति कुंशुनाथ स्तुतिः
 सुदर्शनचुपोजूतं, नंदावर्त्तकिसंयुतं ॥ अंजोजवन्निरालेपं, देवपुत्रसु
 वर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुरव्यायुषाः सर्वं, धुर्य्यप्रभुतयाजिनं ॥ चरी
 कर्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८
 ॥ कुंजप्रज्ञावतीपूत्रौ, नीलवर्णौघटांकभृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त,
 नासनाद्दितःसदा ॥ ३७ ॥ उत्रप्रययुतोज्ञाति, देवयोविष्टपत्त्रये
 ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरसेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रवृषतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्मल
 क्षणभृद्गर्म, दावकस्यामलजये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक
 र्मारिमंरुल ॥ देहित्वमेव्ययीज्ञावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयभूपाय, कुलोत्तंसहिर
 ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते
 पंचजनोदेव, निन्दाचक्रुस्तेश्वरं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव
 र्यं, समुद्विजयोन्नवे ॥ हरिवंसहरौशंजौ, शंखकिंकमलप्रज्ञे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीब्रहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामात्रा, प्र
त्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेना
क्षत्रपात्र, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कमठस्याजिमान
ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास
नचिन्हाय, नीलवर्णायसंज्ञवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥
श्रीमत्सिद्धार्थवंशर्क, त्रिशलेयजगत्प्रभो ॥ महानादध्वजार्द्धित, क
ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थरुद्धीर, मोहेज्जहनेनमृगात् ॥
त्वज्जक्तिदत्तधिताय, कमलादेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः
॥ २४ ॥ इति श्रीकृष्णकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः ॥

अथ नवपदजोके उल्लोके देववन्दनमें कहल्लोका चैत्यवन्दन प
हली लिखा हे ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अजिरामी रे लोय ॥
अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥
अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी
रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी
रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल हय करी, यथा सिद्ध
स्वरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो जवि ज्ञावधी, जे आगम
अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण उत्तीसे सोजता, सुंदर
सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, बंदू अविकारी
रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप डु विध
आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोखे पद पाठक नमो, संवेग
समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा,
पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमं
दरुजागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें उल्लखै,
श्रुत श्रद्धा आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ ठठे गुण दरसण नमो, आ-

तम शुभ्र जावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ४ ॥ ग्यान नमो गुण
सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक
दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चा
रित्रपद नमो, परजाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक
दस धर्मनो, जेह ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ए ॥ नवमे
बलि तपपद नमो, बाह्याज्यंतर जेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या
काल अनंतना, जे कर्म उन्नेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए
नवपद बहुमानयी, ध्यावै शुभ्र जावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप
श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥
आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥
नव ठली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥
॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बट्ट परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० ॥
व० ॥ श्रीजिनखान कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥
अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध
अनंत मद्भागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ जविक मन धारज्यो रे ॥
धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण
धरू रे, गुण बत्तीस निवास ॥ पाठक पदघर मुनिवरू जी, श्रुत दा
यक सुविलास ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोजता जी,
साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥
ज० ॥ ३ ॥ संबर साधना चरण बै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥
ए नवपदना ध्यानशी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ ज० ॥ ४ ॥
अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनु
जव कारखे जी, नितप्रति नमत कळ्याण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, जविका न० ॥ मन वच काया कर
एकेंते, विकषा दूर दरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणे
रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं
कार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंगलमाया, संपति
सहज वरो रे ॥ लालचंद याकीबलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाथ रे, जी० ॥ नवपद
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो
अपणे आत्मसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम
निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद पाय रे ॥ जी० ॥ इय
जिन ज्ञेय आगामी होयमे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत
सिद्ध उर आचारज, उवजाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व
साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान
चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज
जज नवपदकुं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाळ कहे यही सार
जगतमे, उर द्वार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज जाव, दिव कारज सि
द्धिो लाधो एह ऊपाय ॥ तुज नाम पसार्ये आरति व्याधि पुलाय,
इग तुज अनुग्रहथी सुख संपति मुज पाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न
मिथै सिद्ध सूरि उवजाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

हुग विधि चारिसें बुध विध तप मन जाय, ये नवपद ध्यावता नि
 रुषम शिवसुख आय ॥ १ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री
 गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे जाण्यो एह विचा
 र, जविजन जित ध्यावो सुरतरु गुणजंगार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ
 नुरागी चक्रेसरि सुखकार, सेवकने आपे सुख संपति परिवार ॥
 हिव निहि उदय करि चारित्रनंदी मग जाय, जिनचंद सूरिसर
 स्वरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति धुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद ठलो करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ३ अथवा चैत्र सुदि ३ सें ठली सरू
 करे, कज्जी तिथि बढी होय तो ६ सें सरू करे, बढी होय तो ७ सें
 सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध
 करके मांगणादिकसें चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रि
 काय पूजा करै. प्रजातसमें राईपन्निमणा करके पीठे बत्तीकी
 पन्निदेखा करै. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयके पांचे
 शक्रस्तवे देव वदि, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव
 चैत्यवंदन करै, वासुकेय पूजा करे, पीठे केसरचंदनसें पूजा करै.
 गुरु पास आयके अशुद्धिभिमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प
 चस्काण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें
 ऊर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु
 षोको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोमे इहा
 मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ६ ज्ञानमंख प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ७ डुंडुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ८ उन्नत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादश अ० शु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नदूससियेण कइके १२ लोगस्तका काउसग करै. एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठे स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चखाण पार के आंबिल करै. पदले बखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठे मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांढे. गुणानो (१०००) ॥ ऊँ ह्रीं यामो अरिदंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूण पहर दिन रहणेसे तीसरी बेर पांचे शक्रस्तवे देव वांढे. पीठे फेर चैत्यवंदन कर के तिबिहार पञ्चखाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रति क्रमण करै. आरती के बखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पदले आरती वगेरे करके पीठे पम्कमणा करै. (सोणे के बखत) पदले इरियावही पम्कमके चैत्यवंदन करै, फेर १.५ संआरा गाथा सुणे ॥ मिझा नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अथ इसी मुजब दूसरे दिन प्रजात समे की सब करणी पदले मुजब करके सिरूपदका लाल रंग दे इस वास्ते गेहूंकी रो;

(४३३)

टीसैं आबिल करै ॥ तैं हँही शमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करै. सिद्धपदका ८ गुण हे. ८ नमस्कार गुरु करावै सो लि० ॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

- १ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
- २ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
- ३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नद्वसति ८ कहेके आठ लोगस्सका काजसग करै, एक लोगस्स प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसैं प्रज्ञात कर्त्तव्य करै. आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करै ॥ तैं हँही शमो आयदि आणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करै. आचार्यके ३६ गुण हे. जतीस नमस्कार गुरु करावै सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य उन्नीस गुणाः ॥

- १ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
- ४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ५ गान्धीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

- ७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 ८ अपरिआवीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 ९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 ११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १२ अविकषकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १५ कृमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १६ मृडगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 २६ असरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 २७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 २८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 २९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 ३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 ३१ आश्रव ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संबर ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥ इति षट्त्रिंशत् आ०

॥ यह षष्ठी नमस्कार करके अन्नचूससि० कहेके षष्ठी
३६ लोगस्सका काउसग करे, प्रगट लोगस्स कहे, पूर्वोक्त करणी
क्रमसें करै, इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ है हँ श्रीमो उवज्ञायाणं ॥ इस पदका २ हज्जार जाप
करै, हरेमंगका आंबिल करै, उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके
नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारंगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

२ श्रीसुयगर्गसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

३ श्रीगर्गसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०

४ श्रीसमवायंगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

८ श्रीअंतगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

९ श्रीअणुत्तरोवशसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

(४३६)

- १३ आश्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
- १५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०
- २१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २२ अविध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २४ क्रियाविस्तारपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २५ लोकविडुतार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः ॥

इस तरे २५ नमस्कार करै, खना हो के अन्नरूप कहके २५ लोगस्तका काजसग करै, प्रगट लोगस्त कहके पारे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

हैं ह्रीं एमो लोए सब साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. साधुपद काले वर्ण दे इस वास्ते उरुद के बाकलोतें आं बिल करै. सर्व साधूपदके सचाईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै ॥

॥ अथ साधूपदके २७ गुण लिख्यते ॥

- १ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
- २ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

- ६ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
 ६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
 ७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
 ७ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
 ७ तेजकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
 १० वायुकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
 ११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
 १२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
 १३ एकैडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
 १४ बेईडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
 १५ तेईडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
 १६ चोईडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
 १७ पंचेडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
 १७ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥
 १७ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥
 २० शुभज्ञावना ज्ञावकाय श्रीसा० ॥
 २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
 २२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥
 २३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
 २४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
 २५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
 २६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सद्गुण तत्पराय श्रीसा० ॥
 २७ मरणांतनपसर्ग सद्गुण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥
 इस वजे २४ नमस्कार करै, २४ लोगस्तका कान्तसंग करै,
 प्रगट लोगस्त कहिके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाएसे १०८ होता है, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हैं ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं एमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै दर्शनपद सपेद वर्ण है इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, सम्यक्तके समसठ गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सबसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थ ज्ञानवृत्तेवनारूप सह० ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सह० ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
- ६ धर्मरागरूप सह० ॥
- ७ वैयावृत्तरूप सह० ॥
- ८ अर्हद्घिनयरूप सह० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
- १३ साधूवर्ग विनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूप सह० ॥

(४३९)

- २० संतारे जिनमत स्थित साध्यादि सारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादूषण रदिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादूषण रदिताय सह० ॥
 २३ विचिकित्सारूप दूषण रदिताय सह० ॥
 २४ कुहृष्टिप्रशंसादूषण रदिताय सह० ॥
 २५ तत्परिचय दूषण रदिताय सह० ॥
 २६ प्रवचनप्रज्ञावरूप सह० ॥
 २७ धर्मकथाप्रज्ञावरूप सह० ॥
 २८ वादीप्रज्ञावरूप सह० ॥
 २९ नैमित्तिकप्रज्ञावरूप सह० ॥
 ३० तपस्वीप्रज्ञावरूप सह० ॥
 ३१ प्रज्ञायादिक विद्याजृम्भप्रज्ञावरूप सह० ॥
 ३२ चूर्णाञ्जनादि तिष्ठप्रज्ञावरूप सह० ॥
 ३३ कविप्रज्ञावरूप सह० ॥
 ३४ जिनसासने कौसल्यता जूषण सह० ॥
 ३५ प्रज्ञावनाजूषणरूप सह० ॥
 ३६ तीर्थसेवाजूषणरूप सह० ॥
 ३७ स्थैर्यताजूषणरूप सह० ॥
 ३८ जिनसासने जक्तिजूषणरूप सह० ॥
 ३९ उपशम गुणरूप सह० ॥
 ४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
 ४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥
 ४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
 ४३ आस्तिका गुणरूप सह० ॥
 ४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सह० ॥

- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सह० ॥
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सह० ॥
 ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप सह० ॥
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
 ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
 ५० राजाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५१ गणाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५२ बलाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५३ सुराज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसह० ॥
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ६० चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ६१ चारित्रधर्मस्य ज्ञानमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ६२ चारित्रधर्मस्य सत्तिष्ठमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ६३ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसह० ॥
 ६४ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सह० ॥
 ६५ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० सह० ॥
 ६६ सचजीव कृतकर्मणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० सह० ॥
 ६७ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥
 ६८ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति सह० ॥
 ॥ इति वजे समस्त नमस्कार कर खमा होके अन्नदू० कदके

६४ लोगस्सका काउसंग करै, एक लोगस्स भगट कहके पोरि, पीठै
पूर्वोक्त करणी करै, इति षष्ठ दिवस विधिः॥

॥ अब सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै,
ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण, तंडुलका आबिल करै, इकावन जेद ज्ञानपद
के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ श्रेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंड़ी व्वंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनेंड़ी व्वंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंड़ी व्वंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंड़ी व्वंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
- १२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
- १३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
- १६ मनेकरीईहामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

- २० चक्षुरिन्द्रियपाय मति० ॥
 २१ श्रोतेन्द्रियपाय मति० ॥
 २२ मनैनापाय मति० ॥
 २३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मति० ॥
 २४ रसनेन्द्रियधारणा मति० ॥
 २५ घ्राणेन्द्रियधारणा मति० ॥
 २६ चक्षुरिन्द्रियधारणा मति० ॥
 २७ श्रोतेन्द्रियधारणा मति० ॥
 २८ मनोधारणा मति० ॥
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
 ३३ सम्यक् श्रुत० ॥
 ३४ मिथ्या श्रुत० ॥
 ३५ सावि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३६ अनावि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
 ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
 ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
 ४० अगमिक श्रुत० ॥
 ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
 ४२ अन्नंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
 ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
 ४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वक्रमान अवधि० ॥

४६ दीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ शृङ्गमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥ इति पं० ज्ञा० ॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खना होके अन्नहू० कहेके एका
वन लोगस्तका कावतग्न करै, एक लोगस्त प्रगट कहेके पारे, धीठै
पूर्वोक्त करणी करै, इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अब अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करै,
चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तंडुलका आंघ्रिल करै, सत्सह
स्रेष्ठ चारित्रपदके चित्तवके नमस्कार करै,

॥ अथ चारित्रपद के ७० श्लोके लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविस्मरणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परियहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥

- ११ संयमधर्मरूप चारिण ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ अकिंचनधर्मरूप चाण
- १५ ब्रंजधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रथ्वीरक्षासंयम चारि० ॥
- १७ उदगरक्षासंयम चारि०
- १८ तेजोरक्षासंयम चा० ॥
- १९ वाजरक्षासंयम चारिण ॥
- २० वनस्पतिरक्षासंयम चारि० ॥
- २१ वेङ्गीरक्षासंयम चारि०
- २२ तेङ्गीरक्षासंयम चारि० ॥
- २३ चौङ्गीरक्षासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेङ्गीरक्षासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरक्षासंयम चारि० ॥
- २६ भ्रेक्षासंयम चारि० ॥
- २७ उपेक्षासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रज्जटादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ उपाध्याय वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३५ तपस्वी वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥

- ३६ लघुशिष्यादि वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३७ गिलाणसाधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३८ साधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३९ श्रमणोपासक वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ४० संघवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४१ कुलवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४२ गणवैद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४३ पशुपंरुगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४४ स्त्रीदास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षणा वर्जनरूप चारि० ॥
 ४७ कुरुयंतरसहित स्त्रीदावज्राव सुणन वर्जन ब्र०
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चितन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५१ अंगविज्ञूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५२ अणसण तपोरूप चा०
 ५३ छणोदरी तपोरूप चा० ॥
 ५४ वित्तसंखेवरूप चा० ॥
 ५५ रसत्याग तपोरूप चा० ॥
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥
 ५७ संखेखणा तपोरूप चा० ॥
 ५८ प्रायञ्चित्त तपोरूप चा० ॥
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥
 ६० वेपावच्च तपोरूप चा० ॥

६१ सिञ्जाय तपोरूप चा० ॥

६२ ध्याम तपोरूप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरूप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसिचचारित्रजेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै, खमा हो के अन्नबूससि०
७० लोगस्तका काउसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पूर्वोक्त क
रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं एमो तवस्त ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै,
तपपदका उज्ज्वल वर्षा इस वास्ते चावल्लोका आंबिल करै, पञ्चास
जेद तपपदके चितव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपजेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यकणोदरी तपजेद तपसे नमः ॥

४ अर्ज्यंतरणोदरी तपजेद त० ॥

५ इत्यतपवृत्ती संखेप तपजेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥

८ ज्ञावतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥

- १० कायकिलेसं तपजेद तप० ॥
 १० रसत्याग तपजेद तप० ॥
 ११ इंद्रिकषाय योग विषयक संलीषता तपसे नमः ॥
 १२ स्त्री पशु पंक्षीदि वर्जित स्थान अवस्थित संलीषता त० ॥
 १३ आलोचय प्रायश्चित्त तप० ॥
 १४ पन्तिकमण प्रायश्चित्त तप० ॥
 १५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ॥
 १६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥
 १७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥
 १८ तप प्रायश्चित्त त० ॥
 १९ जेद प्रायश्चित्त त० ॥
 २० मूल प्रायश्चित्त त० ॥
 २१ असावस्थित प्रायश्चित्त त० ॥
 २२ पारंक्षिय प्रायश्चित्त त० ॥
 २३ ग्यान विनयरूप तप० ॥
 २४ दर्शन विनयरूप तप० ॥
 २५ चारित्र्य विनयरूप त० ॥
 २६ शुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥
 २७ वचन विनयरूप त० ॥
 २८ काय विनयरूप त० ॥
 २९ उपचारक विनयरूप तप० ॥
 ३० आचार्य वेयावच्च त० ॥
 ३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥
 ३२ साधू वेयावच्च त० ॥
 ३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

(४४८)

- ३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥
 ३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥
 ३६ श्रमशोपासक वेयावच्च त० ॥
 ३७ संघ वेयावच्च तप० ॥
 ३८ कुल वेयावच्च त० ॥
 ३९ गण वेयावच्च तप० ॥
 ४० वायणा तपसेनमः ॥
 ४१ पृच्छना तपसे नमः ॥
 ४२ परावर्चना तपसे नमः ॥
 ४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥
 ४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥
 ४५ आर्चध्याननिवृत तपः ॥
 ४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥
 ४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥
 ४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥
 ४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥
 ५० अन्त्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद ज्ञेयाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै, खना होके अन्नबूतस्ति० इत्यादि कहेके ५० लोगस्तका काउसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करनेको गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ्र धनी देखके अन्ना वस्त्र आचूषण प्रहरके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड़व्य लेके नवकार गुणता जया गुरुके पास जावै, दादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

पौढे प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणैकी विधि आगे लिखी हे ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणैकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसँ सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे, पहिले गढ़में अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद३ के रंग मुजब गुण प्रमाणसँ रत्न चढावे ऊर पंचवर्णके फूत्र, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपरोक्ष रंग मुजब धीतुरेसे जरके चढावै पंचरंगी ए धजा चढावै, दूसरे बलबमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावै. तीसरे बलयमें ४८ दूहारा चढावै, नव निधानोंकी जगे नव बने फत्र चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्कान्न रंगरंगे चढावै. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. ऊर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ए ॥ ३ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करै. विस्तारसँ सब विधि गुरुके हाथसँ करै, नवपद जीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, बाजि बजावै, महा महोन्नव उदार चित्तसँ करै, मंगलदीप आरती प्र मुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणको विधि आगे लिखी हे तथा उद्यापनमें ग्यानभक्तिके कारण ए पूजा ए बीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए उवणी नव जिल मिल ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए आपना ए चंद्रआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणवावे, शक्ति नदी होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते खगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुभलेखमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ से लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम है. उत्तमताका कारण ऐसा है—बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अठाइ तो सास्वती है. आठमसे पूनम तक इन दोनों महीनोंमें व्याहं निकायके देवता ऋ ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हैं, (पुन्याहं २) कहते जये अष्ट इव्यसें पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें जक्ति करै, पीठै नवमें दिन अपणे २ जन्मकूं स फल मानते जये अपणे २ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाइ आसाढ चोमासेकी (१४) पीठै (४१) दिन जाणेसें संवत्सरी पर्व साचवणेकूं (८) दिन तक अठाइ महोत्सव करै. लेकिन यह अठाइ सास्वती नहीं कही, कोइ वखत व्याहं निकायके देवता ए कठे होकर नहींजी जावै, पहली पीठैजी करलेवै ॥ यह नवपदजी की उली शाश्वती अठाइमेंही की जाती है, नवपद माहात्म्य अधि कार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसे उद्धार करके जयजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जगद्बादूस्वामीनें इसको प्र सिद्ध करा, इस वास्ते जयजीवोंको यह तप प्रमाण है, ऋ जो अजवी अपनी अपनी कुयुक्तिये लगाकर खंमन करते हैं सो तीर्थ-करका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें जमेंगे. सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया है, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं ऋ उन सूत्रोंमेंसे एक हरफकेजी यथार्थ अर्थकूं तोरुके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगट सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका है) ॥ सुतंगणहररइयं, तदेवपत्तेयबुद्धर इयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अजिन्नदसपूषिणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियो का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा जयेकूं जगवानने सूत्र कहा है. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, अंथ ५, इत्यादिक

दस नाम जगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ वाचक है इस वास्ते जड़बाहु जमास्वातिवाचकादिकोंके बनाये निर्युक्ति वेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोरु पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अग्नी जंमारोमे मोजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद जुली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (८) सें लेकर पूर्णमासी तक (केइयक नव्यजीव) अष्टापदजीकी जुली करते हैं (जिसमें) पन्निक्कमाणा, देवबंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी जुली तुल्य करै. (इतना विशेष है) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः (इस पदका) २००० गुणाना (वा) बीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १२ लोगस्सका काउसगग करै, आं बिल (वा) एकासणेका पच्चस्काण करै, पीठै पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी आपना करै, मंरुल रचै, सो विधि लिख्यते हैं ॥

१५११६११७१८१९२०२१२२२३२४२५
कतर

पूर्व
१ । २ ।

त्रिवेदिकमध्य
असोकवृक्ष
वर्कः

—
२
—
३
—
४
—
५
—
६
—
७
—
८
—
९
—
१०

नक्षत्र

(चत्तारि दस्किणाए, पञ्चिमत्त अठउत्तरारि ॥ दस पुवाए दो अठा, वंयमि वंदे चउबीसं ॥ १ ॥ पुवा इं उत्तजमजियं ॥ दस्किणत्त सं जवाइ चत्तारि, पञ्चिम सुपासमा इ, धम्माइ दसउत्तरत्त ॥ २ ॥) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसैं चोबीस कोठे मंरुल में बसाणा. इहां कांकाणनोरे मो ली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके मंरुलवत् जाणना. नवग्रह दश दग्पाल आपना करे. पीठै एक२ काव्य पद२ के एकेक कोठेमें एक२

३५१॥ १०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५१॥

पश्चिम

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर बरक चढ़ा सुपारी चढ़ावे.
 एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनात्रयजिनेश्वरं, नंदायत
 सितांशुकः ॥ यथाकुमुदतीनेता, नंदायतसितांशुकः ॥ १ ॥ नै ह्रीं
 श्री अर्है ऐ श्रीरुपज्ञदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ २ स्वाहा ॥ १ ॥
 उपाध्वमजितंज्ञत्त्या, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्योधितंज्ञान, कंद
 धानामनेकपं ॥ २ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐ श्रीअजितस्वामी ॥ २ ॥
 श्रीशंजवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंतारवनान्मुक्ति, समयं
 तेसदादरात् ॥ ३ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐ श्रीसंजवस्वामी ॥ ३ ॥
 भेजिनंदनतेतीर्थ, राजपादसज्जाजनाः ॥ विखसंतिचिरंतत्र, राजपा
 दसज्जाजनाः ॥ ४ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐ श्रीअजि ॥ ४ ॥ पूजि
 तांहीद्वयीमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनादः, कांतारा
 जीवमालया ॥ ५ ॥ नै ह्रीं श्री ऐ श्रीसुमति ॥ ५ ॥ पद्मप्रज
 सुदृष्टीनां, जूरिशोभातपोदवाः ॥ इत्यात्तमांतिप्रूपेव, जूरिशोभात
 पोदवाः ॥ ६ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐ श्रीपद्मप्रज ॥ ६ ॥ सुपार्थ
 ततश्रुतंश्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्पकोप
 क्रमानलां ॥ ७ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐ श्रीसुपार्थ ॥ ७ ॥ जवांश्चंद्र
 प्रज्जेष, यैरजाजिसमुन्नतः ॥ यैरजाजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥
 नै ह्रीं श्री अर्है ऐ आचंद्र ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत
 समाहितः ॥ येतेभ्यःश्रियंअस्त, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ नै
 ह्रीं श्री अर्है ऐ श्रीसुविधि ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वाये, देवसंपन्न
 केवलं ॥ अपिमुक्तिर्जन्नेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ नै ह्रीं श्री
 अर्है ऐ श्रीशीत ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूजाजां, परमोक्षगतिर्जवा
 द् ॥ अनंतानसत्त्वविश्रान्तं, परमोक्षगतिर्जवाद् ॥ ११ ॥ नै ह्रीं श्री
 अर्है ऐ श्रेयांस ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्षी, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर
 स्तदिरहंमोदं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐ श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ अपि-
 डूर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं
 मल० ॥ १३ ॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र-
 यीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं
 न० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वर्धर्मजि-
 नक्ष्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥
 ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनादेहि, सारंगविदधेष्टुतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,
 सारंगविदधेष्टुतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥
 कुंभुनाग्रस्तुपंधानं, विधुतारोवृषादृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि-
 धुतारोवृषादृतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंभु० ॥ १७ ॥
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोऽग्रनाथकुधीर्जव्या, व-
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अर० ॥ १८ ॥ नां
 द्विपन्नसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेजिद्यतेमल्ले, प्रतिपन्न-
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥
 श्रीसुव्रतजिनाधीश, मङ्गमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मङ्ग-
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥
 देव्योपित्वहुषोज्ञाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्जत्त्या,
 सहामंदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनिमि० ॥
 ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्ष, शंमितादानवारणा ॥ श्रीने-
 मेजनतांराध्य, शंमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
 ऐं श्रीनिम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकृत, महाद्वारतरंगिताः ॥
 नाट्यंतिचरित्रंते, महाद्वारतरंगिता ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री
 पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ वि-
 भ्रन्नमेषुनिस्तीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
 ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठत स्वाहाः ॥ २४ ॥ पीठे

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीठै बलबाकुल दैके दिग्पाली
को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वोधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक
जया है, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसैं समजके जल
जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसैंही रुद्रिबंत
श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवंतके कल्याणक जो जो
होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधी-
श्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसैं लेकर नि-
र्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महो-
त्सव पूजन करणा चाहिये, इससैं धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें
परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रोपनमपर्वोधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हैं॥

प्रथम चावलके पुंजसैं तेजुंजयपर्वतको स्थापन करै (तिल
पर) पट्टा रखके श्रीपुंरुरीक गणधर (वा) श्रीरुषभदेवस्वामीका
बिंब स्थापन करै, अकृत मोतियोंसैं पर्वतको बधावै, केसरचंदनसैं
पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रद
क्षिणा देवे (पीठै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) बीस (२०)
तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणालई॥चन्द्रचक्रग्रहम,
दसमदुवालस कलाईच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसैं पूजनका
अधिकार लिखते हैं, एकाम चित्तसैं अष्टमंगलीक आगे रखके
शुद्धोदकसैं मूलप्रतिमाको न्दवण करावै, पीठै श्रीसंघ खना होके
(१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला
चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेख इत्यादि
सब चीज उत्कृष्टसैं दस ९ जघन्ये नारेख १ सुपारी १० ठर फल

फूल यथासंज्ञं चढावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध
 गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके पांचे शकस्तवे देव वाँदै, १० ख
 मासमण देके (श्रीसिद्धकेश पुंरुरीक गणधराय नमः) इस पदका
 १० वेर नमस्कार करै, पीठै (श्रीसिद्धंजय पुंरुरीक आराधनार्थ करै
 मि कान्तसगं अन्नभूसति०) कंदके १० लोगस्तका कान्तसग करे
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उन्नव होय वखत कमरहे तब
 एक लोगस्तका कान्तसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाकां
 स्तवन कहे) पीठै अनेक प्रकारका वाजित्र बजावै ॥ इति प्रथम
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै (वीस । तीस । चालीस । पच्चास ।
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा (इतनाही विशेष हे) दूसरी
 पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०
 की जगे ३० की विधि करै, चौथी पूजामें १० की जगे ४० की
 विधि करै, पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करै, तथा (सिद्ध
 केश श्रीपुंरुरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणानो करै, उ-
 त्कृष्टें पांचूं पूजामें जुदीर धजा चढावै, जघन्यसे पांचूं पूजा किये
 पीठै १ धजा चढावै । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वर
 स, ज्यादा हो सके तो ३ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त
 तपस्या करै, गुरूके मुखसे उपदेस सुखै, संपूर्ण तप हुआं पीठै
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुभक्ती करै, सा-
 हमीवृत्त करै (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरुषभदेवस्वामी
 के प्रथम गणधर श्रीपुंरुरीकजी पांच कोनी साधू साथ अक्षय
 सुखको प्राप्तजये, (इसवास्ते) जरत प्रथम चक्रवर्तीनें चैत्री
 पूनमको आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि
 या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसें इस जवमें अनेक सुख
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, नर

(४५६)

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परजन्ममें देवादिक कृति प्राप्त होय, क्षीणकर्मी होखेसँ अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणामी रे जिनवरना सुपसाजलै, पुंरगिरि रे गार्हस हूं सुज जाजलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीज जो मुखहु वै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ (उल्लाखो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण है अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण जाबियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरै राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरें चक्रवर्ति जरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंररीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ (उल्लाखो) गुण जलौ अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरो, पुंररीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी ॥ पण कोनि साथे दिमलगिरिबर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंररीक कहाव ए ॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुदामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै आनक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ (उल्लाखो) ते पुन्य पामें दान तप जप धर्म ध्यान मने धरै, बहु जाव जतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ जावना जावै तेण दिवसै पंचकोनि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पांमी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दस बीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे आवक निरती सरदही ॥ चंडणठै रे अठम दसम ड्वालसे, पूजा फल रे अनुक्रम एमुज मन बसै ॥ (उल्लाखो) मन बसै पूजकपूरधूपै मासखमण फले ब्रह्मी, सामन्त

धूपै पक्कनो फल जे करे मननी रखी ॥ दिव पूजनी विधि जेम
 गुरुमुख सुणीअवै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंकी सुणो जवि
 यण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु
 ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी
 थापी निवेरो ॥ ५ ॥ सेतुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय बधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा
 वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरै करि आठ ॥
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हिये धरेवा ॥ ७ ॥
 कृत्ता अर्थ नवकार गुणंता, दसर जैती तिलक करंता ॥ माला
 पुष्प पूगीफल होवो, मेरु जरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल)
 शंकरस्तव पांचे देव वादै, जघन्यना वंदण पाप भेदै ॥ दसे नमस्का
 रं करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेइ सैती ॥ ९ ॥ आराधिया
 काजे काउसग, जिणे किये जांजै कर्मवग्ग ॥ लोगस्तज्जोय दसे
 चंखाणु, वेला प्रमाणे अदिएग आणु ॥ १० ॥ इथे प्रकारै धूपपूज
 एह, इसी परै बीज। च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,
 एक चित्त सूधै शुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ घजातणी रोप तिहां करी
 जै, एकेक पूठै अथवा गिणिजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पढी
 प्रभु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा
 योगै संघपूजा आदरो, साहमोवञ्चल करो जविका जवलमुइ ला
 लावरो ॥ संपदा सोदण तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहू लहै, आग्रम
 माषिक तीस सुपरै साधुकोरति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त०

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहली बेने स्तवनोमें लिखा है सो सुणाया. अथ शुज
 घनी शुजदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपग्रहण करे, नंदीश्वरद्वीपके च्यारु
 दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षाये अमावस ५ (५२) वावन उपवास्त

करै. जिस दिन जो मादाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, जो लिखते है ॥ १ श्रीरुपज्ञाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ बेर जलटा, ४ बेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेंसें एक उंली होय, ४ उंली करणेंसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजव जजमणा करै. नंदीश्वरदीपका मंरुल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोन्नवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीवन्नल करै, मंरुलकी विधि एकेक दीसीमें (१३) तैरे २ पदामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनविंव थापे. इनको पूजामें ५२ आपना, ५२ नारेख, ५२ पान नागरवेखके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट इ व्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महानेमें मित्ती वेसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतीया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीरुपज्ञदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण किया पीठें बारे मासीका पारणा सोमयशराजके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इंदुरससेती जया. उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, सादीवारे कोरि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ एसी उदघोषणा ४, देवडुंझी वाजित्र ५, ऐसे पांच इत्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालम नई. इस दानके प्रज्ञावसे श्रेयांसकुमार अक्षयमुखको प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणसे वस्त्र आभूषण पहरके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पीछे गुरुके मुखसे एकासणादिकेक पञ्चस्त्राण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, उर जो मंगल कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जो जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वधिकारः ॥

॥ अथ तृतीय ज्येष्ठ मासाभ्यन्तर पर्वधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे श्रोतंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें गंटे. इस शांतिपूजाके कराणसे मारी, देजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कजी श्रोतंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. (इससे) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीना सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्चतुर्मासक्रमंनानि ॥ १ ॥ (अर्थ) ज्ञो ज्ञाना एतानि सानायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंजुलानि अलंकारनूतानि विद्यन्ते ॥ अहो ज्ञव्य प्राणी जीवो यह सामायकको आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंजुण हे, अर्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक परिक्रमणा पोसा करै, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना-प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पावै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसँ वण, आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईनी प्रकारसँ धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससँ सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, उर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दर्शन करणेको जाणा, पांच शक्रस्तवसँ देववादै, पीठै गुरुके पास जाके चोमासे, धर्मका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवै, सांजकूं चोमासी परिक्रमणा करे. इस मुजब काती चोमासे फागुण चोमासे कौंजी सेवन करै ॥ इति चतुर्मासपर्वधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ ज्ञव्यजीव मम्मार्ह आदि क्षेत्रोंमें तरेश की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते हैं, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. उर देस, देसमें श्रावकण्यां इस महीनेमें केइ२ तरेकी तपस्यार्ये करती हे. जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे उद्धरण करके संक्षेपविधिसँ इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ वुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमह १, एकासण १, नीवी १, आबिल १, उपवास १, (यह १ जुली) इस तरे पांच जुली करै. तपोदिन २५. ऊजमणों २५ लाडू चढावै ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आबिल १, उपवास १, इस तरे

उंली च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लहू चढ़ावै ॥ इति कषायजयतपः ॥ ३ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उंली ३ करै. तपोदिन ९. ऊजमणें ९ लाडू चढ़ावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलगा उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३, ऊजमणें झा नपूजा करै ॥ इति नाथतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें छात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतपः ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अहमः १, उठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलठाणो १, इति, १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उंली. इसी तरे उंली आठ करै. तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाना करायके ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूरुषतपः ॥ ७ ॥

जाडवा वदि चउअरें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकास, या अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे जेरै, संवत्तरीके दिन कलस ऊपर नारेख रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, छात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी, सर्वज्ञानमः) इस पदका २००० गुणना करै, गुरु के पास स्तवन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेगें) ऊजमणें ज्ञानके उपगणसैं, ज्ञानजक्ति गुरुजक्ति करै, इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुदिपक्षके पांचमेके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पांच

(४६५)

एकासणादिक तप करै, अंबिकादेवीकुं वेस चढ़ावै ॥ इति अंबिकातपः ॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै, इति श्रुतदेवतातपः ॥ १३ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारण्ये आंबिल ८, एवं दिन १६. ऊजमण्ये ज्ञानपूजा करै, इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १४ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमण्ये सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-
जाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १५ ॥

पद्मिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसैं पूनम पर्यंत (१५) उप-
वास करे. जो तिथि झूले सो तिथि उर करै. ऊजमण्ये एकसो बीस
लक्ष मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः ॥ १६ ॥

वरसातका चार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टा-
लके गोटो पांचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पांचम मास ५.
लग एकासणादि तप करै. ऊजमण्ये ज्ञानपूजा करै ॥ इति गोटो
पांचमतप ॥ १७ ॥

सुद पांचमकुं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवास
के दिन देव वांछणादिक क्रिया करै. ऊजमण्ये पुस्तकादिक ज्ञानोप-
गरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा
करावै, साहमी ब्रह्म करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १८ ॥

॥ आषाढ सुदि पद्मिवा, बीज, तीज, चोष, पांचम, एकाश-
णादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै. इस
तरे वरस १ तप करै. ऊजमण्ये चावलसैं अशोगवृक्ष लिखके पूजा
करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १९ ॥

आषाढ वदि ३ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण
वदि ३ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ३ श्रीआ-

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ३ श्रीमार्धनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, कजमणें चावलोंने लोकनाथ चषाके सा ते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धोत्र (उसको) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशषादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इ स तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय. कजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चौबीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. कजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लक्ष्मि देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन इस उपवास अथवा बीस एकासषा करै. कजमणें अखंमिती धी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंमितीदशमीतपः ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशषा, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. कजमणें ११ अंथकी पूजा करै ॥ इति श्रीङ्गारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासषादि १४ तप करै. कजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच असृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसे पारणा (दूसरे तेले) सारेका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका पारणा (चौथे तेले) लक्ष्मसे पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पारणा. पारणे प्रथम साधुको बहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १,
एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो
सदा जय होय, विषज व्यापारमें लाज होय ऊगरेमें जीत होय॥
इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥
उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १. उपवास
१, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.
एवं दिन १० पूनमसें सुरू करै. पारणै साधु पन्थिजानै, ग्यानपूजा
करै ॥ इति दालिइहरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंडिये उपवास १, वेइंडिये ठठ १, तेंडिये अष्टम १,
चौरेंडिये दसम १, पंचेंडिये द्वादशम १, ठकायें चतुर्दसम १, तप करै.
ऊजमणें सुखसीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति ठकायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

ठठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अष्टम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति जर्तारसुखतपः ॥ ३४ ॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६ ॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणोंकी आवक
एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतेके उपगोराथ शास्त्रोंसें उद्घा
र करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा
सादमीवञ्चल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुंजकेत्रोमें अपणा धन

स्वयं करै, धर्मका उद्योग करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावसें इस ज
वमें संसारसंबंधी दुःखदाखिड़ दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा
होय, परजयमें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय, (किंबहुना) इति वृष्ट
कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ जाइव महिनेमें मिति जाइवा सुद ४ तथा केइ मतकी
अपेक्षासे ५ तिथिकों संवहरी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे (प्रथम इस
संवहरी पर्वकी महिमा कहते हे) जेसें जगत्रमें अनेक मंत्र हे
पर नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ
तीर्थ नही २, पांचदानमें अजयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही
३, गुणमांहे विनयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष
नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा
जल ९, अलंकारमांहे चूनामणी १०, ज्योतषोंमें चंद्रमा ११, ते
जवंतमांहे सूर्य १२, गजमें एरावण १३, बैत्यमांहे रावण १४, तु
रंगमें पंचवल्खजकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे
नंदन १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९,
न्यायवंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२,
शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५,
बाजित्रमें जंजा २६, स्त्रीमांहे रंजा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता
में कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कटपवृक्ष ३१, जलमें
अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एकइ चीज
उत्तम होतो है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री
संवहरी (दूसरा नाम) श्रीपर्यूपण पर्वकों जगवंत श्रीमाहावीर
स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूपणपर्वके आशेसें प्रथ
म श्रीसाधुके करणें योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमणा

करै १, लोच करावे २, तेलका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें जगवंत की ज्ञावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५. यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्यूषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणोकूं आठ दिन अठाइ महो जव करै सो कढपलता शाल्वोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी जक्ति करै, कढपसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रोजागरण करावै; प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीठे पुस्तकआदि क पुरुषसर्वसें उत्तम वस्त्र आजूपण पहरकें मुगट उत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीकरचित्तालमें पुस्तक धरके अथवा दोनुं हाथमें आल धरके दोनुं तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आजूपण पहरके चमर ढालै, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै, गुरु पिता खना होके विनयसंयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगे रखै. श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जने अमारिपमह वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी जमझूंजा इत्यादिक सबका आरंभ जोभावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी नालेरादिक की प्रजावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकोटो कर सर्व मंदिर दरसन करणोको जावै ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउठ, उठ, अठमादिक तप करै ८, अपने वित्तके अनुसार जन्मकढयाणकका उठव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवहरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघसें खमावै १२, पारणके दिन पोसह पक्कपणोवाले साधर्मिजाइ

घोंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवहरी दान देवै, साहमी, वज्र करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुषनेलें, आराधन करलेसें आठ जवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता है (उर), केवक जवज्जीव अत्यंत शुद्ध जाव धरतेजये अदमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते है उर सुषनेवाले प्रमाद निद्रा वि, कथा डोरके अदमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धजाव रखके इक बीस वेर सुषते है, सो जव देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जव सि, द्विस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्युषणपर्वका महोत्सव जो जव्य जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रजावीक है, अपणी लक्ष्मीसें, धर्मका उद्योत करते है. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है उर नमस्कार करते है ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह कल्पसूत्र नबमेंपूर्वसें उद्धार कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा, अध्याय है. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीजब्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय है. जेसें सर्व नदीके बालू के कण होय उससें जी एक सूत्रके अनंते विषय है. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य इज्जार जीज करके कहे तोजी महात्मका एक ग्रंथ जी कह सकता मदी. ऐसा इस पर्वका महात्म जाण जो जव्यजीव शुद्ध जावसें सेवन करेंगे सो अनेक तरे सें रुद्धि वृद्धी सुख सौजाय्य को प्राप्त होमें. उर परजवमें देवादिक रुद्धि पावके मुक्तिसुखको प्राप्त होमें ॥ इति पर्युषणपर्वधिकारः ६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिति आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की जुली तथा अष्टापदजीकी जुली विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखी है उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिति कार्तिक वदि अमावस है सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कबसें जयां
 सों लिखते है. चौबीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु
 साध्वी साथ विचरते थेके अंतकी चोमासी मध्यमपांवापुरीमें आ-
 यके रहे, वहां आगामीकालकी सर्व वात ज्यज्जीवोंके सामने निरू-
 पण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शु-
 क्लाशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीकां बहुतं खेद देख
 के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देखेकूं जेजा. पि
 ठानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखरुं देसना देते
 जये बहुतर वरसका आयु पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि
 ठली दो घन्टी रात रह्योसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये. जिस समय
 जगवंतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चौसठ इंद्र देवताग
 एके आणे जाणेसें वना उद्योत जया, ठर जो राजा पोषधमें बैठे
 जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके इव्य-
 उद्योत किया. एकमके प्रजात समें देवतोका आणा जाणा ठर व
 चन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया. दूजके दिन
 सुदर्शना बहिन अपने जाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमां
 था, शोक दूर कराया जिससें जाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह
 दीवाली पर्व वना उत्तम है. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना
 करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥
 श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः
 ॥ इस एक२ पदको १००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागर
 ण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण
 कल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै. इत्यादिक उदार
 चित्तसें सर्व ठिकारै दीवालीपर्वका उन्मव करणा चाहियै ॥ दिवा
 लीका स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढ़ै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व ज्ञव्यजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ ज्ञी नहीं है. सर्व तत्त्वमें ज्ञानके समान कोई तत्त्व नहीं. मोक्षमार्ग सार्धनकुं ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाशहोय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिकरोग सर्व दूर होय. अनुक्रमे ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होखेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जैसे वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववन्दन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रमुख चढ़ावै, पांच बत्ती का दीपक चढ़ावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढेके वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढ़ावै तथा पूठा विटांगणादि चढ़ावै. (ज्ञानपूजा लिखते है) नमंतिसाभंतमहीवनाई, देवायपूयंसुविदेयपूर्वि ॥ ज्ञात्रीयचिचंमणिदामएहिं, मंदारपुष्पसवेदिनाशं ॥ १ ॥ तदेवसद्वामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेहिंवरंसएहिं ॥ पूंयंतिवंदंतिनमंतिनाशं, नाशस्तत्राज्ञायजवस्कयाय ॥२॥ यह गाथा पढेके ज्ञानपूजा करै, (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीछे ज्ञावपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के । इरियावही पन्किमें । लोगस्त कहे । बेठके । मुंदपत्ती पन्किदेहे । अणूजाणह मेमिजग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीछे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञात ज्ञान

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु ज्वजलनिधि तारण ॥ सं-
 यमतप आनन्दकंद अन्नाण निवारण, मार विकार व्रक्षार साध तापि-
 त जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाक् परित्याग धर्म पराति पतिबोद्धा,
 साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोद्धा ॥ मोद तिमरविध्वंससूर
 मिथ्यात्व पलासण, आत्मशक्ति अर्गत शुद्ध प्रभुता परमासण ॥
 ॥ २ ॥ मति श्रुति अबधि विगुह नाण मणपङ्कव केवल, जेद प-
 चास क्षायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोष परोक्त प्रथम तिहां
 दुग परतह दीसत, सकल प्रतह प्रकाश ज्ञास भुव केवल अपर-
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञाशै, बाहिर
 अंग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्गुक्ति ज्ञाप्य पति
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां-
 गो सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदो अनुयोगद्वार शाख मा-
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव उपगारी, अन्यासो अग-
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत
 अबोधे, देवचंद आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोदा
 मणो सकल मोह सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । णमो-
 त्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोईत्तु सिद्धा० । कह-
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोले, जयवी-
 यराय० कहै, वंइराव० अन्नहू० कहके एक नवकारका काजसग-
 करै, शुई कहै ॥ ॥ अथ शुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरूवि
 याणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपं
 चमोए, पूयातवोगुणरधाणजियाणदितु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके
 (ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काजसगं) तस्तुत्तरी० अन्नहू०
 कहके । लोगस्तका काजसग करै, (पारके) बोधागाधं० (इत्या-

दिगाथापढ़के) पीठै ॥ आज्ञाशिबोदियनाथें । सुयनाथंचेवडुहिना
 पांच ॥ तहमिषापङ्कवनाथें । केवलनाथंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा
 कहके । इन्नामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,
 सखस्त लोकालोकज्ञास्तर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इत तरे पांच
 नमस्कार करै, धिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार
 करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै
 ॥ पीठै (उं ह्रीं एमोनाथस्त) इत पढ़का २००० गुणना करै, कम
 धिरता होय तो इगारे अंगकी सिझायों पढ़ै वा सुखें, सो लिखते हे॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ दाख हठीबानी ॥ पहिलो अंग सुद्धामणो रे, अनुपम आ
 चारांग रे ॥ सुगणनर ॥ वीर जिनंदे ज्ञाषियो रे दाख, उववाई जात
 उवंग रे ॥ सु० १॥ वलिहारी ए अंगनीरे, हुं जातं वारंवार रे ॥ सु० ॥
 विनवे गोचरी आवरे रे दाख, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०
 ६० ॥ १॥ सुयखंध दोष वै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०
 ॥ उद्देशादिक जाषिये रे दाख, पिढ्यासी सुजगोस रे ॥ सु० ७० ॥ ३॥
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अद्वार हज्जार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप
 वने उहमे रे दाख, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ७० ॥ ४॥ गमा अनंत
 जेइमां रे, वलिखि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परितो वै इहां
 रे दाख, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० ७० ॥ ५॥ निबद्ध निकाचित
 सासता रे, जिनप्रणीत ए जाव रे ॥ सु० ॥ सुखतां आतम उलसे
 रे दाख, अगटे सहज स्वजाव रे ॥ सु० ७० ॥ ६॥ सुगुण आवक
 वारु आविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वक तुमे सां
 जखो रे दाख, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० ७० ॥ ७॥ ए सिझांत
 महिमानिलो रे, उतारे जव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रेखाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० ब० ८ ॥ इति आचारंग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांजलो, मनोहर
श्रीसुगमांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रिषसे तेसठ पाखंभीतणो, मत खंध्यो
धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे
हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरै, मानु सुधा रे
समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र
गंजरीर ॥ मो० ॥ बहुश्रुत अरथ जाणे सहू, कीर नीर धनु तीर ॥
मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंय दोय ठे, बलि अध्ययन तेवीस
॥ मो० ॥ ठेहसा समुदेसा जिहां जला, संख्याये रे तेवीस ॥ मो०
मी० ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण जरया, पद ठचीस हजार ॥ मो० ॥
संख्याता अकर पदमांहे, कुण खदे तेहनो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग
मा अनंता पर्याय बली, जेद अनंत जिण मांदि ॥ मो० ॥ गुण
अनंत तस परिच कह्या, आवर अनंत जे मांदि ॥ मो० मी० ६ ॥
निबद्ध निकाचित्त जे सासय कमा, जिन पणत्ता रे जाव ॥ मो० ॥
जार्धी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी०
मी० ७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निधै लहिये रे मुक्ति ॥
मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥
मो० मी० ८ ॥ ८ ॥ इति सुयगमांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ णाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ ठके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ त्रीजो अंग
जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीगणांग ॥ मोरो मन मगन धर्यो ॥
हारे देखी २ जाव, हारे जीवाजीव स्वजाव ॥ मो० ॥ सबल जगत
करी ठाजतो रे जि०, जीवाजिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह
अंग मुज मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो० ॥

गुहिर ज्ञाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २
 ॥ कूट शैल सिखरी शिखा रे जि०, काननमें बलि कुंठ ॥ मो० ॥
 गह्वर आगर एह नदी रे जि०, जेहमेंओठ रे उदंर ॥ मो० ॥ ३ ॥
 दस ठांश अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त
 जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि
 लोक निजुत्तुं रे जि०, संगदशी पन्निवित्त ॥ मो० ॥ ए सहं सं-
 ख्यातां जिहां रे जि०, सुयतां जलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय
 खंव इक राजतोरे जि०, दश अध्ययन उदार ॥ मो० ॥ उद्देशादिक
 वीत ठै रे जि०, पद बहुतर हज्जार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा
 सन तयो रे जि०, सुषे सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंड कहै
 ते दुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० वा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगमूत्र सिद्धाय ॥

॥ दाल ॥ आरा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजलो ॥ एचाला ॥
 चोथो समवायांगसुषो ओता गुणी, हो लाल सुषो ओ०, पन्नवणा
 उपांग करी सोजा वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागधो ज्ञावा
 साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित ज्ञाव कुसुम परि-
 मल व्यापी घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव
 समासयी, हो लाल जी०, लहीयै एहयी ज्ञाव विरोध कांड नथी,
 हो लाल वि० ॥ ज्ञांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल
 यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥
 एकयकी ठै सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोनाकोनि प्र
 माणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसबिह गणी पिटकत
 णी संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि ठै एहना
 सही, हो लाल ठै० ॥ ३ ॥ सुयखंव अध्ययन उद्देशादिके जला, हो
 लाल उ०, संख्यायै एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाख सहस तेउत्तरा, हो० स०, पढ़ने अग्रउदग्र सं-
ख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ जाण्य चूर्णि निर्युक्ती करी सोदे सदा,
हो० करी०, सुणतां जेद गंजीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥
जेद नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर
कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं
माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो०
सू० ॥ जिम मालती लहे जूंग करीनेनविरहे, हो० क०, इश्वर
शिर सुरगंग तजी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-
ग्रंथतणो जुगते बमो, हो० त०, साकर सेलनी डाख अकी पिण
मीठमो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो०
वि०, एहना सुणने जाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिन्नाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंध्रोमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणियेरे, जिहा जिन
वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकळ्या रे, मानुं पर
तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नती नामे परगनी रे, जेहनी
ठै उद्दाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिती रे, मांदिना
अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंथ एक अति
जलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हज्जार उदेसा जेह
ना रे, जिहां किण प्रश्न उचीस हज्जार रे ॥ पं० ३ ॥ पढ़ तो दोय
लाख अरथे जरथा रे, ऊपर सहस अठ्ठासी जाण रे ॥ लोकालो
क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥
करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥
सुणिये सूत्र जगवती रागसूं रे, तो होय जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०
५ ॥ गोतम नामे इय चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम
रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, जगति युगति मन आपो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विषसुं ए सूत्र आरावतो रे, इण जव
सीजे वंठित काज रे ॥ परजव विनयचंड कहे ते लहे रे, मोहन
मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिंहाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ हाळ ॥ कितलख लागी राजांजीरै माळियै ॥ ए देशी ॥
उघो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना ठै अरथ अनेक न्हं
रु हो ॥ म्हारा सुणायो धरि नेह सिखांतनी वातनी जी ॥ अवणो
सुणतां गाढो रस ठपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंरु हो ॥
म्हा० १ ॥ जंबुदीवपत्तनी उपांग ठै जेहनो जी, इण मांहे जिन
पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अ
उजवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ
द्यान चैत्य वनखंरु सोढामणो जी, समवसरण राजानो मात ने
तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह
लोक परलोक रुद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परि
त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥
म्हा० ॥ संलेहण पञ्चक्राण पादपोषगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ
कुल उत्पत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलाज वलि तंत ते अंतक
त्या कही जी, धर्मकथाना दोय ठै खंड हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना
जगणीस अध्ययन ते आज ठै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबं
ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोनि तिहां सकल कथानक ज्ञापिया जी,
ज्ञाप्या वलि जगणीस न्हंरु हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार ज्ञा
पद एहना जी, एह अकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥
विनय करे जे गुरुनो बहु परे जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल
दोय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंडने जी, सो मांहे
मिलै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि० ॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विजियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांजलो, उपासगदशा नामे चंग रे ॥ अमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रशी, एतो जव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लदै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक ठै, अध्ययन उदस विचार रे ॥ दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक आवकतणो, सुखातां अधिकार रसाळ रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वां चतां, गीतारथ पामे रीऊ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस आवक तो इहां ज्ञापिया, पिण सूत्र जण्यो नही कोय रे ॥ ते मोटे शुद्ध आवक जणी, एक अरथ नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपिये, निस्संकपणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्थुं अयो, जो कुमती कश्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिंहायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगदशांग सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगद के वली जे अया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ ॥ २ ॥ सकल निक्षेप नय जंगली जी, अंगना जाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तळिपका जी, कळिपका जास उवाग ॥ आठ ॥ ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग ठै आठ अजिराम ॥ आठ उदेसा ठै वली जी, संख्याता सहस पद गाम ॥ आठ ॥ ४ ॥ आठमा

अंगनां पाठमें जी, एहवोअ ठे रे मीगास ॥ सरस अनुजव रस
 ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे
 हुवे जी, निरविषयी सुण्यां आय, जिम माहा विष विषधरतणो
 जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती
 जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम दिनग्रचंड इस सुत्रना जी,
 तुरत लहै अजिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगमदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली है ॥ ए बाल ॥ नवमो अंग
 अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ आयक सूत्र सुषो
 ॥ सूत्र सृणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥
 आ० १ ॥ जसु कड्याणवतंसिका नामै, सोदे उपांग प्रकामे हो ॥
 आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥
 आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति जीजै
 हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेदा, एहणी उलसे मोरी देहा हो ॥
 ॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इयमें गाया
 हो ॥ आ० ॥ नगरादिक जाव वखाण्या, ते तौ ठहै अंगे आण्यो
 हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू
 रे ॥ आ० ॥ ठहैला त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥
 आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची अद्वा हुय जेदने हो ॥
 आ० ॥ ओतायी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगाउं हो ॥ आ० ॥
 ६ ॥ जे सुणातां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण. ढोर हो ॥
 आ० ॥ कवि विनयचंड कहे साचो, श्रुत रंगे संधुकोराचो हो ॥
 आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिंहायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पचारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रणव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि
दानंद फल पामे ॥ आवो१ गुणना जाश तुमने सूत्र सुणाउं ॥
पुष्पकली ज्युं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु
ष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रणवादिक अति रूमा ॥ ते है अष्टोत्तर सत
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूमा ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां
आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लवधि जेद
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुखबंध एक है दसमे अंगै, पणयालीस
अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमदिज आया ॥ आ० ६ ॥
सूत्र मांहि तो मारग दोयहै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ दाल कनखानी ॥ सुखो रे विपाकश्रुत अंग . इग्यारमो,
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलि
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किंपाक सम
डुकृतफल भोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जौ
गवी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० २ ॥ दोयश्रुत
खंधने बीश अध्ययन वलि, बीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजै ॥ सहस
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल ब्रमर चित्त गुंजै ॥
सु० ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि
माटे ॥ सूत्र उपगार तेदुथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-
चल खाटे ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोकना बेउं कारणअहै, डुकृतने
सुकृत जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारियै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म करं रे म कर निंदा नि-
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज
सहज संतोष ज्ञज, लाग श्रुत सांजली घरमधंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख
ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो
वीर शासन जिहांसूत्रथी, कवि विनयचंद्रगुण ज्योति जागै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में धुएया, सहेली ए ॥
आज यथा रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥
ज्ञाव्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-
णी ॥ पसरि अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू
ते हरखे करी, स० ॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी
जे सांजलै, स० ॥ कुश बूढा कुश बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू
टरा, स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी-
हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ ज्ञास करी ए अंगनी,
स० ॥ वरत्या जयस्कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,
स० ॥ वरषाकृत नजज्ञास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥
पूरण थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,
स० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगढ़ना राजिया, स० ॥
तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रदखनिधान जो, स० ॥
ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग
इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मेण ॥ पर उप
गारी सुगुरु वतार्ह, पांचु जेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन
पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूस दंसनकी,

करमैधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, तिद्धि रसान-
धरी ॥ मे० २॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी,
बाल कहै अंव विसरत नांही, पल बिन एक धरी ॥ मे० ३॥ इति पद ॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलौ, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो-
॥ आंकणो ॥ अरु अं श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रे श्रीगणधरगुरु
प्राप्यो, तडुजयश्री जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग
जाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार
ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग तपांग ठै अति रूना, ठ छेद
पंथना नहि कूना, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूना ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां
निरयुक्ती सूत्रे संगी, बलि प्राप्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै,
संवेगपखी बलि सरदहियै, ए त्रिण बिन जवमारग कहियै ॥ श्रु०
५ ॥ जेहनी अनुपेक्षा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै,
आराध्यां निज अनुजव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे
गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते कृमाकळ्याण सदा पावै ॥
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अर्थ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महोनेमें निति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब
मंदिरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णयासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सैं सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा
एकासण व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पदिकमणा करै, देववंद-

(४८१)

नादि करै, (नै हूँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै, कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठाई महोत्सव करै, विस्तारसैं देववंदनादिक विधि करै, (११) बेर सेत्रुजरास सुणे (नै हूँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इस पदसैं २१ जेती देवै, (कदास) सिद्धिगिरी जाणैकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंसा होय उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करणेंको जावै, पूजादिक सब विधि करै, गच्छत कर के वा चञ्चल्यञ्ज करके इस पर्वको आराधन करै, गुरुनक्ति करै, सा हमीवञ्ज करे, इत्यादिक विधि संयुक्तसिद्धगिरीकी सेवना करणेंसैं सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावरु वारखिल्ल प्रमुख वस कोनि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त ज्ञए, जिससैं इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका नि-
 श्चे दशकोनि गुणा फल होता है ॥ इस जरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही, संवत् १९१२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था, उहांसैं कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिबोके दरसन करके गिराती देखणेमें आई सो बारे इज्जार तीनसैं अठ्ठावनकी संख्या मिली, तर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अनन्त साधू अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत ज्ञयी जीव होंगे सो शुद्धनावसैं इस तीर्थको सेवेंगे, जो सेवते हे सो धन्य हे, गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तार्थआसातनाकारी देवद्रव्यजहक जतीसाधू जो संवेगपद्मी गीतार्थोंके देखी एसी बक वृत्तिसैं जीणोंद्वार तथा नोकारसी प्रमुखके बाढ़नेसैं अन्य देसांतरी जात्रार्थी जयजीवोंका धन ठगणेकी वृत्तिसैं तीर्थ सेवन अनंत संसारका जवन्नसण समझके वर्जना, एसैं डुरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगजीन करणा. शुद्धभावसे सिद्धगिरी सेवे ताकुं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी ॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं हे, जो रे बहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते दि० १ ॥ अदन्तुत कुंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आ दिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ जोली जगत जली परे हे, जो रे ७० ॥ निरखयां होय सनाथ ॥ मो० ते० ५ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर जरिय कचो-लमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रुमी रायणागंधमी हे, जो रे० ॥ आर्दिजनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥ इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥ चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० ॥ अजित जिनेसर शांती ॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदन्तुत उलकाजोल, मो० ॥ सिद्धवरु सेत्रुजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये नित रंगरोल ॥ मो० ६ ॥ इण कुंगर दीठा थकां हे, जो रे० ॥ ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर गंधमी हे, जो रे० ॥ कहे नित जिणचंद ॥ मो० ते० ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंडाप्रभु प्रादुषो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से-
त्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तूटे
करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसरया रे, प्रथम
जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसरया

तेवीस रे ॥ नमो० १ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए-
 हिज गोम रे । काल अनंत वलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोमि
 रे ॥ नमो० ३ ॥ अनंत कल्याणक जूमिका रे, महिमावंत महंत
 रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०
 ४ ॥ कोमि जवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से-
 ङ्गुजै सनमुख चालता रे, पग२ ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥
 धन दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्थुं सेङ्गुजे केरी वाट रे ॥ ठहरी
 यथाविध पालस्थुं रे, संघ सहित गद्गाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पग२
 उन्नव अतिघणा रे ॥ पग२ याचकदान रे ॥ प्रेम जगत साहमीतणी
 रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-
 दती मंगलमाख रे ॥ मणि मोतीयने वधावस्थुं रे, रजत सोवन जर
 आल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्थुं रे, करस्थुं पाव-
 न मोरी काय रे, जगति जुगति जुहारस्थुं रे, नाजिनंदन जिनराय
 रे ॥ नमो० ९ ॥ द्रव्य जाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥
 जावै जावना जावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥
 रत्नत्रयी जमती जली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ जवजव ब्रमण
 निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन
 मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो
 रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नार्थ धूलेवा सुपसा-
 यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-
 यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिघणो, जेटवा
 विमलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नाजिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-
 देवानंद रे पंथीमा ॥ वहिखुं बोले रे पंथी म्हारा वहिखुं बोले रे ॥

सेतुंजो ठै कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर
 सोदामणो, रुमी लखतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंबला रे
 वमला घणा, फुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वहि० २ ॥
 धन ते पंखी पारेवमा, सेतुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ ऊमा
 हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते डोर रे पंथीमा ॥ वहि० ३ ॥
 सेतुंज वाटे जी चालतां, जीणीर ऊमे खेह रे पंथीमा ॥
 मैला आवे संधना कापमा, निरमल आवै देह रे पंथीमा ॥ वहि०
 ४ ॥ उंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा ॥
 जिहां मिले घणा मानवी, गावै प्रजुगुण माल रे पंथीमा ॥ वहि०
 ५ ॥ घस केसर जर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा ॥
 फूलाहंदो सोहे प्रजु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अजंग रे पंथी-
 मा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर वीगं माहरै, ऊपजै परम आनंद रे
 पंथीमा ॥ मोने जेटणरो जी कोरु ठै, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथी-
 मा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निना
 णूं वार सेतुंज गिर, रुषज्ज जिनंद समोसरियै, सेतुंजगिर यात्रा० ॥
 कोमिसदस जव पातक तूटै, सेतुंज सामे रुग जरिये ॥ विम०
 जात्रा० १ ॥ चोथ ठठ दोय अछम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥
 विम० जा० ॥ पूरुकी पद जपियै हरबै, अघवसाय शुज धरियै ॥
 वि० जा० १ ॥ पापी अजघी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरि
 यै ॥ वि० जा० २ ॥ जूमिसंधारी ने नारितणो संग, दूरघकी परह-
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे
 पद चरिये ॥ वि० जा० ४ ॥ पम्किमणा दोष विधसुं कीजै, पापपु-
 ल विष हरियै वि० जा० ५ ॥ कलिकावै ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम जवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै
जव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरो स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ जात्र धर धन्य दिन आज सफजो गिणयो,
आज में सजन आनंदपायो ॥ जा० ॥ हर्ष धर निजर जर विम-
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वयायो ॥ जा०
॥ १ ॥ पग२ उमंग धर पंथ नित पूठनां, धन्य दोय चरण जिहां
चलत आयो ॥ जा० ॥ आज धन दीह जागी सुकतकी दिशां, आज
धन दीह में सुजस गायो ॥ जा० २ ॥ डुर डुरगति टरो जात्र
विवसुं करी, पुन्यजंकार पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-
रगिरसिखर, कषत्र जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशोर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भिगसर महीनेमें मिति भिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन मेढसें कढयाणक जये-हैं सो
लिखते है. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कढयाणक श्रीमल्लि-
नाथस्वामी के जये, श्रीअरअनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया. एते इस जरतक्षेत्रमें वर्तमान
चोवीसीके पांचकढयाणक जये. इस तरे पांच जरत, पांच एरवत
में, चोवीसीके पांच२ कढयाणक मिलाएसें पञ्चास कढयाणक जये.
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसें कढयाणक जये.
इस वास्ते यह दिन वना उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास
करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. ऐसे
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणो
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पहरकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग जा-
वसैं सुणै, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढेवालोंको सहाय देवै,
तपस्या ग्रहण करणैकी तथा पारणैकी विधि करै, सो गुरुमुखसैं
करै. (समवसरण बैठा जगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे
लिख्या हे सो पढे वा सुणै. पीठै उद्यापनमें पैतालीस आगमकी
पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवन्द्य करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत

२४ जिन पंच क-

२४ जिन पंच कल्या

ल्याणक नमः ॥

णक नमः ॥ ४ ॥

॥ प्रथम ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिअर्दतेनमः

६ श्रीशुनंकरअर्दतेनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिनाथायनमः

६ श्रीशुनंकरनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुनंकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

७ श्रीसप्तनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४

चिन पंच कल्याणक ॥२॥

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

११ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

२१ श्रीब्रह्मोदसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमल्लिअर्दतेनमः

१९ श्रीगुणनाथअर्दतेनमः

१९ श्रीमल्लिनाथायनमः

१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः

१९ श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअरिनाथायनमः

१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिन पंच कल्याणक ॥३॥

जिन पंचक ० नाम ॥६॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

- ६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः
 ६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
 ६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीउदयनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतीते २४ जि
 नपंचकल्याणक० प्रथा॥७॥
 ४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः
 ६ श्रीव्यक्तनाथायनमः
 ६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीकलाशतनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन
 पंचकल्याणक । ८ ।
 २१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः
 १९ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः
 १९ श्रीयोगनाथनाथायनमः
 १९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीअयोगनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन
 पंचकल्याणकनामः ९
 ४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीशुद्धार्तिअर्हतेनमः
 ६ श्रीशुद्धार्तिनाथायनमः
 ६ श्रीशुद्धार्तिसर्वज्ञायनमः
 ४ श्रीनिष्केशनाथायनमः
 ६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः
 ६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
 ६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
 ४ श्रीविशिष्टनाथायनमः
 घातकीखंडेपश्चिमभरतेअतीत
 २४जिनपं०ना०द्वितीय॥१०॥
 ४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीहरिजन्मअर्हतेनमः
 ६ श्रीहरिजन्मनाथायनमः
 ६ श्रीहरिजन्मसर्वज्ञायनमः
 ४ श्रीमगधाधिनाथायनमः
 घातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान
 २४पंचकल्याणकना० ॥११॥
 २१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः
 १९ श्रीअक्षोजअर्हतेनमः
 १९ श्रीअक्षोजनाथायनमः
 १९ श्रीअक्षोजसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः
 घातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-
 त २४ जि०पं०क० १२
 ४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
 ६ अधनदअर्हतेनमः
 ६ श्रीधनदनाथायनमः
 ६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
 ४ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत २४जिन
पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः

६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४

जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीवीपरीतअर्हतेनमः

१९ श्रीवीपरीतनाथायनमः

१९ श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत

२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः

६ श्रीब्रमर्षेणअर्हतेनमः

६ श्रीब्रमर्षेणनाथायनमः

६ श्रीब्रमर्षेणसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअतीत २४जिन

पंचकल्याणकनाम ॥१६॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअतीत २४

जि०पंचक० ॥१६॥

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअजिनंदनअर्हतेनमः

६ श्रीअजिनंदननाथायनमः

६ श्रीअजिनंदनसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेवर्त्त० २४

जिनपंचक० नाम ॥१७॥

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमरुदेवअर्हतेनमः

१९ श्रीमरुदेवनाथायनमः

१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअना० २४जि

नपंचकल्याणकनाम ॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः

६ श्रीव्रतधरनाथायनमः

६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअतीत २४

जिनपंचक० नाम ॥२१॥

४ श्रीअष्टादिकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवशिष्ठअर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः	६ श्रीवशिष्कनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः	६ श्रीवशिक्स्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः	७ श्रीवदयज्ञाननाथायनमः
धातकीखंडेपूर्वपरवतेवर्त्तमान २४	पुष्करार्द्धपूर्वपरवतेवर्त्तमान २४
जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २० ॥	जिनपंचक०नाम ॥ २१ ॥
२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः	२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः	१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः	१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः	१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१७ श्रीकामनाथायनमः	१७ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
धातकीखंडेपूर्वपरवतेअनागत २४	पुष्करार्द्धपूर्वपरवतेअना ० २४
जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २१ ॥	जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥
४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः	४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंडदाहअर्हतेनमः	६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः	६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीचंडदाहसर्वज्ञायनमः	६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिखादित्यनाथायनमः	७ श्रीप्रथमनाथायनमः
धातकीखंडे पश्चिमपरवतेअतीत २४	पुष्करार्द्धपश्चिमपरवतेअतीत २४
जिनपंचक० नाम ॥ २५ ॥	जिनपंचक०नाम ॥ २८ ॥
४ श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः	४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः	६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः	६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः	६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमैश्वरनाथायनमः	७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४	पुष्करार्द्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त०
जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥	२४जिनपंचक०ना०२९
११ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः	११ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीहरअर्द्धतेनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रअर्द्धतेनमः
१ए श्रीहरनाथायनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः
१ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः	१८ श्रीविवेकनाथायनमः
धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४	पुष्करार्द्धेपश्चिमएर०अना०
जिनपंचकल्याणकनाम॥२७॥	२४जिनपंच०क०॥३०॥
४ श्रीमहामूर्गेऽसर्वज्ञायनमः	४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्द्धतेनमः	६ श्रीविसोमअर्द्धतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः	६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः	६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मैन्द्रनाथायनमः	७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणाना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें नेदसें माला होती है. जो ज्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो थोमे जवोंमें अनंतसुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास मध्ये ५० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंधर्मे परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पञ्चक्राण करै, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जात्रा करनेको जावै, जो कज्री यात्रा करनेको नही जा सकै तो जहां

(५९)

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महीं छव संयुक्त दरसन करणेकों जावै, जलयात्रादि महीं छव करै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकढ्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करावै, तोरण बां धै, गीतगान नाटकादिकसँ अनेक तरैके छव करै, और (पास जि पोसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी० आदिक) पार्श्व नाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणै. इस पर्वका सेवन करणेसँ आधिध्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरैसँ रुद्धि वृद्धि सुख सौजाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जग तिलो) सुणे वा पढ़े सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखादे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मित्ती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सँ पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषजदेवस्वामीका निर्वाणकढ्याणक है, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगे चढ़ावै, बीचमें १ वना मेरु, च्यारुंदिस ठोटा च्यार मेरु, एसँ पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंदावर्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीठै श्री रुषजदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हज्जार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविज्ञाग करै पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब छवसें छजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवन्नय करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसँ अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र पिंगलरायकुमार गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणकै

तपस्या करी. तपस्याके करणसे पांगलापणका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण जयां पीछे तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संवसमेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधमीं वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान ज्ञक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढ़के सर्व कर्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त जया. जो जव्यजोव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस जव उर पर जवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहनेमें मित्ती फाल्गुन सुद १४, सोतीसरे चोमासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ अमराजगवंत श्रीमहावीरस्वामी बारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, १ जली, १ पर्युषण. जिसमें जली २ का उर पर्युषण का एवं ३ अर्वाइका महोत्सव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें जी जेसा बीकानेरमें खरतर गहवालोका पोया अर्थात् पुस्तकका उद्यव हाथीके होदे वने आम्बरसें होता हे वा वरधोना पुस्तकका मुंव-इमें जी होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नही. उर कार्तिक महोत्सव अन्यत्र जी वहीत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जेसा महोत्सव स्वमतमें तथा परमतमें कहाइ जी जारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षिणमें मछे-वार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा काली पटणा तक में नही देखा. उगणीसें वावनके वर्षमें हमने यह उद्यव कलकत्तेमें देखा था, उर फाल्गुणमहोत्सव मकसूदावादका वहीत अथा होता

है, जगणीसमें सुमतालीसमें देखा था, दुसरी जगे नहीं कहाँ ज्ञी देखा, लेकिन किसी ज्ञी धर्ममहोन्नवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अज्ञा नहीं, एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञान्यवानलोक धूपके मरसें रेतिके मरसें आप-तो जते नहीं फक-त बेसमज अदम्योंको जेजदेतेहैं, वो लोक कूडते नाचते ज्ञागते समवसरणकों उन्हालादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती है, कितना कर्म बंधताहै, उसकुं सम्पत्तीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनुं जव सफल है, बोही महोन्नव लायकतारीफके है इस वास्ते आत्मार्षी धर्मज्ञ पुरुष है सो शेतका चोमासापर्वजाणके सर्व जगें जगवंतके धर्मका उद्योत करतेजये शुजध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्मरूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, एहि सुबोधजलसें ज्ञान करके अत्यंत सुंदरताकुं प्राप्त होते हैं. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हैं. इव्यें ठर जावै, सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केशवक अज्ञानीजीव विवेकविकल जयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त जयेथके लक्षण ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमासा धर्मपर्वका विराधना करते हैं, दूतरे दिन मलमूत्र रेतिसें क्रीडा करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढ़ते है, अनेक जीवोंको उख देते हैं, ऐसे जीव वीतरागकी आज्ञा ठोरके ज्ञान जरमोंकी कुलमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध ठोर पेसाव पीते हैं, ऐसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करकै दुर्गतिकों उपार्जन करते हैं, अनर्पदंरसें अनंत जव संसारकी स्थिती बांधते हैं. इसवास्ते आत्मार्षी ज्ञव्यजीवोंको ज्ञावहोली करणा चाहियै, सो इस मुजव-प्रभुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-

ए करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोत्सव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, सादमीवस्त्र करै, साधमीजाई आपसमें नाना-तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक जी वसंतऋतु आणैसैं मदन महोत्सव करणैकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गु-लालसे सहरके लोक बगीचोंमें क्रीडा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें वहोत जगे वांचणोंमें आया हे, लेकिन मलमूत्र राख धूमसैं खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद ओमणा, वनेरोकी लज्जा ओमणी, एसा कृत्य उत्तम पुरु-षोंके करणें लायक नही. यह क्रीडा वाममार्गीयोंकी चलाई जई हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो इक्कार वर्ष करीब जया. पीठै स्वामी शंकराचार्यकूं यह बात सम्मत जई तबसैं घीरेष्ट अज्ञानी जीव ए-ककी देखादेख बढ़ोत लोक करणें लगगये, लेकिन एसी कर्तव्यता किसी जी शास्त्रमें नही देखणेंमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी बात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोत्सवका काम होता हे उस वख-त तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मा-तापिता जाई वद्दिन सबोंकी लज्जा ओमके बढ़ोत दिलमें खुसव-खती मानताजया पागलके माफक ज्ञानोंकी तरे बकते फिरता हे. कोइ वैस्याउका नाच होता होय उहां तो इक्कारुं रुपे खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हैं इमने वना नाम किया. तत्व नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुजगतीके पाये पूरे-मजबूत बंध करणेंमें आये. एसी लज्जाओमके जिनमंदिरका महो-त्सव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर जावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्षी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, उर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें उर

सच्ची वातकूँ कुयुक्तियोंसें जूठी उद्धारवेंगे, उर मध्यस्थ विचारवंत तो ऐसा कहेंगे यह वात सच्च है. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दंन लगता है, लेकिन हम इकेला क्या करें, ज्ञाईब-धोंकों ऐसा करते देख हमज्जी करते हैं, हमसें रहा जाता नहीं, परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अच्छी है. इस वास्ते हे ज्ञव्यजो-वो इसमें समुदायी कर्म बंधता है. गोमे सो घन्य है, नरकके जाते का संग नहीं करणा, जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी करखेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत उर वात तक नहीं करते उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख-डसरेकों बचना चाहिये. काम वो करणा जिसमें दोनों ज्ञवमें लाज होय, इस इव्यहोलीके खेलमें वनीर लमाइयां होजाती है. मेमता सहर हालीके ख्या-लसें पुष्करणे उर जोजकोंकी लमाइमें तमाम उजार होगया. उर परजवमें अरगैर बोलखेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है. इस बाबत जो जो कठोर लबज लिखा है उसकूँ वांच विवेकी मेरे पर गुस्ता नहीं लावेंगे, जो कुछ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-नुसार लिखा है. हितोपदेश समऊके गोमुखका प्रयत्न करेंगे, मेरे तो नवकारमंत्रके अमसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है, जि-समें जी सर्व जीवायोनिसें मित्रता है. कम या ज्यादा जो कुछ अपशब्द लिखा होय तो मित्रामिडुक्कनं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव
॥ हो० ॥ दयामिगई अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-
थायो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १ ॥ लेस्या मा-
दल जाव रुफ रे, क्रोध मान होय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी
नवतत्व लेहुं गुलाब ॥ हो० २ ॥ सुमताकेसर घोलियै रे, दमवाको

(४९६)

छिम्काव ॥ ग्यान पिघरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥
हो० ३ ॥ ऐसा साज वषायकै रे, रुषजदेव गुण गाय ॥ श्रीजि-
नचंड इम खेलतां, वारी जव२ पातिक जाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिने-
सरकी, ज० ॥ मस्तक मुगठ सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केस-
रकी ॥ ज० १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अखंनित तनकी, स्वामघटा
जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, करुणा
कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ उनाय वाय ज्युं वादल, जीत
करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया,
राणी अश्वसेन नरसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपा-
ये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रभु
प्रारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान
गुलाल अबीर उनावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत
रूप धरम जिनवरको, शुध कमा कहै करजोरी ॥ म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥
संजमदूती कान छगी जब, शिवनारी पर चित दियो रे ॥ या० २ ॥
मोह बोन गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग कियो रे ॥ या०
३ ॥ तुम हो तीन जुवनके साहिब, सुरनर कहै तुमे चिरंजीयो
रे ॥ या० ४ ॥ वार२ मेरो वंदना होयज्यो, चंद कहै मन
हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी, इ० ॥
इह संसार गहर तरु सिंधु, जमर परत जिहां जव फेरी ॥ इ० १ ॥
क्रोधादिक बहु मगरमछ है, अहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥
एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

(४९७)

धरमजिनेसर जगपरमैसर, दूर करो डुखकी बेरी । ६० ४ ॥ परम
क्षमागुण दायक लायक, अनुपमकीरत जग तेरी ॥ ६० ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः होरी ॥ सांवरो सुखदाई, जाकी बिव वरणी न जाई
सा० ॥ श्री ॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिभुवन ठाई ॥ समे-
तसिखरगिरि मंरुण प्रभुको, देख दरस दरखाई-हृदय मेरो अति
हुलसाई ॥ सां० १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगढ्यो, आज आनंद वधा
ई ॥ तीन भुवनको नावरु निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई-सफल
मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रभुके दरस सरस विन पाये, ज-
व ३ जटव्यो में जाई ॥ अब प्रभु चरण सरण चित चाहत, बाल
कहै गुण गाई ॥ प्र० सां १ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना दरखाई, आज तेरी सूरत निर-
खी ॥ ने० ॥ जव २ संचित पाप करम सब, देखत दूर पुलाई, सु-
मति वधारण कुमति विचारण, ज्ञान धिमल उलसाई ॥ आ० १
॥ वामानंदन अति ठबि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनद-
याल दयाकर बीजै, आनंद दरस सवाह ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ ऐसैं फागुण मस्त महीने च-
खोरी, देखो स्याम सखी मोपै गोरी ॥ ऐसैं ० ॥ ब्रजकी सखी सब
वन ३ निकसी, खेलत मिल ३ होरी ॥ नारे गुलाल अवीरमुठोन्नर, अप-
ने प्रीतम रंगोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सजी वन ३ के,
मधुर २ रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतम २
गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रत अनरत रात रसे रस, सरस दरस
प्रभु मोरी ॥ प्रो १ तजी सुमता ममता नन, बाल कहै कर जोरी ॥
च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसैं कहियो मोरी, ने० ॥
समुझिजै शिवादेवीको नंदन, वादवकुल उदयो री ॥ तेजपूज तनु

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी
॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥
तोरणसें रख फेर चले हो, चढ गए गिरकी ठरी—मदन महा रिपु
तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख
कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसें, विनती करै करजारी-
लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन धिर करकै, हो०
॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर जगावो जोली जरशकै ॥
हो० १ ॥ ग्यान ध्यान रुफ ताल बजावो, गुण गावो प्रजु हित धरके
॥ हो० २ ॥ अनुजव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस महम
हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रजधूरु जगावो, ज्यूं तेरा पाप सब-
ल अरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रजु जज विलं-
ष न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संजारी जर पिचकारी, हारे तूं
तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल जर
जोरी, हारे तूं तो खेल वसंत घर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग
आजूषण अंगै, हारे तूं तो जावना वागा पहिर रे ॥ हो० ४ ॥ नी-
रंजन प्रजुना गुण गावो, हारे तूं तो आतम अनुजव वर रे ॥
हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारे तूं तो गूंजत मन
मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पासजिनेसर, हारे तूं तो ज-
गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रोजिनलाज कहै प्रजु संगै,
हारे तूं तो अनुपम जव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमतासंग
खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिनशासन बतरंगमदिलमें, दीपकबोध बनाई
॥ आ० ब्रा० १ ॥ सरधासखी कामा मृडना मिल, रुजुता मुक्ति सुदाई ॥

जग अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुजव रंग रंगाई ॥ आ० वा० ३ ॥
 ज्ञाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सदाई ॥ जिन गुण
 गान संगीत निरत धुनि, जकि जिषांद बढ़ाई ॥ आ० वा० ३ ॥
 खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आषांद बढ़ाई ॥ अंब कुमता
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चउरा
 सी जव जमतां२, नरजव पाषो सो दिख खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर
 ज्ञावात नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥
 पुन्य संजोग मिल्थौ कुल आवक, ग्यान प्रकाश ज्यो घटको ॥
 स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासे तेरो मन अट
 क्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूयो शिवपु
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रजु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ विसरे मत नाम प्रजुजीको, वि० ॥ प्रजुजीको ना
 म चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना-
 ज कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जुवन सिर दे टीको ॥ वि० २
 ॥ चतुर कुशल चित चोखसुं राख्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥
 बहुत दगासुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥ व० ने० १ ॥
 सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोरै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०
 ने० ३ ॥ जनघरजूषण कहै जविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेले ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जरथौ, दिशि दूजी गिर
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतो, तिण माहे खेले नेमकु
 मार ॥ ग० १ ॥ फूड्या केवना केतकी, विच फूड्या मरुआमचकुंद
 ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहे खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥
 आंबा मोरया बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै
 पवन इक्षितणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आं
 ब पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमार अजू
 नही, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलधर गोपि मिळी,
 विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलजरी, मुख ऊपर ढां
 टे यडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जोरें य-
 डुनाथ ॥ शिंदहरष वाचक कहै, वात सांजलो शिवादेवी मात ॥ ग० ६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो जाग री, नेमनाथ वर
 पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रुषज्जिणंदा, जिण
 मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको उत्र धरयो सिर ऊपर,
 गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ,
 फूल चढाजं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख
 बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी ऐहि बीनती, जव
 दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंगनगरमें, फा-
 गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंरुपमें, होय रही
 हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रजुजीके अं-
 गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल
 उमाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध जांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित
 लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ब० ॥

निबिम्ब डुरित ज्वर शिखर जि डुरकी, ज्वसागर तारण तरकी ॥
 ब० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी
 ॥ ब० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करि कै, महिमा जीती सुरगिरकी
 ॥ ब० २ ॥ परमात्म पद प्रतिबिंब तनको, बंढित पूरण सुरतरु-
 की ॥ ब० ॥ वर सोरठ मंरुल मंरुनकी, सकल करम रज जल-
 धरकी ॥ ब० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाज्ञेय जिनेसर-
 की ॥ ब० ३ ॥ ए गिरि नदयाचल परि जिनकी, डुति दीपै जेम
 दिनेसरकी ॥ ब० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-
 रुणासागरकी ॥ ब० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन जु-
 वन जनहितकरकी ॥ ब० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषज
 लंगन सोजाधरकी ॥ ब० ५ ॥ सुंदर प्रजुकी मोहनमूरति, देखत
 परमानंद जरकी ॥ ब० ॥ केवलकमला प्रजुकी निरंतर, पदतल
 नमत सुरासुरकी ॥ ब० ॥ चरण सरण द्योयजो शिवचंदकै, जवश्
 एहिज जिनवरकी ॥ ब० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रजु नेमनाथ, मेरे दिख वसिया ॥ ऐ० ॥
 त्रिगढ़में विराजमान, डुंडुजि सुणत कान ॥ अपठर भिन्न करत
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजै साम, जीत
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिख हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥
 ऐ० २ ॥ तीन बत्र चमर सार, पंच वर्षा पुष्प धार ॥ गहिर अ-
 सोक सार, जामंरुल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग,
 द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाखा, सं० ॥
 हारे हो रे लाखा ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाखा
 ॥ सं० ॥ बाता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता
 दीजै सादिव मोक्क, तक आयो सरण तिहारी हो लाखा ॥ सं० १ ॥

सेनामात जयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकेज
 खंढन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाखा ॥ सं० २ ॥ साठ
 पूरब लाख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरषा
 सेवे डुरितारी, सावन्नी नगरी सारी हो लाखा ॥ सं० ३ ॥ समेत
 सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाखा ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरषा
 सुहसे त्रिभुवन पतिकुं, बंदना होओ होमारी ॥ चरणकमल सेवा
 चित चादत, सुगुण सदा हितकारी होलाखा ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ बेस बिखावो रसिया,
 सा० ॥ सोरठ बेसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिख्या ग्यानेकेवल रसि
 या ॥ सा० २ ॥ राजुखनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसदेसर, पूरब निनाशुं
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणलण कर
 सिवपुर बरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा,
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरियो
 ॥ सा० ७ ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जव हारो रे ॥
 जि० ॥ रथ पाठधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राश-पियारो ॥ जि० क्या०
 १ ॥ पूरण पुन्य नदयथी पायो, नरंजव सफल जमारो ॥ जवि
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥
 जवहुख जंजननाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम
 ता संग जेही, निज आत्म काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें
 रंग बधाई, घर मंगलाचारो ॥ रथ महोन्नव रचना रची हद, मुख

जय२ सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विस्व विचारी,
सेवक सुगुण संज्ञारो ॥ प्रभु पंकजकी द्वि सरणा ग्रही, जवसा
यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वषाय सखी सब, शिखर
सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो;
मोसें प्रीत लगाइ जामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि गोनी,
कोन चूक मोपै काही जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ मेन तजूंगी
नव जव केरी, प्रीत वषी जेसी इंडु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-
जुल पदली प्रीतमसेती, बाल कदै नई सुगति गामिनी ॥ आ०
म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेल ॥
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पढ़िरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया घर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥
द्वि मित्र आप परम रस चखै, सुमत सखी पदचान ॥ हो०
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाब लाख रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो०
रं० ४ ॥ सुमति अवीर उभाय जगतमै, बैठै शिवपुर ध्यान ॥ हो०
रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर ध्यान ॥
हो० रं० ६ ॥ एसा खेल जविकजन धारै, वंजित पावैदान ॥ हो०
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥
मनमृदंग बजै तन मांही, गावत अगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान
गुलाब तदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित
केसर चीर रंगान, पढ़िरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-
मत ठांसी, च्यारु गतिसैं जाग ॥ हो० ॥ अविचल मुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ ऐसा खेल नविकजन
धरै, पावै नवजल धाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुख होय जगतमें,
समकृतके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय२, डुरजनकी लाज
मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर उमावो, कमा
करो रंग लाय २ ॥ ड० हो० १ ॥ शीख संजमव्रत पान मिठाई,
ध्यान धरुंगी में गाय गाय२ ॥ ड० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेद
उमावो, ज्ञान दियामें लाय २ ॥ ड० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अ-
रज वीनती, सरण गही में तेरी जाय२ ॥ ड० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे जरी, शिवपुरकी
वात पूर्व कबकी खरी ॥ मे० ॥ परनजोत प्रभु सिद्धशिला पर,
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग जस्थो रंग शी-
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुषन बैठै अलवेसर, नारो गुलाल
मुठी जरकै ॥ बावो० ॥ मुठी जरकै पसली जरकै, बावो० ॥ चू-
आ२ चंदन उर अगरजा, केसरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥
रतनजमित शिर उत्र विराजै, अंगी जमाव जमी जरकै ॥ बावो०
२ ॥ बाँदै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०
३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये जवि आदीसरसैं ॥ बा०
४ ॥ आदिखान हेदास तुमारो, तार लीओ अपलो करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ नवःडुख वारण शिवसुख कारण,
देखत नवनही वंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंद-
न, प्रणमुं रुषन जिनंदना रे ॥ जि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान
तुमारो, जिम चातक दिख चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरणा तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥
देख्यो मधुवन शीतानाखो, नीर वहे है अति नीको ॥ द० १ ॥ बी-
स कोसथां दरसन दीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥
बीसे टूँके बीस गोमटनी, तामे चरख जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब
जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ इ०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-
घयात्रा करणसैं पाष कटत है, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि
सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषज जिनेश्वरजीको
दर्शन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै
नाथ निरंजन, जवश्का डुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि
जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूँही रंग रे ज तूँही है, संजम रंग
मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो है अना-
दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-
द्धि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सज्जदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥
ज्ञान दर्शन चारित्र रंग है, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥
जुषरदास कहै समकितदे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रंगमंरुपमें, खेलत संत
वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥
॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी बूटत, समता सखिय मिलंत
॥ आगम लहर फूली फुलवानी, मुनिवर अमर गुंजंत ॥ मे० २
अंग आजूषण पंचेंद्रिय बस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना ग-
हिर कसूंवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदजून पंच माहा
व्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद प्रजुकी कृपासैं, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मन्थो जिनद्वार चालो खेखिये होरी,
रं० ॥ पास प्रभु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन ब्यार रे, चा०
कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥
कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल मद्दके अपार रे ॥ चा० २ ॥
लाल गुलाल अबीर उभावत, पासजीकै दरबार रे ॥ चा० ३ ॥
जर पिचकारी गुलाबकी बिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥
ताल मृदंग बीण रुफ बाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥
सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥
॥ रत्नसागर प्रभु जावना जावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसैं कहियो मोरी, सामरेसैं कहियो
मोरी ॥ तोरण आए किरा जरमाए, गोम चले अजिमाणी ॥ हां
रे लाला गो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-
दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीसो मुंहसैं कहियो,
ना करिये सोधाणी ॥ आठ नवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं
ज्यानी—श्याम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें
बेद लागी, राजुल गुलकी वामी ॥ वीनती सुणकै अमर पद दीजै,
रंग विजय सुख दानी—आवा उर गमन बिदानी ॥ सा० ३ ॥ ६०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें बरसै रंग, जिन०
॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ झान गुलाल अबीर अरगजा,
सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुजव लहर फुली फु-
लवामी, दिन२ बढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा
अंग अनोपम, शुद्ध ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद
चिंतामणि चित धर, तुझसुं अविहर रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ ६०॥
॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया बणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रजूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी आवक मिल आये, आशी ज्ञाव
 अजंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी ज्ञांत ज्ञानी हे, वुंठिया
 नवशंरंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्धो हे, कोर केवना
 संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोष कुंमल, बाजूबंध
 सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिजुवम साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरमर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥
 श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग
 ॥ श्रीचिं० ॥ ज्ञावना ज्ञावो जिनगुण गावो, अमर धौ उबरंग
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्वावो रे, वंठित फल पा-
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण
 गावो रे ॥ वंठित० १ ॥ अबीर गुलाब लाल संग लावो, जर२ मु-
 ठियां उठावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिठकावो, ज्ञा-
 व शुक्ल जल ज्ञावो रे ॥ वंठि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुद्गल ब-
 नावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ दरस सरस
 करके सुख पावो, पुण्य जंमार जरावो रे ॥ वंठित० चिं० ३ ॥ वा-
 जित्र बाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंठित० चिं०
 ॥ अमरसिंधुर आनंद बनावो, जिनजीसैं लयलावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांदि, गावत आगम राग ॥
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाब सदा रंग लागे, खेलत सुमति
 सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगानं, पहिरूं मन
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लाल चोरासी रामत ठोरूं, च्यारों गति
 सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै,
इस विध खेले फाग ॥ पिया में ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-
जी, नेम ० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥
हो ० ने ० १ ॥ हम हे केतकी तुम हो २ जमरा, फिर वासना लीजीये
॥ हो ० ने ० २ ॥ मैं हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना
कोजीये ॥ हो ० ने ० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद
दीजीये ॥ हो ० ने ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ आत्म तत्त्व विचारो ज्ञानसें, कर्म कटै ज्युं शुद्ध
ध्यानसें ॥ आ ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाणयो, ममता मिट
गई सारी जानसें ॥ कर्म क ० आ ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार
सम, नास ज्यो सब ज्ञानजानसें ॥ कर्म क ० आ ० २ ॥ परमात्म
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल थानसें ॥ कर्म ० आ ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते ० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,
नयन जये अविकारी ॥ निझ सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण
निवारी ॥ लाल ते ० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे दुसिया-
रो ॥ लाल ते ० २ ॥ ऐसा लज्जन हे नयनोंमें, क्युं पामे जव पारी,
योही विचार करो दिख अपने, होत कर्मसें जारी ॥ लाल ते ० ३ ॥
धर्म विना कोई सरणा नही है, एसो निश्चै घारी ॥ विनय कहै
प्रभु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जन्मो, द ० ॥ चो-
रासी लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव युंही गम्यो ॥ द ०
१ ॥ पुन्य उदय आवक कुल पायो, यटमें ज्ञान उद्योत जयो ॥ द ०

३॥ माया समतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥
 ६० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो
 ॥ ६० ४ ॥ कहत कामाकल्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप
 शम्यो ॥ ६० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठोको मोने यूंदी रे, कोइ चूक बतावो
 ॥ म० । अबीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढ़िया गढ़ गिरनारी
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत द्वांसुं व्याद मनायो, जीव देख दया
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊजी अरज करत हे, एक वार
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए,
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवज्र लंछन जनम जदिलपुर, कुल
 इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेज धनुष शरीर सुसोजित,
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु
 कदिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत
 प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके
 साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजे गिरनार, नेमपद मंगल है
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी बिच सार ॥
 ने० २ ॥ मंगलधन धन्नामुनिनायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३
 ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जंपै, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासै संग्रही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करता ज्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंद्र विक्रम माष सुदि पूनम सही, श्रीवृद्धस्वरतर गङ्ग पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंत के कल्याणक के दे सो सर्व ज्यजीवोंके सेवन करणे योग्य है, लेकिन कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (और विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले ज्यजीवोंके अवश्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चखता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासै पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ १ ॥

५ श्रीसंज्ञवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

१२ श्रीपद्मप्रभुजीअर्द्धतेनमः

३२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्द्धतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्द्धतेनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीअर्द्धतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१४ श्रीसंज्ञवनाथजीअर्द्धतेनमः

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्द्धतेनमः

१५ श्रीसंज्ञवनाथजीनाथायन०

- ११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥
- १२ श्रीचंद्राप्रभूजीअर्द्धतेनमः ६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
- १३ श्रीचंद्राप्रभूजीनाथायनमः ७ श्रीशान्तिनाथजीसर्वज्ञा०
- १४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय० ११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
- माघकृष्णपक्षे ॥ ५ । १४ श्रीअजिनंदनजीसर्वज्ञा०
- ६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्ठिने० १५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०
- १२ श्रीशीतलनाथजीअर्द्ध० माघशुक्लपक्षे ॥ ७
- १२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः २ श्रीअजिनंदनजीअर्द्ध०
- ११ श्रीरुषभदेवजीपारंगता० २ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
- १० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन० ३ श्रीविमलनाथजीअर्द्ध०
- फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ३ श्रीधर्मनाथजीअर्द्धतेनमः
- ६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ४ श्रीविमलनाथजीना०न०
- ७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता० ७ श्रीअजितनाथजीअर्द्ध०
- ७ श्री चंद्राप्रभूजीसर्वज्ञायन० ७ श्रीअजितनाथजीनाथा०
- ७ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने० १२ श्रीअजिनंदनजीनाथा०
- ११ श्रीरुषभदेवजीसर्वज्ञायनमः १३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०
- १२ श्रीश्रेयांसजीअर्द्धतेनमः १४ श्रीअजिनंदनजीअर्द्ध०
- १२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः २ श्रीअरमाथजीपरमेष्ठिने०
- १३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः ४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्ठि०
- १४ श्रीवासुपूज्यजीअर्द्धतेनमः ७ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्ठि०
- १० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः १२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
- चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ १२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०
- ४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने० चैत्रशुक्लपक्षे ॥ ७
- ४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ३ श्रीकुंभुनाथजीसर्वज्ञा०
- ५ श्रीचंद्राप्रभूजीपरमेष्ठिने० ५ श्रीअजितनाथजीपारंग०

- ८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः
 ८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०
 वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९
 १ श्रीकुंभुनाथपारंगतायनमः
 २ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
 ५ श्रीकुंभुनाथजीनाथायनमः
 ६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०
 १० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०
 १३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०
 १४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०
 १४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
 १४ श्री कुंभुनाथजीअर्हतेन०
 ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥
 ८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
 ९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
 १३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०
 १३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०
 १४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०
 आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥
 ४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
 ७ श्रीविमलनाथजीपार०
 ९ श्रीनमिनाथजीनाथा०
 श्रावणकृष्णपक्षे ॥ ४
 ३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०
 ७ श्री अनंतनाथजीपर०
 ५ श्रीसंज्ञवनाथजीपारंग०
 ५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०
 ९ श्रीसुमतिनाथजीपारंग०
 ११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
 १३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
 १५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०
 वैशाखशुक्लपक्षे ८
 ४ श्रीअजिनंदनजीपरमे०
 ७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
 ८ श्रीअजिनंदनजीपारंग०
 ८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
 १० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
 १२ श्रीविमलनाथजीपारंग०
 ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥
 ५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
 ९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०
 १२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०
 १३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०
 आषाढशुक्लपक्षे ३
 ६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०
 ८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
 १४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०
 श्रावणशुक्लपक्षे ५
 २ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
 ५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

(५१३)

- | | |
|---------------------------|----------------------------|
| ८ श्रीनामनाथजीअर्ह० | ६ श्रीनेमिनाथजीनाथ० |
| ए श्रीकुंभुनाथजीपरमे० | ८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग० |
| भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥ | १५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि० |
| ७ श्रीचंडाप्रभूजोपारंग० | भाद्रपदशुक्लपक्षे १ |
| ७ श्रीशान्तिनाथजीपरमे० | ए श्रीसुविधनाथजीपारंग० |
| ८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे० | आश्विनशुक्लपक्षे १ |
| आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २ | १५ श्रीसुविधनाथपरमेष्टि० |
| १३ श्रीमहावीरजीगर्भाय० | |
| ३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा० | |

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घनो गुरुके पास पंच कल्याणक सप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पञ्चक्राणः करै, तीन टंक देववंदन करै, परिक्लमणा करै, जिस दिन जो मा-हाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, उर पदली, लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुखे या पढ़ै, जहां ज-गवंतकी कल्याणक जूमि होय उहां घने महोन्नवर्ते संघ समेत यात्रा करणेंको जवै, उहां विधी संयुक्त सर्व जगवंतोंके पंच क-ल्याणकका उन्नव करै, जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीम-हावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उन्नव करै ॥ अब २३ जगवंतकी अपेक्षार्थे पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षार्थे षट् कल्याणक संक्षेप उन्नव विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्टिनेनमः) कहियै, इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायकै च्यवन कल्याणादिकका उन्नव करै, हीरा चढ़ावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककुं (अर्हतेनमः) कह्या, इस दिन जलजात्रादिकका महोन्नव करके अष्टो-

चरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कढ्याणककों (नाथायनमः) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृ-
क्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उज्जव करै, घृत गुरु वस्त्रा-
दिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कढ्याण-
ककों (सर्वज्ञायनमः) कहणा. इस दिन समोसरणमें जगवंतकों
विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उज्जव करै,
वस्त्र आजूषण चढावै, सुपेदचंद्रन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ नि-
र्वाण कढ्याणककों (पारंगतायनमः) कहियै. इस दिन निर्वाण
कढ्याणकके ज्ञावगर्भित उज्जव करै, लहू चढावै ॥ ५ ॥ और उग्र
गर्भापहार कढ्याणकका उज्जव करणा होय तो ज्यवनकढ्याणकके
उज्जव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कढ्याणकका उज्जव करै,
तपस्या पूर्ण होखेसँ पंच कढ्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुजक्ति
करै, साहमीबज्जल करै, इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो
ज्यजीव करेंगे सो अनंत सुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकढ्याणक
तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशो ॥ जंबुद्वीप सोहामणो,
दक्षिणज्जरत उदार ॥ राजग्रही नगरी जखी, अलिकापुर
अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय
॥ मनवंडित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राजकरै
निहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती; शील-
गुणै अजिराम ॥ श्री० ३ ॥ आवण उज्ज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश
॥ माताकुक्ति सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पदम
पह अहमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोदव सुर करै, त्रिजुवन
हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंठन काठवो, बीस धनुष तनु मान ॥ श्री०
 ६ ॥ परशो नार प्रज्ञावती, जोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख
 जोगवै, पूरै वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आ-
 वि जंघै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम जार
 ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥
 व्धार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९ ॥ (दाल १ ॥
 सुख कारण जवियण ॥ एदेशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया च-
 लिया सुरनर कोरि, प्रभुना पदपंकज प्रणमै बेकर जोरि ॥ बेकर
 जोमी मठर ठोमी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रि-
 गमो वज्रत्रय जलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म
 प्रकासै, बारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उब्झासै ॥ १० ॥ त-
 पने अधिकारै पखवासो तप सार, पम्वाधी कीजै पनरह तिथी
 कदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जित दिन दुवै उप-
 शम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपोजै वांढी देव उब्झाल ॥ तप कजमणै
 रजत पाखणो सोवन पूतलो चंग, मोदकधाल देहरै मूंकी जिन
 वर सात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अहुरच दर्शनो जेम, म-
 नवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वं-
 छन जरतार, जल कीरत सोजाग वरुई महियल महिमा जाण
 ॥ परजव मुगति फल लहियै, एं तपने प्रमाण ॥ १२ ॥ धिर आपी
 चतुर्विध संयतणो अधिकार, जखवठ प्रमुख नगरादिक करिया वि-
 हार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्तिक-
 सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सदेस वरष आ-
 ऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्भतशिखर परमेसर पुढता मुग-
 ति मजार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक शुणिया त्रिजुवन ताय,
 मुनिसुव्रतस्वामी बीसमो जिनवर राय ॥ बीसमो जिनवर राय

जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरा-
मर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस,
वाचक समयसुंदर इम पन्नपै पुरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुद्धदिन गुरुके पास तप ग्रहण करकै सुद (१) प-
रिवासें पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं
होयतो प्रथम सुदि पक्षकी परिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, एसें
अनुक्रमसें पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी
के पांच कल्याणक जावगर्हित स्तवन पढ़ै. गुरुका संयोग होय
तो गुरुके पास सुणै. (श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस
पदका १००० दो इज्जार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी
तथा देववंदनादिककी विधि पढ़ले लिखी हे उस मुजब विवेकी
जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणसें उत्तम फल
मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पञ्चस्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ त्रिगमै
बैठा जिनवरू, परषद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण
सभे, पूढै श्रीजिनराय ॥ दस पञ्चस्काण कित्ता कहा, कीयां कवण
'फल' थाय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥
श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांजल गोयम ताम ॥ दस पञ्चस्काण कियां
अकां, लहिये अविचल गम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी
३, साढपोरसी पुरिमद ४ ॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवडि ॥
श्री० ४ ॥ दात ७ आंबिल ए उपवास १० ही, एहिज दस पञ्च
स्काण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करुं वखाण ॥ श्री०
५ ॥ रतनप्रज्ञा १, सर्करप्रज्ञा २, बाबुक तीजी जाण ॥ पंकप्रज्ञा

४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतम ७ तम ॥ श्री० ६ ॥
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम
 वस ते सही, ऊपजै तिणहीज गोर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन
 तामना, झूख तृषा बलि त्रास, रोम २ पीना करै, परमाहन्मो
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल जर नहीं जिहां
 सुख ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥
 इक दिनरी नवकारसी, जे करै जाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो
 आउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी,
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप बलि पावला, निरमल होवे
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (ढाल १ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो
 ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥
 जावसुं जे पोरसी करै, डुरगति ठेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांदि
 जै नारकी, वरसैं एक हज्जार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु-
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥
 करम ह्यें सहस्र एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति
 मांदि नारकी, दस हज्जार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, सा-
 दपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद्व करै नित जीव जे, नरक
 ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद्व करम खपाय ॥
 ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा
 करम एकासरो, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोनि वरसां
 लगे, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां जावसुं, डुरगति ह्यो
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोनि जीव नरकमें, जितरो करै करम
 दूर ॥ तीतरो एकलगाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात
 करंता प्राणियो, सो कोनी परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,
 ठेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंखिनो फल बहु कह्यो, कोनी

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, जाव आंबिल अधिकार ॥ सु०
 २१ ॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मज्जार ॥ उपवास
 करै इक जावसुं, तो पामे मुगति मज्जार ॥ सु० २२ ॥ (हाल ३॥
 केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके क-
 रता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ बढमं तप करतां अकां, सही
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही,
 जीव लहै तिहां डुक्क रे ॥ ते डुख अढमं तपहुंती, दूर करी पामे
 सुक्क रे ॥ गो० २४ ॥ बेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ
 रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर
 करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय वि-
 शेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे जला,
 करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिस्तुं
 करै, चवदह पूरब होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां
 बलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै
 जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै जेव पार रे ॥
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनं
 त जवाना पापघ्नी, बूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती
 पापी तरथा, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें,
 शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कहा,
 पञ्चस्काणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण बै घणा, करतां बेदे
 त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चस्काण दस विष फल
 परुष्या महावीर जिणदेवए, जे करै जविअण तप अखंरित तासु
 सुर पयं सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अथ शशि बलि पोस सुदि
 दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंड तप विधि

जयो ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पञ्चकाणके स्तवनमें खुदासा दस पञ्चकाणके जेव नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक त-
पस्या करणेके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब
उत्तम पुरुषोने रचना करीहै, इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तव-
नको पढ़के तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश
पञ्चकाण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दु-
सरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पञ्चकाण दस दिवसे
सेवन करै, तदा स्तवन सुणै पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक
उच्चापन करै, इस तपस्याके प्रज्ञावसे डुरगतिबंध दूर करके अच्छी
गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, जाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीर स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धचल जेठियै ॥ ए वेशी ॥ वीर स्थानक तप सेवि-
यै, घर कर शुद्ध परिणाम लाल रे ॥ तीजै नव सेव्यो अको, बां-
धे तीर्थकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही,
ज्ञाताअंग मजार लाल रे ॥ सुषाजो नवि तुमे ज्ञावसुं, चित्तसें करिय
उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीर स्थानक
तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुद्ध मधुरते, उचरोजै ससनेह लाल
रे ॥ वी० ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ धिवर ५ उव-
ज्ञाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाथ ८ दंष्टण ९ अरु, विनय १० नमूं
उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंज १२ क्रियापदे
१३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७
ज्ञातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीर लाल रे ॥
वी० ५ ॥ वीर दिवसमें ए कही, पद गुणानो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विंसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥
 एक ठंड़ी षट मासमें, पूरी जो नवि होथ लाल रे ॥ फेर
 नवी करणी पनै, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥
 ठठ अछम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर
 आराधियै, देव वांदै निज जक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर
 पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही,
 सात ध्यानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पनिकमणो दोय टंकही, करियै
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक ठंड़ी करो
 वीस लाल रे ॥ वीसावीसी ग्यारसै, तप संख्या कही एम लाल
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित्त
 धार लाल रे ॥ कानुसगने परदक्षणा, मुख जणियै नवकारलाल
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुयै, कीजै जिनपद जक्ति
 लाल रे ॥ पूजन शुज मन साचवै, दिन२ बढ़ती शक्ति लाल रे
 ॥ वी० १४ ॥ मृतक जनम कृतकालमें, कबि धारयो उपवास लाल
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०
 १५ ॥ सावङ्ग त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील
 आचूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ
 आसाठ वैशाखमें, मिंगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे
 मांहिनें, व्रत ग्रहिये वरुजाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण
 हुवां थकां, कजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारोनें,
 उज्जव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीस३ गिणती तणा,
 पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाद

लाख रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी आविका, कीधी विंध चित
लाय लाख रे ॥ जनस सफल करवा ज्ञानी, उहिज मोक्ष उपाय
लाख रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आझा धार
चित्त मजार ए, लहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार
ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुदंकर, मुनि केशरी
शशि गढ खरतर ज्ञानी स्तवना मनहर ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुज महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि
हित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दो
महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नही कर
सके तो वो उली गिणतीमें नही. ठर फेर नइ करणी पमती है.
एक उलीके वीस पद हे (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद
जुदा गिणते हे, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरे
वीशों दिनमें दूसरा पद, ऐसे वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां
पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अछम तप करिके आराधै. वीश
अछमसे एक उली होय (ऐसे) वीस उली १०० से अछमसे आ
राधै. और उससे कम शक्ति होय तो उठसे आराधै. उससे कम
शक्ति होय तो चोविहार उपवास करके आराधै. उससे हीन शक्ति
होय तो तिविहार उपवास करके आराधै. उससे हीनशक्ति आंबिल
(तथा) तिविहार एकाशना करके आराधै, उसमें जो शक्तिवान
होय सो तो सर्व तपस्थाके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति
दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति
सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, शिंवर
पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, ठर तीर्थपद-
में ७, यह सात आनक पद तो पोसह करकेही आराधै, जो इतनी

ज्री शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार
 बोनै, सो शक्ति ज्री नही होय तो यथाशक्ति तप करै आराधै,
 अपणी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप
 नही गिणै जावै, स्त्रियां ज्री ऋतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके
 दिन पोसह सहित करै तो वदोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो
 सके तो तपके दिन उज्जय टंक पम्पिकमण करै, तीन टंक देववन्दन
 करै, दो हज़ार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन
 करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहिं बोले,
 सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे
 तो पारणोके दिन जिनजक्ति करै पारणा करै, जो तपके दिन पो-
 सह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनजक्ति करै करावै, जावना
 जावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संख्यासँ काउ-
 सग्न करै, इतनाही तजुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदशा करै,
 उस पदका गुण याद करै उदात्त स्वरसँ स्तवना करै, दर्शित रहै॥
 ॥ अथ बीस स्थानक गुणना और काउसग्नका प्रमाण लिखते है॥

(एमो अरिहंताण) २००० गुणना लोगस्त १२ का काउ-
 सग्न ॥ १ ॥ (एमो सिद्धाण) २००० गुणना लोगस्त १५ का का-
 उसग्न ॥ २ ॥ (एमो पवयणस्त) २००० गुणना लोगस्त ७
 का काउसग्न ॥ ३ ॥ (एमो आयरिआण) दो हज़ार गुणना
 लोगस्त ३६ का काउसग्न (एमो थेराण) दो हज़ार गुणना
 लोगस्त १५ का काउसग्न ॥ ५ ॥ (एमो उवझायाण) दो ह-
 ज़ार गुणना लोगस्त ३५ का काउसग्न ॥ ६ ॥ (एमो लोए सब्ब
 सादूण) दो हज़ार गुणना लोगस्त २७ का काउसग्न ॥ ७ ॥
 (एमो नाणस्त) दो हज़ार गुणना लोगस्त ५ का काउसग्न ॥
 ॥ ८ ॥ (एमो दंसणस्त) दो हज़ार गुणना लोगस्त १७ का

काठसग ॥ ए ॥ (एमो विषयसंप्रसायं) दो हज्जार गुणना
 लोगस्त १० का काठसग ॥ १० ॥ (एमो चारित्तस्त) दो ह-
 ज्जार गुणना लोगस्त ६ का काठसग ॥ ११ ॥ (एमो बंजवय
 धारीणं) दो हज्जार गुणना लोगस्त ए का काठसग ॥ १२ ॥
 (एमो किरिआणं) दो हज्जार गुणना लोगस्त २५ का काठसग
 ॥ १३ ॥ (एमो तवस्तीणं) दो हज्जार गुणना लोगस्त १५ का
 काठसग ॥ १४ ॥ (एमो गोयमस्त) दो हज्जार गुणना लोगस्त
 १४ का काठसग ॥ १५ ॥ (एमो जिषाणं) दो हज्जार गुणना
 लोगस्त १० का काठसग ॥ १६ ॥ (एमो चरणस्त) दो हज्जार
 गुणना लोगस्त १५ का काठसग ॥ १७ ॥ (एमो नाथस्त) दो
 हज्जार गुणना लोगस्त ५ का काठसग ॥ १८ ॥ (एमो सुअना-
 थस्त) दो हज्जार गुणना लोगस्त १० का काठसग ॥ १९ ॥
 (एमो तिष्ठस्त) दो हज्जार गुणना लोगस्त ५ का काठसग करै
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों मंलीमें सर्व पदके उच्च महो-
 च्छव प्रज्ञावना कजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक मंली तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त
 करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथमें वीश स्थानक सेवनविधि
 संक्षेप मात्रसें लिखी है. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें
 वीशों पदकी जुदीर विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरुका
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीस स्था-
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, वीस
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अथवा शक्ति माफक वीसर ज्ञानोप-
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते
 लगावै, गुरुपदका गुरुखाते लगावै, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी बछल कैर, इत्यादिकं इयें ठर जावै विधि संयुक्त शुद्ध
जावसैं जो जव्यजीव यह बीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकै तीसरै जव अनंत सुखकों प्राप्त
होंगें, इत्यलंविस्तरेण ॥ इति बीस स्थानक तप उल्लो विधि सं० ॥

॥ अथ बीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोणंतविन्नाएसदंसणाणं, सदाणंदियातेसजंतूगणाणं ॥
जवज्जोजविन्नयणेवारणाणं, एमोवोदियाणं वाराणं जिणाणं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हच्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेन्द्रपूजा ॥ अथ
सिद्धपूजा ॥ लोगगजागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमशि-
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मस्सकयकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेच्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥
अणंतसंसुद्धयुणाकरस्स, दुस्संधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-
णदयागिदस्स, एमो२ संधचनविदस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेखीतरुसिंधुराणं, सुरीसराणं-
सुखिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥
॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-
त्तसंयमपतितजविजन अतिदधिरकरताजला ॥ अवगुणअडुषित
गुणविभूषित चंडकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ
रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोधिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं स्वविरायनमः ॥ अथ षष्ठ पद ॥ सवोद्विबीजंकुरुकार-
णाणं, एमोश्वायगावारणाणं ॥ कुवोद्विदंतीहरिणसराणं ॥ विष्णो-
यसंतवप्रयोदराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसदाणं, निस्सेसजीवाणदयागिदा-
णं ॥ तन्नाण पज्जायतरुवणाणं, एमो२ होजतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं सम्प्रगुसाधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उदवपज्जा

यगुणाकरस्त, सयापयासीकरणोधुरस्त ॥ मिञ्चतअन्नाणतमोहरस्त,
 णमो२ नाणदिवायरस्त ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्त, अणंतसंसारवि
 दारणस्त ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्त, णमो२निम्मलदंसणस्त ॥
 ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-
 पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्त, कुंदिडयादामलताचणस्त ॥ सुध-
 म्मजुत्तस्तदयासयस्त, णमो२श्रीविणयालयस्त ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं
 श्रीं सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-
 म्मोघकंतरदवानलस्त, महोदयानंदलयाजलस्त ॥ विन्नाणपंकेरुह
 कारणस्त, णमोचरित्तस्तगुणापणस्त ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशन चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-
 सुदप्पयस्त, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्त ॥ सब्बयान्नुषण्णूषणस्त,
 नमोदिशीलस्तअदूसणस्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचर्यैनमः ॥ १२ ॥
 अथ तेरमें किया पद ॥ विशुद्धसद्वाणविज्जूषणस्त, सुलद्धितंपत्तिसु-
 पोषणस्त ॥ णमोत्तदाणंतगुणप्पदस्त, नमो२सुद्धिक्रियापदस्त ॥
 १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यगक्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥
 लद्धीसरोजावलितावणस्त, सुरूवसंलग्गसुपावणस्त ॥ अमंगलानो
 कुहडुहवस्त, नमो२निम्मलसत्त्वस्त ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तव-
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविज्जाकर
 स्त, डुवालसंगीकमलाकरस्त ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्त, नमोग्ग
 णाधीस्तरगोयमस्त ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौत्तमायनमः ॥ अथ
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्ससत्तातिसयासयाणं, सुरा२धी तर-
 वंदियाणं ॥ रवीडुर्विबामलसगुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं
 ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेज्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद
 ॥ सत्तिंदियापारविकारदारी, अकारयासेसज्जावेगारी ॥ महाज-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्रधारी ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्री
 सम्भग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १४ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्त, संदेहसंदोहविखंरुणस्त ॥ सुचीउपादा
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री
 सम्भग्ज्ञानाय नमः ॥ १७ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव
 ह्नीवनवारणस्त, सुबोहिबीजांकुरकारणस्त ॥ अणंतसंसुद्धगुणाव-
 यस्त, नमोदयामंदिरसठयस्त ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्भग्श्रुतयै
 नमः ॥ १८ ॥ अथ बीसमें तीर्थपद ॥ तुच्यंनमःसकलविश्ववशं
 कराय, तुच्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुच्यंनमःसुवनमंरुल
 मंरुणाय, तुच्यंनमोस्तुजिनपंकविखंरुणाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री स
 म्भग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥ २० ॥ ध्वजासमेत अष्ट इय चढावै (पीठे)
 ६४ इंड्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंझायनमः १ ॥ ॐ इशाणै
 जायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारैझायनमः ३ ॥ ॐमार्दैझायनमः ४ ॥
 ॐब्रह्मैझायनमः ५ ॥ ॐलांतकैझायनमः ६ ॥ ॐशुक्रैझायनमः ७ ॥
 ॐसहस्रारैझायनमः ८ ॥ ॐप्राणतैझायनमः ९ ॥ ॐअ-
 ध्युतैझायनमः ॥ १० ॥ ॐचंद्रैद्रायनमः ॥ ११ ॥ ॐसूर्यैद्रायनमः ॥ १२ ॥
 ॐचमैरैझायनमः ॥ १३ ॥ ॐवर्लीद्रायनमः ॥ १४ ॥ ॐधरैणद्राय
 नमः ॥ १५ ॥ ॐभूतानैद्रायनमः ॥ १६ ॥ ॐवेषुदेवैद्रायनमः ॥ १७ ॥
 ॐवेषुदार्लीद्रायनमः ॥ १८ ॥ ॐहरिकान्तैद्रायनमः ॥ १९ ॥ ॐहरिस्त
 हैद्रायनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखैद्रायनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाण
 वैद्रायनमः ॥ २२ ॥ ॐपूणैद्रायनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टैद्रायनमः
 ॥ २४ ॥ ॐजलकान्तैद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रज्ञैद्रायनमः ॥ २६
 ॥ ॐअमितगतीद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनैद्रायनमः ॥ २८ ॥
 ॐवेलवैद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रज्ञज्ञैद्रायनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषै
 जायनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषैद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालैद्रायनमः

॥ ३३ ॥ उँमहाकालेद्रायनमः ॥ ३४ ॥ उँसरूपेद्रायनमः ॥ ३५ ॥
 उँप्रतिरूपेद्रायनमः ॥ ३६ ॥ उँपूर्णजडेद्रायनमः ॥ ३७ ॥ उँमाणजदेद्राय
 नमः ॥ ३८ ॥ उँजोमेद्रायनमः ॥ ३९ ॥ उँमहाजोमेद्रायनमः ॥
 ४० ॥ उँकिन्नरेद्रायनमः ॥ ४१ ॥ उँकिंपुरुषेद्रायनमः ॥ ४२ ॥ उँसत्पुरुषे
 द्रायनमः ॥ ४३ ॥ उँमहापुरुषेद्रायनमः ॥ ४४ ॥ उँअमितकार्येद्रायनमः ॥
 ४५ ॥ उँमहाकार्येद्रायनमः ॥ ४६ ॥ उँगीतरतींद्रायनमः ॥ ४७ ॥ उँगीत-
 यशेद्रायनमः ॥ ४८ ॥ उँसन्निहितेद्रायनमः ॥ ४९ ॥ उँसामानि-
 केद्रायनमः ॥ ५० ॥ उँधारत्रेद्रायनमः ॥ ५१ ॥ उँविधारत्रेद्रायनमः
 ॥ ५२ ॥ उँरुषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ उँरुषिपालतेद्रायनमः ॥ ५४ ॥
 उँइश्वरेद्रायनमः ॥ ५५ ॥ उँमहेश्वरेद्रायनमः ॥ ५६ ॥ उँवत्सेद्रा-
 यनमः ॥ ५७ ॥ उँविसालेद्रायनमः ॥ ५८ ॥ उँहास्येद्रायनमः ॥
 ५९ ॥ उँश्रेयसेद्रायनमः ॥ ६० ॥ उँहास्यस्तेद्रायनमः ॥ ६१ ॥
 उँपदगेद्रायनमः ॥ ६२ ॥ उँपदगपतेद्रायनमः ॥ ६३ ॥ उँमहाश्रे-
 येद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसगइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-
 देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ उँरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ उँ-
 प्रज्ञातैनमः ॥ २ ॥ उँवज्रशृंषलायैनमः ॥ ३ ॥ उँवज्राकुशेयैनमः
 ॥ ४ ॥ उँचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ उँपुरुषवत्रायैनमः ॥ ६ ॥ उँका-
 ल्यैनमः ॥ ७ ॥ उँमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ उँगौर्ध्वैनमः ॥ ९ ॥ उँ
 गंयार्ध्वैनमः ॥ १० ॥ उँमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ उँमानव्यै-
 नमः ॥ १२ ॥ उँवैरोव्यायैनमः ॥ १३ ॥ उँअवुसायैनमः ॥ १४
 ॥ उँमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ उँमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षो-
 रुश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-
 पारी चढावै ॥ ॥ उँब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ उँपा-
 र्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ उँगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ उँनृकुट्यैनमः
 ॥ २१ ॥ उँवरुणायनमः ॥ २० ॥ उँकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ उँय-

कैशायनमः ॥ १८ ॥ नैगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ नैगरुद्रायनमः ॥
 १६ ॥ नैकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ नैपातालायनमः ॥ १४ ॥ नैय-
 एमुखायनमः ॥ १३ ॥ नैकुमारायनमः ॥ १२ ॥ नैपद्मराजाय-
 नमः ॥ ११ ॥ नैब्रह्मण्येनः ॥ १० ॥ नैअजितायनमः ॥ ९ ॥
 नैविजयायनमः ॥ ८ ॥ नैमातंगायनमः ॥ ७ ॥ नैकुसुमायनमः ॥
 ६ ॥ नैतुंबुर्यैनमः ॥ ५ ॥ नैरुक्तायकायनमः ॥ ४ ॥ नैत्रिमुखा-
 यनमः ॥ ३ ॥ नैमहायकायनमः ॥ २ ॥ नैगोमुखायनमः ॥ १ ॥
 इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥
 नैचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ नैअजितवलायैनमः ॥ २ ॥ नैउरितायैनमः
 ॥ ३ ॥ नैकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ नैमहाकाष्ठ्यैनमः ॥ ५ ॥ नैश्या-
 म्मायैनमः ॥ ६ ॥ नैशांतायैनमः ॥ ७ ॥ नैभूकुट्यैनमः ॥ ८ ॥
 नैसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ नैअशोकायनमः ॥ १० ॥ नैमानयैनमः
 ॥ ११ ॥ नैचंद्रायनमः ॥ १२ ॥ नैविदितायैनमः ॥ १३ ॥ नैअंकु-
 शायैनमः ॥ १४ ॥ नैकंदपार्यनमः ॥ १५ ॥ नैनिर्वाण्यैनमः ॥
 १६ ॥ नैबलायैनमः ॥ १७ ॥ नैवारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ नैधरणाप्रियायैनमः
 ॥ १९ ॥ नैनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ नैगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ नैअं-
 बिकायैनमः ॥ २२ ॥ नैपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ नैसिन्ध्यायै-
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ नैनेत्रपिका-
 यनमः १ ॥ नैपांडुकायनमः २ ॥ नैपिंगलायनमः ३ ॥ नैसर्वरत्नायनमः
 ४ ॥ नैमहापद्मायनमः ५ ॥ नैकालायनमः ६ ॥ नैमहाकालायनमः
 ७ ॥ नैमाणवायनमः ८ ॥ नैशंखायनमः ९ ॥ इति नव
 निधान पदे ए कलश चढावै ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥
 नैविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ नैक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ नैचक्रेश्व-
 र्यैनमः ॥ ३ ॥ नैधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ नैपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥
 नैशंखायनमः ॥ ६ ॥ नैअग्रयैनमः ॥ ७ ॥ नैयमायनमः ॥ ८ ॥

नैऋतायनमः ॥ ४ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ५ ॥ नैऋत्यैवेनमः ॥ ६ ॥
 नैऋत्यायनमः ॥ ७ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ८ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ९ ॥
 नैऋत्यायनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ नैऋत्यायनमः ॥ १ ॥
 नैऋत्यायनमः ॥ २ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ३ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ४ ॥
 नैऋत्यायनमः ॥ ५ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ६ ॥ नैऋत्यायनमः
 ॥ ७ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ८ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह
 नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंरुल पूजनकी विधि विशेष लिखी
 है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंरुल प्रतिष्ठा
 घलशाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवग्रह मंरुल पूजामें लिखआए
 हे उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधि कराणी होय तो वि-
 छजन गुरुकों पूठके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंरुल पूजा वि० सं॥
 ॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशवत देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, जुलो
 अक्षर जगति जणी सन्जई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तपो ए
 जिणरा गुण गाई, जिम सुख सोहग संपदा ए वंजित फल पाई ॥
 १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेत वै चंपानयरी, मधवा राजा राज्य करै
 तिण जीता वषरो ॥ पाटतणी राणी रूवनी ए लखमी इण नामै,
 आठ पूत्र जाया जिणो ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे
 कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठों पूत्रों ऊपरां ए तिण लागै प्यारी
 ॥ वाधै चंद्रतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी थाय
 माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवनी ए घर अंगण वैठी,
 दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विचएदवी
 ए नदी दूजी नारी, रंजा पछमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४
 ॥ पुरुष न दोषै कोइ इसो जिणने परयाइ, आख्या आगल साल
 वधै तिण चयन न पाइ ॥ देशना राजवी ए ततखिण तेमाया,

संबल सजाई साथ करी नरपति पिए आया ॥ ५ ॥ वीतशोक
 राजातणो ए ठै कुमर सोजागी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती
 लागी ॥ ऊज्जा दैखै सकल लोक चढ़िया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ
 ठबी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार,
 रलियायत थयो देखने ए सरो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व
 खत कन्यारो जामो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर
 लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥
 घर आया परणी करी ए हरखयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस
 लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल-प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेशर थंजणो ॥ ए
 देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुख मांही रे
 केतलो काल बढी गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा जला,
 चढ़ते पख रे चंद्र जिसी चढ़ती कला ॥ (उज्जालो) चढ़ती कला
 हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै क्री
 ना अतिधणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ (चाल)
 इक कामण रे गोख चढ़ी इष्टे पनी, शिर पीटे रे दीन ह्वरे रोवे
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण
 अधिकेरो डुख हुठ ॥ (उज्जालो) डुख हुवो देखी रोहणी हिव
 कहै इम प्रीनम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांई में कदे देख्यो नही, मुऊने त-
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनै
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीना नबि लहै ॥ ए
 डुखणी रे पूत्र मुओ तरुपरु करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥
 (उज्जालो) जाणै तरै तूं वात डुखनी गरवगदली कामनी, इम

कद्दी राजा हाथ जाख्यो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूयधी
 तलै नारख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै
 करी, थयो मुरवित रे रोवै अति आंखया जरी ॥ परतो सुत रे
 सासणदेवत जाखियो, कंचनमयरे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लाखो)
 वैसारियो कर जोरु आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊनो जूपतने अचंजो देख ए कारण
 कियो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूठियै सांसो इसो ॥ १३ ॥
 (चाल) चितवतां रे चारनिया आया जिसै, राजा पिण रे पुढतो
 वंदणने तिसै ॥ सुख देशना रे पूठे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी
 रे पूरवज्जव बालकतणो ॥ (उल्लाखो) बालकतणो जव जूप पूठै
 कहै इषा पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो बली
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठलै जव रोहणी तप आदरयो, तपतणो सगते
 साधुजगते तुम्ह जवसायर तरयो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे
 रोहणितप किम कीजियै, विधि जाखो रे जिम तुम पासे लीजियै
 ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन
 राजाजणी ॥ (उल्लाखो) राजाजणी विधि एह जंपे चंड रोहणतप
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे
 कीजै तजी आखस अंगसुं ॥ १४ ॥ (दाल-वीर सुणो मोरी वीनती
 ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, बलि करिये हो ऊजमणो
 एम ॥ तप करतां पातक टलै, तिया कीजे हो तपसेती प्रेम ॥
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिया आगे हो कीजै वृक्ष अशोक ॥
 गुणानो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त०
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरत्रियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥

विधिसुं पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तद्वतीक ॥ त० १७ ॥
 सेवा कीजै साधूनी, बलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजे
 साहमी, मनरंगे हो करष पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोष्टी पूं-
 ङना, भित्त लेखण हो जिलमिल सुजगीस, नवकरवाली बीटणा,
 गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिस तिण
 दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणी आदरै,
 ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल-धरम करो जिनवर
 तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणीतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे
 रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थकर पासे रे ॥ ५० २१ ॥
 इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने
 रोहणी, मन सूयै संजम लीधो रे ॥ ५० २२ ॥ आठै पुत्रे आदरी,
 दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ बलि नानाविध तप तपै, धरमतणी
 मति जागे रे ॥ ५० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल
 शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित
 लाया रे ॥ ५० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिव-
 पुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणी, हिव पुन्ये सेवा पामी रे
 ॥ ५० २५ (कलश) ॥ इम गगन डुगमुनि चंद्र वरसे (१७२०)
 चोथ आवण सुदि जली ॥ में कही रोहणीतणी महिमा सुगुरु सु
 ख जिम सांजली ॥ वासुपूज्य अमने अया सुप्रज्ञान चितनी चिंता
 हली, श्रीतार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥
 २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपुर्य ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी न-
 कत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन
 करै, अगै अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढ़ावै, देव वंदना-

(१८ :)

मे प्रनिद्ध ज्ञे, उग शास्त्रो मे जगत्पुत्र्य श्रीमाधुगुणसे विगजमान
चर्मशोलगणिः परमगुण ज्ञे, जितोके शिष्य पंक्ति, श्रीकुशलनि
धानमुनिः ज्ञे, उग परमपुरुषदापूजी मादाराजका चरणान्नचं
चर्गाक उ० श्रीगमलागणिः ने शिष्यमंदली पं । हेमचंदमुनिः वि ।
पेमचंद अमरचंदादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य
अनेक विद्यार्थियोके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्तव्य सर्व जी
वोके उपगामार्थ उपायके प्रसिद्ध करा हे.

विकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर ब्रम्हा उपगम विद्या-
शाला उ । श्री । परमोपगारी युक्तिवारिधिः । रामलाल ज । गणिः ॥

